

अनुक्रम

1. महापथ कठिन नहीं है.....	2
2. मार्ग परिपूर्ण है.....	19
3. बोलना और सोचना छोड़ दो.....	38
4. शून्यता ही एकात्मा है.....	53
5. मूलस्रोत की और लोटना.....	71
6. लक्ष्य के लिए प्रयास न करे.....	87
7. सभी स्वप्न समाप्त हो जाने चाहिए.....	111
8. सच्ची श्रद्धा का जीवन.....	132
9. अद्वैत.....	148
10. भूत, भविष्य और वर्तमान के पार.....	164

## महापथ कठिन नहीं है

सूत्र:

महापथ उनके लिए कठिन नहीं है  
जिनकी अपनी कोई प्राथमिकताएं नहीं हैं।  
जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते,  
सब-कुछ सुस्पष्ट होता है और कुछ भी छिपा नहीं रहता।  
थोड़ा सा भेद और पृथ्वी और स्वर्ग में  
अनंत दूरी हो जाती है।  
अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो,  
तो पक्ष या विपक्ष में राय मत बनाओ।  
तुम्हारी पसंद और नापसंद  
का संघर्ष ही मन का रोग है।

हम ज्ञेन गुरु के अ-मन के सुंदर संसार में प्रवेश करेंगे। सोसान तीसरे ज्ञेन गुरु हैं। उनके संबंध में कुछ अधिक ज्ञात नहीं है। यह ऐसा ही है जैसा होना चाहिए, क्योंकि इतिहास में केवल हिंसा का लेखा-जोखा होता है। इतिहास शांति का लेखा-जोखा नहीं रखता- यह उसका अभिलेखन कर ही नहीं सकता। सभी लेखे-जोखे उपद्रवों के हैं। जब भी कोई वास्तव में मौन हो जाता है वह सभी अभिलेखों से विलुप्त हो जाता है वह हमारे पागलपन का हिस्सा नहीं रह जाता। इसलिए यह ऐसा ही है जैसा इसे होना चाहिए।

सोसान जीवन भर एक घुमक्कड़ भिक्षु रहा। वह कहीं टिका नहीं वह सदा घूमता रहा। वह एक नदी की तरह रहा, स्थिर तालाब की तरह नहीं। वह एक सतत गति था। बुद्ध के घुमक्कड़ों का यही अर्थ है वे बाह्य जगत में ही नहीं बल्कि आंतरिक जगत में भी गृह-विहीन होने चाहिए क्योंकि जब भी तुम घर बनाते हो तुम उससे आसक्त हो जाते हो। उन्हें कहीं जड़ें नहीं जमानी चाहिए सिवाय इस समस्त जगत के उनका कोई घर नहीं है।

जब यह पता भी चल गया कि सोसान बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया है तब भी उसने अपना पुराना भिक्षुक होने का ढंग जारी रखा। उसके बारे में कुछ विशेष नहीं था। वह एक साधारण आदमी था- एक ताओ का व्यक्ति था।

मैं एक बात कहना चाहूंगा और तुम उसे अवश्य स्मरण रखना। ज्ञेन सम्मिश्रण है। और जिस तरह पौधों के सम्मिश्रण से और अधिक सुंदर फूल पैदा हो सकते हैं, और जीव-जगत में सम्मिश्रण से अधिक सुंदर बच्चे उत्पन्न होते हैं वैसा ही ज्ञेन के साथ भी हुआ है। ज्ञेन, बुद्ध और लाओत्सु के विचारों का सम्मिलन है। वह अभूतपूर्व महामिलन है, बड़े से बड़ा जो कभी घट सकता है। इसीलिए ज्ञेन बुद्ध के विचारों से और लाओत्सु के विचारों से अधिक सुंदर है। वह उच्चतम शिखरों से विकसित फूल है और उन शिखरों का मिलन है। ज्ञेन न तो बौद्ध है, न ताओवादी है, लेकिन इसके भीतर दोनों समाहित हैं।

भारत धर्म के विषय में कुछ ज्यादा ही गंभीर है—भारत के मन पर अपने लंबे अतीत का भारी बोझ है और धर्म गंभीर हो गया है। लाओत्सु उपहास का पात्र बना रहा— लाओत्सु एक वृद्ध मूर्ख के रूप में जाना जाता है। वह बिलकुल भी गंभीर नहीं है तुम्हें उससे अधिक गैर—गंभीर व्यक्ति नहीं मिल सकता।

फिर बुद्ध के विचारों का और लाओत्सु के विचारों का मिलन हुआ, भारत और चीन का मिलन हुआ और ज्ञेन का जन्म हुआ। और सोसान उस मूल—स्रोत के बिलकुल समीप है जिस समय ज्ञेन का जन्म हो रहा था। उसमें मूल समाहित है।

उसकी जीवनी की कोई भी अर्थवत्ता नहीं है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति संबुद्ध हो जाता है तो उसकी जीवनी नहीं होती। अब वह एक रूप—आकार नहीं रह जाता। इसलिए, उसका जन्म कब हुआ कब उसकी मृत्यु हुई— ये तथ्य असंगत हो जाते हैं। इसीलिए पूरब में हमने जीवनियों ऐतिहासिक तथ्यों की चिंता नहीं की। यहां ऐसा मोह कभी नहीं रहा। यह सनक अब पश्चिम से आई है, अब लोग असंगत बातों में अधिक रुचि रखते हैं। कब किसी सोसान का जन्म हुआ इससे क्या अंतर पड़ता है—इस वर्ष या उस वर्ष? कब उसकी मृत्यु हुई इस बात का क्या महत्व है?

सोसान महत्वपूर्ण है न कि उसका इस संसार में प्रवेश और शरीर न कि संसार से उसकी विदाई। आगमन और प्रस्थान महत्वपूर्ण नहीं है। उसका होना ही एकमात्र अर्थवत्ता है।

केवल यही शब्द हैं जो सोसान ने बोले। स्मरण रहे, वे शब्द नहीं हैं, क्योंकि वे उस मन से निकले हैं जो शब्दों के पार चला गया है। वे अनुमान नहीं हैं वे प्रामाणिक अनुभव हैं। वह जो भी कहता है उसे पता है।

वह कोई शब्दों का ज्ञाता नहीं है, वह प्रतिभावान व्यक्ति है। उसने रहस्य की गहराइयों में प्रवेश किया है और जो कुछ भी वह वहां से लाता है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। वह तुम्हें संपूर्ण रूप से पूरी तरह रूपांतरित कर सकता है। अगर तुम उसे सुनोगे तो सुनना ही रूपांतरण बन सकता है, क्योंकि वह जो भी कह रहा है वह शुद्धतम सोना है।

लेकिन तब यह कठिन भी है क्योंकि उसके और तुम्हारे बीच बहुत बहुत अधिक दूरी है तुम मन हो और वह अ—मन है। यद्यपि वह शब्दों का प्रयोग करता है परंतु वह मौन में कुछ कह रहा है अगर तुम मौन भी रहो तो भी तुम्हारे भीतर बकबक चलती रहती है।

ऐसा हुआ, मुल्ला नसरुद्दीन के विरुद्ध न्यायालय में एक मुकदमा था। न्यायालय कुछ अधिक प्रमाणित न कर सका। उस पर कई विवाह करने बहुत सी पत्नियां रखने का आरोप था। सभी को इस बात का पता था, लेकिन कोई प्रमाणित नहीं कर सका।

वकील ने नसरुद्दीन से कहा तुम केवल चुप रहना, बस इतना ही करना। अगर तुमने एक भी शब्द बोला तो फसोगे। इसलिए तुम सिर्फ चुप रहना बाकी सब मैं सम्हाल लूंगा।

मुल्ला नसरुद्दीन चुप रहा—भीतर ही भीतर उबल रहा था, अशांति में था वह, उसने कई बार बीच में टोकना चाहा, परंतु किसी प्रकार चुप रहा और अपने ऊपर नियंत्रण रखा। ऊपर से तो वह बुद्ध जैसा प्रतीत हो रहा था भीतर से विक्षिप्त था। न्यायालय उसके विरुद्ध कुछ भी प्रमाणित न कर सका। न्यायाधीश यद्यपि वह जानता था कि इस शहर में उसकी कई पत्नियां हैं लेकिन अगर कोई प्रमाण नहीं था तो न्यायाधीश क्या कर सकता था? इसलिए न्यायाधीश को उसे छोड़ देना पड़ा।

उसने कहा मुल्ला नसरुद्दीन तुम्हें रिहा किया जाता है। तुम घर जा सकते हो।

मुल्ला नसरुद्दीन उलझन में पड़ गया और बोला: महानुभाव, कौन से घर? उसके कई घर थे क्योंकि शहर में उसकी कई पत्नियां थीं।

तुम्हारे मुंह से निकला एक ही शब्द तुम्हारे भीतरी मन को प्रकट कर देगा एक शब्द और तुम्हारा अस्तित्व प्रकट हो जाता है। एक शब्द की भी जरूरत नहीं केवल एक मुखमुद्रा ही तुम्हारे बकवासी मन को प्रकट कर देगी। अगर तुम चुप भी रहते हो, तो तुम्हारी चुप्पी तुम्हारे भीतर बैठे बकवासी बंदर के अतिरिक्त कुछ और प्रकट नहीं करेगी। जब कोई सोसान बोलता है वह किसी और ही तल से बोलता है। बोलने में उसका कोई रस नहीं है किसी को प्रभावित करने में उसकी कोई रुचि नहीं है वह तुम्हें किसी सिद्धांत, या दर्शनशास्त्र या वाद को मनवाना नहीं चाहता है। नहीं जब वह बोलता है उसका मौन खिलता है। जब वह बोलता है वह वही कह रहा है जो उसने जाना है और जिसे वह तुम्हारे साथ बांटना चाहता है। वह तुम्हें मनवाने के लिए नहीं है स्मरण रहे वह केवल तुम्हारे साथ बांटना है। और अगर तुम उसके एक शब्द को भी समझ सके तो तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे भीतर अत्यधिक मौन प्रकट हो रहा है।

केवल यहां सुनते हुए.. हम सोसान और उसके शब्दों की बात करेंगे। अगर तुम ध्यानपूर्वक सुनोगे तो अचानक तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे भीतर एक मौन प्रकट हो रहा है। ये शब्द आणविक हैं वे ऊर्जा से भरे हैं। जब भी कोई व्यक्ति—जो बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया है, कुछ कहता है— उसका शब्द बीज होता है और लाखों वर्षों तक वह बीज बीज ही रहेगा और किसी हृदय की खोज करेगा।

अगर तुम तैयार हो मिट्टी बनने को तैयार हो तब ये शब्द सोसान के ये अत्यंत शक्तिशाली शब्द अब भी जीवित हैं ये बीज हैं अगर तुम इन्हें अनुमति दो तो वे तुम्हारे हृदय में प्रवेश कर जाएंगे और तुम इनके द्वारा बिलकुल दूसरे व्यक्ति हो जाओगे।

उन्हें मन से मत सुनना क्योंकि उनके अर्थ मन के नहीं है मन तो उन्हें समझने में बिलकुल असमर्थ है। वे मन से नहीं आते वे मन के द्वारा समझे भी नहीं जा सकते। वे अ-मन से आते हैं। वे केवल अ-मनी दशा में ही समझे जा सकते हैं।

इसलिए यहां सुनते हुए व्याख्या करने की कोशिश मत करना। शब्दों को नहीं, पंक्तियों के बीच के अंतराल को सुनना वह जो कहता है उसे मत सुनना उसके अभिप्राय को समझना— वही महत्वपूर्ण है। अभिप्राय को सुगंध की भांति अपने चारों ओर छा जाने देना। वह चुपचाप तुम्हारे भीतर प्रविष्ट हो जाएगी तुम उसे ग्रहण कर लोगे। लेकिन व्याख्या मत करना। मत कहना उसका तात्पर्य यह है या वह है क्योंकि व्याख्या तुम्हारी होगी।

एक बार ऐसा हुआ मुल्ला नसरुद्दीन नशे में धुत सुबह—सवेरे घर लौट रहा था। जब वह कब्रिस्तान से गुजर रहा था तो उसकी नजर एक तख्ती पर पड़ी। उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था रखवाले के लिए घंटी बजाओ—उसने वही किया।

निश्चित ही, इतनी सुबह रखवाला बेचैन हो गया। वह लड़खड़ाता गुस्से में बाहर आया और जब उसने नसरुद्दीन को नशे में धुत देखा तो और भी क्रोधित हो उठा।

उसने पूछा क्यों? तुमने घंटी क्यों बजाई? तुमने मेरे लिए घंटी क्यों बजाई? क्या बात है? तुम्हें क्या चाहिए?

नसरुद्दीन ने एक क्षण के लिए शांति से उसकी ओर देखा और फिर तख्ती की ओर देखा और कहा मैं जानना चाहता हूं कि मुसीबत की इस घंटी को तुम खुद क्यों नहीं बजा सकते?

लिखा था रखवाले के लिए घंटी बजाओ, अब इसका क्या अर्थ लगाया जाए? यह तुम पर निर्भर करता है।

व्याख्या मत करो— सुनो। और जब तुम अर्थ निकालने लगते हो तब तुम सुन नहीं सकते क्योंकि चेतना एक साथ दो विरोधी बातें नहीं कर सकती। अगर तुम सोचना शुरू कर देते हो तो सुनना बंद हो जाता है। सिर्फ

सुनो— जैसे तुम संगीत सुनते हो—एक भिन्न प्रकार का सुनना, क्योंकि तुम कोई अर्थ नहीं निकालते। ध्वनियों में कोई अर्थ नहीं है।

यह भी संगीत है। यह सोसान संगीतकार है, दार्शनिक नहीं है। यह सोसान शब्द नहीं बोल रहा है वह उससे भी अधिक कुछ कह रहा है—शब्दों से कहीं ज्यादा। वे महत्वपूर्ण हैं परंतु उनमें कोई अर्थ नहीं है। वे संगीत की ध्वनियां हैं।

तुम जाकर किसी जलप्रपात के पास बैठते हो। तुम इसे सुनते हो, लेकिन क्या इसकी व्याख्या करते हो कि जलप्रपात क्या कहता है? वह कुछ भी नहीं कहता... लेकिन फिर भी कहता है। वह बहुत कुछ कहता है जो कहा नहीं जा सकता।

तुम जलप्रपात के समीप बैठ कर क्या करते हो? तुम सुनते हो, तुम शांत और मौन हो जाते हो, तुम उसे आत्मसात कर लेते हो तुम जलप्रपात को अपने भीतर गहरे में प्रवेश करने देते हो। तब भीतर सब शांत और मौन हो जाता है। तुम एक मंदिर हो जाते हो—अशांत तुम्हारे भीतर जलप्रपात के माध्यम से प्रवेश कर जाता है।

तुम उस समय क्या करते हो जब तुम पक्षियों के गीतों को या वृक्षों से गुजरती हवाओं को या हवा से उड़ते सूखे पत्तों को सुनते हो? तुम क्या करते हो? तुम सिर्फ सुनते हो।

यह सोसान कोई दार्शनिक नहीं है, वह धर्मशास्त्री नहीं है, वह पुरोहित नहीं है। वह तुम्हें कोई विचार नहीं बेचना चाहता, उसका सिद्धांतों में कोई रस नहीं है। वह तुम्हें कुछ मनवाना नहीं चाहता, वह तो सिर्फ पुष्पित हो रहा है। वह एक जलप्रपात है या हवा है जो वृक्ष से गुजर रही है या वह सिर्फ पक्षियों का एक गीत है जिसका कोई अर्थ नहीं है लेकिन बहुत ही सार्थक है। तुम्हें उस सार्थकता को आत्मसात करना है तभी तुम समझ सकोगे। इसलिए सुनो, सोचो नहीं। और तब तुम्हारे भीतर बहुत कुछ घटने की संभावना है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं : यह व्यक्ति—यह सोसान जिसके संबंध में कुछ अधिक ज्ञात नहीं—वह सामर्थ्यवान व्यक्ति था, ऐसा व्यक्ति था जो जान चुका था। और जब वह कुछ कहता है तो वह इस ज्ञात जगत के लिए उस अज्ञात की खबर लाता है। उसके साथ भगवत्ता प्रवेश करती है, तुम्हारे मन के अंधकार में प्रकाश की एक किरण प्रवेश करती है।

इसके पहले कि हम उसके शब्दों में प्रवेश करें उन शब्दों की अर्थवत्ता को स्मरण कर लो उनके अर्थ को नहीं। संगीत, स्वर—माधुर्य महत्वपूर्ण है न कि अर्थ उसके ध्वनिरहित मन की ध्वनि उसका हृदय न कि उसके विचार। तुम्हें उसके होने को जलप्रपात को सुनना है।

कैसे सुना जाए? बस मौन हो जाओ। अपने मन को बीच में मत लाओ। सोचना शुरू मत कर दो, वह क्या कह रहा है? बिना किसी निर्णय के कि यह या वह बिना यह कहे कि क्या वह गलत कह रहा है या ठीक तुम उससे सहमत हो या नहीं बस सुनो। उसको तुम्हारी सहमति की चिंता नहीं है। तुम्हें भी उसकी चिंता लेने की जरूरत नहीं है। तुम बस सुनो और आह्वानित होओ। सोसान जैसे व्यक्तियों का आनंद उठाया जा सकता है, वे प्रकृति की अदभुत घटना हैं।

एक खूबसूरत चट्टान—तुम इसके साथ क्या करते हो? तुम इसका आनंद लेते हो। तुम स्पर्श करते हो इसके चारों तरफ घूमते हो उस पर जमी हुई काई को महसूस करते हो। आकाश में चलते बादलों के साथ तुम क्या करते हो? तुम धरती पर नाचते हो और उनकी ओर देखते हो या चुपचाप धरती पर लेट जाते हो और उनकी ओर देखते हो और उन्हें तिरने देते हो। और वे तुम्हें भर देते हैं। केवल बाहरी आकाश को ही नहीं धीरे—धीरे तुम जितने अधिक शांत और मौन होते जाते हो वे तुम्हारे अंतर—आकाश को भी भर देते हैं। अचानक तुम वहां नहीं होते केवल बादल ही चल रहे होते हैं— भीतर और बाहर। विभाजन मिट जाता है अब सीमाएं नहीं रहतीं। तुम आकाश हो गए और आकाश तुम हो गया।

सोसान को एक प्राकृतिक घटना समझो। वह व्यक्ति नहीं है। वह परमात्मा है वह ताओं है, वह बुद्ध है। इससे पहले कि हम उसकी महत्ता में प्रवेश करें कुछ बातें समझ लेनी हैं। उनसे तुम्हें सहायता मिलेगी। मन एक रोग है। यह एक आधारभूत सत्य है जिसे पूरब ने खोजा है। पश्चिम का कहना है मन बीमार हो सकता है, स्वस्थ हो सकता है। पाश्चात्य मनोविज्ञान इस पर आधारित है कि मन स्वस्थ या बीमार हो सकता है, लेकिन पूरब का कहना है कि मन जैसा यह है रोग है, यह स्वस्थ नहीं हो सकता। कोई मनोचिकित्सा उसकी मदद नहीं कर सकती है ज्यादा से ज्यादा तुम उसे सामान्य बीमार बना सकते हो।

इसलिए मन दो प्रकार से रुग्ण है सामान्य रूप से रुग्ण—उसका अर्थ है तुम्हें वही बीमारी है जो तुम्हारे आस-पास के लोगों को है। या असामान्य रूप से रुग्ण— उसका अर्थ है कि तुम बिलकुल अलग हो। तुम्हारी बीमारी साधारण नहीं, अपवाद है। तुम्हारी बीमारी निजी है भीड़ वाली नहीं है यही एक मात्र अंतर है। सामान्य रूप से बीमार या असामान्य रूप से बीमार, लेकिन मन कभी स्वस्थ नहीं हो सकता, क्यों?

पूरब का कहना है कि मन का स्वभाव ही ऐसा है कि वह अस्वस्थ ही रहेगा। अंग्रेजी का यह शब्द 'हेल्थ' सुंदर है। यह उसी मूल से बनता है जिससे 'होल' शब्द बनता है। हेल्थ हीलिंग, होल होली—ये सभी उसी मूल से आते हैं।

मन कभी स्वस्थ नहीं हो सकता, क्योंकि वह कभी समग्र नहीं हो सकता है। मन सदा विभाजित है, विभाजन उसका आधार है। अगर यह समग्र नहीं हो सकता, तो यह स्वस्थ कैसे हो सकता है? अगर यह स्वस्थ नहीं हो सकता तो यह पवित्र कैसे हो सकता है? सभी मन अपवित्र हैं। पवित्र मन जैसा कुछ नहीं है। पवित्र व्यक्ति बिना मन के जीता है क्योंकि वह बिना विभाजन के जीता है।

मन ही रोग है। उस रोग का नाम क्या है?

अरिस्टोटल है उसका नाम या अगर तुम सच में ही चाहते हो कि यह एक रोग की भांति प्रतीत हो तो नया शब्द गढ़ सकते हो अरिस्टोटिलाइटिस। तब वह बिलकुल एक रोग की भांति प्रतीत होगा। अरिस्टोटल क्यों रोग है? क्योंकि अरिस्टोटल कहता है यह या वह, चुनो और चुनाव मन की प्रक्रिया है मन चुनाव रहित नहीं हो सकता।

चुनाव किया कि तुम जाल में फंसे क्योंकि जब भी तुम चुनाव करते हो तुम एक के विरोध में दूसरे को चुनते हो। अगर तुम एक के पक्ष में हो, तो तुम निश्चित ही दूसरे के विरोध में होओगे; तुम केवल पक्ष में नहीं हो सकते, तुम केवल विरोध में नहीं हो सकते। जब पक्ष आता है, तो विरोध पीछे-पीछे छाया की भांति चला आता है। जब विरोध है, तो पक्ष वहां होगा ही, अपूरकट या प्रकट।

जब तुम चुनाव करते हो, तो तुम विभाजन कर लेते हो। तब तुम कहते हो, 'यह ठीक है, वह गलत है।' और जीवन एक इकाई है। अस्तित्व अखंड बना रहता है अस्तित्व एक गहन सामंजस्य बना रहता है। वह एकत्व है। अगर तुम कहते हो, 'यह सुंदर है और वह कुरूप है' मन बीच में आ गया, क्योंकि जीवन दोनों एक साथ है। और सुंदर कुरूप हो जाता है, और कुरूप निरंतर सुंदर होता रहता है। कोई विभाजन रेखा नहीं है, कोई जल-अवरोधी कक्ष वॉटर टाइट कंपार्टमेंट नहीं है। जीवन यहां से वहां बहता रहता है।

मन के निर्धारित कक्ष हैं। जड़ता मन का स्वभाव है और तरलता जीवन का स्वभाव है। इसलिए मन अटक जाता है वह हमेशा निश्चित है। इसमें एक ठोसपन है। और जीवन ठोस नहीं, तरल है लचीला है वह विपरीत की ओर बहता रहता है।

कुछ जो इस समय जीवित है अगले क्षण मृत हो जाता है। इस क्षण जो युवा था वह अगले क्षण बूढ़ा हो जाता है। जो आंखें सुंदर थीं वे अब वहां नहीं हैं, केवल खंडहर हैं। चेहरा गुलाब सा था, अब वहां कुछ नहीं है—अतीत का भूत भी नहीं। सुंदर कुरूप हो जाता है जीवन मृत्यु हो जाता है, और मृत्यु नया जन्म लेती रहती है।

जीवन के साथ क्या करें? तुम चुनाव नहीं कर सकते। अगर तुम जीवन के साथ, पूर्ण के साथ होना चाहते हो तो तुम्हें चुनावरहित होना पड़ेगा।

मन एक चुनाव है। अरिस्टोटल ने इसे अपने तर्क और दर्शनशास्त्र का आधार बनाया। तुम सोसान से अरिस्टोटल जितना अधिक दूर कोई और व्यक्ति नहीं खोज सकते, क्योंकि सोसान कहता है, न यह न वह— चुनो ही मत। सोसान कहता है? चुनावरहित हो जाओ। सोसान कहता है 'भेद मत करो।' जिस क्षण तुम भेद करते हो, जिस क्षण चुनाव आता है तुम विभक्त खंडित हो चुके होते हो आशिक बन जाते हो तुम बीमार हो गए तुम पूर्ण नहीं रहे।

स्मरण रहे, अगर तुम एक ईसाई से पूछते हो जिसका वास्तव में जीसस से कोई नाता नहीं है जो मूल रूप से अरिस्टोटल से जुड़ा है—ईसाइयत जीसस आधारित कम और अरिस्टोटल आधारित ज्यादा है। जीसस सोसान जैसे ही थे। वे कहते हैं, 'निर्णय मत करो तुम निर्णय मत लो।' वे कहते हैं, कोई चुनाव मत करो। मत कहो, यह अच्छा है और वह बुरा है। यह तुम्हारा मामला नहीं है। समग्र को फैसला करने दो। तुम निर्णायक मत बनो। लेकिन असलियत में ईसाइयत जीसस केंद्रित नहीं है। ईसाइयत के संस्थापक जीससवादी कम अरिस्टोटलवादी ज्यादा थे।

तुम सोसान या जीसस का चर्च नहीं बना सकते। अगर तुम चुनावरहित रहो तो चर्च कैसे बना सकते हो? चर्च किसी के पक्ष में और किसी के विपक्ष में होगा; इसे ईश्वर के पक्ष में और शैतान के विरोध में होना ही पड़ेगा। और जीवन में ईश्वर और शैतान दो नहीं हैं, वे एक हैं। शैतान उसी ऊर्जा का एक चेहरा है और परमात्मा दूसरा चेहरा है—वे दो नहीं हैं।

कभी वह शैतान के रूप में और कभी वह परमात्मा के रूप में आता है। और अगर तुम गहरे जा सको और देखो, तो तुम पाओगे कि वे एक जैसे हैं। कभी वह चोर के रूप में और कभी साधु के रूप में आता है। कभी तुम उसे उन लोगों के बीच पाओगे जिनका आदर है और कभी उन लोगों में पाओगे जो निंदित हैं। वह गतिमान है वह एक गति है। और उसके लिए कोई किनारा पहुंच से दूर नहीं है कोई उसकी पहुंच से बाहर नहीं है, वह सब में गति करता है।

जीसस कोई भेद नहीं करते लेकिन ईसाइयत भेदभाव करती है। क्योंकि धर्म को करना पड़ता है—धर्म को नैतिकता बनना पड़ता है। और एक बार जब धर्म नैतिकता बन जाता है तब वह धर्म नहीं रह जाता। धर्म बड़े से बड़ा साहस है जितना संभव हो सकता है। वह चुनाव-रहित होने का सबसे बड़ा साहस करता है क्योंकि मन कहता है चुनाव करो! मन कहता है कुछ तो कहो! यह बुरा है वह अच्छा है। यह सुंदर है वह कुरूप है। मैं इससे प्यार करता हूं मैं उससे घृणा करता हूं। मन कहता है चुनाव करो! मन का रस विभाजन में है। एक बार जब तुम विभाजन कर लेते हो, तो मन को चैन मिल जाता है। अगर तुम विभाजन नहीं करते अगर तुम कहते हो 'मैं कुछ भी नहीं कहूंगा मैं कुछ निर्णय न लूंगा' मन को लगता है कि वह अब मरने के करीब है।

अरिस्टोटल कहता है अ-अ है और वह गैर-अ नहीं हो सकता—विपरीतताएं मिल नहीं सकतीं। सोसान कहता है विपरीतताएं हैं ही नहीं—वे तो पहले से ही मिल रही हैं वे सदा से ही मिलती रही हैं। यह मूलभूत सत्यों में से एक सत्य है जिसे जान लेना आवश्यक है कि विपरीत विरोधी नहीं है। यह तुम ही हो जो कहते हो कि वे

विपरीत हैं अन्यथा वे विपरीत नहीं हैं। अस्तित्वगत रूप से देखो और तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा कि वे एक ही ऊर्जा हैं।

तुम किसी व्यक्ति से प्रेम करते हो.. एक महिला मेरे पास आई और उसने कहा, 'मैं दस वर्षों से उस व्यक्ति के साथ विवाहित हूँ और हमारा कभी झगड़ा नहीं हुआ। और अब अचानक क्या हो गया कि वह मुझे छोड़ कर चला गया है।'

अब वह सोचती है कि अगर वे कभी झगड़े नहीं तो इससे यही प्रकट होता है कि वे गहरे प्रेम में थे। यह मूर्खता है—परंतु यह अरिस्टोटल का ढंग है। महिला बिलकुल तर्कपूर्ण है।

उसने कहा दस वर्ष हम विवाहित रहे, हमारा कभी झगड़ा नहीं हुआ, हम कभी एक-दूसरे पर क्रोधित नहीं हुए। वह कह रही है, हम इतने गहरे प्रेम में थे कि कभी किसी बात पर झगड़े नहीं। कोई भी क्षण असहमति का नहीं था। और अब क्या हुआ? अचानक वह मुझे छोड़ गया है। क्या वह पागल हो गया है? हमारा प्रेम इतना गहरा था। वह महिला गलत है।

अगर प्रेम गहरा है तो कुछ झगड़ा तो होगा ही। कभी तुम लड़ोगे। और लड़ाई—झगड़े से प्रेम टूटेगा नहीं यह इसे समृद्ध करता है। अगर प्रेम है तो लड़ाई—झगड़े से पुष्ट होगा अगर प्रेम नहीं है तो तुम टूट जाते हो अलग हो जाते हो। दस वर्ष एक लंबा समय है—मन की एक ही अवस्था में रुके रहने के लिए चौबीस घंटे भी एक लंबा समय है क्योंकि मन विपरीत की ओर गति करता है।

तुम किसी से प्रेम करते हो कभी तुम्हें गुस्सा भी आता है। सच में तुम्हें गुस्सा आता है क्योंकि तुम प्रेम करते हो। कभी तुम घृणा करते हो! कभी तुम अपने प्रेमी के लिए स्वयं को न्योछावर कर देना चाहोगे और कभी तुम प्रेमी की हत्या कर देना चाहोगे। और दोनों तुम ही हो।

अगर तुम दस वर्षों में कभी नहीं झगड़े तो इसका अर्थ है कि प्रेम था ही नहीं। इसका अर्थ है कि वह एक रिश्ता था ही नहीं। और तुम इतने भयभीत थे कि किसी प्रकार का क्रोध किसी प्रकार का झगड़ा कोई जरा सी बात सब खत्म कर देगी। तुम इतने भयभीत थे कि कभी झगड़े ही नहीं। तुम्हें यह कभी विश्वास नहीं हुआ कि प्रेम झगड़े से अधिक गहरा जा सकता था, झगड़ा क्षण भर के लिए होगा और झगड़े के बाद तुम एक-दूसरे की बांहों में और गहराई से समा जाओगे। नहीं तुम्हें ऐसा भरोसा नहीं था। इसलिए तुम ऐसा कर पाए कि कभी झगड़ा न हो। और इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं कि वह व्यक्ति छोड़ कर चला गया है। मैंने कहा 'मैं हैरान हूँ कि वह दस साल तुम्हारे साथ रहा कैसे। क्यों?'

एक व्यक्ति मेरे पास आया और उसने कहा मेरे बेटे को कुछ हो गया है। मैं उसे बीस वर्षों से जानता हूँ—वह हमेशा आज्ञाकारी था। ऐसा अच्छा लड़का आपको कहीं नहीं मिल सकता। उसने कभी आशा का उल्लंघन नहीं किया, वह कभी मेरे विरुद्ध नहीं गया। और अब अचानक हिप्पी हो गया है। अब अचानक वह मेरी सुनता ही नहीं है। वह मेरी तरफ ऐसे देखता है जैसे मैं उसका बाप ही न होऊँ। वह मुझे इस तरह देखता है जैसे मैं कोई अजनबी हूँ। और बीस वर्ष वह बहुत ही आज्ञाकारी था। मेरे बेटे को क्या हो गया है? कुछ नहीं हुआ है। यही अपेक्षित था क्योंकि यदि बेटा वास्तव में पिता से प्रेम करता है तो आशा का उल्लंघन भी कर सकता है उसे और किसकी अवज्ञा करनी चाहिए? अगर बेटा सच में ही पिता से प्रेम करता है और उस पर विश्वास करता है कभी वह अवहेलना भी करता है—क्योंकि वह जानता है कि रिश्ता इतना गहरा है कि आज्ञापालन न करने से टूट नहीं सकता। बल्कि इसके विपरीत वह और भी दृढ़ होगा। विपरीत समृद्ध करता है।

वास्तव में विपरीत विपरीत नहीं है। वह तो बस एक लय है समानता की लय तुम आज्ञापालन करते हो और फिर आशा भंग करते हो— यह एक लयबद्धता है। नहीं तो, तुम आशा पालन करते जाते हो करते जाते हो सब एकरस और मृत हो जाता है। एकरसता मृत्यु का स्वभाव है क्योंकि वहां विपरीत मौजूद नहीं होते।

जीवन सक्रिय जीवंत है। वहां विपरीत है वहां एक लयबद्धता है। तुम आगे जाते हो पीछे लौटते हो तुम प्रस्थान करते हो तुम पहुंच जाते हो तुम अवज्ञा करते हो फिर आज्ञापालन कर लेते हो तुम प्रेम करते हो और घृणा करते हो। यह जीवन है यह तर्क नहीं है। तर्क कहता है कि अगर तुम प्रेम करते हो तो तुम घृणा नहीं कर सकते! अगर तुम प्रेम करते हो तो तुम क्रोधित कैसे हो सकते हो? अगर तुम इस तरह प्रेम करते हो तो प्रेम में एकरसता आ जाएगी फिर वही स्वर। लेकिन तुम तनावग्रस्त हो जाओगे फिर विश्राम असंभव है।

तर्कशास्त्र रेखीय तथ्य में विश्वास करता है तुम एक ही रेखा में चलते हो। जीवन वर्तुलों में विश्वास करता है, वही रेखा ऊपर जाती है, नीचे आती है, एक वर्तुल बन जाता है। तुमने यिन और यांग का चीनी वर्तुल देखा होगा। जीवन ऐसा ही है विपरीतों का मिलन। यिन और यांग का वर्तुल आधा सफेद है और आधा काला है। सफेद में काला बिंदु है और काले में सफेद बिंदु है। सफेद काले की ओर और काला सफेद की ओर जा रहा है—यह एक वर्तुल है। स्त्री पुरुष में मिल रही है और पुरुष स्त्री में मिल रहा है। यही जीवन है। और अगर तुम बारीकी से देखो तो तुम इसे अपने भीतर देखोगे।

पुरुष दिन के चौबीस घंटे पुरुष नहीं होता, वह हो नहीं सकता—कभी-कभी वह स्त्री होता है। स्त्री दिन के चौबीस घंटे स्त्री नहीं होती—कभी वह पुरुष भी होती है। वे विपरीत की ओर गति करते हैं। जब स्त्री क्रोधित होती है तो वह स्त्री नहीं रह जाती वह किसी भी पुरुष से अधिक आक्रामक हो जाती है और वह किसी पुरुष से कहीं अधिक खतरनाक हो जाती है क्योंकि उसका पुरुषत्व बिलकुल शुद्ध है जिसका कभी उपयोग नहीं हुआ। और जब वह इसका उपयोग करती है, इसमें ऐसी तीक्षाता होती है कि कोई पुरुष उसका मुकाबला नहीं कर सकता। यह उस मिट्टी की भांति है जिसका कई वर्षों से उपयोग नहीं हुआ; फिर तुम उसमें बीज डालते हो— और भरपूर फसल होती है।

कभी-कभी कोई स्त्री पुरुष हो जाती है और जब ऐसा होता है तो कोई पुरुष उससे प्रतियोगिता नहीं कर सकता। तब वह बहुत ही खतरनाक होती है तब यही उचित है कि पुरुष झुक जाए। और यही तो सभी पुरुष करते हैं— वे आज्ञाकारी बन जाते हैं वे समर्पण कर देते हैं क्योंकि पुरुष को तुरंत स्त्री बन जाना पड़ता है अन्यथा मुसीबत हो जाएगी। एक म्यान में दो तलवारें— मुसीबत हो जाएगी। अगर स्त्री पुरुष हो गई है, उसने भूमिका बदल ली है पुरुष एकदम स्त्री बन जाता है। अब सबकुछ फिर से व्यवस्थित हो जाता है। फिर वर्तुल पूरा हो जाता है।

और जब भी पुरुष दब जाता है और समर्पण कर देता है उस समर्पण में जो शुद्धता होती है उसका मुकाबला कोई स्त्री नहीं कर सकती। क्योंकि साधारणतया उस खेल में वह कभी उस स्थिति में नहीं होता है। आमतौर पर वह डट कर सामना करता है। साधारणतया वह संकल्प है समर्पण नहीं। लेकिन जब वह समर्पण करता है, उसमें ऐसी निर्दोषता होती है जिसका मुकाबला स्त्री नहीं कर सकती। जब पुरुष प्रेम में हो, उसे देखो— वह एक बच्चा हो जाता है।

लेकिन जीवन ऐसे ही चलता है। और अगर तुम इसे समझते हो, तो तुम जरा भी चिंतित नहीं होते। तब तुम जानते हो प्रेमी बिछुड़ गया है वह लौट कर आएगा; प्रेमिका नाराज है वह प्रेम करेगी। तब तुम धैर्य रखते हो। अरस्तू के साथ तुम धैर्य नहीं रख सकते हो, क्योंकि अगर प्रेमी छोड़ गया है तो वह रेखीय यात्रा पर निकल

गया है वापसी नहीं हो सकती, यह वर्तुल नहीं है। लेकिन पूरब में हम वर्तुल में विश्वास रखते हैं, पश्चिम में वे रेखा में विश्वास करते हैं।

पाश्चात्य मन रेखीय है पूरब का मन वर्तुलाकार है। इसलिए पूरब में एक प्रेमी प्रतीक्षा कर सकता है। वह जानता है कि जो स्त्री अब छोड़ कर चली गई है वह लौट आएगी। वह रास्ते पर है वह निश्चित ही पछता रही है उसको पछतावा हो चुका है, वह आ ही रही है देर-सबेर वह दरवाजे पर दस्तक देगी। बस इंतजार करो....क्योंकि विपरीत सदा वहां है।

और जब कभी स्त्री गुस्से के बाद लौटती है, तब प्रेम फिर ताजा हो जाता है। अब वह पुनरावृत्ति नहीं है। क्रोध के अंतराल ने अतीत को मिटा दिया है। अब फिर वह एक युवती है, एक कुंवारी लड़की है। वह फिर प्रेम में पड़ जाती है- सब-कुछ ताजा हो जाता है।

अगर तुम यह समझते हो तो तुम किसी बात के विरोध में नहीं होते। तुम्हें पता है कि क्रोध भी सुंदर है, छोटे-मोटे झगड़े जीवन को रंग देते हैं। और सब-कुछ समृद्धि में सहायक होता है। तब तुम स्वीकार करते हो, तब गहन स्वीकार में तुम धैर्यवान हो जाते हो, तब कोई अधीरता नहीं और कोई जल्दी नहीं। तब तुम प्रतीक्षा कर सकते हो और प्रार्थना कर सकते हो और आशा कर सकते हो और स्वप्न देख सकते हो।

वरना अगर जीवन रेखीय है- जैसा कि अरस्तू सोचता है, या जैसे पश्चिमी विचारधारा ने अरस्तू से बर्ट्रेड रसल तक की यात्रा की है- जैसा कि बर्ट्रेड रसल सोचता है, तब जीवन में बहुत अधैर्य है। कोई भी वापस लौटने वाला नहीं है तब तुम सदा कंपित, भयभीत हो और तुम दमनात्मक हो जाते हो। तब तुम एक स्त्री के साथ चाहे दस वर्ष रहो या दस जीवन रहो वह एक अजनबी के साथ ही रहना होगा। तुम स्वयं पर नियंत्रण कर रहे हो, वह अपने पर नियंत्रण रख रही है और कोई मिलन नहीं होता। जीवन तर्क नहीं है। तर्क एक अंश है-निस्संदेह बहुत ही स्पष्ट, वर्गीकृत कक्षीकृत विभाजित- लेकिन जीवन अस्त-व्यस्त है। लेकिन क्या करें? यह ऐसा ही है। यह इतना वर्गीकृत, इतना स्पष्ट, इतना विभाजित नहीं है-यह अराजक है। लेकिन तर्क मृत है और जीवन सक्रिय है तो प्रश्न यह उठता है कि सुसंगति को चुनें या जीवन को चुनें।

अगर तुम संगति के पक्ष में बहुत अधिक हो तो तुम मृत हो जाओगे और-और मृत होते जाओगे क्योंकि संगति तभी संभव है जब तुम विरोधों को बिलकुल छोड़ दो। फिर तुम प्रेम करो और केवल प्रेम करो और केवल प्रेम करो और कभी क्रोध न करो कभी नफरत न करो कभी लड़ाई-झगड़ा न करो। तुम आज्ञापालन करो केवल आज्ञापालन- कभी अवज्ञा न करो, कभी विद्रोह न करो कभी भटको नहीं। लेकिन तब सब बासी हो जाता है, तब संबंध विषाक्त हो जाता है- तब यह तुमको मार डालता है।

सोसान तर्क के पक्ष में नहीं है वह जीवन के पक्ष में है। अब उसके शब्दों की सार्थकता को समझो  
सोसान कहता है:

महापथ उनके लिए कठिन नहीं है जिनकी

अपनी कोई प्राथमिकताएं नहीं है।

जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते, सब-कुछ सुस्पष्ट होता है

और कुछ भी छिपा नहीं रहता।

थोडा सा भेद और पृथ्वी और स्वर्ग में अनंत दूरी हो जाती है।

अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो,

तो पक्ष या विपक्ष में राय मत बनाओ।

तुम्हारी पसंद और नापसंद का संघर्ष ही मन का रोग है।

ठीक नांगर की भांति ' सरल ही उचित है। ' महापथ कठिन नहीं है.. अगर यह कठिन प्रतीत होता है तो तुम ही हो जो इसे कठिन बनाते हो। महापथ सरल है। यह कैसे कठिन हो सकता है? पेड़ भी इसका अनुसरण करते हैं, नदी भी इसका अनुसरण करती है चट्टानें भी इसका अनुसरण करती हैं। यह कठिन कैसे हो सकता है? पक्षी भी इसमें उड़ते हैं और मछलियां भी इसमें तैरती हैं। यह कैसे कठिन हो सकता है? आदमी इसे मुश्किल बना देता है, मन इसे मुश्किल बनाता है— और सरल को कठिन बनाने की युक्ति है चुनाव करना, विभेद करना।

प्रेम सरल है घृणा सरल है, लेकिन तुम चुनाव करते हो। तुम कहते हो, 'मैं सिर्फ प्रेम करूंगा, मैं घृणा नहीं करूंगा।' अब सब मुश्किल हो गया। अब तुम प्रेम भी नहीं कर सकते। श्वास भीतर लेना सरल है, श्वास बाहर छोड़ना सरल है। तुम चुनते हो। तुम कहते हो, ' मैं श्वास केवल भीतर लूंगा, मैं श्वास बाहर नहीं निकालूंगा। ' अब सब—कुछ मुश्किल हो गया।

मन कह सकता है 'श्वास बाहर क्यों निकालूं? श्वास जीवन है। 'सीधा गणित है, श्वास भीतर लेते रहो, बाहर मत निकालो और तुम अधिकाधिक जीवंत होते जाओगे। अधिकाधिक जीवन संगृहीत होता जाएगा। तुम जीवन के महाकोष बन जाओगे। केवल श्वास भीतर लो बाहर मत छोड़ो, क्योंकि बाहर छोड़ना मृत्यु है।

स्मरण रहे, पहली बात जो जन्म के समय बच्चे को करनी पड़ती है वह है श्वास को भीतर लेना। और मरते समय आखिरी बात जो मनुष्य को करनी पड़ती है वह है श्वास को बाहर छोड़ना। जीवन भीतर आती श्वास के साथ शुरू होता है और मृत्यु बाहर जाती श्वास के साथ शुरू होती है। हर पल जब तुम श्वास भीतर लेते हो तुम्हारा पुनर्जन्म होता है और हर पल जब तुम श्वास बाहर छोड़ते हो तुम मृत होते हो, क्योंकि श्वास जीवन है। इसीलिए हिंदुओं ने इसे प्राण कहा है। प्राण का अर्थ है जीवन। श्वास जीवन है।

सीधे तर्क सरल गणित के साथ कोई कठिनाई नहीं है, तुम इसे स्पष्ट रूप दे सकते हो ज्यादा से ज्यादा श्वास भीतर लो और बाहर मत निकालो तब तुम कभी नहीं मरोगे। अगर तुम श्वास बाहर निकालते हो, तो तुम्हें मरना ही पड़ेगा। और अगर तुम ऐसा ज्यादा करते हो तो तुम जल्दी मरोगे। यह गणित सीधा—सरल है... सरल प्रतीत होता है। तब तर्कशास्त्री को क्या करना चाहिए? एक तर्कशास्त्री केवल श्वास भीतर लेगा, कभी बाहर नहीं छोड़ेगा।

प्रेम श्वास को बाहर छोड़ना है और घृणा श्वास को भीतर लेना है।

फिर क्या करें? जीवन सरल है अगर तुम निर्णय नहीं लेते क्योंकि तब तुम जानते हो कि श्वास भीतर लेना और बाहर छोड़ना दो विरोधी बातें नहीं हैं वे एक ही प्रक्रिया के दो हिस्से हैं। और वे दोनों संघटित हिस्से हैं तुम उन्हें विभाजित नहीं कर सकते। और अगर तुम श्वास बाहर न छोड़ो. तर्कशास्त्र गलत है तुम जिंदा नहीं रहोगे, तुम जल्दी ही मर जाओगे।

कोशिश करो—केवल श्वास भीतर लो और बाहर मत छोड़ो। तुम समझ जाओगे, तुम अत्यंत तनावग्रस्त हो जाओगे। तुम्हारे पूरे प्राण श्वास को बाहर छोड़ना चाहेंगे, क्योंकि यह तो मृत्यु बनने जा रहा है। अगर तुम चुनाव करते हो तो तुम मुश्किल में पड़ जाओगे। अगर तुम चुनाव नहीं करते तो सभी कुछ सरल हो जाएगा। सरल ही ठीक है।

अगर आदमी मुश्किल में है तो इसका कारण हैं बहुत सारे शिक्षक जिन्होंने उसके मन को विषाक्त कर दिया है जो उसे शिक्षा देते रहे हैं यह चुनो यह मत करो, वह करो। उनके करने और न करने की सूची ने तुम्हें मार डाला है। और वे तर्कसंगत प्रतीत होते हैं। अगर तुम उनके साथ तर्क करते हो तो वे जीत जाएंगे। तर्कशास्त्र उनकी सहायता करेगा देखो! यह बहुत सीधी सी बात है। अगर यह मृत्यु है, तो श्वास क्यों बाहर छोड़े और ऐसा केवल श्वास के साथ ही नहीं हुआ. या श्वास के साथ भी हुआ है। योग की ऐसी शाखाएं हैं जो कहती हैं कि

तुम्हारे जीवन का हिसाब श्वासों के माध्यम से रखा जाता है, तुम्हारा जीवन वर्षों में नहीं श्वासों में गिना जाता है- इसलिए श्वास धीमे से लो। अगर तुम एक मिनट में बारह श्वास लेते हो, तो तुम्हारी मृत्यु शीघ्र हो जाएगी; छह श्वास लो, या तीन तब तुम अधिक समय तक जीवित रहोगे।

कोई भी सफल नहीं हुआ है, लेकिन लोग प्रयत्न करते रहते हैं, धीमे- धीमे श्वास लेते हैं। क्यों? क्योंकि अगर तुम धीरे- धीरे श्वास लेते हो, श्वास कम से कम बाहर जाएगी, तो कम मृत्यु घटित होगी या तुम लंबा जीवन जी सकोगे। केवल एक बात होगी कि जीने का मजा समाप्त हो जाएगा। यह लंबा नहीं होगा, लेकिन यह लंबा प्रतीत हो सकता है।

कहते हैं कि विवाहित लोग अविवाहितों की अपेक्षा ज्यादा जीते हैं इसलिए किसी ने नसरुद्दीन से पूछा नसरुद्दीन! क्या यह सच है?

नसरुद्दीन ने कहा ऐसा लगता है। विवाहित व्यक्ति लंबा जीवन नहीं जीता, लेकिन ऐसा लगता है कि उसने लंबा जीवन जीया है। क्योंकि जब मुसीबतें अधिक हों तब समय लंबा प्रतीत होता है जब कोई विपत्ति न हो तो समय छोटा लगता है।

ये तथाकथित योगी जो कम से कम और धीमे- धीमे श्वास लेते हैं वे सिर्फ जीवन की प्रक्रिया को मंद कर देते हैं। वे कम जीवत हैं, बस इतना ही है। वे अधिक नहीं जीएंगे लेकिन कम जीवित होंगे। वे पूरी तरह जीवित नहीं हैं; उनका दीया पूरी तरह जल नहीं रहा है। उत्साह, उमंग नृत्य खो गया है। वे केवल अपने को घसीटते हैं, बस ऐसा ही है।

यही कामवासना के साथ हुआ है, क्योंकि लोग सोचते हैं कि काम के साथ मृत्यु प्रवेश करती है। और वे ठीक हैं क्योंकि काम-ऊर्जा जीवन को जन्म देती है- इसलिए जितनी काम-ऊर्जा बाहर निकलती है, उतना ही जीवन बाहर निकल जाता है। तर्कसंगत बिलकुल अरस्तू का ढंग परंतु मूढतापूर्ण। तुम्हें तर्कशास्त्रियों से अधिक मूर्ख व्यक्ति नहीं मिलेंगे। यह तर्कयुक्त बात है कि जीवन-ऊर्जा काम सेक्स से मिलती है- एक बच्चे का जन्म काम के कारण होता है- काम जीवन का स्रोत है- इसलिए इसे भीतर ही सम्हालो। इसे बाहर मत जाने दो, नहीं तो तुम मर जाओगे। इसलिए सारा संसार भयभीत हो गया है। लेकिन यह भी वही श्वास को भीतर ही रखने जैसी बात है और फिर पूरे प्राण इसे बाहर फेंक देना चाहते हैं। तुम्हारे तथाकथित ब्रह्मचारी जो काम-ऊर्जा को भीतर ही सम्हाले रखना चाहते हैं, वीर्य को भीतर ही रखना चाहते हैं उनका पूरा शरीर उसे बाहर फेंकना चाहता है। उनका पूरा जीवन कामुक हो जाता है- उनका मन कामुक हो जाता है वे कामवासना के ही सपने देखते हैं वे कामवासना के बारे में ही सोचते हैं। वे कामग्रस्त हो जाते हैं- क्योंकि वे कुछ ऐसा करने की चेष्टा कर रहे हैं जो तर्कसंगत तो है लेकिन जीवन के प्रति सच्चा नहीं है। और वे लंबा जीवन नहीं जीते वे जल्दी मर जाते हैं।

यह एक नई खोज नई शोध है कि आदमी लंबे समय तक जीता है, अगर वह अपने काम-जीवन को जितना संभव हो उतना लंबा कर ले। अगर व्यक्ति अस्सी वर्ष की आयु में भी काम- भोग कर सकता हो, तो उसकी आयु बढ़ सकती है। क्यों? क्योंकि जितनी श्वास तुम बाहर निकाल सकते हो उतनी ही श्वास भीतर ले सकते हो। ठीक ऐसे ही.. अगर तुम्हें अधिक जीवन चाहिए तो अधिक श्वास बाहर निकालो, इस तरह तुम भीतर एक रिक्त स्थान बनाते हो और अधिक श्वास भीतर आती है। तुम भीतर आती श्वास के विषय में न सोचो। जितना संभव हो तुम केवल उतनी श्वास बाहर निकालो और तुम्हारा सारा अस्तित्व श्वास भीतर खींच लेगा। अधिक प्रेम करो- वह श्वास का बाहर निकालना है- और तुम्हारा शरीर पूरे ब्रह्मांड से ऊर्जा ग्रहण कर लेगा। तुम खालीपन निर्मित करते हो और ऊर्जा आती है।

जीवन की सभी प्रक्रियाओं में ऐसा ही होता है। तुम खाते हो लेकिन तुम कृपण हो जाते हो तुम्हें कब्ज हो जाता है। तर्क ठीक है, श्वास बाहर मत निकालो। कब्ज का अर्थ है श्वास भीतर लेने का चुनाव करना और श्वास बाहर निकालने के विरोध में होना। लगभग प्रत्येक सभ्य व्यक्ति को कब्ज है तुम सभ्यता को कब्ज के द्वारा माप सकते हो। जो देश जितना अधिक कब्ज का शिकार है, उतना ही अधिक सभ्य है, क्योंकि वह उतना ही अधिक तर्कसंगत है। श्वास बाहर क्यों निकालना? बस श्वास भीतर लेते जाओ। भोजन ऊर्जा है। बाहर क्यों फेंकना? तुम्हें पता हो या न हो लेकिन यह अवचेतन में तार्किक होना है, अरस्तू के ढंग से सोचना है।

लेकिन जीवन बाहर फेंकने और भीतर ग्रहण करने में एक संतुलन है। तुम केवल एक मार्ग हो। बांटो दो और तुम्हें और ज्यादा मिलेगा। कृपण बनो किसी को मत दो तो तुम्हें कम मिलेगा क्योंकि तुम्हें उसकी आवश्यकता नहीं है।

याद रखो, और अपनी जीवन-प्रक्रियाओं को गौर से देखो। अगर तुम वास्तव में बुद्धत्व को समझने में रुचि रखते हो तो देना याद रखो ताकि तुम्हें और दिया जा सके जो कुछ भी हो...। श्वास बाहर अधिक छोड़ो। बांटने का देने का यही अर्थ है।

अपनी ऊर्जा को दूसरों को बांटना उपहार है, इसलिए तुम्हें और अधिक दिया जाता है। लेकिन मन कहता है... इसका अपना तर्क है और सोसान उस तर्क को रोग कहता है।

महापथ उनके लिए कठिन नहीं है

तुम उसे कठिन बनाते हो, तुम कठिन हो।

महापथ सहज है जिनकी अपनी कोई प्राथमिकताएं नहीं हैं।

किसी को ज्यादा पसंद मत करो- बस जीवन को गति करने दो। तुम जीवन से मत कहो, ' इस तरफ चलो, उत्तर की ओर जाओ या दक्षिण जाओ। ' तुम यह कहो ही मत, बस तुम जीवन के साथ बहो। तुम धारा के विरुद्ध लडो मत, तुम धारा के साथ एक हो जाओ...' उनके लिए जिनकी अपनी कोई प्राथमिकताएं नहीं हैं। '

महापथ सरल है.. ' उनके लिए जिनकी अपनी कोई प्राथमिकताएं नहीं हैं। 'और तुम्हारे पास प्राथमिकताएं हैं हर चीज के लिए। तुम हर बात में अपना मन बीच में ले आते हो। तुम कहते हो, ' मुझे अच्छा लगता है, मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे यह पसंद है, मुझे वह पसंद नहीं है। '

जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते

जब तुम्हारी कोई प्राथमिकताएं नहीं हैं जब 'पक्ष' और 'विपक्ष' की सारी वृत्तियां नहीं हैं प्रेम और घृणा दोनों नहीं हैं तुम्हें न तो कुछ पसंद है और न कुछ नापसंद है तुम सिर्फ सब-कुछ होने देते हो।

सब-कुछ सुस्पष्ट होता है और कुछ भी छिपा नहीं रहता। थोड़ा सा भेद, और पृथ्वी और स्वर्ग में अनंत दूरी हो जाती है।

लेकिन तुम्हारा मन कहेगा, ' अगर तुमने चुनाव नहीं किया, तो तुम पशु हो जाओगे। अगर तुम चुनाव नहीं करते, तो तुममें और एक वृक्ष में क्या अंतर रह जाएगा?' एक अंतर होगा, एक बहुत बड़ा अंतर लेकिन वह अंतर नहीं जो मन को बीच ले आता है, एक अंतर जो सजगता से आता है। वृक्ष चुनावरहित है, अचेतन है तुम

चुनावरहित होओगे सचेतन। यही अर्थ है चुनावरहित सजगता का और यही सबसे बड़ा भेद है : तुम सजग होओगे कि तुम चुनाव नहीं कर रहे।

और यह सजगता, तुम्हें ऐसी गहनशांति देती है.. .तुम बुद्ध हो जाते हो तुम सोसान हो जाते हो, नागर हो जाते हो। एक वृक्ष नागर नहीं हो सकता। नागर एक वृक्ष की भांति है और उससे ज्यादा भी। वह वृक्ष के समान है जहां तक चुनाव का संबंध है, और वह वृक्ष से सर्वथा भिन्न है जहां तक चेतना का संबंध है। वह पूरी तरह होशपूर्ण है कि वह चुनाव नहीं कर रहा है।

जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते... प्रेम और घृणा दोनों ही तुम्हारी आंखों पर रंग चढ़ा देते हैं और तुम स्पष्ट नहीं देख पाते। अगर तुम किसी से प्रेम करते हो, तो तुम उसमें वे चीजें देखने लगते हो जो हैं नहीं। कोई स्त्री इतनी सुंदर नहीं है जितना तुम तब सोचते हो जब तुम उसके प्रेम में होते हो क्योंकि तुम प्रक्षेपण करते हो। तुम्हारे मन में सपने वाली एक लड़की है और तुम सपनों वाली उसी लड़की को प्रक्षेपित करते हो। असली लड़की केवल एक पर्दे की भांति काम करती है।

इसीलिए देर-अबेर प्रत्येक प्रेम असफल हो जाता है, क्योंकि कोई लड़की कितनी देर पर्दे का काम कर सकती है? वह वास्तविक व्यक्ति है। एक दिन वह बता देगी, वह कहेगी, ' मैं पर्दा नहीं हूं। ' वह कितनी देर तक तुम्हारे प्रक्षेपण के अनुरूप ठीक बैठ सकती है? देर-अबेर तुम्हें लगेगा कि वे एकरूप नहीं हैं। प्रारंभ में लड़की मान गई, प्रारंभ में तुम मान गए ' तुम उसके लिए एक प्रक्षेपण-पर्दा थे वह तुम्हारे लिए प्रक्षेपण-पर्दा थी।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी उससे कह रही थी- मैंने इसे सुन लिया- वह कह रही थी, तुम मुझे अब उतना प्रेम नहीं करते जितना उस समय करते थे जब तुम प्रणय—निवेदन कर रहे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा प्रिये, उन बातों पर अधिक ध्यान मत दो- वे तो केवल लुभावनी बातें थीं। मैं उसे भूल जाता हूं जो तुमने कहा था तुम उसे भूल जाओ जो मैंने कहा था। आओ अब हम असली रूप में आ जाएं।

कोई भी तुम्हारे लिए सदा पर्दे का काम नहीं कर सकता क्योंकि वह कष्टदायक है। कैसे कोई तुम्हारे सपनों के साथ समायोजित हो सकता है? उसकी अपनी वास्तविकता है, और वास्तविकता अपना दावा करती है।

अगर तुम किसी से प्रेम करते हो, तो तुम उन चीजों का प्रक्षेपण कर लेते हो जो वहां नहीं हैं। अगर तुम किसी से घृणा करते हो तब भी तुम उन चीजों का प्रक्षेपण कर लेते हो जो वहां नहीं हैं। प्रेम में व्यक्ति भगवान हो जाता है, घृणा में व्यक्ति शैतान हो जाता है- और व्यक्ति न तो भगवान है और न ही शैतान है। व्यक्ति केवल व्यक्ति है। ये शैतान और भगवान प्रक्षेपण हैं। अगर तुम प्रेम करते हो, तुम स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते। अगर तुम घृणा करते हो, तुम स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते।

जब पसंद या नापसंद कुछ नहीं है, तुम्हारी आंखें साफ हैं, तुम्हारे पास एक स्पष्टता है। तब तुम दूसरे को वैसा ही देखते हो, जैसा वह है। और जब तुम्हारे पास चेतना की स्पष्टता है, तो सारा अस्तित्व अपनी वास्तविकता तुम्हारे सम्मुख प्रकट कर देता है। वही वास्तविकता परमात्मा है, वही वास्तविकता सत्य है।

इसका क्या अर्थ है? क्या सोसान जैसा व्यक्ति प्रेम नहीं करेगा? उसके प्रेम की गुणवत्ता बिलकुल भिन्न होगी वह तुम्हारे प्रेम जैसा नहीं होगा। वह प्रेम करेगा लेकिन उसका प्रेम चुनाव नहीं होगा। वह प्रेम करेगा, लेकिन उसका प्रेम प्रक्षेपण नहीं होगा। वह प्रेम करेगा, लेकिन उसका प्रेम अपने सपने के लिए नहीं होगा। वह यथार्थ को प्रेम करेगा। यथार्थ के प्रति प्रेम करुणा है।

वह इस तरह या उस तरह प्रक्षेपण नहीं करेगा। वह तुममें भगवान या शैतान नहीं देखेगा। वह सिर्फ तुम्हें देखेगा और वह बांटेगा क्योंकि उसके पास पर्याप्त है- और जितना तुम बांटते हो उतना बढ़ता है। वह अपना आनंद तुम्हारे साथ बांटेगा।

जब तुम प्रेम करते हो, तुम उसे दूसरे पर प्रक्षेपित करते हो। तुम देने के लिए प्रेम नहीं करते- तुम लेने के लिए प्रेम करते हो तुम शोषण के लिए प्रेम करते हो। जब तुम किसी से प्रेम करते हो तो तुम उसे अपने अनुसार अपने विचारों के अनुसार बनाने का प्रयत्न शुरू कर देते हो। प्रत्येक पति ऐसा कर रहा है प्रत्येक पत्नी ऐसा कर रही है प्रत्येक मित्र ऐसा कर रहा है। वे एक-दूसरे को वास्तविक को बदलने की चेष्टा करते रहते हैं और वास्तविक को कभी बदला नहीं जा सकता- तुम्हारे हाथ निराशा ही लगेगी।

वास्तविकता कभी बदली नहीं जा सकती केवल तुम्हारा सपना चूर-चूर हो जाएगा और तब तुम्हें पीड़ा होगी।

तुम वास्तविकता को सुनते ही नहीं। यहां तुम्हारे सपनों को साकार करने वाला कोई नहीं है। यहां सभी अपनी नियति को अपनी वास्तविकता को पूरा करने के लिए हैं।

सोसान जैसा व्यक्ति प्रेम करता है लेकिन उसका प्रेम शोषण नहीं है। वह प्रेम करता है क्योंकि उसके पास भरपूर प्रेम है उससे प्रेम छलक रहा है। वह किसी के ईद-गिर्द सपने निर्मित नहीं कर रहा है। जो भी उसके रास्ते में आता है वह अपना प्रेम उससे बांटता है। उसका बांटना बेशर्त है वह तुमसे किसी बात की अपेक्षा नहीं रखता। अगर प्रेम अपेक्षा करता है तो निराशा होगी। अगर प्रेम आशा रखता है, तो अतृप्ति होगी। अगर प्रेम अपेक्षा करता है तो पीड़ा और विक्षिप्तता ही होगी।

नहीं सोसान कहता है ' न तो प्रेम करो न घृणा करो। तुम केवल दूसरे की वास्तविकता को देखो। ' यही बुद्ध का प्रेम है दूसरे की वास्तविकता को देखना दूसरे को वैसा ही देखना जैसा वह है, केवल वास्तविकता को देखना- प्रक्षेपण नहीं करना, सपना नहीं देखना, कोई छवि नहीं बनानी दूसरे को अपनी छवि के अनुसार ढालना नहीं है।

जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते, सब- कुछ सुस्पष्ट होता है और कुछ भी छिपा नहीं रहता।

मन को प्रेम करना पड़ता है और घृणा करनी पड़ती है, और मन को निरंतर इन दोनों के साथ संघर्ष करना ही पड़ता है, अगर तुम प्रेम नहीं करते, घृणा नहीं करते तो तुम मन के पार चले जाते हो। तब कहां है मन? जब तुम्हारे भीतर चुनाव समाप्त हो जाता है तो मन भी विलीन हो जाता है। अगर तुम कहो भी, मैं शांत होना चाहता हूं, तुम कभी शांत नहीं होओगे क्योंकि यह तुम्हारी पसंद है। यही समस्या है।

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं ' मैं शांत होना चाहता हूं र मुझे अब और तनाव नहीं चाहिए। ' मुझे उनके लिए अफसोस होता है- क्योंकि वे जो कह रहे हैं वह मूर्खतापूर्ण है। अगर तुम्हें अब और तनाव नहीं चाहिए, तो तुम एक नया तनाव पैदा कर लोगे। अगर तुम शांति की बहुत अधिक चाहत रखते हो अगर तुम उसके पीछे ही पड़ जाते हो तो तुम्हारी शांति अपने में ही एक तनाव बन जाएगी। तुम इसके कारण और भी बेचैन हो जाओगे।

शांति क्या है? यह एक गहन समझ है- उस घटना की समझ है कि अगर तुम चुनाव करते हो, तो तनावग्रस्त हो जाओगे। अगर तुम शांति भी चाहते हो, तो अशांत हो जाओगे।

इसे समझो, अनुभव करो— जब भी तुम चुनाव करते हो तुम तनावपूर्ण हो जाते हो जब भी तुम चुनाव नहीं करते कोई तनाव नहीं होता, तुम विश्राम में होते हो। और जब तुम विश्राम में होते हो तुम्हारी आंखों में एक स्पष्टता होती है उनमें सपनों और बादलों की भीड़ नहीं होती। मन में कोई विचार नहीं चलते तुम उनके पार देख सकते हो। और जब तुम सत्य को देख पाते हो तो मुक्त हो जाते हो। सत्य मुक्त करता है।

थोड़ा सा भेद, और पृथ्वी और स्वर्ग में अनंत हो जाती है।

‘थोड़ा सा भेद जरा सा चुनाव और तुम विभाजित हो गए। तब तुम्हारे पास स्वर्ग और नरक हैं, और तुम उन दोनों के बीच कुचल दिए जाओगे।

अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो, तो पक्ष या विपक्ष में राय मत बिना राय के चलो नग्न बिना वस्त्रों के चलो सत्य के संबंध में बिना कोई राय बनाए; क्योंकि सत्य सभी विचारों और मतों को नापसंद करता है। अपने सारे तत्वज्ञान मत, सिद्धांत धर्मग्रंथों सबको छोड़ दो! सब कूड़ा—कचरा फेंक दो। तुम शांत हो जाओ, बिना चुनाव किए, तुम्हारी आंखें उसे देखने को—जो है— तैयार ही हैं वे किसी प्रकार से तुम्हारी कुछ इच्छाओं की पूर्ति की आशा नहीं कर रही हैं। इच्छाओं को ढोओ मत। कहते हैं कि नरक का मार्ग इच्छाओं से पटा पड़ा है— सद्-इच्छाओं आशाओं सपनों इंद्रधनुषों, आदर्शों से भरा पड़ा है। स्वर्ग का मार्ग बिलकुल खाली है।

महापथ उनके लिए कठिन नहीं है जिनकी अपनी कोई

प्राथमिकताएं नहीं हैं।

जब प्रेम और घृणा दोनों नहीं होते, सब— कुछ सुस्पष्ट होता है और कुछ भी छिपा नहीं रहता।

थोड़ा सा भेद, और पृथ्वी और स्वर्ग में अनंत दूरी हो जाती है।

अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो, तो पक्ष या विपक्ष में राय मत बनाओ।

तुम्हारी पसंद और नापसंद का संघर्ष ही मन का रोग है।

सारे बोझ उतार दो! तुम जितना ऊंचे जाना चाहते हो उतना बोझ कम होना चाहिए। अगर तुम्हें हिमालय पर जाना हो तो स्वयं को सर्वथा निर्भर करना होगा। अंत में जब तुम गौरीशंकर एवरेस्ट पर पहुंचते हो तो तुम्हें सब—कुछ छोड़ देना पड़ता है। तुम्हें निपट नग्न हो जाना पड़ता है क्योंकि जितना ऊंचे तुम जाना चाहते हो उतना ही तुम्हें निर्भर होना पड़ता है। विचारों का तुम्हारे ऊपर बोझ है। वे पंख नहीं हैं वे पेपरवेट के समान हैं। बिना किसी राय के चुनावरहित ‘अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो, तो पक्ष और विपक्ष में राय मत बनाओ।’

अगर तुम वास्तव में जानना चाहते हो कि सत्य क्या है, तो न तो आस्तिक बनो और न ही नास्तिक। मत कहो परमात्मा है, मत कहो परमात्मा नहीं है, क्योंकि जो भी तुम कहोगे वह तुम्हारी गहन इच्छा बन जाएगी। और तुम वही प्रक्षेपित कर लोगे जो तुम्हारी गहन इच्छा में छिपा है।

अगर तुम परमात्मा को कृष्ण की भांति— बांसुरी ओंठों पर रखे— इस रूप में देखना चाहते हो, तो किसी दिन तुम उसको देख लोगे— इसलिए नहीं कि कृष्ण वहां है, इसलिए कि तुम्हारे भीतर इच्छा का बीज था जिसे तुमने जगत के पर्दे पर प्रक्षेपित कर लिया है। अगर तुम जीसस को सूली पर चढ़े देखना चाहते हो, तो तुम देख लोगे।

जो भी तुम चाहते हो वह प्रक्षेपित हो जाएगा लेकिन वह सिर्फ सपनों का जगत है- तुम सत्य के निकट नहीं पहुंच रहे हो। भीतर निर्बीज हो जाओ कोई आग्रह नहीं, कोई पक्ष-विपक्ष में विचार नहीं कोई दर्शनशास्त्र नहीं। तुम सिर्फ वही देखते जाओ जो है। तुम कोई मन साथ मत लो। तुम मनरहित होकर जाओ।

अगर तुम सत्य को देखना चाहते हो, तो पक्ष या विपक्ष में राय मत बनाओ।

तुम्हारी पसंद और नापसंद का संघर्ष ही मन का रोग है।

यह है.. मन का रोग है पसंद और नापसंद, पक्ष और विपक्ष। मन क्यों विभाजित है? तुम एक क्यों नहीं हो सकते? तुम एक होना पसंद करते हो चाहते हो, लेकिन तुम विभाजनों, प्राथमिकताओं, पसंद और नापसंद को पानी देते रहते हो।

अभी कुछ समय पहले एक महिला आई और उसने कहा. मुझे आशीष दें, मैं आपका आशीर्वाद चाहती हूं।

लेकिन मैंने देखा कि वह बहुत घबड़ाई हुई है, चिंतित है, इसलिए मैंने पूछा? क्या बात है?

उसने कहा : मैं पहले ही किसी गुरु द्वारा दीक्षित हूं।

एक संघर्ष- वह मेरे आशीष चाहती है, लेकिन मन कहता है कि मैं उसका गुरु नहीं हूं। उसका कोई दूसरा गुरु है तो क्या करे? मैंने उससे कहा कि तुम दोनों को छोड़ दो। यह उसके लिए सहज होगा अगर मैं उससे कहूं, 'पुराने को छोड़ दो। मुझे चुनो।' यह ज्यादा आसान होगा, क्योंकि तब मन अपना काम करता रह सकता है, लेकिन समस्या रहेगी। रोग का नाम बदल जाएगा किंतु बीमारी वैसी ही बनी रहेगी। फिर कहीं और, वही संदेह वही अनिश्चितता उठ खड़ी होगी।

लेकिन अगर मैं कहता हूं 'दोनों ही छोड़ दो, ' क्योंकि सदगुरु तक पहुंचने का यही एक मात्र रास्ता है, जब तुम इस या उस रास्ते का चुनाव नहीं करते हो तुम बस शून्य होकर आते हो। तुम बस बिना किसी आग्रह के आते हो जब तुम केवल खाली, ग्रहणशील होकर आते हो केवल तभी तुम सदगुरु के पास आते हो। दूसरा कोई रास्ता नहीं है। और अगर सदगुरु सत्य के लिए द्वार बनने वाला है, तो ऐसा होगा ही, क्योंकि यही तैयारी है, यही दीक्षा है।

सदगुरु का काम तुम्हें मत रहित, मन रहित होने में सहायता देना है। अगर सदगुरु स्वयं तुम्हारा चुनाव बनता है, तो वह अवरोध बन जाएगा। तब तुमने फिर चुनाव कर लिया, फिर मन का उपयोग कर लिया। और जितना तुम मन का उपयोग करते हो उतना ही वह दृढ़ हो जाता है, उतना ही वह शक्तिशाली बन जाता है। उसका उपयोग मत करो। कठिन है क्योंकि तुम कहोगे हमारे प्रेम का क्या होगा? हमारी संपत्ति का क्या होगा? हमारे विश्वासों का क्या होगा? हमारे धर्म चर्च और मंदिर का क्या होगा? वे तुम्हारे बोझ हैं। उनसे मुक्त हो जाओ, उन्हें तुमसे मुक्त हो जाने दो। वे तुम्हें यहां बांधे हुए हैं, सत्य तुम्हें मुक्त करना चाहता है। मुक्त होकर ही तुम पहुंचते हो पंखों से तुम पहुंचते हो निर्भर होकर ही तुम वहां पहुंचते हो।

सोसान कहता है:

तुम्हारी पसंद और नापसंद का संघर्ष ही मन का रोग है।

कैसे इस पर काबू पाएं? क्या इस पर काबू पाने का कोई मार्ग है? नहीं कोई मार्ग नहीं है। केवल इसे समझने की आवश्यकता है। केवल इसकी वास्तविकता को देखना है। केवल आंखें बंद करके अपने जीवन को देखने की जरूरत है- उसे देखो और तुम्हें सोसान का सत्य अनुभव होगा। और जब सत्य की अनुभूति होती है,

रोग छूट जाता है। उसके लिए कोई औषधि नहीं है, क्योंकि अगर तुम्हें औषधि दे दी जाए तो तुम औषधि को ही चाहने लगोगे। तब रोग तो भूल जाएगा, लेकिन औषधि की चाहत बनी रहेगी। तब औषधि रोग हो जाती है।

नहीं, सोसान तुम्हें कोई औषधि, कोई विधि नहीं देगा। वह तुम्हें कोई सुझाव नहीं देने वाला कि तुम्हें क्या करना चाहिए। वह बारंबार हजार बार इसी बात पर बल देने वाला है कि तुम इसे समझो कि किस तरह तुमने अपने चारों ओर झंझट खड़ी कर ली है कैसे तुम इतने दुख में हो। और किसी और ने इसे निर्मित नहीं किया है यह तुम्हारे मन का रोग है, पसंदगी और नापसंदगी का— चुनाव का रोग है।

चुनाव मत करो। जीवन को उसकी समग्रता में स्वीकार करो। तुम समस्त को देखो जीवन और मृत्यु को एक साथ, प्रेम और घृणा को एक साथ, सुख—दुख को एक साथ हर्ष और विषाद को, संताप और समाधि को एक साथ। अगर तुम दोनों को एक साथ देखते हो, तो फिर किसका चुनाव करना है? अगर तुम देखते हो कि वे एक ही हैं, फिर चुनाव कहां से प्रवेश कर सकता है? अगर तुम देख पाओ कि विषाद और कुछ नहीं आनंद है, आनंद और कुछ नहीं विषाद है अगर तुम देख सको कि सुख और कुछ नहीं दुख है प्रेम और कुछ नहीं घृणा है, घृणा और कुछ नहीं प्रेम है, फिर कहां से चुनाव करना? कैसे चुनाव करना? फिर चुनाव गिर जाता है।

तुम उसे नहीं छोड़ रहे हो। अगर तुम छोड़ते हो, तब वह चुनाव हो जाता है—यही विरोधाभास है। तुम्हें इसे छोड़ना नहीं है, क्योंकि अगर तुम छोड़ो, तो इसका यह अर्थ होगा कि तुमने पक्ष और विपक्ष में चुनाव किया है। अब तुम्हारा चुनाव समग्र के लिए है। तुम समग्रता के पक्ष में हो, विभाजन के विरोध में हो, लेकिन रोग प्रविष्ट हो ही गया है। यह बहुत सूक्ष्म है।

तुम सिर्फ समझो, और यह समझ ही छोड़ना बन जाती है। तुम कभी छोड़ नहीं सकते। तुम बस हंसो, और एक कप चाय मांग लो।

आज इतना ही।

## मार्ग परिपूर्ण है

सूत्र:

जब चीजों का गहन अर्थ समझा नहीं जाता,  
तब मन की सारभूत शांति अकारण ही विचलित हो जाती है।  
महापथ है विराट आकाश की भांति  
जहां न कुछ कम है न ही कुछ अधिक।  
सच तो यह है कि स्वीकार या अस्वीकार करने के अपने चुनाव के कारण,  
हम चीजों के वास्तविक स्वभाव को नहीं देखते।  
न तो बाहरी वस्तुओं की उलझनों में जीओ?  
न ही आंतरिक शून्यता की अनुभूति में।  
कृत्य की कामना मत करो और यह जान कर कि सब—  
कुछ एकात्म है शांत हो जाओ  
और ऐसे भ्रंतिपूर्ण विचार स्वतः ही विदा हो जाएंगे।

जब तुम अक्रिया को पाने के लिए कर्म को रोकने का प्रयास करते हो तो तुम्हारा वही प्रयास तुम्हें क्रिया से भर देता है।

जब तक तुम अतियों में जीते हो, तब तक तुम कभी एकात्मकता को नहीं जान पाओगे।  
जो मध्य में नहीं जीते वे क्रिया और अक्रिया, स्वीकार और  
इनकार दोनों में असफल हो जाते हैं।

इससे पहले कि हम सोसान के सूत्रों में प्रवेश करें कुछ बातें समझ लें।

पश्चिम में अभी कुछ ही वर्ष पहले एक फ्रांसीसी सम्मोहनविद इमाइल कुए हुआ। उसने मानव-मन के एक मूलभूत नियम पर फिर से अनुसंधान किया। उसने उसे 'ली ऑफ रिवर्स इफेक्ट'—विपरीत परिणाम का नियम कहा। वह ताओ और ज्ञान विचारधारा के सबसे पुराने सूत्रों में से एक है। सोसान इसी नियम के बारे में बात कर रहा है। इस नियम को समझने की कोशिश करें फिर उसके वचनों को समझना आसान होगा।

उदाहरण के लिए, अगर तुम्हें नींद नहीं आ रही है तो तुम क्या करोगे? तुम नींद लाने की चेष्टा करोगे—तुम कोशिशें करोगे, तुम यह करोगे वह करोगे, लेकिन तुम जो कुछ भी करोगे उसका प्रभाव उलटा होगा जिसे तुम लाना चाहते हो वह नहीं आएगा। उससे विपरीत होगा क्योंकि कोई भी क्रिया कोई भी चेष्टा नींद के विरुद्ध है।

नींद एक विश्राम है। तुम इसे ला नहीं सकते, तुम इसको लाने के लिए कुछ नहीं कर सकते। तुम इसके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते तुम इसके लिए संकल्प नहीं कर सकते—यह तुम्हारी संकल्प-शक्ति का हिस्सा नहीं है। यह अचेतन में जाना है और तुम्हारा संकल्प चेतना का केवल एक अंश है।

जब तुम अचेतन में गति करते हो, गहराई में जाते हो तो वह अंश जो चेतन है, वह अंश जो संकल्प है वह सतह पर ही रह जाता है। तुम अपनी सतह को गहराई में नहीं ले जा सकते, तुम अपनी परिधि को केंद्र में नहीं

ले जा सकते। इसलिए जब तुम नींद के लिए प्रयत्न करते हो तो वह उसके लिए स्व-विनाशक सिद्ध होता है। तुम कुछ ऐसा कर रहे हो जो बिलकुल उसके विपरीत है- तुम और अधिक जाग जाओगे। नींद में प्रवेश करने का एक मात्र उपाय है कुछ भी न करना। अगर वह नहीं आ रही है, नहीं आ रही है! प्रतीक्षा करो....कुछ भी मत करो! नहीं तो तुम उसे और दूर भगा दोगे और एक दूरी निर्मित हो जाएगी। तकिए पर सिर रख कर केवल प्रतीक्षा करो- प्रकाश बुझा दो आंखें बंद कर लो शांत हो जाओ और प्रतीक्षा करो। जब भी वह आती है आती है। तुम इसे अपने संकल्प के किसी कृत्य द्वारा नहीं ला सकते- संकल्प अचेतन के विरुद्ध है।

और ऐसा जीवन की कई चीजों में घटता है ठीक विपरीत सामने आ जाता है। अगर तुम शांत होना चाहते हो, तो तुम क्या करोगे? क्योंकि शांति भी नींद के समान है। तुम इसको घटने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। तुम इसे घटित होने दे सकते हो, यह निर्बाध होने देना है, लेकिन इसको करने का कोई उपाय नहीं है। अगर तुम शांत होना चाहते हो, तो क्या करोगे? अगर तुम कुछ करोगे, तो तुम पहले से भी अधिक अशांत हो जाओगे।

अगर तुम शांत होना चाहते हो तो क्या करोगे? क्योंकि शांत होने का अर्थ है निष्क्रियता। तुम सिर्फ बहो तुम बस विश्रान्त हो जाओ! और जब मैं कहता हूं बस विश्रान्त हो जाउरों तो मेरा मतलब सहजता से है। विश्रान्ति के लिए किसी विधि का प्रयोग नहीं करना है क्योंकि विधि का अर्थ है कि तुम फिर कुछ कर रहे हो।

एक पुस्तक है जिसका शीर्षक है 'यू मस्ट रिलैक्स!' तुम्हें विश्राम करना ही चाहिए! और 'मस्ट' विश्राम के बिलकुल विरुद्ध है 'करना ही चाहिए' को बीच में नहीं लाना चाहिए अन्यथा तुम और तनावपूर्ण हो जाओगे।

यह नियम इमाइल कुए ने खोजा और उसने कहा, 'चीजों को घटित होने दो उनको जबरदस्ती मत लाओ।' कुछ चीजें हैं जिनके साथ जबरदस्ती की जा सकती है- वह सभी कुछ जो चेतन मन से संबंधित है उनके साथ जबरदस्ती की जा सकती है। लेकिन कुछ चीजें हैं जिनके साथ जबरदस्ती नहीं की जा सकती। वह सभी कुछ जो अचेतन से तुम्हारी गहराई से संबंध रखता है, उसके साथ जबरदस्ती नहीं की जा सकती।

ऐसा बहुत बार होता है तुम कोई नाम या चेहरा याद करने का प्रयास कर रहे हो और वह याद नहीं आ रहा है, लेकिन तुम्हें प्रतीत होता है कि वह तुम्हारी जीभ की नोक पर रखा है। यह प्रतीति इतनी गहन है कि तुम्हें लगता है कि वह याद आने ही वाला है, और तुम उसे लाने का प्रयत्न करते हो। और जितनी तुम चेष्टा करते हो उतना ही वह नहीं आता। तुम संशयग्रस्त हो जाते हो कि यह अनुभूति सच्ची है या नहीं। लेकिन तुम्हें लगता है तुम्हारे पूरे प्राण कहते हैं कि यह रहा बस जीभ की नोक पर ही रखा है। अगर यह जीभ पर रखा है तो आ क्यों नहीं रहा? यह नहीं आएगा। जो चाहे वह करो लेकिन फिर भी वह नहीं आएगा।

फिर तुम खीझ जाते हो, निराश हो जाते हो फिर तुम सब छोड़ देते हो। तुम बगीचे में चले जाते हो वहां काम करना शुरू कर देते हो; या समाचार-पत्र पढ़ना शुरू कर देते हो या रेडियो चला लेते हो और संगीत सुनना शुरू कर देते हो, और अचानक याद आ जाता है। क्या हुआ?

उसका संबंध अचेतन से था वह तुम्हारे भीतर गहरे में था। और जितना तुमने याद करने का प्रयास किया उतनी तुम्हारी चेतना संकीर्ण हो गई। और जितनी तुमने चेष्टा की, अचेतन उतना ही विचलित हो जाता है। वह अराजक हो गया, सब-कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। वह जुबान पर रखा था, लेकिन तुम उसे बाहर लाने के लिए बहुत सक्रिय थे.. तुम अपनी संकल्प-शक्ति का प्रयोग कर रहे थे और संकल्प तुम्हारी गहराइयों से कुछ भी निकाल कर नहीं ला सकता। केवल समर्पण ला सकता है जब तुम केवल होने देते हो। इसलिए जब तुम पार्क में बगीचे में गए, समाचार-पत्र पढ़ने लगे, जमीन में गड़ा खोदने लगे संगीत सुनना शुरू कर दिया जैसे ही तुम पूरे

प्रोजेक्ट को भूल गए...अचानक वह याद आ गया। यही है विपरीत परिणाम का नियम। याद रहे संकल्प का अचेतन के साथ कोई उपयोग नहीं है केवल उपयोग ही नहीं है बल्कि खतरनाक भी है हानिप्रद भी है।

लाओत्सु नागर बोधिधर्म सोसान-ये इस विपरीत परिणाम के नियम के गुरु हैं। और यही अंतर है योग और झेन में। योग हर प्रयास करता है और झेन कोई प्रयत्न नहीं करता और झेन योग से अधिक ठीक है। लेकिन योग अच्छा लगता है क्योंकि जहां तक तुम्हारा संबंध है 'करना' सरल है- कितना भी मुश्किल हो-लेकिन 'करना' सरल है।

न करना कठिन है। अगर कोई कहता है 'कुछ भी मत करो तुम्हारी समझ में नहीं-आता। तुम फिर पूछते हो, 'क्या करना है?' अगर कोई कहता है, 'कुछ भी न करो,' वह तुम्हारे लिए सबसे कठिन बात है। अगर तुम समझ सको तो ऐसा होना नहीं चाहिए।

न करने के लिए किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं है। करने के लिए योग्यता की जरूरत हो सकती है, करने के लिए अभ्यास की जरूरत हो सकती है। न करने के लिए किसी अभ्यास की जरूरत नहीं। इसीलिए झेन कहता है कि संबोधि एक क्षण में घटित हो सकती है-क्योंकि यह प्रश्न ही नहीं उठता कि इसे कैसे लाया जाए प्रश्न तो यह है कि इसे कैसे होने दिया जाए। वह बिलकुल नींद के समान है तुम तनाव छोड़ दो और वह वहां है तुम अपने को ढीला छोड़ दो और वह प्रकट हो जाती है। वह बाहर प्रकट होने के लिए तुम्हारे भीतर संघर्ष कर रही है। तुम उसे आने नहीं दे रहे है, क्योंकि सतह पर तुम्हारे पास बहुत से क्रियाकलाप हैं।

क्या तुमने कभी गौर क्रिया लगभग नब्बे प्रतिशत बच्चे रात को जन्म लेते हैं दिन में नहीं। क्यों? आधा-आधा होना चाहिए। वे ज्यादातर रात क्यों चुनते हैं? नब्बे प्रतिशत! क्योंकि मां अचेतन अवस्था में होती है, विश्राम की अवस्था में होती है लेट-गो की अवस्था में होती है। वह निद्रा में होती है और बच्चा सरलता से बाहर आ सकता है।

अगर वह होश में है तो वह कोशिश करेगी और विपरीत परिणाम का नियम वहां प्रभावी होगा। जब मां जाग रही है वह हर संभव प्रयत्न करेगी ताकि पीड़ा से मुक्त हो सके और मामला निबट जाए और बच्चे का जन्म हो जाए। और हर कोशिश एक बाधा है, वह रुकावट डाल रही है। जितनी वह कोशिश करती है उतना ही रास्ता संकुचित होता जाता है और बच्चा बाहर नहीं आ पाता।

आदिवासी समाजों में बच्चे को जन्म देते समय मां को कोई पीड़ा नहीं होती जरा भी पीड़ा नहीं होती। और यह चमत्कार है। जब पहली बार पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान को पता चला कि अब भी ऐसे आदिवासी समाज हैं जहां मां को कोई पीड़ा नहीं होती-वे विश्राम ही न कर सके। यह कैसे संभव है?

तब बहुत से प्रयोग किए गए, कई अनुसंधान की योजनाएं बनाई गईं, और पता चला कि इसका कारण उनकी अनभिज्ञता है। वे वन्य पशुओं की भांति हैं कोई लड़ाई नहीं कोई संघर्ष नहीं, कोई जोर-जबरदस्ती नहीं। वे कुछ संकल्प नहीं करते वे सिर्फ बहते हैं। वे आदिवासी हैं, उनके पास कोई बहुत चेतन मन नहीं है। जितनी ज्यादा विकसित सभ्यता होगी उतना ही तुम्हारा मन चेतन होता है। जितने सभ्य उतना ही तुम्हारा संकल्प प्रशिक्षित होता है और तुम्हारा अचेतन और नीचे और-और गहरे चला जाता है और वहां एक अंतराल बन जाता है।

अगर कुछ करना है वह भले ही कितना कठिन हो तुम उसे करने का उपाय खोज लेते हो कि उसे कैसे क्रिया जाए। तुम कोई विधि सीख लेते हो फिर विशेषज्ञ लोग हैं, तुम्हें प्रशिक्षित क्रिया जा सकता है। लेकिन झेन में किसी को प्रशिक्षित नहीं क्रिया जा सकता। परमात्मा में कोई कुशल लोग कोई विशेषज्ञ नहीं होते हो ही नहीं सकते क्योंकि यह किसी विधि के जानने का प्रश्न नहीं है यह तो अपने होने में विश्राम करना है, कुछ करना नहीं

है। केवल तब जब तुम वहां नहीं होओगे एक महानतम घटना घटेगी। अगर तुम कुछ कर रहे हो तो तुम निश्चित रूप से वहां होओगे।

नींद तब आती है जब तुम वहां नहीं होते। संबोधि भी इसी नियम का पालन करती है—वह आती है जब तुम वहां नहीं होते। लेकिन जब तुम कर रहे हो तो उसी समय तुम अनुपस्थित कैसे हो सकते हो? अगर तुम कुछ कर रहे हो तो तुम वहां होओगे। कृत्य अहंकार को पुष्ट करता है। जब तुम कुछ नहीं कर रहे, तो अहंकार को भोजन नहीं मिल सकता। वह विलीन हो जाता है मिट जाता है, वह वहां नहीं है। और जब वहां अहंकार नहीं होता, प्रकाश अवतरित होता है।

इसलिए जो भी तुम संकल्पपूर्वक कर रहे हो, वह बाधा बन जाएगा। यहां मेरी ध्यान विधियों को करो लेकिन संकल्पपूर्वक नहीं जबरदस्ती नहीं। उन्हें होने दो। उनमें बहो, अपने को बीच में न लाओ। उनमें डूब जाओ लेकिन संकल्पपूर्वक नहीं। कुछ चालाकी मत करो, क्योंकि जब तुम चालाकी करते हो तुम विभाजित हो जाते हो तुम दो हो जाते हो वह जो चालाकी करने वाला है और वह जिसके साथ चालाकी की जा रही है। एक बार तुम दो हो गए तो तुरंत स्वर्ग और नरक निर्मित हो जाते हैं और फिर तुम्हारे और सत्य के बीच बहुत बड़ा अंतर हो जाता है। चालाकी मत करो चीजों को होने दो।

तुम कुंडलिनी ध्यान कर रहे हो, कंपन को होने दो। इसे करो नहीं! शांत खड़े हो जाओ इसे आता हुआ महसूस करो जब तुम्हारा शरीर जरा सा कंपन करने लगे उसे सहयोग दो लेकिन करो नहीं। इसका रस लो आनंदित अनुभव करो इसे होने दो, इसे ग्रहण करो, इसका स्वागत करो परंतु इसकी कामना मत करो।

अगर तुम बलपूर्वक चेष्टा करते हो तो यह एक व्यायाम हो जाएगा, एक शारीरिक भौतिक व्यायाम। तब कंपन तो होगा, लेकिन ऊपरी सतह पर। यह तुम्हारे भीतर तक नहीं पहुंचेगा। तुम भीतर ठोस, पत्थर की भांति, चट्टान की भांति ही बने रहोगे। तुम चालाकी करने वाले कर्ता बने रहोगे और केवल शरीर अनुसरण करेगा। सवाल शरीर का नहीं है, सवाल तुम हो।

जब मैं कहता हूं कंपन करो तो मेरा मतलब है कि तुम्हारा ठोसपन, तुम्हारा चट्टान जैसा अस्तित्व मूल तक कंपित हो उठे! ताकि वह द्रवीभूत हो जाए, तरल हो जाए पिघल जाए, बहने लगे। जब चट्टान जैसा अस्तित्व तरल हो जाता है, तो तुम्हारा शरीर उसका अनुगमन करता है। तब वहां कंपन करने वाला कोई नहीं होता केवल कंपन होता है तब उसे करने वाला कोई नहीं होता तब वह सिर्फ घटित होता है। तब कर्ता नहीं है।

इसका आनंद लो किंतु इसका संकल्प मत करो। और स्मरण रहे जब तुम कुछ करने का संकल्प करते हो, तो तुम उसका आनंद नहीं उठा सकते। वे विपरीत हैं, विरोधी हैं, उनका कभी मिलन नहीं होता। जब किसी बात का संकल्प करते हो? तो उसका आनंद नहीं ले सकते अगर तुम उसका आनंद लेते हो तो उसका संकल्प नहीं कर सकते।

उदाहरण के लिए तुम काम—भोग का इरादा बना सकते हो। तुम इसे पुस्तकों में दिए नियमों के अनुसार कर सकते हो लेकिन तुम्हें इससे सुख प्राप्त नहीं होगा। अगर तुम इसका आनंद लेते हो, तो सभी नियम—पुस्तकों को फेंक देना पड़ेगा सभी किसे और मास्टर्स और जनसे सबको फेंक देना पड़ेगा। तुम्हें वह सब बिलकुल भुला देना होगा जो कुछ तुमने काम—भोग के बारे में सीखा है। शुरू—शुरू में तुम्हें कुछ समझ नहीं आएगा, कोई मार्ग—निर्देश नहीं हैं क्योंकि कोई मानचित्र नहीं, कैसे प्रारंभ करें?

बस प्रतीक्षा करो, और अपनी अंतर—ऊर्जा को गति करने दो, और जहां वह ले जाए, अनुसरण करो। हो सकता थोड़ा समय लगे, लेकिन जब काम उत्पन्न होता है, वह तुम्हें घेर लेता है। अब तुम वहां नहीं होते। काम होता है वहां, काम—भोग करने वाला नहीं होता। काम—भोग ऊर्जा की एक घटना की भांति घटित होता है,

लेकिन उसमें अहंकार नहीं होता। तब यह असाधारण रूप से होता है, तब यह मुक्ति बन जाता है। तब काम आनंद बन जाता है और अब तुम कुछ ऐसा जानते हो जो उन्होंने जाना है जिन्होंने भगवत्ता को पाया है। अब तुम उसके एक अंश, सागर की एक बूंद को जानते हो। तुम एक किरण को जानते हो और तब तुम्हें स्वाद का पता चलता है।

ध्यान, ईश्वर, संबोधि निर्वाण ये सभी काम के माध्यम से आते हैं क्योंकि काम के माध्यम से ही एक झलक मिली थी। और जब झलक वहां विद्यमान थी कुछ साहसी आत्माएं उस झलक के स्रोत की खोज में निकल पड़ी। परमात्मा को प्रेम के माध्यम से ही खोजा गया है। इसीलिए जीसस निरंतर कहते हैं... जब भी किसी ने पूछा ईश्वर क्या है, वे कहते हैं ईश्वर प्रेम है क्योंकि पहली झलक प्रेम के द्वारा ही मिलती है।

लेकिन प्रक्रिया वही है, तुम काम-भोग का संकल्प नहीं कर सकते। अगर तुम संकल्प करोगे तो सारा सौंदर्य खो जाता है सब यांत्रिक हो जाता है। तुम सब विधिवत करते हो लेकिन कुछ नहीं होता। कोई आनंद नहीं यह कुछ ऐसा है कि बस इसे करना है और निबटा देना है। वह कभी तुम्हारे केंद्र तक नहीं पहुंचता, वह कभी तुम्हारे आधारों को नहीं झकझोरता, वह कभी तुम्हारा आंतरिक नृत्य नहीं बन पाता। वह तुम्हारे प्राणों की धड़कन नहीं वह केवल परिधि पर क्रिया गया एक कृत्य है।

स्मरण रहे, न तो प्रेम का संकल्प क्रिया जा सकता है और न ध्यान का।

सब ज्ञान फेंक दो क्योंकि ज्ञान की तभी आवश्यकता पड़ती है जब तुम्हें कुछ करना होता है। जब तुम्हें कुछ करना ही नहीं तब किस ज्ञान की जरूरत पड़ती है? तुम्हें किसी ज्ञान की आवश्यकता नहीं। तुम्हें सिर्फ अनुभूति होनी चाहिए, ढंग आना चाहिए—कैसे छोड़ना है कैसे न हुआ जाए। और जब मैं कहता हूं कैसे? तो मेरा मतलब तकनीक से नहीं है। जब मैं कहता हूं कैसे? तो मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि तुम्हें तकनीक आनी चाहिए। तुम्हें केवल उसकी खोज करना है।

मैं तुम्हें दो बातों का सुझाव दूंगा, जो सहायक सिद्ध होगी। एक है नींद यह खोजने की कोशिश करो कि नींद कैसे आती है तुम कैसे सो जाते हो। हो सकता है तुम्हारे पास कोई विधि हो लेकिन वह विधि नींद निर्मित नहीं कर रही, इससे सहायता मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति के पास विधि है। छोटे बच्चों की अपनी तरकीबें होती हैं, कोई विशेष मुद्रा होती है। प्रत्येक बच्चे का अपना ढंग होता है हो सकता है वह अपना अगूँठा मुंह में डाल ले। इससे नींद नहीं आती, लेकिन इससे बच्चे को मदद मिलती है—उसने अपनी तरकीब निकाल ली है। अगर तुम उस बच्चे का अनुकरण करो, तो तुम्हें नींद नहीं आएगी।

और यही बात ध्यान की सभी विधियों के साथ है—प्रत्येक व्यक्ति अपनी विधि खोज लेता है। इससे सहायता मिलती है क्योंकि इससे एक वातावरण निर्मित होता है। तुम प्रकाश बुझा देते हो कमरे में कोई खास अगरबत्ती जला लेते हो, विशेष प्रकार का तक्रिया ले लेते हो—विशिष्ट मोटाई का, और गुदगुदा। तुम एक विशेष प्रकार का कालीन लेते हो किसी विशेष आसन में बैठते हो, इस सबसे सहयोग मिलता है, लेकिन यह उसका कारण नहीं है। अगर कोई अन्य इसका अनुसरण करता है तो हो सकता है कि यह बाधा बन जाए। प्रत्येक को अपनी विधि खोजनी पड़ती है।

विधि तुम्हें आराम में होने और प्रतीक्षा करने में सहायता करने के लिए है। और जब तुम आराम में हो और प्रतीक्षा कर रहे होते हो वह घटित हो जाती है। नींद की भांति ही परमात्मा तुम्हारे पास आता है, परमात्मा की भांति प्रेम तुम्हारे पास आता है। तुम संकल्प नहीं कर सकते तुम उसे बलपूर्वक नहीं ला सकते।

और तुम्हारा पूरा जीवन एक समस्या बन गया है, क्योंकि तुमने बहुत सीख लिया है कि चीजों को कैसे करें। तुम यांत्रिक चीजों को करने में बहुत कुशल हो गए हो क्योंकि उन्हें क्रिया जा सकता है, लेकिन तुम

मानवीय चीजों को करने में बिलकुल अकुशल हो गए हो क्योंकि वे सीखी नहीं जा सकती, उनको करने का कोई तकनीकी ढंग नहीं है; तुम उनके लिए कुशल विशेषज्ञ नहीं हो सकते।

जब भी कुछ यांत्रिक करना हो, तो उसके लिए प्रशिक्षण संभव है लेकिन चेतना को प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता। और तुम कभी इस गुरु और कभी उस गुरु के पास कोई विधि कोई मंत्र पाने के लिए जाते हो ताकि तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाओ। ऐसा कोई मंत्र नहीं है जो तुम्हें संबुद्ध बना सके।

यह है मंत्र सोसान कहता है कि तुम्हें और अधिक समझदार होना पड़ेगा—कम संकल्प, ज्यादा समर्पण कम प्रयास और ज्यादा अप्रयास चेतन का कृत्य कम अचेतन में तैरना अधिक।

अब सूत्र को समझने की कोशिश करें

*जब चीजों का गहन अर्थ समझा नहीं जाता,*

*तब मन की सारभूत शांति अकारण ही विचलित हो जाती है।*

अगर तुम समझ जाते हो तो शांति होगी। अगर तुम नहीं समझते तो अशांति, तनाव और पीड़ा होगी। जब भी कोई व्यक्ति व्यथित होता है? तो यही स्पष्ट होता है कि उसे उस बात का, उन चीजों का गहन अर्थ समझ नहीं आया।

और तुम दूसरों को दोषी ठहराते रहते हो कि उनके कारण तुम दुखी हो। यहां कोई भी दूसरों के कारण व्यथित नहीं है। तुम अपनी नासमझी या अपनी गलतफहमी के कारण दुखी हो।

उदाहरण के लिए, कोई मेरे पास आया—एक पति, एक पांच बच्चों का बाप—और उसने कहा कि वह बहुत दुखी है क्योंकि उसकी पत्नी हमेशा झगड़ती रहती है उसे अपने अधिकार में रखने का प्रयत्न करती है, और बच्चे उसकी बात नहीं सुनते... 'मां का बहुत प्रभाव है और बच्चे उसी की बात सुनते हैं मेरी बात नहीं मानते। मैं उनके लिए कुछ भी नहीं हूँ और मैं बहुत दुखी हूँ। मेरे लिए कुछ करें। कृपा करें अपने आशीष से उसे थोड़ा और समझदार बना दें।'

मैंने कहा 'वह तो असंभव है। मेरी कृपा से या किसी की कृपा से किसी दूसरे को अधिक समझदार नहीं बनाया जा सकता। तुम बन सकते हो। और जब तुम दूसरे की समझ की बात करते हो, तुम सारी बात से ही चूक गए। पत्नी मालकियत करती हुई क्यों प्रतीत होती है? वह मालकियत करती हुई लगती है, क्योंकि तुम भी मालकियत के लिए संघर्ष कर रहे हो। अगर तुम मालकियत के लिए संघर्ष नहीं कर रहे, तो पत्नी भी वैसा करती प्रतीत न होगी। यह संघर्ष है, क्योंकि तुम भी उसी लक्ष्य के पीछे भाग रहे हो। अगर बच्चे भी मां का अनुसरण करें तो उसमें गलत क्या है? क्योंकि तुम चाहते हो कि बच्चे तुम्हारा अनुसरण करें—इसीलिए संघर्ष है।'

समझने की कोशिश करो! प्रत्येक व्यक्ति मालकियत की कोशिश कर रहा है। अहंकार का यही स्वभाव है दूसरे पर मालकियत करने की हर कोशिश करना। दूसरा चाहे पति हो पत्नी हो या बच्चे हों या मित्र हों, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता—लेकिन वे मालकियत करने और मालकियत करने के रास्ते और उपाय खोजते हैं।

और अगर प्रत्येक व्यक्ति मालकियत की कोशिश कर रहा है और तुम भी कर रहे हो, तो संघर्ष होगा। संघर्ष इसलिए नहीं है कि दूसरे मालकियत की चेष्टा कर रहे हैं, संघर्ष इसलिए है क्योंकि तुम यह समझने का प्रयत्न नहीं कर रहे कि अहंकार किस तरह कार्य करता है।

तुम इससे बाहर निकल आओ! दूसरों को बदला नहीं जा सकता, और अगर तुम दूसरों को बदलने का प्रयास करोगे तो अपने जीवन को व्यर्थ गंवा दोगे। वह उनकी समस्या है। वे अपनी नासमझी के कारण दुख उठाएंगे तुम क्यों दुख उठाओ? तुम केवल इतना समझ लो कि हर कोई मालकियत की कोशिश में है। 'मैं इससे बाहर आ जाता हूँ मैं मालकियत के लिए प्रयत्न नहीं करूँगा'... तुम्हारा संघर्ष समाप्त हो जाता है। और फिर एक अति सुंदर बात घटती है।

अगर तुम मालकियत करने की कोशिश नहीं करते तो पत्नी को लगता है कि वह मूर्ख है और धीरे-धीरे वह अपनी नजरों में बेवकूफ हो जाती है—क्योंकि तब लड़ाई के लिए दूसरा नहीं है। जब तुम लड़ते हो तुम दूसरे के अहंकार को शक्ति देते हो और यही एक दुष्चक्र है।

जब तुम लड़ते नहीं तब दूसरे को लगता है कि वह अकेला, खालीपन में लड़ रहा है हवा से लड़ रहा है या किसी भूत-प्रेत से लड़ रहा है लेकिन किसी दूसरे से नहीं लड़ रहा है। और तब तुम दूसरे को देखने और समझने का अवसर देते हो। तब पत्नी तुम पर उत्तरदायित्व नहीं थोप सकती उसे स्वयं ही उत्तरदायित्व वहन करना पड़ता है।

यही समस्या सबके साथ है क्योंकि मानव प्रकृति इसी प्रकार अपना काम करती है थोड़ा कम या ज्यादा हो सकता है अंतर केवल मात्रा का है। अगर तुम समझने की कोशिश करते हो तो तुम बाहर हो जाते हो। ऐसा नहीं है कि तुम समाज से बाहर हो जाते हो ऐसा नहीं है कि तुम हिप्पी बन जाते हो और जाकर वैकल्पिक समाज बना लेते हो यह बात नहीं है। मानसिक रूप से तुम अब अहंकार मालकियत आक्रमकता हिंसा, क्रोध की यात्रा पर नहीं हो। तुम इसमें सम्मिलित नहीं हो। तब एक दूरी एक अनासक्ति निर्मित हो जाती है। अब तुम चीजों को देख सकते हो और हंस सकते हो, आदमी कितना मूर्ख है! और तुम हंस सकते हो... तुम हमेशा से कितने हास्यास्पद रहे हो!

रिड्वाई के संबंध में कहा जाता है कि वह जब प्रातः उठता, तो इतने जोर से हंसता कि सारा मठ—जिसमें पांच सौ संन्यासी रहते थे—वे उसे सुनते थे। रात जब सोने जाता, तो पुनः वह जोर से हंसता।

बहुत लोगों ने पूछा कि वह ऐसा क्यों करता है लेकिन वह सिर्फ हंस देता और उत्तर नहीं देता। जब वह मर रहा था किसी ने पूछा : एक बात हमें बताओ कि जीवन भर तुम प्रतिदिन सुबह—शाम हंसते क्यों थे? किसी को मालूम नहीं और जब भी हमने पूछा तुम फिर हंस देते। यही एक मात्र रहस्य है। कृपया देह त्याग से पहले इसे प्रकट करने की कृपा करें।

रिड्वाई ने कहा? मैं संसार की पड़ता के कारण हंसता था। सुबह मैं हंसता था क्योंकि मैं फिर उस दुनिया में प्रविष्ट हो गया हूँ और आस-पास सभी मूढ़ हैं। और रात को हंसता था कि एक और दिन इतना अच्छा बीत गया।

तुम हंसोगे तुम व्यथित नहीं होओगे। चारों तरफ सब—कुछ इतना हास्यास्पद है लेकिन तुम्हें दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि तुम इसका एक हिस्सा हो। तुम इससे इतना जुड़े हो कि देख नहीं पाते। हास्यास्पदता को तब तक जाना नहीं जा सकता जब तक उससे एक दूरी, एक अनासक्ति न बन जाए।

सोसान कहता है :

*जब चीजों का गहन अर्थ समझा नहीं जाता,*

*तब मन की सारभूत शांति अकारण ही विचलित हो जाती है।*

और तुम्हें कुछ प्राप्त नहीं होता, तुम कहीं पहुंचते नहीं तुम बस विचलित हो जाते हो। तुम कहां पहुंचे हो? तुम्हें चिंता, तनाव और अशांति से क्या उपलब्ध हुआ है? तुम क्या हो? तुम कहां जा रहे हो? कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अगर कुछ मिलता होता.. ऐसा प्रतीत हो सकता है कि अशांत रहने के कारण तुम्हें कुछ मिल रहा है। तुम्हें कुछ भी नहीं मिल रहा। इसके विपरीत तुम खो रहे हो। तुम उन मूल्यवान घड़ियों को जो आनंदपूर्ण हो सकती हैं उस मूल्यवान समय, ऊर्जा जीवन को, जिसमें तुम खिल सकते थे गंवा रहे हो। और तुम खिल नहीं सकते।

लेकिन तुम हमेशा सोचते हो—यही मूढतापूर्ण दृष्टिकोण है—तुम हमेशा सोचते हो, 'सारा संसार ही गलत है, और अगर मैं सबको बदल पाऊं, तो ही मैं प्रसन्न हो सकता हूं।' तुम कभी प्रसन्न नहीं हो पाओगे तुम प्रसन्न हो ही नहीं सकते—यही अप्रसन्नता का आधार है। एक बार जब तुम्हें यह बात समझ में आ जाती है कि सारे संसार को बदलना तुम्हारा काम नहीं है, जो एकमात्र काम तुम कर सकते हो वह है स्वयं को बदलना।

एक सूफी रहस्यदर्शी बायजीद ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है जब मैं युवा था मैंने सोचा और मैंने ईश्वर से कहा, और मेरी सभी प्रार्थनाओं का यही आधार था, 'मुझे शक्ति दो ताकि मैं सारे संसार को बदल सकूं।' मुझे हर कोई गलत दिखाई देता था। मैं क्रांतिकारी था और धरती के चेहरे को बदल देना चाहता था।

जब मैं थोड़ा और परिपक्व हुआ मैंने प्रार्थना करनी शुरू की 'यह बहुत अधिक प्रतीत होता है। जीवन मेरे हाथों से फिसलता जा रहा है — मेरा लगभग आधा जीवन बीत चुका है और मैं एक भी व्यक्ति को नहीं बदल पाया और सारी दुनिया तो बहुत अधिक है। इसलिए मैंने परमात्मा से कहा 'मेरा परिवार ही पर्याप्त है। मुझे अपने परिवार को बदलने दो।'

'और जब मैं बूढ़ा हो गया' बायजीद कहता है 'मैंने पाया कि परिवार भी बहुत बड़ी बात है, और मैं कौन होता हूं उन्हें बदलने वाला' तब मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि अगर मैं स्वयं को बदल सकूं तो पर्याप्त होगा बहुत होगा। मैंने परमात्मा से प्रार्थना की 'अब मैं ठीक जगह पहुंच गया हूं। कम से कम मुझे यह कर लेने दो, मैं स्वयं को बदलना चाहता हूं।'

परमात्मा ने उत्तर दिया 'अब कुछ समय नहीं बचा। तुमने शुरू में यह मांगा होता तब संभावना थी।'

प्रत्येक व्यक्ति अंत में यही मांगता है। जो प्रारंभ में मांग लेता है वह चीजों के स्वभाव को समझ गया है। वह समझता है कि स्वयं को बदलना भी सरल नहीं है। तुम अपने भीतर एक पूरा जगत हो; तुम अपने भीतर पूरा जगत लिए हुए हो। जो भी अस्तित्व में है, वह तुम्हारे भीतर विद्यमान है। तुम संपूर्ण ब्रह्मांड हो, कोई छोटी-मोटी चीज नहीं हो—अगर यह परिवर्तन घटित हो जाए तो तुमने उपलब्ध कर लिया। नहीं तो

*जब चीजों का गहन अर्थ समझा नहीं जाता,*

*तब मन की सारभूत शांति अकारण ही विचलित हो जाती है।*

*महापथ पूर्ण है विराट आकाश की भांति*

*जहां न कुछ कम है न ही कुछ अधिक।*

*सच तो यह है कि स्वीकार या अस्वीकार करने के अपने चुनाव के कारण,*

*हम चीजों के वास्तविक स्वभाव को नहीं देखते।*

‘महापथ पूर्ण है विराट आकाश की भांति जहां न कुछ कम है, न ही कुछ ज्यादा।’ सभी कुछ वैसा ही है जैसा उसे होना चाहिए; केवल तुम्हें ही उसमें व्यवस्थित होना है केवल तुम ही अव्यवस्थित हो। सभी कुछ वैसा ही है जैसा उसे होना चाहिए...कुछ भी कम नहीं है और कुछ भी अधिक नहीं है।

क्या तुम सोच सकते हो कि इससे बेहतर जगत हो सकता है अगर तुम बुद्धिमान हो तो ऐसा नहीं सोच सकते। अगर तुम मूर्ख हो तो तुम ऐसा सोच सकते हो। जैसा यह है, इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता। केवल यही समस्या है कि तुम इसमें समायोजित नहीं हो। इसमें समायोजित हो जाओ और ‘महापथ परिपूर्ण है विराट आकाश की भांति जहां न कुछ कम है, न ही कुछ अधिक।’ सभी कुछ संतुलित है। केवल तुम ही समस्या हो; संसार समस्या जरा भी नहीं है।

एक राजनैतिक चित्त और एक धार्मिक चित्त में यही अंतर है। और तुम सब राजनैतिक चित्त वाले हो। राजनैतिक चित्त सोचता है, ‘मैं बिलकुल ठीक हूं बाकी सब गलत है।’ इसलिए वह संसार को बदलना शुरू कर देता है—जैसे कि लेनिन, गांधी हिटलर माओ।

एक राजनैतिक चित्त सोचता है सब—कुछ गलत है। अगर सभी कुछ ठीक हो जाए तो सुंदर होगा।

एक धार्मिक चित्त सोचता है, केवल मैं ही व्यवस्थित नहीं हूं अन्यथा हर चीज उतनी सही है जितनी वह हो सकती है

विराट आकाश के समान मार्ग परिपूर्ण है..‘न कुछ कम है न ही कुछ ज्यादा।’ सभी कुछ वैसा ही है जैसा कि उसे होना चाहिए पूर्णतः संतुलित। केवल तुम ही डांवाडोल हो। केवल तुम्हें ही ज्ञात नहीं कि कहां जाना है केवल तुम ही विभाजित हो। जरा सोचो अगर मनुष्य धरती से लुप्त हो जाए, तो संसार बिलकुल ठीक बिलकुल सुंदर होगा—वहां कोई समस्या नहीं होगी।

समस्याएं मनुष्य के साथ आती हैं क्योंकि चीजों को देखने का मनुष्य का ढंग गलत हो सकता है—क्योंकि मनुष्य के पास चेतना है और वह चेतना समस्याएं खड़ी कर देती है। क्योंकि तुम सचेतन हो सकते हो तुम चीजों को विभाजित कर सकते हो। क्योंकि तुम चेतन हो सकते हो, तुम कह सकते हो ‘यह उचित है और वह अनुचित है,’ क्योंकि तुम सचेतन हो सकते हो और कह सकते हो, ‘यह कुरूप है और वह सुंदर है।’ यह चेतना पर्याप्त नहीं है। अगर यह और विकसित हो जाती है अगर यह एक वर्तुल बन जाती है, पूर्ण चैतन्य हो जाती है तब फिर सब व्यवस्थित हो जाता है।

नीत्शे ने कहा है और उसके पास प्रकट करने के लिए बहुत सी अंतर्दृष्टियां हैं उसने कहा है कि मनुष्य एक सेतु है, वह प्राणी नहीं है। वह सेतु है पार जाने के लिए। तुम पुल पर घर नहीं बसा सकते। यही जीसस कहते हैं ‘इससे गुजर जाओ, इस पर घर मत बनाओ, यह केवल सेतु है।’ नीत्शे का वचन है ‘मनुष्य केवल दो शाश्वतताओं, प्रकृति की शाश्वतता और परमात्मा की शाश्वतता के बीच सेतु है।’

प्रकृति में सब ठीक है परमात्मा में सब ठीक है। मनुष्य एक सेतु है वह ठीक मध्य में है आधा प्रकृति आधा परमात्मा—यही कठिनाई है। विभाजित अतीत प्रकृति से संबंधित है; भविष्य परमात्मा से संबंधित है। तनावग्रस्त एक रस्सी की भांति जो दो शाश्वतताओं में खिंचा हुआ है कभी प्रकृति की ओर खिंच जाता है कभी परमात्मा की ओर। कभी इस ओर कभी उस ओर निरंतर डांवाडोल अस्थिर।

कहीं भी ठहर जाओ कोई भी स्थिति ठीक होगी। नांगर फिर से प्रकृति में व्यवस्थित हो जाने के पक्ष में है। अगर तुम प्रकृति में स्थित हो जाते हो तुम देव-तुल्य हो जाते हो, तुम देवता हो जाते हो। बुद्ध आगे बढ़ने और परमात्मा हो जाने के पक्ष में हैं और तब तुम व्यवस्थित हो जाते हो। या तो पीछे लौट जाओ या आखिरी सीमा तक पहुंच जाओ लेकिन सेतु पर ही मत रुक जाना।

और यही बात समझने जैसी है—यह एक महत्वपूर्ण बुनियादी बातों में से एक है— कि पीछे लौटो या आगे बढ़ो तुम एक ही मंजिल पर पहुंचते हो। प्रश्न आगे या पीछे का नहीं है प्रश्न पुल पर ही टिके न रहने का है।

लाओत्सु, च्यांगत्सु, वे सभी प्रकृति में ताओ में लौट जाने के लिए कहते हैं। शंकर बुद्ध जीसस सभी आगे बढ़ने की, पुल को पार कर भगवत्ता तक पहुंचने की बात करते हैं। यह बात विरोधाभासी प्रतीत होती है लेकिन है नहीं— क्योंकि दोनों किनारे एक समान हैं क्योंकि यह सेतु एक वर्तुल है।

चाहे तुम पीछे जाओ चाहे आगे जो भी चुनो तुम एक ही लक्ष्य पर, एक ही विश्राम बिंदु पर पहुंचते हो। अगर तुम्हें लगता है कि होने देना तुम्हारे लिए संभव नहीं, तब पतंजलि का अनुसरण करो— प्रयास संकल्प संघर्ष अनुसंधान— तब तुम आगे बढ़ोगे। अगर तुम्हें लगता है कि तुम विपरीत प्रभाव के नियम को समझ सकते हो न केवल समझ सकते हो, बल्कि इसे अपने भीतर घटित भी होने दे सकते हो, तब सोसान, नांगर का अनुसरण करो पीछे लौट चलो। लेकिन वहीं मत रुके रहना, जहां तुम हो सेतु पर तुम बंटे रहोगे। तुम वहां विश्रामपूर्ण नहीं हो सकते, तुम वहां अपना घर नहीं बना सकते। सेतु घर बनाने की जगह नहीं है। वह लक्ष्य नहीं है, वह केवल गुजर जाने के लिए है।

नीत्शे कहता है? मनुष्य अतिक्रमण करने के लिए है मनुष्य एक अस्तित्ववान प्राणी नहीं है। पशुओं का अस्तित्व है परमात्मा का अस्तित्व है, आदमी के पास अभी अस्तित्व नहीं है। वह केवल संक्रमण की अवस्था में है। वह गुजर जाने की अवस्था है, एक पूर्णता से दूसरी पूर्णता में जाने का मार्ग है। इसके बीच वह विभाजित है।

सोसान कहता है पीछे लौट जाओ, और अगर तुम मुझसे पूछो, तो मैं कहूंगा, पतंजलि से सोसान अधिक सरल है। अंत में वही होगा। बहुत प्रयास तुम्हें अप्रयास में ले जाएगा, अप्रयास भी तुम्हें निष्क्रियता में ले जाएगा—क्योंकि प्रयास कभी लक्ष्य नहीं हो सकता, प्रयास साधन हो सकता है। तुम सदा-सदा के लिए प्रयत्न करते हुए नहीं रह सकते। तुम निष्क्रियता की स्थिति तक पहुंचने के लिए ही प्रयास करते हो।

पतंजलि के साथ प्रयास ही मार्ग है और अप्रयास गंतव्य है प्रयास साधन है अप्रयास साध्य है। सोसान के साथ अप्रयास ही साधन है अप्रयास ही साध्य है। सोसान के साथ पहला कदम ही अंतिम कदम है; सोसान के साथ साधन और साध्य में कोई अंतर नहीं है। लेकिन पतंजलि के साथ है— तुम्हें कई कदम उठाने पड़ते हैं।

इसलिए पतंजलि के साथ बुद्धत्व धीरे- धीरे घटित होगा। सोसान के साथ बुद्धत्व तात्कालिक होगा, इसी क्षण यह अचानक घटित हो सकता है। अगर तुम सोसान को समझ सको, तो उससे सुंदर कुछ और नहीं है। लेकिन अगर तुम नहीं समझ सकते तो पतंजलि ही एक मात्र उपाय है।

*महापथ पूर्ण है विराट आकाश की भांति*

*जहां न कुछ कम है न ही कुछ अधिक।*

*सच तो यह है कि स्वीकार या अस्वीकार करने के अपने चुनाव के कारण*

*हम चीजों के वास्तविक स्वभाव को नहीं देखते।*

क्योंकि हम स्वीकार करते हैं या अस्वीकार करते हैं इसीलिए हम वास्तविक स्वभाव को देख नहीं पाते। फिर तुम अपने मतों, विचारों, पूर्वाग्रहों को बीच में ले आते हो और तुम सब चीजों को रंग चढ़ा देते हो। अन्यथा सब—कुछ पूर्ण है। तुम्हें सिर्फ देखना है। शुद्ध। धारणाओं से रहित दृष्टि, अस्वीकार से रहित दृष्टि। स्वीकार भाव... एक शुद्ध दृष्टि जैसे कि तुम्हारी आंखों के पीछे कोई मन न हो, जैसे कि तुम्हारी आंखें मात्र दर्पण हों वे नहीं

कहती सुंदर कुरूप। दर्पण सिर्फ उसे प्रतिबिंबित करता है जो उसके समक्ष आ जाता है— उसका अपना कोई निर्णय नहीं है।

अगर तुम्हारी आंखों के पीछे मन न हो, तो वे केवल प्रतिबिंबित करती हैं। वे केवल देखती हैं। वे नहीं कहती ' यह अच्छा है और वह बुरा है ' वे निंदा नहीं करती वे प्रशंसा नहीं करती। तब सब उतना स्पष्ट होता है जितना हो सकता है, कुछ भी करने की जरूरत नहीं। यह स्पष्टता, यह मतों और पूर्वाग्रहों से मुक्त आंखें और तुम संबुद्ध हो गए। सुलझाने के लिए तब कोई समस्या नहीं है। तब जीवन कोई पहेली नहीं रहता। यह जीने के लिए, मजा लेने के लिए एक रहस्य है। नाचने के लिए एक नृत्य है। फिर इसके साथ तुम्हारा कोई द्वंद नहीं है, फिर तुम यहां कुछ भी नहीं कर रहे। तुम बस हर्षित हो रहे हो, तब तुम आनंदमग्न हो।

स्वर्ग का यही अर्थ है जहां तुम से कुछ भी करने की अपेक्षा नहीं की जाती जहां तुम आनंद को अर्जित करने का प्रयत्न नहीं करते— जहां आनंद स्वाभाविक है जहां वह तुम पर बरसता है। वह यहीं और अभी घटित हो सकता है। वह सोसान को घटित हुआ है, वह मुझे घटित हुआ है वह तुम्हें घटित हो सकता है। अगर वह एक को घट सकता है वह सबको घट सकता है।

*न तो बाहरी वस्तुओं की उलझनों में जीओ*

*न ही आंतरिक शून्यता की अनुभूति में।*

*कृत्य की कामना मत करो और यह जान कर कि सब—*

*कुछ एकात्म है? शांत हो जाओ*

*और ऐसे भ्रांतिपूर्ण विचार स्वतः ही विदा हो जाएंगे।*

बाहर को भीतर से विभाजित मत करो। सोसान कहता है, ' मत कहो, मेरी रुचि बाह्य में है।' इस संसार में दो तरह के लोग हैं और दोनों ही दुखी होंगे। कार्ल गुस्ताव जुंग मानव-जाति को दो भागों में बांटता है। एक को वह बहिर्मुखी कहता है और दूसरे को अंतर्मुखी। बहिर्मुखी व्यक्ति ' बाह्य ' में रुचि रखते हैं। वे क्रियाशील व्यक्ति हैं सांसारिक हैं— धन पद प्रतिष्ठा सत्ता के पीछे भागने वाले लोग हैं। वे राजनीतिज्ञ बन जाते हैं वे समाज-सुधारक बन जाते हैं, वे महान नेता बन जाते हैं बहुत बड़े उद्योगपति हो जाते हैं। उनकी रुचि वस्तुओं में बाह्य जगत में है उनकी अपने आप में कोई रुचि नहीं है।

दूसरे हैं अंतर्मुखी। वे अधिक सक्रिय लोग नहीं हैं। अगर उन्हें कुछ करना ही पड़े तो कर लेंगे, वरना करने में उनका कोई रुझान नहीं है। वे आंखें बंद किए पड़े रहना पसंद करेंगे। वे कवि रहस्यदर्शी, ध्यानी, चिंतक बन जाते हैं। उनकी संसार में कोई रुचि नहीं वे केवल स्वयं में रुचि रखते हैं। वे अपनी आंखें बंद कर लेते हैं और अपनी ऊर्जाओं को अंतर्मुखी कर लेते हैं। लेकिन सोसान कहता है दोनों ही गलत हैं क्योंकि वे विभाजित हैं। वह व्यक्ति जो बहिर्मुखी है हमेशा अनुभव करेगा कि भीतर कुछ कमी है। भले ही वह बहुत शक्तिशाली हो जाए, भीतर गहरे में यही अनुभव करता है कि वह असहाय है दुर्बल है। बाहर वह कितना ही धन इकट्ठा कर ले भीतर वह निर्धन अनुभव करेगा। संसार में वह एक सफल व्यक्ति हो सकता है अगर तुम पता करो तो भीतर गहरे में वह जानता है कि वह एक असफल व्यक्ति है। वह असंतुलित है उसने बाह्य पर बहुत अधिक ध्यान दिया है। वह एक अति पर चला गया और जब अति होती है तो एक असंतुलन हो जाता है।

और वह व्यक्ति जो एक कवि एक चिंतक एक रहस्यदर्शी बना रहा, जो सदा अपने में ही लीन रहा वह हमेशा एक कमी को अनुभव करेगा, क्योंकि बाहरी दुनिया में वह धनी नहीं है। और बाहरी दुनिया भी सुंदर है। वहां फूल हैं और तारे हैं और वहां सूर्योदय है और नदियां बहती हैं और जलप्रपात गाते हैं। वह निर्धन है क्योंकि वह अनावश्यक रूप से पूरी सृष्टि को इनकार करता रहा है। वह अपनी स्वयं की गुफा में ही जीता रहा है। जब कि वह बाहर आ सकता था और कई रहस्यों को लाखों रहस्यों को जान सकता था। वह अपने में ही बंद रहा, बंद व्यक्ति बना रहा कारावास में रहा। ये दो अतियां हैं।

अतियों से बचो। बाहर और भीतर में भेद मत करो, और जुग द्वारा बताए गए बहिर्मुखी या अंतर्मुखी व्यक्ति मत बनो।

सोसान कहता है एक प्रवाह एक संतुलन हो जाओ। बाहर और भीतर दाईं और बाईं टांग की भांति हैं। एक को क्यों चुनना? अगर तुम एक को चुनते हो तो सब गति बंद हो जाएगी। वे दो आंखों के समान हैं अगर तुम एक को चुनते हो तो देख तो पाओगे, परंतु तुम्हारी दृष्टि अब तीन आयामी नहीं रहती, गहराई खो गई है। तुम्हारे दो कान हैं तुम एक का इस्तेमाल कर सकते हो, तुम इस विचार से ग्रस्त हो सकते हो कि तुम बाएं कान के प्रकार वाले हो या दाएं कान के प्रकार वाले हो लेकिन तब तुम चूक जाते हो। तब तुम आधी दुनिया के प्रति बंद हो जाते हो।

अंतर और बाह्य दो आंखें दो कान दो टांगें हैं— चुनाव क्यों क्रिया जाए? क्यों न चुनाव—रहित होकर दोनों का उपयोग क्रिया जाए? और विभाजन क्यों क्रिया जाए? क्योंकि तुम एक हो। बाईं टांग और दाईं टांग केवल दो दिखाई देती हैं। दोनों के भीतर तुम बहते हो—वही ऊर्जा वही अस्तित्व। तुम अपनी दोनों आंखों से देखते हो। अंतर और बाह्य का उपयोग क्यों न करें और उनमें एक संतुलन बना लें? अतियों में गति क्यों करना?

स्मरण रहे केवल व्यक्ति ही अतियों में नहीं गए हैं समाज भी अतियों में चले गए हैं। पूरब अंतर्मुखी बना रहा इसीलिए निर्धन है। इसका उत्तरदायी कौन है? लाखों लोग रोज मर रहे हैं। और जो जिंदा हैं वे भी जीवित नहीं हैं, मूरख से अधमरे हैं। कौन इसके लिए जिम्मेवार है? — अंतर्मुखी लोग हैं संत—महात्मा कवि जिन्होंने अंतर की बहुत चर्चा की और बाह्य की निंदा की। जिन्होंने कहा, ' बाह्य हमारे लिए नहीं है जिन्होंने कहा, ' बाह्य गलत है;' जिन्होंने कहा ' बाह्य जगत निंदनीय है। अंतस में वास करो।' उन्होंने बाह्य की तुलना में आंतरिक को ऊंचा उठा दिया और संतुलन खो गया।

पूरब ने अंतर्मुखी निर्मित किए लेकिन बाह्य सौंदर्य खो गया। तुम सारे पूरब में गंदगी देख सकते हो। मैं जानता हूं कि एक पाश्चात्य व्यक्ति के लिए भारत आना और इसकी गंदगी में जीना कितना कठिन है। यह गंदा है। कौन जिम्मेवार है? इतनी गंदगी क्यों है? इतनी बीमारी क्यों है? इतनी अस्वस्थता, इतनी भुखमरी क्यों है? क्योंकि बाह्य की उपेक्षा की गई।

हमारी अभिरुचि अंतस को पवित्र करने में थी इसलिए बाह्य गंदगी की चिंता क्यों की जाए? इसे रहने दिया जाए। यह पदार्थ है, इसके विषय में चिंता की आवश्यकता नहीं है। हम तो आंतरिक शुद्धता में रुचि रखते हैं। शरीर की चिंता क्यों करें? दूसरों की चिंता क्यों करें?

परिणाम यह है कि पूरब एक प्रकार का असंतुलन है और पश्चिम दूसरे प्रकार का वे बहिर्मुखी हैं। उन्होंने इतनी धन—दौलत पैदा कर ली है, जितनी पहले कभी न थी इतनी बाह्य स्वच्छता, इतने बढ़िया कपड़े—सम्पत्तियों को भी ईर्ष्या हो सकती है— बेहतर भोजन, बेहतर स्वच्छ परिस्थितियां, सुंदर वातावरण, सब—कुछ— लेकिन बहिर्मुखी। और अंतर अस्तित्व निर्धन है अंतर अस्तित्व रिक्त है।

इसलिए पूरब पश्चिम को अंतःकरण की शिक्षा देता रहता है पूरब के गुरु पश्चिम को सिखाते चले जाते हैं कि ध्यान कैसे करें और पाश्चात्य गुरु पूरब को सिखाते चले जाते हैं कि किस तरह बेहतर इंजीनियर, बेहतर इलेक्ट्रिशियन, बेहतर नगरनियोजक बनें, कैसे अधिक धन-संपत्ति पैदा करें किस प्रकार टेक्नालीजी में विकास करें किस तरह जीवन स्तर को ऊंचा करें। इसलिए अगर तुम्हें चिकित्सा विज्ञान सीखना है, तो पश्चिम जाना पड़ेगा अगर ध्यान सीखना है तो पूरब आना पड़ेगा।

लेकिन दोनों ही अतियां हैं और दोनों ही खतरनाक हैं। अतियां सदा हानिकर होती हैं। खतरा यह है कि चक्र घूम सकता है पूरब भौतिकवादी बन सकता है और पश्चिम आध्यात्मिक हो सकता है। इस बात की बहुत संभावना है यह होने ही वाला है क्योंकि अब पूरब साम्यवादी हो रहा है— जो कि भौतिकवाद की अति है— और पश्चिम अत्यधिक आध्यात्मिक हो रहा है। खतरा है हो सकता है चक्र घूम जाए, क्योंकि तुम बाह्य जगत से ऊब गए हो तुम अंतर्मुखी होना चाहते हो तुम्हें अंतर्यात्रा की आवश्यकता है।

हो सकता है तुम अंतर्यात्रा पर निकल जाओ। हिप्पियों को देखो, वे पश्चिम का भविष्य हैं। वे टेन्नालॉजी के विरुद्ध हैं। उसी प्रकार की अंतर्मुखी किस्म के जिसने पूरब का सर्वनाश कर दिया है। जो पूरब के लिए अनर्थकारी सिद्ध हुई। वे टेक्नालीजी के विरुद्ध हैं, वे बाहरी स्वच्छता के विरुद्ध हैं। हिप्पियों से अधिक गंदे लोग तुम्हें कहीं नहीं मिल सकते वे स्नान नहीं करेंगे वे कपड़े नहीं बदलेंगे। वे कहते हैं ये बाहरी वस्तुएं हैं—वे अंतर्यात्रा पर हैं। वे ध्यान में रुचि रखते हैं लेकिन स्वच्छता उन्हें पसंद नहीं। नहीं यह वही मुड़ता है वही अति वही विरोध। यह बात ठीक लगती है क्योंकि जब तुम एक अति पर जी लेते हो तो मन कहता है 'अब दूसरी ओर चलो क्योंकि इससे कोई संतुष्टि नहीं हुई। यह अति विफल हो गई इसलिए विपरीत की ओर बढ़ो।' लेकिन स्मरण रहे एक अति से दूसरी अति पर जाना आसान है लेकिन अतियां कभी परितुष्टि नहीं देती। पूरब को देखो अंतरिक अति भी संतोषजनक सिद्ध नहीं हुई, यह भी विफल हो गई। यह बाहर और भीतर का सवाल नहीं है, यह संतुलन बनाने का सवाल है। संतुलन सफल होता है असंतुलन असफल हो जाता है।

और बाहर और भीतर दो नहीं हैं। बाहर कहां समाप्त होता है और भीतर कहां प्रारंभ होता है? क्या तुम बता सकते हो क्या तुम सीमा-रेखा तय कर सकते हो? क्या तुम कह सकते हो 'यहां बाहर समाप्त होता है और भीतर शुरू होता है?' कहां? वे विभाजित नहीं हैं। वे मन के विभाजन हैं। भीतर और बाहर एक हैं बाहरी सिर्फ भीतर का विस्तृत रूप है भीतर सिर्फ अंदर आता हुआ बाहर है वे एक हैं— एक ही अस्तित्व के. दो हाथ, दो पांव दो आंखें।

क्या बाह्य परमात्मा के बाहर है? ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि कुछ भी परमात्मा के लिए बाहर नहीं हो सकता कुछ भी उसके बाहर नहीं हो सकता है। पूर्ण में बाह्य को और पूर्ण में अंतर को सम्मिलित होना चाहिए। पूर्ण के लिए कुछ बाह्य और भीतर जैसा कुछ भी नहीं है। यही सोसान कहता है। वह कहता है

*न तो बाहरी वस्तुओं की उलझनों में जीओ*

*न ही आंतरिक शून्यता की अनयति में।*

*कृत्य की कामना मत करो और यह जान कर कि सब—*

*कुछ एकात्म है? शांत हो जाओ*

*और ऐसे भ्रांतिपूर्ण विचार स्वतः ही विदा हो जाएंगे।*

लोग मेरे पास आते हैं— और मन इतना चालाक है— वे मेरे पास आते हैं और कहते हैं, हम संन्यास तो लेना चाहते हैं लेकिन हम भीतरी संन्यास चाहते हैं बाहरी नहीं। हम कपड़े नहीं बदलेंगे। और वे कहते हैं बाहरी क्यों? इसे सिर्फ भीतरी होने दें। वे नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं। भीतर कहां से आरंभ होता है?

जब तुम भोजन खाते हो तब तुम कभी नहीं कहते इसे आंतरिक होने दो। जब तुम्हें प्यास लगती है और तुम पानी पीते हो तुम कभी नहीं कहते इसे आंतरिक होने दो। प्यास आंतरिक है तो बाह्य जल क्यों? लेकिन कहां पानी खत्म होता है और कहां प्यास शुरू होती है? — क्योंकि जब तुम पानी पीते हो प्यास मिट जाती है तो इसका यह अर्थ हुआ कि कहीं मिलन होता है। कहीं बाह्य पानी अंतरिक प्यास से मिलता है नहीं तो यह कैसे मिट जाती है?

तुम्हें भूख लगती है और तुम भोजन लेते हो। भोजन बाहरी है, भूख भीतरी है, भीतरी भूख के लिए बाहरी भोजन क्यों खाएं? क्यों मूर्ख बनें? कुछ भीतरी लो। लेकिन कोई भीतरी भोजन नहीं है। भूख भीतरी है। भोजन बाहरी है लेकिन भोजन कहीं तो भीतर पहुंचता है। वह क्षेत्र बदल लेता है वह तुम्हारा रक्त बन जाता है वह तुम्हारी हड्डियां बन जाता है। यह वह पदार्थ बन जाता है जिससे तुम्हारा मन बना है वह तुम्हारी विचार-प्रक्रिया बन जाता है।

भोजन तुम्हारा विचार बन जाता। और अगर भोजन तुम्हारा विचार बन जाता है तो स्मरण रहे भोजन तुम्हारा अ-विचार भी बन जाएगा। भोजन तुम्हारा मन बन जाता है भोजन तुम्हारा ध्यान बन जाता है। क्या बिना मन के तुम ध्यान कर सकते हो? बिना मन के तुम कैसे अ-मन हो जाओगे? बिना विचारणा के कैसे तुम विचार को गिरा सकोगे? मन अति सूक्ष्म भोजन है अ-मन सूक्ष्मतम भोजन है— लेकिन कोई विभाजन नहीं है।

तो जब तुम संन्यास लेना चाहते हो तब रंग भी सीमा का अतिक्रमण करता है। यह बाहर से शुरू होता है और धीरे-धीरे भीतर गहरे में प्रवेश करता है। वह तुम्हारे पूरे प्राणों को रंग देता है कपड़े भी तुम्हारी आत्मा को स्पर्श करते हैं। ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि बाहर और भीतर दो नहीं हैं वे एक हैं। एक सीधा सा कृत्य— यह बाहरी दिखता है लेकिन भीतर तक जाता है, और वह वहीं से आता है। स्मरण रखो खेल मत खेलो और अस्तित्व को विभाजित मत करो। यह अविभाजित है।

जब तुम किसी व्यक्ति को प्रेम करते हो तो उसके शरीर का आलिंगन करना चाहते हो। तुम नहीं कहोगे 'मैं तुम्हें प्रेम करता हूं लेकिन मैं तुम्हें तरिक प्रेम करता हूं।' यहां एक मोटी लड़की थी बहुत ही मोटी उसने मुझसे कहा 'मेरा एक ही प्रेमी है और वह भी कहता है, मैं केवल तुम्हारी आत्मा को प्रेम करता हूं तुम्हारे शरीर को नहीं।'

उसको बहुत चोट पहुंची उसे बहुत बुरा लगा, क्योंकि जब तुम किसी से कहो, 'मैं केवल तुम्हारी आत्मा से प्रेम करता हूं तुम्हारे शरीर को नहीं,' इसका क्या अर्थ हुआ? जब तुम किसी से प्रेम करते हो, तुम पूरे व्यक्ति से प्रेम करते हो तुम विभाजन नहीं कर सकते। यह चालाकी है धोखा है। वह लड़का वास्तव में उस लड़की से प्रेम ही नहीं करता, वह एक खेल खेल रहा है। वह कहना चाहता है, 'मैं तुमसे प्रेम नहीं करता,' लेकिन वह ऐसा कह नहीं सकता।

अगर तुम संन्यास नहीं लेना चाहते मत लो। लेकिन खेल मत खेलो चालाक मत बनो होशियार बनने की कोशिश मत करो। मत कहो 'यह बाहरी है और मुझे कुछ आंतरिक चाहिए।'

अस्तित्व में बाह्य आंतरिक से मिलता है, आंतरिक बाह्य से मिलता है; वे एक ही अस्तित्व के दो पंख हैं। और कोई पक्षी एक पंख से उड़ नहीं सकता, और कोई प्राणी एक पंख से विकसित नहीं हो सकता—तुम्हें दोनों चाहिए। परमात्मा की इस जगत को जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता परमात्मा को इस जगत की

है। परमात्मा के बिना जगत का अस्तित्व नहीं हो सकता। जगत के बिना परमात्मा का अस्तित्व भी नहीं हो सकता।

एक रबाई मुझे बहुत प्रिय है, उसका नाम बालसेम है, एक यहूदी रहस्यदर्शी, कुछ संबुद्ध यहूदियों में एक। वह अपनी प्रत्येक प्रार्थना में कहता था 'स्मरण रखो, जितनी मुझे तुम्हारी आवश्यकता है उतनी ही तुम्हें मेरी आवश्यकता है। बालसेम के बिना तुम कहां होओगे?' वह परमात्मा से कहता था 'मुझे तुम्हारी जरूरत है तुम्हें मेरी जरूरत है। बिना बालसेम के तुम कहां होओगे? कौन प्रार्थना करेगा?'

इसे स्मरण रखो, वह कुछ जानता है वह सही है। आंतरिक को बाह्य चाहिए, क्योंकि बाह्य और कुछ नहीं सिर्फ आंतरिक का विस्तृत रूप है बाह्य को आंतरिक की जरूरत है क्योंकि आंतरिक और कुछ नहीं परिधि का केंद्र है।

क्या बिना परिधि के केंद्र हो सकता है? क्या बिना केंद्र के परिधि हो सकती है। यह असंभव है। परिधि के बिना केंद्र कैसे हो सकता है? अगर तुम्हारा केंद्र है अगर तुम उसे केंद्र कहते हो तो तत्क्षण परिधि का समावेश हो जाता है। बिना केंद्र के तुम्हारे पास परिधि कैसे हो सकती है। वह भले ही दिखाई न दे लेकिन वह है अन्यथा परिधि नहीं हो सकती। फिर अगर तुम उचित ढंग से गहराई से देखते हो तो परिधि और कुछ नहीं, केंद्र का ही विस्तार है और केंद्र और कुछ नहीं बीज में परिधि है सघन संकेंद्रित, सारभूत रूप में परिधि है।

न तो बाहरी वस्तुओं की उलझनों में जीओ  
न ही आंतरिक शून्यता की अनुभूति में।  
कृत्य की कामना मत करो और यह जान कर कि सब—  
कुछ एकात्म है शांत हो जाओ  
और ऐसे भ्रांतिपूर्ण विचार स्वतः ही विदा हो जाएंगे।  
जब तुम अक्रिया को पाने के लिए कर्म को रोकने का प्रयास करते हो  
तो तुम्हारा वही प्रयास तुम्हें क्रिया से भर देता है।

यही है विपरीत परिणाम का नियम।

*जब तुम अक्रिया को पाने के लिए कर्म को रोकने का प्रयास करते हो तो तुम्हारा वही प्रयास तुम्हें क्रिया से भर देता है।*

*जब तक तुम अतियों में जीते हो,  
तब तक तुम कभी एकात्मकता को नहीं जान पाओगे।  
जो मध्य में नहीं जीते, वे क्रिया और अक्रिया, स्वीकार और  
इनकार दोनों में असफल हो जाते हैं।*

निष्क्रिय होने की चेष्टा मत करो क्योंकि चेष्टा क्रिया से जुड़ी है। कोई भी निष्क्रिय होने की चेष्टा नहीं कर सकता। तब क्या करें? पूर्ण रूप से सक्रिय हो रहो और तब निष्क्रियता आती है। वह छाया की भांति पीछे चली आती है उसे आना ही पड़ता है। पूर्ण रूप से विचार करो और तब निर्विचार आता है। तुम विचारों को छोड़ नहीं

सकते। जो अधूरा है उसे छोड़ा नहीं जा सकता केवल पूरे को छोड़ा जा सकता है। वस्तुतः जो पूरा हो जाता है, वह स्वयं ही स्वतः गिर जाता है।

सक्रिय रहो। सक्रियता स्वयं ऐसी स्थिति निर्मित कर लेती है जिसमें निष्क्रियता घटित होती है। अगर तुम दिन भर सक्रिय रहे हो, तुम जो कुछ भी कर रहे थे उसमें समग्रता से सक्रिय रहे हो बगीचे में गड़ा खोदना, या फैक्ट्री या दुकान में काम करना, या स्कूल में पढ़ाना जो भी कर रहे हो समग्रता से करो और जब शाम होती है और सूर्यास्त हो जाता है तुम पर निष्क्रियता उतरने लगेगी। यह निष्क्रियता सुंदर है वह सक्रियता के समान ही सुंदर है। चुनाव के लिए कुछ नहीं है। दोनों सुंदर हैं दोनों की आवश्यकता है।

निष्क्रिय होने का प्रयास मत करो। तुम निष्क्रिय होने का प्रयास कैसे कर सकते हो? तुम बुद्ध की भांति बैठ सकते हो लेकिन वह निष्क्रियता ऊपर-ऊपर ही होगी। तुम्हारे भीतर गहरे में हलचल ही होगी; तुम भीतर उबल रहे होओगे ज्वालामुखी की तरह तुम किसी भी क्षण फूट सकते हो। तुम शरीर को जबरदस्ती शांत बिठा सकते हो – अपने होने के साथ कैसे बलप्रयोग करोगे? तुम्हारा होना सतत जारी रहता है। इसीलिए तुम विचार करना बंद नहीं कर सकते। लोग झांझेन में वर्षों बीस-पच्चीस वर्ष मन को शांत करने के लिए छह-छह घंटे लगातार बैठते हैं और मन काम करता रहता है करता रहता है करता रहता है।

इसीलिए मेरा जोर सक्रिय ध्यान विधियों पर है। वह संतुलन है। पहले, पूरी तरह सक्रिय हो जाओ ताकि निष्क्रियता अपने आप उसके पीछे आ सके। जब तुम सक्रिय हो जाते हो और सारी ऊर्जा गतिमान हो जाती है तब तुम विश्राम करना चाहोगे। अगर तुम सक्रिय ही नहीं हुए? विश्राम कैसे अनुसरण करेगा?

तर्क बिलकुल भिन्न बात कहेगा। तर्क कहेगा, दिन भर विश्राम का अभ्यास करो, ताकि रात को अच्छी तरह विश्राम कर सको।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने डॉक्टर के पास गया। खांसते हुए उसने प्रवेश किया। डॉक्टर ने कहा अभी भी खांसी आ रही है? लेकिन पहले से ठीक लगती है।

नसरुद्दीन ने कहा ऐसा होगा ही क्योंकि मैं रात भर इसका अभ्यास करता रहा। अगर तुम सारा दिन विश्राम का अभ्यास करते हो तो रात को नींद की आशा मत करो। विश्राम का अभ्यास और अधिक विश्राम नहीं लाएगा; विश्राम का अभ्यास क्रियाशीलता लाएगा। तुम बिस्तर पर लेटे-लेटे सोचोगे इधर-उधर करवटें लोगे। तुम सारी रात कसरत करते रहोगे। अगर तुम शरीर के साथ जबरदस्ती करते हो, तो मन को उसका स्थान लेना पड़ेगा। तब मन दुखस्वप्नों में चला जाएगा।

नहीं बुद्धिमान व्यक्ति संतुलन बनाता है और वह जानता है कि जीवन स्वयं संतुलन बनाता है। अगर तुम एक को करते हो-लेकिन समग्रता से — ताकि कुछ न बचे पूरी ऊर्जा ने सक्रियता का आनंद लिया है- फिर विश्राम स्वतः आता है तब विश्राम अनुगमन करता है। और जब तुम विश्राम का मजा लेते हो तब सक्रियता आ जाती है क्योंकि जब तुम विश्राम करते हो, तुमको ऊर्जा प्राप्त होती है तुम फिर से नये हो जाते हो। तब सारा शरीर ऊर्जा से भर जाता है ऊर्जा की बाढ़ सी आ जाती है। अब तुम्हें फिर इसे बांटना पड़ता है और कर्म में इसे प्रयुक्त करना पड़ता है। फिर तुम भर दिए जाओगे।

यह बिलकुल बादलों की भांति है उन्हें बरसना ही पड़ता है वे फिर भर जाएंगे- सागर है उन्हें भरने के लिए। उन्हें बरसना ही होगा वे फिर भर जाएंगे। नदी को सागर में अपने आपको उड़ेलना ही पड़ेगा वह फिर भर जाएगी। जितना वह उंडेलेगी उतना ही वह भर जाएगी।

सोसान कहता है पूर्ण रूप से सक्रिय हो जाओ, तभी तुम पूरी तरह निष्क्रिय हो पाओगे। तब दोनों अतियां मिलती हैं और एक सूक्ष्म संतुलन उपलब्ध होता है। वह सूक्ष्म संतुलन सम्बन्ध है वह सूक्ष्म संतुलन शांति है।

वह सूक्ष्म संतुलन श्रेष्ठतम संभव शांति है-शिखर पराकाष्ठा चरमोत्कर्ष क्योंकि जब दो चीजों में संतुलन होता है- बाह्य और अंतस सक्रियता और निष्क्रियता-सहसा तुम दोनों का अतिक्रमण कर जाते हो। जब वे दोनों संतुलित हो जाते हैं तुम न यह होते हो न वह। अचानक तुम तीसरी ही शक्ति हो जाते हो- एक दर्शक एक साक्षी। लेकिन तुम इसके लिए प्रयास नहीं कर सकते।

*जब तुम अक्रिया को पाने के लिए कर्म को रोकने का प्रयास करते हो, तो तुम्हारा वही प्रयास तुम्हें क्रिया से भर देता है।*

*जब तक तुम अतियों में जीते हो, तब तक तुम कभी एकात्मकता को नहीं जान पाओगे।*

अतियों का अतिक्रमण करो। सांसारिक व्यक्ति मत बनो और तथाकथित आध्यात्मिक व्यक्ति भी मत बनो। आस्तिक मत बनो, नास्तिक भी मत बनो। बाह्य की संपत्ति के लिए पागल मत होओ और तरिक शांति से ग्रसित मत होओ। संतुलन-संतुलन ही आदर्श वाक्य होना चाहिए।

*जो मध्य में नहीं जीते, वे क्रिया और अक्रिया,  
स्वीकार और इनकार दोनों में असफल हो जाते हैं।*

और यही परिणाम है जो अतियों का चुनाव करते हैं, वे दोनों में असफल हो जाते हैं, क्योंकि अगर तुम सक्रिय, सक्रिय और सक्रिय ही होते जाओ और निष्क्रियता को नहीं आने देते फिर तुम ऊर्जा कहां से प्राप्त करोगे? तुम खोखले, नपुंसक शक्तिहीन, निर्बल हो जाओगे।

संसार में तथाकथित सफल व्यक्तियों के साथ यही होता है राजनेता, राष्ट्रपति प्रधानमंत्री, जब तक वे सफल होते हैं, वे अपना सब-कुछ गंवा चुके होते हैं। वे अब नहीं बचते। सफलता होती है लेकिन इस सौदे में उन्होंने स्वयं को बेच डाला है, वे बचे ही नहीं। और वही उनके साथ होता है जिन्होंने अंतस को चुना है, अंतर्मुखी लोग जब तक वे भीतर पहुंचते हैं, उन्हें चारों तरफ केवल अशांति ही मिलती है।

अगर तुम एक अति को चुनते हो तुम दोनों में विफल हो जाओगे। अगर तुम चुनाव नहीं करते तुम दोनों में सफल हो जाओगे। संतुलन सफल होता है अतियां असफल हो जाती हैं। इस संतुलन को बुद्ध ने दि मिडिल पाथ मझिम निकाय कहा है कनफ्युशियस ने दि गोल्डन मीन मध्यम मार्ग कहा है।

बस मध्य में हो जाओ। यही श्रेष्ठतम कला और कौशल है- केवल मध्य में हो जाना चुनाव न करना, न बाएं जाना, न दाएं जाना। न वामपंथी बनो और न दक्षिणपंथी- बिलकुल ठीक मध्य में हो जाओ।

अगर तुम ठीक मध्य में हो, तो तुम संसार से पार हो गए। तब तुम पुरुष नहीं रहे, स्त्री नहीं रहे। यही जीसस कहते हैं। फिर तुम भौतिकवादी भी नहीं रहे आध्यात्मिक भी नहीं रहे। फिर तुम जीवित भी नहीं हो, फिर तुम मरोगे भी नहीं।

न यह, न वह- पुल पार कर लिया गया है। तुम मंजिल पर पहुंच गए। और मंजिल कहीं भविष्य में नहीं है, वह यहीं दो अतियों के मध्य में है। न प्रेम करो न घृणा। सदा स्मरण रखो जब भी दो अतियां सामने हों चुनाव मत करो। केवल दोनों के बीच संतुलन पाने की चेष्टा करो। प्रारंभ में, पुरानी आदत के कारण यह कठिन होगा।

ऐसा हुआ मुल्ला नसरुद्दीन बीमार हो गया और उसे अस्पताल में भरती करवा दिया गया। कुछ ही मिनटों के बाद किसी ने द्वार पर दस्तक दी। और एक फुर्तीली सी ठिगनी महिला ने प्रवेश किया।

उसने कहा मैं तुम्हारी डॉक्टर हूँ। कपड़े उतारो मैं तुम्हारा परीक्षण करने आई हूँ। मुल्ला ने पूछा आपका मतलब सारे कपड़ों से है?

डॉक्टर ने कहा हां मेरा यही मतलब है।

उसने कपड़े उतारे। डॉक्टर ने उसका परीक्षण किया। फिर उसने कहा अब तुम बिस्तर पर जाकर लेट सकते हो। तुमको कुछ पूछना है?

मुल्ला नसरुद्दीन बोला केवल एक प्रश्न, आपने द्वार खटखटाने का कष्ट क्यों किया?

उस महिला ने कहा बस पुरानी आदत।

तुम्हारी चेष्टाओं में भी पुरानी आदतें बनी रहती हैं। आदतों का अनुगमन करना सरल है, क्योंकि तुम्हें सजग होने की आवश्यकता नहीं— वे अपने आप काम करती रहती हैं। सजगता कठिन है क्योंकि वह कभी तुम्हारी आदत नहीं रही।

तुम आसानी से चुनाव करते हो तुम सरलता से निंदा करते हो प्रशंसा करते हो, अस्वीकार करते हो, स्वीकार करते हो। तुम कहते हो ' यह अच्छा है वह बुरा है सरलतापूर्वक क्योंकि लाखों जन्मों से यह तुम्हारी आदत बन गई है। तुम सदा चुनाव करते आ रहे हो। यह बस रोबोट जैसी बात है।

जैसे ही तुम बिना किसी होश के कुछ देखते हो तुमने निश्चय और निर्णय कर लिया है। एक फूल है तुम उसे देखते हो और कहते हो ' सुंदर ' या ' असुंदर।' तुरंत निर्णय हो जाता है। धारणा होने के साथ ही निर्णय आ जाता है। तब तुम कभी मध्य में स्थित नहीं रह पाओगे।

एक व्यक्ति च्यांगत्सु के पास गया और उसने नगर के एक व्यक्ति के बारे में कहा वह पापी है वह बहुत बुरा आदमी है चोर है और उसकी बहुत तरह से निंदा की।

स्वांग? ने सुना और कहा लेकिन वह बांसुरी बहुत अच्छी बजाता है।

फिर एक दूसरा आदमी आया और पहला आदमी वहीं बैठा था और दूसरे ने कहा नगर का यह व्यक्ति वास्तव में बहुत अच्छा बांसुरीवादक है।

नागर ने कहा लेकिन वह चोर है।

दोनों वहां मौजूद थे उन्होंने पूछा आपका तात्पर्य क्या है?

नागर ने कहा संतुलन बना रहा हूँ। और मैं कौन हूँ निर्णय लेने वाला? वह चोर है वह अच्छा बांसुरीवादक है। मेरे लिए कोई अस्वीकार नहीं है, कोई स्वीकार नहीं है। मेरे लिए कोई चुनाव नहीं। वह जो है है। मैं कौन होता हूँ निर्णय करने वाला, इस अति और उस अति का चुनाव करने वाला। मेरे लिए न वह अच्छा है, न बुरा है, वह स्वयं है। और यह उसका मामला है। मैं कौन हूँ यहां कुछ कहने वाला? तुम दोनों में संतुलन बनाने के लिए मुझे कुछ कहना पड़ा।

अचुनाव कठिन है, लेकिन प्रयत्न करो और सभी में प्रयत्न करो—जब तुम्हारे मन में घृणा का भाव हो तो मध्य की ओर जाने की कोशिश करो। जब प्रेम का भाव हो तो मध्य में आने की कोशिश करो। जो कुछ भी तुम अनुभव करो मध्य में आने का प्रयास करो। और तुम चकित होओगे कि दो .अतियों के बीच में एक बिंदु है जहां दोनों का अस्तित्व मिट जाता है— जब तुम न तो घृणा अनुभव करते हो, न प्रेम अनुभव करते हो। बुद्ध ने इसे उपेक्षा, असंबंधित होना कहा है। असंबंधित होना उचित शब्द नहीं है।

उपेक्षा का अर्थ है वह मध्य-बिंदु जहां तुम न यह हो और न वह हो। तुम यह नहीं कह सकते, ' मैं प्रेम करता हूं; ' तुम नहीं कह सकते, ' मैं घृणा करता हूं।' तुम कुछ नहीं कह सकते, तुम सिर्फ मध्य में हो। तुम्हारा तादात्म्य टूट गया है। एक अतिक्रमण घटित हो जाता है, और यह अतिक्रमण ही पुष्पित हो जाता है। यही वह परिपक्वता है जो उपलब्ध करनी है, यही लक्ष्य है।

आज इतना ही।

## बोलना और सोचना छोड़ दो

सूत्र:

*वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना,*

*उनकी वास्तविकता से चूक जाना है;*

*यह कहना कि वस्तुएं असार हैं*

*उनकी वास्तविकता से फिर चूक जाना है।*

*जितना तुम सत्य के विषय में बोलते और सोचते हो, उतना ही तुम उससे दूर भटक जाते हो।*

*बोलना और सोचना छोड़ दो,*

*तो फिर ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तुम न जान सकोगे।*

वास्तविकता सदा से वहां है बस तुम्हारे हृदय के निकट, तुम्हारी आंखों के निकट, तुम्हारे हाथों के निकट प्रतीक्षा करती हुई। तुम उसे छू सकते हो तुम उसे अनुभव कर सकते हो, तुम उसे जी सकते हो-लेकिन तुम उसका चिंतन नहीं कर सकते। देखना संभव है अनुभूति संभव है, स्पर्श संभव है लेकिन सोच-विचार करना संभव नहीं है। विचार-प्रक्रिया की प्रकृति को समझने की कोशिश करो। विचार सदा किसी के विषय में होता है, वह कभी सीधा-सीधा नहीं होता। तुम वास्तविकता को देख सकते हो, लेकिन तुम्हें इसके विषय में सोचना पड़ेगा और 'विषय में' एक जाल है, क्योंकि जब भी तुम किसी के विषय में सोचते हो तो तुम उससे दूर चले जाते हो। 'उसके विषय में' का अर्थ है अप्रत्यक्ष। 'उसके विषय में' का अर्थ है कि तुम इस फूल को यहीं और अभी नहीं देखोगे तुम उसके विषय में सोचोगे और 'उसके विषय में' बाधा बन जाएगा। 'उसके विषय में' के माध्यम से तुम इस फूल तक कभी पहुंच नहीं पाओगे।

देखना प्रत्यक्ष है छूना प्रत्यक्ष है सोच-विचार करना अप्रत्यक्ष है। इसी कारण से सोच-विचार इससे चूक जाता है। एक प्रेमी वास्तविकता को जान सकता है यहां तक कि एक नर्तक भी उसे जान सकता है, एक गायक इसकी अनुभूति कर सकता है लेकिन एक विचारक लगातार इससे चूकता रहता है।

मैंने एक यहूदी विचारक के विषय में सुना है। वह एक साधारण सा किसान था लेकिन बहुत विचारशील था। उसका नाम योसेल था। जैसा कि दर्शनशास्त्री किया करते हैं वह प्रत्येक बात के बारे में सोच-विचार किया करता था। उसके लिए कुछ भी कर पाना मुश्किल था, क्योंकि सोच-विचार में उसका बहुत सा समय निकल जाता था, और जब तक वह तैयार होता, अवसर खो चुका होता था।

एक बार वह पास के एक गांव के बाजार में अपना गेहूं बेचने गया। उसने अपनी पत्नी से कहा जैसे ही मैं गेहूं बेच लूंगा शीघ्र ही मैं तुम्हें तार भेज दूंगा।

उसने अच्छा लाभ कमा कर गेहूं बेच दी। वह पोस्ट ऑफिस गया उसने तार भेजने के लिए फॉर्म भरा और फिर उसके बारे में सोचने लगा।

उसने लिखा था गेहूं लाभ पर बेच दी है। कल आ रहा हूं। प्रेम और चुंबन - योसेल।

फिर उसने सोचना शुरू किया और उसने सोचा मेरी पत्नी सोचेगी कि मैं पागल हो गया हूं। 'लाभ पर' क्यों लिखे क्या मैं अपना गेहूं घाटे पर बेचने वाला था? तो उसने 'लाभ पर' शब्द काट दिया। तब वह और

चिंतित हो गया क्योंकि अगर वह भूल कर सकता था और गलत शब्द लिख सकता था तो हो सकता है कि उसने और भी गलतियां कर दी हों। तो उसने फिर देखा प्रत्येक शब्द के विषय में सोचने लगा।

फिर उसने कहा कल आ रहा हूं क्यों? क्या मैं अगले महीने, या अगले साल जाने वाला था? मेरी पत्नी जानती है कि गेहूं बिक जाएगा, मैं जल्दी ही वापस लौट जाऊंगा। इसलिए उसने 'कल आ रहा हूं' शब्दों को काट दिया।

तब उसने सोचा, मेरी पत्नी तो यह जानती है कि मैं गेहूं बेचने आया हूं तो गेहूं बेच दी है क्यों लिखूं? उसने उसे भी काट दिया।

और फिर वह हंसने लगा। उसने कहा मैं अपनी खुद की पत्नी को लिख रहा हूं। मैं 'प्रेम और चुंबन' क्यों लिखूं? क्या मैं किसी दूसरे की पत्नी को लिख रहा हूं? और क्या यह उसका जन्म-दिन है या यम किपूर का पर्व है या कुछ और है? उसने उसे भी काट दिया।

अब केवल उसका नाम ही बचा था योसेल। उसने अपने आप से कहा योसेल क्या तुम पागल हो गए हो? तुम्हारी पत्नी पहले से ही तुम्हारा नाम जानती है। इसलिए उसने तार फाड़ डाला और प्रसन्न हुआ कि उसने पैसे बचा लिए और मूर्खता करने से भी बच गया।

लेकिन ऐसा ही होता है अगर तुम किसी के विषय में सोचते ही रहते हो तो तुम सारे जीवन को ही चूक जाते हो- धीरे- धीरे सब-कुछ काट दिया जाता है। अंत में तुम भी काट दिए जाते हो। न केवल शब्द कट जाता है बल्कि अंत में तुम भी काट दिए जाते हो। सोच-विचार करना धुएं के समान हो जाता है सब-कुछ इसके भीतर जाता है और सभी कुछ समाप्त हो जाता है। और कुछ करना असंभव हो जाता है-तार तक भेजना भी संभव नहीं रहता है। कृत्य असंभव हो जाता है क्योंकि कृत्य प्रत्यक्ष है और विचार करना अप्रत्यक्ष है। उनका कभी मिलन नहीं होता।

संसार में यही समस्या है जो लोग विचार करते हैं वे कभी कृत्य नहीं करते, और जो लोग विचार नहीं करते वे काम करते रहते हैं। संसार दुख में है। जो लोग मूर्ख हैं, वे कर्म किए चले जाते हैं, क्योंकि वे कभी विचार नहीं करते वे हर मामले में कूद पड़ते हैं। हिटलर और नेपोलियन और माओ जैसे लोग वे कर्म करते चले जाते हैं। और बुद्धिमान लोग ये तथाकथित विचारक लोग- अरस्तु, या कांट, या हीगल ये लोग सोचते ही रहते हैं वे कभी कुछ नहीं करते।

वास्तविकता की खोज करने वाले व्यक्ति की यही समस्या है कि वह विचारों के दुष्क्र को कैसे रोके और फिर भी सजग रहे। क्योंकि मूढ़ भी नहीं सोचते लेकिन वे सजग नहीं हैं। सजग रहो जो ऊर्जा विचार में चली जाती है उसे सजगता बननी चाहिए। जो चेतना सोच-विचार के साथ दुष्क्र में चली जाती है उसे बचाया जाना चाहिए, शुद्ध करना चाहिए। सोच-विचार रुक जाना चाहिए चेतना का एक वर्तुल में घूमना बंद होना चाहिए लेकिन चेतना को नहीं रुकना है। चेतना और घनीभूत होनी चाहिए। और कर्म को वहां होना चाहिए कर्म को बंद नहीं होना चाहिए।

सजगता और कर्म और तुम शीघ्र ही वास्तविकता को उपलब्ध कर लोगे। और केवल तुम ही नहीं- तुम एक ऐसी परिस्थिति निर्मित कर दोगे कि दूसरे भी वास्तविकता को उपलब्ध कर सकते हैं। तुम्हारे चारों ओर एक ऐसा वातावरण एक ऐसी आबोहवा बन जाएगी जिसमें घटनाएं अपने आप से ही घटित होने लगेंगी। यही बुद्ध के साथ हुआ यही सोसान के साथ हुआ और नागर के साथ हुआ।

स्मरण रहे, कर्म उचित है सोचना दुष्क्र है; यह कभी कहीं नहीं ले जाता है। इसलिए विचार करना रुक जाना चाहिए, कर्म करना बंद नहीं होना चाहिए। ऐसे लोग हैं जो सोच-विचार करते चले जाएंगे कर्म बंद हो

जाएगा। ऐसा ही होता है जब कोई जीवन त्याग करता है जंगल में या हिमालय पर चला जाता है। वह कर्म का त्याग कर देता है सोच-विचार का नहीं। वह उस संसार को छोड़ देता है जहां कर्म की आवश्यकता थी। वह यथार्थ को ही त्याग रहा है क्योंकि कर्म के द्वारा ही तुम वास्तविकता के संपर्क में आते हो। देखना कर्म है चलना कर्म है, नृत्य करना कर्म है चित्रकारी कर्म है। तुम जो भी करो, तुम वास्तविकता के संपर्क में आते हो। तुम को अपने कार्य में और- और संवेदनशील होते जाना है। कर्म का त्याग नहीं किया जाना है।

कर्म समग्रता से होना चाहिए क्योंकि वह मार्ग है जिससे गुजर कर तुम वास्तविकता में प्रवेश करते हो और वास्तविकता तुम्हारे भीतर प्रवेश करती है। इसे समझने का प्रयत्न करो क्योंकि यह मूलभूत बात है- मेरे लिए मूलभूत सोच-विचार को त्याग दो कर्म का त्याग मत करो।

यहां लोग हैं जो सोचते ही रहते हैं और ऐसे लोग हैं जो कर्म को त्यागते रहते हैं। लेकिन वे हिमालय में क्या करेंगे? तब कर्म न करने पर सारी ऊर्जा सोच-विचार में चली जाएगी। वे महान विचारक हो जाएंगे। लेकिन दर्शनशास्त्र मूर्खों का जगत है तुम शब्दों में जीते हो वास्तविकताओं में नहीं। प्रेम मिट जाता है केवल 'प्रेम' शब्द ही बचा रहता है। परमात्मा खो जाता है- क्योंकि वह तो खेतों में था बाजार में था संसार में था- लेकिन 'परमात्मा' शब्द रह जाता है। कर्म खो जाता है केवल धारणाएं रह जाती हैं। तुम्हारा सिर तुम्हारा सारा अस्तित्व बन जाता है।

इससे बचो। कर्म का त्याग कभी मत करो केवल सोच-विचार का त्याग करो। लेकिन अगर तुम सोच-विचार को त्याग देते हो तो ऐसी संभावना है कि तुम मूर्च्छा में चले जाओ- या तुम मूर्ख हो जाओ। हो सकता है कि तुम कुछ भी करना शुरू कर दो, क्योंकि अब तुम नहीं जानते हो कि क्या करना है और तुम सोच-विचार भी नहीं करते हो। हो सकता है तुम पागल हो जाओ। विचार-प्रक्रिया को त्यागना है लेकिन तुम्हें और बेहोश, और मूर्च्छित नहीं होना है। तुम्हें और अधिक सजग होना है।

ध्यान की सारी कला यही है कर्म में कैसे गहरे होना है विचार का त्याग कैसे करना है और उस ऊर्जा को कैसे सजगता में बदल देना है जो सोच-विचार में गति कर रही थी।

यह बहुत ही नाजुक और सूक्ष्म बात है, क्योंकि अगर तुम एक कदम भी चूकते हो तो अंतहीन मूढ़ता में गिर जाते हो।

विचारों को त्याग देना सरल है लेकिन तब तुम्हें नींद आ जाती है। प्रतिदिन रात गहरी नींद में यही होता है तुम त्याग देते हो सोच-विचार बंद हो जाता है- लेकिन तब तुम वहां नहीं होते चेतना भी खो जाती है। तुम्हारी चेतना विचार के साथ इतनी आसक्त, इतनी संयुक्त है कि जब भी सोच-विचार बंद हो जाता है तुम मूर्च्छा में चले जाते हो।

और यही समस्या है। सोच-विचार छोड़ देना है मूर्च्छा में नहीं गिरना है, क्योंकि मूर्च्छा तुम्हें वास्तविकता की ओर नहीं ले जाएगी। अगर तुम मूर्च्छित हो जाते हो, तुम वास्तविकता में नहीं जा रहे हो तुम केवल गहरी नींद में हो चेतन अचेतन में लीन हो गया है। इससे ठीक विपरीत को पाना है अचेतन को चेतन में विलीन हो जाना है। अगर चेतन अचेतन में गिर जाता है तो तुम पर्दा में चले जाते हो और अगर अचेतन चेतन में गिर जाता है और स्वयं ही चैतन्य हो जाता है तो तुम संबुद्ध हो जाते हो, तुम एक बुद्ध, एक सोसान हो जाते हो।

और चेतन को अचेतन में नीचे गिरने में सहायता देना बहुत सरल है, क्योंकि यह बहुत छोटा सा अंश है। तुम्हारे अस्तित्व का दसवां भाग चेतन है और तुम्हारे अस्तित्व के नौ भाग अचेतन हैं। केवल एक छोटा सा अंश चेतन हो गया है और वह भी सदा डांवाडोल रहता है। किसी भी क्षण वह गिर सकता है यह बहुत सरल है।

नशे में यही होता है तुम शराब पीते हो चेतन अचेतन में गिर जाता है। इसीलिए सभी युगों में सब तरह के वातावरण में और सभी देशों में शराब के लिए इतना आकर्षण है। और जब तुम मादक द्रव्य लेते हो तो यही होता है? चेतन अचेतन में गिर जाता है।

यह अच्छा है क्योंकि सोच-विचार रुक जाता है। नींद सुंदर है और तुम्हारे बहुत से सपने हैं। और अगर तुम एक अच्छे स्वप्नदर्शी हो तो मादक द्रव्य तुम्हें सुंदर सपने देगा- विलक्षण और कोई भी सपना जितना रंगीन हो सकता है उससे भी अधिक रंगीन, उससे अधिक जगमगाता हुआ। तुम स्वर्ग में, एक स्वप्नलोक में पहुंच जाते हो लेकिन तुम वास्तविकता में प्रवेश नहीं कर रहे हो।

एल. एस. डी. मारिजुआना, मेस्कलीन, या कोई भी नशीली दवाई केवल तुम्हें एक अच्छी नींद देती है, और उस अच्छी नींद में तुम सपने देखते हो। वे सपने रंगीन हैं, और तुम्हारा जीवन इतना दरिद्र और दुखपूर्ण है कि तुम इस दुखी जीवन में जीने के स्थान पर उन सपनों में जीना चाहोगे। अगर केवल एक को ही चुनना हो कि इस दुखी जीवन को जीना है या कि सुंदर सपने में जीना है तो तुम सपने को चुन लोगे। यह जीवन एक दुखस्वप्न की भांति है। अगर मादक औषधि भी तुम्हें एक जगमगाता हुआ, रंगीन, तीन आयामी सपना देती हो तो क्यों न उसे ले लिया जाए? क्योंकि इस जीवन में रखा ही क्या है? क्योंकि जीवन इतना उपद्रव है, कि तुम सपनों को चुन लेते हो।

नशीली दवाइयां, शराब या अन्य मादक द्रव्य, सदा से धार्मिक व्यक्तियों द्वारा इस्तेमाल किए जाते रहे हैं, लेकिन उनके द्वारा तुम कभी भी वास्तविकता में नहीं जा सकते हो। उनके द्वारा तुम जड़ता में, मूर्च्छा में गिर जाते हो, और उस पर्दा में तुम सपने देख सकते हो। और अगर तुम परमात्मा के विषय में बहुत सोच-विचार करते रहे हो, तो तुम्हें परमात्मा के दर्शन हो सकते हैं क्योंकि तुम अपने खुद के सपनों को प्रक्षेपित कर सकते हो। सपनों को निर्देशित किया जा सकता है उन्हें दिशा दी जा सकती है। अगर तुम क्राइस्ट के बारे में बहुत कुछ सोचते रहे हो तो जब तुम नशीली दवा के प्रभाव में होते हो तब तुम्हारे सामने जीसस क्राइस्ट प्रकट हो जाएंगे। यह तुम्हारा अपना मन खेल खेल रहा है। अगर तुम कृष्ण से बहुत अधिक जुड़े हुए हो तो वह ओंठों पर बांसुरी रखे नाचते-गाते हुए तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाएंगे। अगर कोई हिंदू कृष्ण भक्त एल. एस. डी. ले लेता है तो वह कृष्ण के दर्शन करेगा और ईसाई जीसस के दर्शन करेगा, बौद्ध बुद्ध के दर्शन करेगा-लेकिन ये मन के प्रक्षेपण हैं।

वास्तविकता पीड़ादायक है, लेकिन सपनों के लिए लालायित मत होना, क्योंकि अगर तुम सपनों का लोभ करते हो तो केवल एक ही रास्ता है। चेतन को दोबारा अचेतन बनने में सहायता कैसे दी जाए। एक छोटा सा अंश अचेतन से ऊपर उठ गया है, और यही मनुष्य-जाति का सौंदर्य है, हर्ष और विषाद दोनों, लेकिन यही मनुष्य का सौंदर्य है- कि विस्तृत अचेतन में वह एक द्वीप बन गया है। इस द्वीप को और और उन्नति करते हुए इतना विकसित हो जाना चाहिए ताकि वह एक महाद्वीप बन जाए। नशीली औषधियों के द्वारा वह फिर से जल के भीतर डूब जाएगा, तुम्हें फिर से एक पशु या वृक्ष का जीवन जीना पड़ेगा- अपने आप में सुंदर हैं, लेकिन तुम्हारे योग्य नहीं हैं, क्योंकि तुम बहुत कुछ खो रहे हो। और तुम्हें वास्तविकता उपलब्ध हो सकती थी, वह द्वीप एक महाद्वीप बन सकता था। लेकिन केवल मादक औषधियां ही नहीं- चेतन के अचेतन बनने में सहायता करने वाले और भी सूक्ष्म उपाय हैं। संगीत के माध्यम से भी वह हो सकता है, मंत्रोच्चारण से भी हो सकता है। अगर तुम निरंतर एक मंत्र का उच्चारण करो तुम्हें नींद आ जाएगी, क्योंकि एकरसता मूर्च्छा लाती है।

वे सूक्ष्म उपाय हैं, सतह पर नशीली दवाइयों की तरह नहीं हैं। प्रत्येक मंदिर में गिरजाघर में यही हो रहा है- और मंदिर गिरजाघर नशीली दवाइयों के विरुद्ध हैं लेकिन वे नहीं जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। वे भी

सूक्ष्म मादक औषधियों का उपयोग कर रहे हैं, भले ही वे एल. एस. डी. या मारिजुआना की तरह अपरिष्कृत नहीं हैं फिर भी हैं मादक औषधियां- क्योंकि जब तुम एक शब्द का सतत उच्चार करते हो, यह तुम्हें सुला देता है- यह तुम्हें और कुछ नहीं दे सकता। तुम विश्रान्त हो जाते हो। उच्चार मात्र ही तुम्हें गहरी ऊब देता है। वही शब्द- राम राम, राम- तुम बोलते चले जाते हो, बोलते चले जाते हो, बोलते चले जाते हो... तुम क्या करोगे? क्योंकि मन केवल तभी सतर्क रहता है जब कुछ नया घट रहा हो, अन्यथा मन सो जाता है। अगर कुछ नया घट रहा हो तो मन सतर्क रहता है। अगर कुछ नया नहीं हो रहा, केवल राम, राम राम का उच्चार हो रहा है और तुम जानते हो कि बार-बार अनंत बार यही होगा तो मन को नींद आने लगती है।

प्रत्येक मां यह जानती है जब भी बच्चे को नींद न आ रही हो वह गीत की एक ही पंक्ति दोहराएगी बड़ी सीधी सी बात है, वह दो-तीन शब्दों को ही बार-बार दोहराएगी, एक लोरी गाएगी। वह लोरी मंत्र का काम करती है और बच्चा सो जाता है। और मन तो वही हैं-चाहे तुम बच्चे हो या बूढ़े इससे कोई फर्क नहीं पड़ता- मन लोरियों से सो जाता है लेकिन प्रक्रिया वही है।

विचार-प्रक्रिया को रोकना ही होगा लेकिन मूर्च्छित होकर नहीं। विचार-प्रक्रिया को और अधिक सचेत, सजग सतर्क होकर छोड़ना होगा ताकि जो ऊर्जा विचार में जा रही है वह चैतन्य में जाए और तुम्हारे भीतर ' साक्षी ' का उदय हो। इसलिए स्मरण रहे विचार को मंत्रोच्चार द्वारा बंद नहीं करना है बल्कि विचार-प्रक्रिया के प्रति साक्षी होकर- उसको देखते हुए, सजगता से देखते हुए पहाड़ी पर खड़े द्रष्टा की भांति निरीक्षण करते हुए, अवलोकन करते हुए

अगर तुम शब्दों को गहराई से बेधक दृष्टि से देखो, तो वे तिरोहित होना शुरू हो जाते हैं। एक खाली स्थान अंतराल आता है। बादल छंट जाते हैं और नीला आकाश दिखाई देने लगता है। तुम सजग हो, संवेदनशील हो, मूर्च्छा में नहीं हो। चेतना की ओर और अधिक अचेतनता को खींच लिया गया है तुम्हारी ज्योतिशिखा और प्रज्वलित हो गई है और तेजोमयी हो गई है, और तुम ज्यादा देख सकते हो ज्यादा स्पर्श कर सकते हो ज्यादा सूँघ सकते हो। और तुम्हारा कृत्य एक नया गुण, दिव्यता का गुण ग्रहण कर लेता है। जब कोई बुद्धपुरुष तुम्हें छूता है, उसका स्पर्श भिन्न होता है। तुम भी छूते हो, तुम भी कभी-कभी फर्क महसूस करते हो। तुम बस संयोगवश किसी व्यक्ति को छू लेते हो, लेकिन तुम अपने हाथ के माध्यम से उसमें प्रवेश नहीं करते हो। तब हाथ मुर्दा है, बंद है तुम मुर्दा हाथ से केवल हेलो कहते हो। तुम इसे अनुभव कर सकते हो कि हाथ देकर भी नहीं दिया गया। वह कूटनीतिपूर्ण था। हाथ सजीव नहीं था, उसमें कोई ऊष्मा नहीं थी तुम से मिल नहीं रहा था और तुम में लीन नहीं हो रहा था। कभी-कभी जब प्रेम में हाथ में हाथ दिया जाता है, वह एक विलय है ऊर्जा उसके माध्यम से प्रवाहित होती है यह एक द्वार है। हाथ के माध्यम से अस्तित्व तुम से मिलने आता है। यह गर्म है यह जीवंत है यह तुम पर विश्वास करता है।

जब कोई बुद्धपुरुष तुम्हें स्पर्श करता है तो यह पूरी तरह से अलग होता है उसकी गुणवत्ता बदल गई है- क्योंकि जब कहीं चेतना समग्र परम होती है, प्रत्येक कृत्य संपूर्ण हो जाता है। जब वह स्पर्श करता है, वह बस स्पर्श ही हो जाता है। अब वह और कुछ भी नहीं है। उसका संपूर्ण अस्तित्व स्पर्श है वह उसमें प्रवाहित हो जाता है। वह और कहीं भी नहीं है, वह इसी स्पर्श में है।

उस क्षण में वह आंखें नहीं है वह कान नहीं है; उस क्षण उसका पूरा अस्तित्व स्पर्श में बदल गया है। वह पूरा स्पर्श ही बन जाता है- और तुम्हें अनुभव होगा कि उसके स्पर्श से तुम आलोकित हो गए हो- एक ऊर्जा तुम्हारे भीतर प्रविष्ट हो गई है। अगर तुम इसके लिए तैयार नहीं थे तो तुम्हें झटका भी लग सकता है। अगर तुम तैयार थे तो तुम इसमें आह्लादित हो जाओगे, तुम उसमें आनंदित हो जाओगे।

जब कोई बुद्धपुरुष तुम्हें देखता है वह सिर्फ आंखें ही हो जाता है अन्यथा ऐसा हो पाना संभव नहीं है, क्योंकि अपने भीतर वह खंडित नहीं है। जब तुम देखते हो तुम देखते तो हो और साथ ही बहुत कुछ और भी करते हो। विचार-प्रक्रिया चलती रहती है, तुम सक्रिय बने रहते हो भीतर तुम खंडित होते हो। तुम्हारी आंखें समग्र नहीं होतीं।

जब कोई बुद्धपुरुष तुम्हें देखता है, उसकी आंखें समग्र होती हैं। वे प्रज्वलित सूर्य के समान होंगी। वे तुम्हारे भीतर तक भेद जाएंगी वे तुम्हारे भीतर एक छेद कर देंगी वे सीधे तुम्हारे हृदय में पहुंच जाएंगी। तुम फिर कभी वैसे नहीं रहोगे- अगर तुमने ऐसा होने दिया तो। अन्यथा तुम बंद बने रह सकते हो और वह तुम्हारे भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। अगर वह तुम्हें छूता भी है तो वह एक मृत शरीर को ही स्पर्श करता है- तुम बंद बने रह सकते हो।

जब भी वहां चेतना है और कर्म है तो चेतना और कर्म मिलकर संपूर्णता को उपलब्ध हो जाते हैं।

अब इन शब्दों को समझने का प्रयत्न करो वे अति सुंदर हैं।

*वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना उनकी वास्तविकता से चूक जाना है;*

*यह कहना कि वस्तुएं असार हैं*

*उनकी वास्तविकता से फिर चूक जाना है।*

‘ वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना ‘..... ऐसे दर्शनशास्त्री हुए हैं जो वस्तुओं के यथार्थ को इनकार करते रहे हैं। देखो हम एक ही काम दो ढंगों से कर सकते हैं...

एक बहुत प्रीतिकर कहानी है। एक बार ऐसा हुआ:

महान मुगल सम्राट अकबर ने दीवाल पर एक रेखा खींची और उसने अपने बुद्धिमान राजदरबारियों से कहा कि वे इसे बिना छुए छोटी करें। वे उलझन में पड़ गए और उन्होंने सोचा ‘ यह तो असंभव है। ‘

उसके बुद्धिमान दरबारियों में एक व्यक्ति बीरबल ने इस रेखा के पास में दूसरी रेखा खींच दी पहली रेखा को बिना छुए उससे लंबी रेखा। जब लंबी रेखा खींच दी गई तो पहली रेखा छोटी हो गई।

अगर तुम छोटी रेखा खींचते हो तो पहली रेखा बड़ी हो जाएगी इसलिए दो ढंग हैं। या तो तुम अस्तित्व को बड़ा बनाओ – तब संसार छोटा और छोटा और छोटा और भी छोटा हो जाता है एक घड़ी आती है जब तुम्हारा अस्तित्व संपूर्ण हो जाता है ब्रह्म हो जाता है संसार विलीन हो जाता है तब वहां पर कोई संसार नहीं है। फिर एक दूसरा ढंग है और दूसरा सिर्फ धोखा है तुम निरंतर कहते रहते हो कि जगत मिथ्या है माया है यह है ही नहीं। तुम संसार की वास्तविकता को निरंतर अस्वीकार करते रहते हो और स्वयं को विश्वास दिलाते रहते हो कि यह नहीं है यह नहीं है यह वास्तविक नहीं है यह स्वप्नवत है। इसलिए तुम स्वयं को समझा लेते हो कि यह संसार एक स्वप्न है तुम अनुभव करते हो कि अब तुम वास्तविक हो लेकिन यह अनुभूति सत्य नहीं है। यह एक धोखा है।

दर्शनशास्त्र सदा यही करता है यह कहे चला जाता है कि जगत सत्य नहीं है। तुम वेदांतियों के पास जाओ- शंकराचार्य को यह भिन्न रूप से घटित हुआ था। शंकराचार्य को अपनी सत्ता का साक्षात् अनुभव हुआ था वे असीम हो गए थे तब संसार विलीन हो गया था, क्योंकि दो अनंतताएं नहीं हो सकतीं। अगर तुम असीम हो जाते हो तो संसार विलीन हो जाता है। वह समाहित हो जाता है क्योंकि दो असीमताएं संभव नहीं हैं, केवल एक असीमता’ होनी संभव है।

शंकर असीम हो गए, ब्रह्म हो गए, परम हो गए थे तब वे कह सके कि जगत माया है और वे ठीक थे। लेकिन वह कोई दार्शनिक वक्तव्य नहीं था, यह एक धार्मिक अनुभूति थी। उन्होंने अनुभव किया कि संसार नहीं है। लेकिन फिर अनुयायियों ने इस गीत को पकड़ लिया और वे उसे एक हजार वर्ष से अधिक समय से इसे गा रहे हैं। वे कहते हैं कि जगत भ्रांति है यह माया है, वह है नहीं ऐसा केवल प्रतीत होता है।

दर्शनशास्त्र के द्वारा तुम एक विश्वास तक पहुंच सकते हो, हां, तुम नकारते जा सकते हो, तुम्हें स्वयं को विश्वास दिला सकते हो कि वह नहीं है, तुम प्रमाण और तर्क खोजने की चेष्टा कर सकते हो कि यह माया है। और यदि तुम अपने मन को विश्वास दिला सको कि यह माया है, तुम्हें अनुभव होगा झूठा अनुभव होगा कि तुम ब्रह्म हो गए हो।

तुम्हारा ब्रह्म हो जाना आवश्यक है तब यह जगत माया हो जाता है दूसरे ढंग से ऐसा नहीं होता है। अगर जगत माया हो जाता है तो तुम कैसे ब्रह्म होओगे? और तुम सोचते हो कि यह माया नहीं बन सकता क्योंकि यह केवल एक धारणा है।

वेदांती लोग कहे चले जाते हैं कि संसार माया है लेकिन उनकी ओर देखो। उनके ऊपर एक पत्थर फेंक दो और वे क्रोधित हो जाएंगे वे तुम्हारे साथ झगड़ना शुरू कर देंगे। संसार माया नहीं है। केवल उनके पास एक धारणा है, एक दर्शनशास्त्र है और दर्शनशास्त्री बहुत चालाक हो सकते हैं।

एक बार ऐसा हुआ ' नागार्जुन का एक अनुयायी... नागार्जुन उन महान रहस्यदर्शियों में से एक है जिन्हें भारत ने जन्म दिया है। उन्हें अपनी अनंत सत्ता का साक्षात् हुआ था- जगत मिट गया था। तब अनुयायी आए, और अनुयायी तो सदा कार्बनकॉपी होते हैं होंगे ही, जब तक वे स्वयं वास्तविकता में प्रवेश का प्रयत्न नहीं करते और गुरु के शब्दों को विश्वास नहीं बना लेते हैं।

सद्गुरु के शब्द तो मात्र प्रेरणा देते हैं उकसाते हैं सहायता करते हैं लेकिन उनको एक विश्वास की तरह से नहीं लिया जाना चाहिए नहीं तो शब्द एक दर्शनशास्त्र बन जाएंगे। तुम्हें स्वयं इनका अनुभव करना होगा। और जब तुम अनुभव कर लेते हो केवल तभी तुम कह सकते हो ही सद्गुरु सत्य था। तुम पहले से ऐसा कैसे कह सकते थे? लेकिन दार्शनिक ढंग से सिर हिला कर हामी भरना सरल है।

अनुयायी बन गए और उनमें से एक अनुयायी- जो महान दार्शनिक था और बहुत तर्क-वितर्क वाला व्यक्ति था- उसने कई ढंगों से यह सिद्ध किया कि संसार सत्य नहीं है। उस देश के सम्राट ने उसे आमंत्रित किया क्योंकि उसका नाम राजदरबार तक पहुंच गया था और सम्राट ने कहा क्या वास्तव में तुम सोचते हो कि संसार असत्य है? फिर सोच लो, क्योंकि मैं बहुत खतरनाक व्यक्ति हूं। और मैं शब्दों से खेलने वाला व्यक्ति नहीं हूं मैं कर्म में विश्वास करता हूं। मैं कुछ ऐसा करूंगा जिससे प्रमाणित होगा कि जगत मिथ्या नहीं है। इसलिए दुबारा सोच लो।

उस व्यक्ति ने कहा दुबारा सोचने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैंने लाखों बार सोच लिया है और मेरे पास प्रमाण है कि जगत मिथ्या है।

लेकिन वह दर्शनशास्त्री भी नहीं जानता था कि सम्राट क्या करने जा रहा है। उसके पास एक पागल हाथी था। तो पागल हाथी को मैदान में लाया गया। और उस दर्शनशास्त्री को भी उसी मैदान में फेंक दिया गया। वह तो चिल्लाने लगा और दौड़ने लगा पागल हाथी उसके पीछे पड़ा था। पागल हाथी ने उसे दबोच लिया। उस समय वह सम्राट से कहने लगा मुझे बचाइए! यह हाथी सत्य है। मैं अपना वक्तव्य वापस लेता हूं।

उसे बचा लिया गया। सम्राट ने फिर उसे बुलवाया-जब वह होश में आ गया- क्योंकि वह कांप रहा था, उसे पसीना छूट रहा था और उसका सारा शरीर क्षत-विक्षत हो गया था, जगह-जगह से खून रिस रहा था। सम्राट ने कहा अब तुम क्या कहते हो?

उसने उत्तर दिया जगत मिथ्या है।

सम्राट ने कहा क्या मतलब है तुम्हारा? जिस क्षण हाथी तुम्हें मार ही डालने वाला था, तब तुमने कहा कि जगत सत्य है। अब तुम फिर से बात बदल रहे हो?

उस दार्शनिक ने कहा वह हाथी वह आदमी वह आग्रह सब मिथ्या हैं। वह हाथी उस हाथी का पागलपन वह आदमी जिस को आप अपने सामने देख रहे हैं, वह आदमी जिसने आग्रहपूर्वक कहा था कि जगत सत्य है- सभी मिथ्या हैं।

सम्राट ने कहा तब मैं फिर से उस पागल हाथी को बुलवाता हूँ।

और दार्शनिक ने कहा फिर वही सब दोबारा से होगा। मैं कह दूंगा कि यह सत्य है। लेकिन फिर मैं क्या कर सकता हूँ?

दर्शनशास्त्र बहुत चालाक हो सकता है। तुम अपने साथ खेल-खेल सकते हो और तुम स्वयं को यह विश्वास दिला सकते हो कि जगत मिथ्या है। लेकिन इस बात को सिद्ध करने की और विश्वास दिलाने की क्या आवश्यकता है? आवश्यकता पड़ती है क्योंकि तुम जानते नहीं हो। जब तुम जान लेते हो तब मनवाने का, सिद्ध करने का तर्क देने का प्रश्न ही नहीं उठता। दर्शनशास्त्र ज्ञान का विकल्प है। अगर तुम जानते ही हो तो दर्शनशास्त्र की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर तुम नहीं जानते तब जरूरत है क्योंकि दर्शनशास्त्र के माध्यम से प्राप्त ज्ञान वास्तविक ज्ञान के समान प्रतीत होता है।

यह सिद्ध करने का प्रश्न नहीं है कि संसार मिथ्या है। यह सूत्र कहता है ' वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना उनकी वास्तविकता से चूक जाना है '... और उनकी वास्तविकता परमात्मा है उनकी वास्तविकता सत्य है। एक वृक्ष है अगर तुम वृक्ष के यथार्थ को अस्वीकार करते हो तो तुमने उसके भीतर छिपे परमात्मा को अस्वीकार कर दिया है उसके भीतर के सत्य को अस्वीकार कर दिया है। वृक्ष बस एक तथ्य है एक तथ्य सत्य के ऊपर एक आवरण है। पक्षी एक और तथ्य है लेकिन सत्य वही है। सत्य कभी पक्षी के रूप में प्रकट होता है कभी वृक्ष के रूप में कभी एक चट्टान के रूप में कभी मनुष्य के रूप में। ये सभी रूप हैं।

तथ्य रूप हैं लेकिन अगर तुम और गहरे जाओ तो प्रत्येक तथ्य में सत्य है। अगर तुम सब रूपों को अस्वीकार करते हो तो तुमने उनके भीतर छिपे निराकार को इनकार कर दिया है। अगर तुम कहते हो कुछ भी सत्य नहीं है तो फिर दिव्य परमात्मा कैसे सत्य हो सकता है? अगर तुम कहते हो यह संसार माया है तब इस मायारूपी संसार का सृष्टा कैसे सत्य हो सकता है? और एक सत्य परमात्मा मिथ्या जगत का सृजन कैसे कर सकता है? यह असंभव है क्योंकि सत्य से ही सत्य निकलता है और मिथ्या से मिथ्या निकलता है। एक सत्य परमात्मा मिथ्या जगत की रचना नहीं कर सकता है। और यदि जगत असत्य है तो सृष्टा भी असत्य है। अगर तुम तथ्यात्मकता को अस्वीकार करते हो तो तुम सत्य को अस्वीकार कर देते हो।

सोसान का सूत्र कहता है ' वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना उनकी वास्तविकता से चूक जाना है ' – और वह यथार्थ ही सत्य है- ' यह कहना कि वस्तुएं असार हैं उनकी वास्तविकता से फिर चूक जाना है। '

अगर तुम कहते हो कि वस्तुएं हैं लेकिन वे सारहीन हैं वह भी एक दार्शनिक दृष्टिकोण है-पहले से थोड़ा बेहतर। पहला कहता है कि सारा जगत ही मिथ्या है वह नहीं है, उसका अस्तित्व नहीं है, वह केवल तुम्हारे मन में है वह और कहीं नहीं है; वह मन का प्रक्षेपण है, वह एक विचार है वह एक स्वप्न के समान है।

एक दूसरा दर्शन जो थोड़ा बेहतर है कहता है वस्तुएं हैं लेकिन वे असार हैं।

उनके भीतर कोई आत्मा नहीं है वे सारवान नहीं हैं। वे मृत हैं भीतर से खाली हैं। वे जोड़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, कोई आत्मा वहां नहीं है। वृक्ष का अस्तित्व है लेकिन एक जोड़ की तरह है वृक्ष के पास कोई आत्मा नहीं है। अगर तुम जोड़ को अलग-अलग कर दो तो वहां कुछ नहीं बचेगा। वह केवल एक यांत्रिक संरचना की तरह है अगर तुम मशीन के सब कल पुरजों को निकाल दो तो पीछे कुछ भी नहीं बचता है।

वह भी सत्य नहीं है क्योंकि वृक्ष का अस्तित्व इसलिए नहीं है कि वह पदार्थ का संयोजन है, बल्कि इसलिए कि वह एक जीवंत प्राणी है। एक चट्टान में भी प्राण हैं, जब तुम संवेदनशील और सजग हो जाते हो तब तुम देखोगे कि चट्टान की भी भावदशा! होती है। कभी वह प्रसन्न होती है और तब तुम उसकी प्रसन्नता को अनुभव कर सकते हो कभी वह अप्रसन्न होती है और तुम चट्टान की अप्रसन्नता को महसूस कर सकते हो; और कभी वह गा रही होती है और तुम उसके गीत को सुन सकते हो।

लेकिन तुम्हें अधिक संवेदनशीलता की आवश्यकता है) क्योंकि अभी तो तुम एक बुद्धपुरुष का गीत भी नहीं सुन सकते- तुम एक चट्टान का गीत कैसे सुन सकोगे? तुम बहरे और अंधे हो, तुम संवेदनाशून्य और मतिमंद हो।

तुम सचेतन नहीं हो। तुम्हारी चेतना इतनी कम है कि दैनिक कार्यों और नित्यकर्मों में ही समाप्त हो जाती है। तुम इतने ही चेतन हो कि तुम राह पर बिना किसी दुर्घटना के अपने ऑफिस पहुंच जाते हो और घर वापस लौट आते हो बस तुम उतने ही चेतन हो। लेकिन तुम किसी चट्टान को तुम किसी वृक्ष को महसूस नहीं कर सकते।

अब वैज्ञानिक यह खोज कर रहे हैं कि पेड़ों के पास इतनी अधिक संवेदनशीलता होती है जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते हो। वृक्ष उन लोगों का स्वागत करते हैं जिनमें मित्र- भाव है और उनके प्रति बंद हो जाते हैं जिनमें शत्रु- भाव है। अगर माली आता है और केवल काट-छांट ही करता रहता है तो वृक्ष उसके प्रति बंद हो जाते हैं। माली के आने से पहले ही... जैसे ही वह प्रवेश करता है सारा बगीचा बंद हो जाता है क्योंकि शत्रु आ रहा है।

एक वैज्ञानिक जो बहुत गहनता से अध्ययन कर रहा था उसने पाया कि वृक्ष केवल तुम्हारे कृत्यों के ही नहीं तुम्हारे विचारों के प्रति भी सचेत हो जाते हैं। वह एक पौधे पर प्रयोग कर रहा था। पौधा तारों के साथ बहुत सूक्ष्म यंत्रों से जुड़ा था ताकि यह निश्चित किया जा सके कि उसके भीतर क्या घट रहा है। और उसने सोचा 'अगर इस क्षण मैं अचानक पौधे को आधा काट दूं तो क्या होगा?' और यंत्र की सुई बहुत तेजी से कांपने लगी- पौधे ने विचार को ग्रहण कर लिया था।

फिर उसने कई प्रयोग किए। उसने पौधे को काटा भी नहीं था उसे कोई हानि नहीं पहुंचाई थी- केवल विचार! जब भी विचार किया सुई दिखा देती थी कि पौधा बहुत चिंतित और क्रोधित है। केवल इतना ही नहीं अगर तुम एक पौधे को काटते हो तो पड़ोसी पौधे भी उदासी चिंता, क्रोध घबड़ाहट प्रकट करेंगे। अब तो ऐसे यंत्र हैं जो बता सकते हैं कि पौधे के भीतर क्या घटित हो रहा है और देर-अबेर ऐसे यंत्र भी तैयार हो जाएंगे जो बता पाएंगे कि चट्टान के भीतर क्या घट रहा है।

सब-कुछ सजीव है कुछ असार नहीं है। सब-कुछ चेतना से परिपूरित है-अलग-अलग प्रकार की चेतना से- इसी कारण तुम उनके भीतर प्रवेश नहीं कर सकते। चेतना की भिन्न-भिन्न भाषाओं के कारण यह कठिन है। पेड़ की चेतना अलग प्रकार की है, चट्टान की बिलकुल अलग है। उनके साथ संवाद कर पाना कठिन है क्योंकि

भाषाएं भिन्न हैं, लेकिन अगर तुम और अधिक सतर्क सचेत हो जाते हो और तुम्हारा चित्त विचारों से भरा नहीं है तब तुम चट्टान से भी संपर्क जोड़ सकते हो। कुछ भी खाली नहीं है प्रत्येक के भीतर अपनी स्वयं की आत्मा है।

हिंदू सदा से जानते हैं कि सबके भीतर परमात्मा है। इसीलिए वे नदी की पूजा कर सकते हैं वे वृक्ष की पूजा कर सकते हैं क्योंकि वे कहते हैं ' यह वृक्ष का देवता नदी का देवता चट्टान का देवता। ' इस जगत में सब-कुछ परमात्मा से पूरित है, कुछ भी असार नहीं है।

एक बार तुम कह देते हो कि चीजें असार हैं फिर से तुम उनकी वास्तविकता से चूक जाते हो। लेकिन दार्शनिक यह सिद्ध करने का प्रयत्न क्यों करते हैं कि चीजें नहीं हैं या चीजें असार हैं? वे प्रयत्न कर रहे हैं, क्योंकि अगर यह सिद्ध किया जा सके कि चीजें सारहीन हैं तो उनकी तुलना में तुम भरे हुए होते हो-तुम और अधिक भरे हुए हो जाओगे। चारों ओर खालीपन से घिरे रह कर तुम भरे हुए हो जाते हो।

लेकिन यह नकली उपाय है। तुम भर जाओ। तुलना करने वाली यह तरकीब सहायता नहीं करेगी। जब तुम प्रेम, सजगता, ध्यान से परिपूर्ण हो जाते हो तो तुम्हें ऐसा नहीं लगेगा कि संसार असार है। वास्तव में क्योंकि तुम खाली हो, प्रत्येक वस्तु खाली दिखाई देती है। क्योंकि तुम रिक्त आंखों से देखते हो, सब-कुछ रिक्त हो जाता है-तुम स्वयं को वस्तुओं में ले आते हो।

अगर तुम्हारे भीतर प्रेम नहीं है, तो तुम्हें लगेगा कि संसार में कोई प्रेम नहीं है। अगर तुम्हारे पास हृदय है जो प्रेम से धड़कता है, तो तुम्हें उस धड़कन का अहसास सभी तरफ, चारों ओर होगा-वृक्षों से गुजरती हुई हवाओं में, सागर की ओर बहती नदी में। तुम्हें सब कहीं प्रेम की अनुभूति होगी। तुम उसे अनुभव करने में समर्थ होओगे। तुम केवल उसे ही अनुभव कर सकते हो जो तुम्हारे पास है, अन्य कुछ भी अनुभव नहीं किया जा सकता।

दर्शनशास्त्र सापेक्षिक रूप से अनुभव करने की एक चालबाजी है। और हम सब इसका शिकार हो जाते हैं क्योंकि हम सब उस चालबाजी में निपुण हैं। यही कारण है कि जब कोई कहता है कि तुम्हारा पड़ोसी एक दुष्ट, अनैतिक व्यक्ति है तुम शीघ्र विश्वास कर लेते हो- क्योंकि यदि वह दुष्ट है अनैतिक है तो तुम अनायास ही सदाचारी और भले आदमी हो जाते हो। अगर कोई कहता है कि तुम्हारा पड़ोसी बहुत नैतिक साधु-महात्मा व्यक्ति है इस पर तुम विश्वास नहीं कर पाते। तुम कहते हो, ' प्रमाण दो! तुम्हारे पास क्या प्रमाण हैं? किस आधार पर तुम ऐसा कह रहे हो? मैं उसे भलीभांति जानता हूं वह मेरा पड़ोसी है। वह ऐसा कुछ भी नहीं है। ' क्यों?

जब कभी कोई दूसरे के विरोध में कुछ कहता है तुम शीघ्र इस पर विश्वास कर लेते हो, तुम कभी इस पर प्रश्न नहीं उठाते। इसीलिए गपशप इतनी अधिक चलती है। लेकिन जब कभी कोई किसी के समर्थन में कुछ कहता है, तुम शीघ्र सतर्क हो जाते हो। क्यों? क्योंकि अगर वह इतना अच्छा है तो अचानक तुम बुरे हो जाते हो। अगर कोई साधु है तब तुम कौन हो? तुम मूढ़ हो। अगर कोई पुण्यात्मा है तो तुम पापी हो। हो सकता है तुम इस चालाकी के प्रति सजग न होओ लेकिन खेल इसी तरह चलता रहता है।

दो उपाय हैं : या तुम संत हो जाओ या यह सिद्ध करो कि सभी पापी हैं। दर्शनशास्त्र यही चालाकी करता चला जाता है। तुम जो भी होना चाहते हो तुम उसे संसार के लिए इनकार करते हो। लेकिन इससे कोई सहायता नहीं मिलेगी। तुम अपने सिवाय और किसी को धोखा नहीं दे रहे हो।

सोसान का सूत्र कहता है:

*वस्तुओं के यथार्थ को अस्वीकार करना,*

उनकी वास्तविकता से चूक जाना है;

यह कहना कि वस्तुएं असार हैं

उनकी वास्तविकता से फिर चूक जाना है।

जितना तुम सत्य के विषय में बोलते और सोचते हो उतना ही तुम उससे दूर भटक जाते हो।

विचार करना दूर चले जाना है भटक जाना है। जब भी तुम किसी के विषय में सोचते हो तत्काल तुमने दूर जाना प्रारंभ कर दिया है। मैं यहां हूं, तुम मेरे साथ हो सकते हो- लेकिन अगर तुम मेरे बारे में सोचना शुरू कर दो तो तुम एक यात्रा पर निकल जाते हो जो आगे और आगे बढ़ती चली जाती है और तुम जितना अधिक विचार में पड़ोगे उतना ही तुम दूर हो जाओगे। विचार करना वास्तविकता से पलायन का मार्ग है, वह तुम्हें एक भीतरी दिशा देता है वह तुम्हारे लिए मन में एक मार्ग बनाता है और तुम उस पर चल पड़ते हो।

कोई विचारक कभी यहीं और अभी नहीं होता वह कभी वर्तमान में नहीं होता वह हमेशा कहीं और होता है। एक ध्यानी हमेशा यहां और अभी होता है वह कहीं और नहीं होता। यही कारण है कि विचार करना ध्यान में एक मात्र अवरोध है। तुम्हें सजग हो जाना पड़ता है और धीरे- धीरे तुम जितना सजग होते जाते हो उतना ही तुम विचार के साथ सहयोग करना बंद कर देते हो।

मैं तुम्हें एक गुलाब लाकर देता हूं और तुम सोचना शुरू कर देते हो। मन तुरंत

इस सदी के ब्रिटेन के महान दार्शनिकों में से एक जी. ई. मूर ने एक पुस्तक लिखी है 'प्रिंसिपिआ ईथिका' यह पुस्तक क्या अच्छा है इसको परिभाषित करने के श्रेष्ठतम तार्किक प्रयासों में से एक है। दो-तीन सौ पृष्ठों में बहुत सघन तार्किक विवेचना के बाद वह कहता है कि क्या अच्छा है यह परिभाषित कर पाना कठिन है। अंत में वह कहता है कि यह अपरिभाष्य है- लेकिन तर्क-वितर्क के दो-तीन सौ पृष्ठों के बाद।

प्रखर बुद्धि वाले व्यक्तियों में से एक इस तरह से या उस तरह से प्रयत्न करता है और प्रयत्न करता चला जाता है वह इस द्वार को खटखटाता है और उस द्वार को खटखटाता है। और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि शुभ अपरिभाष्य है- क्यों? वह कहता है कि यह एक साधारण गुण है, बस पीले रंग की भांति। तुम पीले रंग को कैसे परिभाषित करते हो? अगर कोई तुमसे पूछे, पीला क्या है? तो तुम क्या कहोगे? तुम कहोगे पीला रंग पीला है। तुम इसको कैसे परिभाषित करोगे?

एक गुलाब बस एक गुलाब है बस एक गुलाब। तुम इसकी कैसे परिभाषा करोगे? अगर तुम कहते हो कि यह सुंदर है तो क्या तुम जानते हो कि सौंदर्य क्या है? क्या कभी किसी ने इसकी परिभाषा दी है? नहीं, वे कहते हैं कि सौंदर्य अपरिभाष्य है। अगर तुम इसकी दूसरे गुलाबों के साथ तुलना करो... क्या तुम्हें पता है कि प्रत्येक वस्तु अतुलनीय है? तुम इसकी दूसरे गुलाबों के साथ कैसे तुलना कर सकते हो? यह गुलाब सिर्फ यही गुलाब है यह कोई दूसरा गुलाब नहीं है। तुम दूसरे गुलाबों को बीच में क्यों लाते हो?

और जब तुम दूसरे गुलाबों को बीच में लाते हो तुम्हारे मन में सब गड़बड़ हो जाता है फिर तुम्हारे मन में कई बातें होती हैं और वे रुकावट बन जाएंगी। और यह गुलाब तुम तक पहुंच ही नहीं पाएगा। और यहां पर कुछ वास्तविक था- वह तुम्हारे भीतर गहराई तक पहुंच गया होता इसकी सुगंध तुम्हारे भीतर तक चली गई होती। यह गुलाब तुम्हारे हृदय पर दस्तक देने को तैयार था लेकिन तुमने उसके बारे में विचार करना आरंभ कर दिया। और जब तक तुम वापस आते हो वह गुलाब वहां पर नहीं होगा, क्योंकि गुलाब प्रतीक्षा नहीं करेगा- वह मुझा

चुका होगा। उसके पास एक संदेश था, वह अपने साथ अज्ञात का कुछ लेकर आया था। लेकिन अज्ञात नाजुक है वह सदा बना नहीं रह सकता है।

वह उस पार की कुछ खबर लेकर आया था- प्रत्येक गुलाब लेकर आता है। प्रत्येक सुबह वह आता है तुम्हारे द्वार पर दस्तक देता है लेकिन तुम महान विचारक हो। कुछ अज्ञात का दिव्य का समयातीत का गुलाब के माध्यम से समय में प्रवेश करता है लेकिन अगर तुम सोच-विचार करते हो तो तुम चूक जाते हो, क्योंकि सोच-विचार करने में तुम भटक जाते हो तुम पहले ही दूर जा चुके हो।

कहता है सुंदर! मैंने ऐसा सुंदर गुलाब कभी नहीं देखा! या मैंने ठीक इसी तरह के दूसरे दर्शनशास्त्री गुलाब के विषय में सोच-विचार करता है। कवि गुलाब को महसूस कई गुलाब देखे हैं और तुम सोचते चले जाते हो। और फिर तुम्हारा मन यह प्रश्न उठा। करता है। और अगर तुम्हें निर्णय करना हो तो हमेशा कवि के पक्ष में निर्णय करना। वह सकता है सौंदर्य क्या है? कोई नहीं जानता है कोई किसी निर्णय पर नहीं पहुंचा है। वास्तविकता को दार्शनिक से बेहतर ढंग से स्पर्श करता है। और रहस्यदर्शी वह न तो सोच-विचार करता है, न ही अनुभव करता है-वह गुलाब की उपस्थिति में बस ठहर जाता है। क्योंकि अनुभव करना भी दूर चले जाना है- इतना दूर नहीं जितना सोच-विचार चला जाता है, लेकिन अनुभव करना भी दूर चले जाना है क्योंकि अनुभव करना भी एक सूक्ष्म कृत्य है।

रहस्यदर्शी सिर्फ गुलाब की उपस्थिति में रहता है। कोई कृत्य नहीं, कोई सोच- विचार नहीं कोई अनुभूति नहीं, न हृदय, न सिर। वह सिर्फ गुलाब के साथ वहां है। हिंदू इसको सत्संग कहते हैं। जब कभी व्यक्ति का गुलाब होता है- कोई बुद्ध, कोई सदगुरु होता है, तुम बस उसके साथ बने रहते हो। तुम सोच-विचार नहीं करते, तुम अनुभव नहीं करते। तुम बस उसके साथ रहते हो, सिर्फ उसके साथ में-तुम उसकी संगति में होते हो। इसको हिंदू सत्संग कहते हैं- सत्य के साथ रहना। सत्संग शब्द का अर्थ है नई- सत्य की उपस्थिति में होना।

एक गुलाब है-तुम उसके साथ हो रहो। किसी भी स्थूल क्रिया या सूक्ष्म क्रिया को मत करो। विचार करना बहुत ही ठोस क्रिया है, अनुभूति सूक्ष्म क्रिया है- लेकिन तुम जानते हो कि अनुभूति विचार में बदल सकती है और विचार करना अनुभूति में बदल सकता है। वे परिवर्तनीय हैं, वे एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं हैं। अनुभूति विचार की राह पर है, हो सकता है बीजरूप में हो या बस अभी अंकुरित हो रही हो; और विचार वृक्ष है, लेकिन प्रक्रिया अलग नहीं है। हृदय और सिर बहुत दूर नहीं हैं। बातें हृदय से शुरू होती हैं और इसके पहले कि तुम सचेत हो पाओ वे तुरंत सिर में पहुंच जाती हैं।

बस साथ भर होने से फिर सभी कुछ प्रकट हो जाता है फिर सब द्वार खुल जाते हैं। फिर कोई प्रश्न नहीं कोई उत्तर नहीं। तुम सत्य के साथ बस एक हो गए हो। विचार- और तुम अलग हो। अनुभूति- इतनी अलग नहीं, फिर भी अलग है, साथ जुड़ी हुई, लेकिन फिर भी अलग।

न विचार न अनुभूति बस साथ भर होने से और अचानक तुम वहां नहीं होते और संसार भी वहां नहीं होता। एक ब्रह्म प्रकट हो जाता है। तुम और संसार दोनों एक हो गए होते हो। वह एक अनंत वहां पर होता है निराकार वहां है- और वही सत्य है।

सत्य कोई दर्शनशास्त्रीय निष्कर्ष नहीं है यह एक अस्तित्वगत अनुभव है। यह न तो विचार है और न ही अनुभूति, यह अस्तित्वगत है अपने समग्र अस्तित्व सहित तुम उसके साथ हो।

जब पानी की बूंद सागर में गिरती है चाहे वह सिर के साथ गिरे, या हृदय के साथ गिरे वह पूरी तरह से गिर जाती है-हृदय सिर सभी कुछ, अच्छा-बुरा सभी कुछ; महात्मा पापी सभी कुछ-वह पूरी तरह से गिर जाती है।

न तो महात्मा लोग दिव्यता को जान सकते हैं क्योंकि वे कुछ अधिक अच्छे हैं और उनकी अच्छाई ही बाधा बन जाती है और न ही पापी क्योंकि वे सोचते हैं कि वे बहुत बुरे हैं और उनकी बहुत बुराई बाधा बन जाती है। वह व्यक्ति जो न तो महात्मा है, न ही पापी है, न यह है, न वह, वह व्यक्ति जिसने कोई चुनाव नहीं किया है वह जो किसी बात का दावा नहीं करता है कि मैं यह हूं या वह हूं वह जो बस उसकी उपस्थिति में रहता है दिव्यता को जान सकता है।

और तुम्हें हिमालय पर जाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तुम चट्टान के साथ रह सकते हो और घटना घट जाएगी तुम्हें मंदिर जाने की भी आवश्यकता नहीं है। तुम वृक्ष के साथ रह सकते हो और घटना घट जाएगी। तुम्हें वृक्ष के पास जाने की भी आवश्यकता नहीं तुम स्वयं के साथ बने रह सकते हो और घटना घट जाएगी-क्योंकि वह सब जगह है। प्रत्येक परमाणु उसके साथ आदोलित होता है, प्रत्येक परमाणु उसके साथ उत्सव मनाता है। सभी कुछ और कुछ भी नहीं है, बल्कि यही है।

*जितना तुम सत्य के विषय में बोलते और सोचते हो, उतना ही तुम उससे दूर भटक जाते हो।  
बोलना और सोचना छोड़ दो,  
तो फिर ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तुम न जान सकोगे।*

निर्विचार होना द्वार है। निःशब्द होना द्वार है। अ-मन मार्ग है।

इसे कैसे उपलब्ध किया जाए? इसे प्राप्त करने के लिए तुम क्या करोगे? केवल इसे सुनने से मदद नहीं मिलने वाली है, क्योंकि मन बहुत चालाक है। मन इसके बारे में विचार करने लगेगा कि सोसान क्या कह रहा है; मन सोचना शुरू करेगा और इसके चारों ओर सिद्धांतों का जाल बुनना शुरू कर देगा। मन कहेगा, हां, यह ठीक प्रतीत होता है। लेकिन मन कहेगा, यह ठीक लगता है, और तुम भटक गए। मन कहेगा, नहीं, यह कठिन मालूम होता है, असंभव लगता है। तुम विचार करना कैसे छोड़ सकते हो? और तुम भटक गए। मन की सुनो और तुम कभी सत्य के निकट नहीं होते हो। मन की सुनो और तुम सदा यात्रा पर रहोगे।

मैंने एक महिला के विषय में सुना है, वह एक दर्शनशास्त्री एक विचारक थी, उसने बहुत सी पुस्तकें लिखी थीं वह बहुत प्रसिद्ध थी। और फिर उसने अचानक अपने मित्रों को बताया कि वह विवाह करने जा रही है।

किसी ने उसके प्रेम-संबंधों के बारे में कभी कोई अफवाह भी नहीं सुनी थी, क्योंकि जो लोग सोचते हैं वे कभी प्रेम नहीं करते। किसी ने यह कभी नहीं सोचा था कि वह विवाह करेगी, इसलिए वे बहुत हैरान हुए।

उन्होंने कहा. यह आदमी कौन है?

तब उसने नाम बताया- वे और भी हैरान हुए। उन्होंने कहा तुमने उस आदमी में क्या देखा है?

एक अति साधारण व्यक्ति – और वह एक सुविख्यात महिला। वह युनिवर्सिटी में प्रोफेसर थी उसने कई किताबें लिखी थीं देश भर में उसका नाम था। ‘ उस व्यक्ति के साथ? क्यों, तुमने उसमें क्या देखा है?’

उस महिला कहा: एक ही अच्छी बात-वह यात्रा पर रहने वाला विक्रेता है। वह कभी यहां नहीं होगा, वह सदा यात्रा करता रहेगा। विचारक सदा यात्रा करने वाले विक्रेता के साथ विवाह करते हैं। वह कभी यहां नहीं होगा और मैं विचार करने के लिए और अपने काम करने के लिए स्वतंत्र रहूंगी।

मन के साथ विवाह करने का अर्थ सेल्समैन के साथ विवाह, एक यात्रा पर रहने वाले विक्रेता के साथ विवाह करना है जो हमेशा यात्रा पर रहता है। और इस मन के कारण जो सदा यात्रा पर रहता है, तुम कभी वास्तविकता के संपर्क में नहीं आ सकते। तुम खाते हो लेकिन तुम खाने को चूक जाते हो। सुगंध, स्वाद, उसकी गंध- तुम उनसे चूक जाते हो। तुम बस भोजन को अंदर डाल लेते हो। यह कुरूप है। लेकिन तुम क्यों चूक जाते हो? क्योंकि मन सोचता रहता है, खाते समय तुम हजार बातें सोचते रहते हो।

रिंझाई कहता है जब मैं खाता हूं मैं केवल खाता हूं और जब मैं सोता हूं मैं केवल सोता हूं।

किसी ने कहा लेकिन उसमें कुछ विशेष बात नहीं, हर कोई ऐसा ही कर रहा है। रिंझाई हंसा और उसने कहा अगर हर कोई ऐसा कर रहा है तो फिर हर व्यक्ति बुद्ध है, हर व्यक्ति आत्मोपलब्ध है।

भोजन कर रहे हो, बस भोजन करो। इसके साथ हो रहो। चल रहे हो, बस चलो, वहीं होओ। आगे मत जाओ, इधर-उधर छलांग मत लगाओ। मन हमेशा ही आगे चला जाता है या पीछे लौटता है। उस क्षण में रहो।

शुरू-शुरू में उसी क्षण में बने रहना बहुत कठिन होगा। और कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि वह क्षण बहुत खुशी का न हो। तुम क्रोधित हो, तब मन पश्चाताप के विषय में सोचना शुरू कर देगा या फिर कुछ ऐसा करने की चेष्टा करेगा ताकि फिर कभी क्रोध न आए। कभी तुम उदास हो, तुम रेडियो या टी. वी. खोल लेते हो, तुम कोई पुस्तक पढ़ने लगते हो, क्योंकि तुम उदास नहीं होना चाहते। तुम मन को कहीं और लगाना चाहते हो। और क्योंकि दुख के क्षण सुख के क्षणों की अपेक्षा अधिक हैं, इसलिए यह आदत सी बन जाती है। और जब यह आदत पक्की हो जाती है, तब भले ही प्रसन्नता आए तुम घर पर नहीं होते, तुम कहीं और होते हो।

इसका निश्चय कर लो जो कुछ भी हो- उदासी, क्रोध, जो कुछ भी अवसाद, अप्रसन्नता- इसके साथ रहो। और तुम अचानक हैरान हो जाओगे कि अगर तुम उदासी के साथ बने रहो तो उदासी एक सुंदर भाव में बदल जाती है, उदासी एक गहराई बन जाती है। अगर तुम क्रोध के साथ बने रहते हो, उसके विषय में सोचते नहीं, मात्र इसके साथ बने रहने से क्रोध रूपांतरित हो जाता है- यह क्षमा बन जाता है। अगर तुम कामवासना के साथ बने रहते हो, तो कामवासना एक भिन्न गुण ग्रहण कर लेती है- यह प्रेम बन जाती है।

अगर तुम क्षण के संग रहना शुरू कर देते हो, तो तुम देखोगे कि क्षण के साथ रहना एक चमत्कार है, उसका एक जादू है। प्रसन्नता और गहरी हो जाएगी। साधारणतया तुम्हारी प्रसन्नता सिर्फ सतह पर ही होती है- भीतर कहीं गहरे में तुम लाखों चीजों साथ लिए रहते हो; प्रसन्नता केवल सतह पर। अगर तुम इसके साथ बने रहते हो तो यह गहरी, और गहरी, और गहरी होती जाएगी। अगर तुम इसके साथ जीना शुरू कर देते हो, तो सभी कुछ रूपांतरित हो जाता है क्योंकि तुम्हारे अस्तित्व में, सजगता में, साक्षी भाव में एक नया गुण आ जाता है। उदासी के विरुद्ध संघर्ष मत करो और प्रसन्नता के लिए लालायित मत होओ, क्योंकि वह दूर चले जाना है, भटक जाना है।

क्या तुमने देखा है? – यदि तुम हिमालय या स्विटजरलैंड छुट्टियां मनाने जाते हो, वहां पहुंचने के लिए तुम महीनों योजना बनाते हो, और जिस क्षण तुम वहां पहुंचते हो तुम्हारे मन ने पहले ही वापसी की योजना बनानी शुरू कर दी है, घर वापस कैसे लौटना है। देखो। महीनों तुमने योजना बनाई कि कैसे पहुंचना है, और जब तुम पहुंच जाते हो- या तुम्हारे पहुंचने से पहले ही, बस रास्ते में ही- तुम्हारे मन ने वापस जाना आरंभ कर दिया है कैसे लौट कर जाना है? तुम्हारा प्रत्येक पहुंचना बस वापस लौटने की शुरुआत है। और तुम कभी वहां

पर नहीं हो, क्योंकि तुम वहां पर नहीं हो सकते हो। फिर से घर लौट कर तुम सोचने लगोगे। घर लौट कर तुम सोचना शुरू करोगे कि हिमालय में क्या कुछ घटित हुआ था, तुम कितने खूबसूरत अनुभवों से होकर गुजरे थे- और तुम वहां कभी नहीं थे। यह ऐसा है जैसे कि तुमने उनके विषय में पढ़ा हो, यह ऐसा है जैसे कि किसी और ने तुम्हें बताया हो। तुम स्मृति को ऐसा समझते हो जैसे कि स्मृति अपने आप काम करती है, वह चित्र खींच लेती है और एक एलबम बन जाती है। घर लौटने पर तुम एलबम खोल कर देख लोगे, और तुम अपने मित्रों से कहोगे, 'सुंदर!' और तुम योजना बनाने लगोगे- फिर अगले साल तुम हिमालय जा रहे हो।

जहां पर तुम हो, मन कभी वहां नहीं है, सजगता सदा वहां होती है जहां तुम हो। मन और उसके क्रियाकलापों को छोड़ते चले जाओ और अधिकाधिक सजग और सचेत होते चले जाओ। अपने आप को समग्र रूप से इस क्षण में ले आओ।

प्रारंभ में ऐसा कर सकना कठिन होगा। मन पुरानी आदत के अनुसार बार-बार दूर चला जाएगा। उसे वापस ले जाओ। संघर्ष करने की कोई आवश्यकता नहीं है! बस उसे वापस बुला लो, 'आ जाओ।' वह फिर चला जाएगा... कुछ ही क्षणों में वह वहां पर नहीं होगा। उसे फिर वापस बुला लो।

और धीरे- धीरे जब तुम 'इस' क्षण- इस शाश्वत अभी, वह एक मात्र समय जो वहां है, वह एक मात्र अस्तित्व जो वहां है, वह एक मात्र जीवन जो वहां है- का आनंद लेने लगते हो; जब तुम उसका आनंद लेने लगते हो, मन वहां बार-बार आने लगेगा; फिर यह कम से कम वहां से हटेगा।

तब एक लयबद्धता घटित होती है। अचानक तुम यहां होते हो, घर पर, और सत्य उदघाटित हो जाता है। सत्य तो सदा वहां था, तुम वहां नहीं थे। यह सत्य नहीं है जिसकी खोज की जानी है, यह तुम हो जिसको घर वापस लाना है।

आज इतना ही।

## शून्यता ही एकात्मा है

सूत्र:

मूल की ओर लौटना अर्थ को पा लेना है  
 लेकिन आभासों के पीछे जाना स्रोत से चूक जाना है।  
 आंतरिक बुद्धत्व के क्षण में दृश्य और खालीपन का अतिक्रमण होता है।  
 जो परिवर्तन इस शून्य जगत में दिखाई देते हैं  
 उन्हें हम अपने अज्ञान के कारण वास्तविक मानते हैं।  
 सत्य के लिए खोज मत करो;  
 केवल धारणाओं को पकड़ना छोड़ दो।  
 द्वैत की स्थिति में मत रहो;  
 ऐसे पथों से सावधानीपूर्वक बचो।  
 यदि 'यह और वह:' उचित और अनुचित ' इसका थोड़ा सा निशान भी रहे,  
 तो मन का सार- तत्व उलझन में खो जाएगा।  
 यद्यपि सभी द्वैत एक से ही आते हैं इस एक से भी आसक्त मत हो जाओ।  
 जब ध्यान की राह पर मन विचलित नहीं होता,  
 तब संसार में कुछ भी चोट नहीं पहुंचाता  
 और जब किसी का भी चोट पहुंचाना समाप्त हो जाता है  
 तो मन का पुराना रंग- ढंग समाप्त हो जाता है।  
 जब कोई पक्षपातपूर्ण विचार नहीं उठते,  
 तो पुराना मन समाप्त हो जाता है।

चैतन्य का स्वभाव बस दर्पण हो जाना है। दर्पण का अपना स्वयं का कोई चुनाव नहीं है। जो भी इसके सामने आता है वह प्रतिबिंबित हो जाता है अच्छा या बुरा सुंदर या कुरूप- जो कोई भी। दर्पण की अपनी कोई पसंद नहीं है वह निर्णय नहीं करता वह निंदा नहीं करता। स्रोत पर चैतन्य का स्वभाव बस दर्पण की भांति है।

एक बच्चा पैदा होता है; जो भी उसके सामने आता है उसे वह प्रतिबिंबित करता है। वह कुछ नहीं कहता कोई व्याख्या नहीं करता। जैसे ही व्याख्या प्रवेश करती है, दर्पण अपने दर्पण जैसे गुण को खो देता है। अब वह शुद्ध नहीं रहा। अब वह विचारों मतों से भरा हुआ, विचलित कई अंशों में बंटा हुआ विभाजित खंडित हो जाता है। वह स्किजोफ्रेनिक हो जाता है।

जब चेतना विभाजित हो जाती है दर्पण की भांति नहीं होती, तब वह मन बन जाती है। मन टूटा हुआ दर्पण है।

मूल-स्रोत में मन चैतन्य है। यदि तुम पक्षपात करना छोड़ देते हो यदि तुम द्वैत में बांटना छोड़ देते हो- इसके विरुद्ध उसको चुनना; इसे पसंद करना उसे नापसंद करना- यदि तुम इन विभाजनों से बाहर हो जाते हो मन फिर से एक दर्पण, एक शुद्ध चैतन्य बन जाता है।

इसलिए सत्य के खोजी की सारी चेष्टा यही है कि किस तरह वह मतों दार्शनिक विचारों प्राथमिकताओं निर्णयों चुनावों से मुक्त हो। और यह अपने में ही एक चुनाव न बन जाए- यही समस्या है।

इसलिए इस मूलभूत समस्या को समझने की चेष्टा करो, वरना तुम इसको भी एक चुनाव बना सकते हो मैं चुनाव नहीं करूंगा, मैं चुनावरहित बना रहूंगा ' अब चुनाव मेरे लिए नहीं है, अब मैं चुनावरहित सजगता के पक्ष में हूं।' अब यह फिर वही बात हो गई- तुमने चुनाव कर लिया। अब तुम चुनाव के विरुद्ध और चुनावरहितता के पक्ष में हो गए। तुम चूक गए। कोई भी चुनावरहितता के पक्ष में नहीं हो सकता क्योंकि ' पक्ष में होना ' ही चुनाव है। तब क्या किया जाए? सिर्फ साधारण समझ की जरूरत है कुछ भी करने की जरूरत नहीं। वह परम प्रयास से नहीं समझ के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

कोई प्रयास तुम्हें उसकी ओर नहीं ले जाएगा क्योंकि प्रयास सदा दोहरे मन से आएगा। तब तुम जगत को नापसंद करते हो और परमात्मा को चाहते हो तब बंधन तुम्हारी पसंद नहीं होता मुक्ति तुम्हारी पसंद होती है तब तुम मोक्ष, परम मुक्ति को खोजते हो। लेकिन फिर मन प्रविष्ट हो गया और मन भीतर आता रहता है। और तुम कुछ नहीं कर सकते- तुम्हें इस पूरी परिस्थिति के प्रति बस सजग रहना है।

अगर तुम सजग हो तो आकस्मिक प्रकाश के क्षण में मन गिर जाता है। अचानक तुम दर्पण जैसे चैतन्य के साथ एक हो जाते हो तुम अपने आधार अपने मूल-स्रोत में गिर जाते हो। और जब तुम मूलस्रोत में गहरे गिर जाते हो तो सारा अस्तित्व मूल-स्रोत में गिर जाता है।

तुम जैसे हो अस्तित्व तुम्हें वैसा ही दिखाई देता है। यह मूलभूत नियमों में से एक है। जो कुछ भी तुम देखते हो वह इस बात पर भी निर्भर करता है कि तुम कहां से देखते हो। अगर तुम मन हो विभाजित हो तो सारा जीवन विभाजित हो जाता है। अस्तित्व तुम्हारे अंतस तक पहुंचता है। यदि तुम्हारे पास खंडित मन है तो सारा जगत खंडित दिखाई देगा, तब दिन रात के विरुद्ध है। वे हैं नहीं क्योंकि दिन रात में बदल जाता है और रात दिन में- वे एक पूरा वर्तुल बनाते हैं। वे विरोधी नहीं हैं, वे परिपूरक हैं। बिना रात के दिन नहीं हो सकता और बिना दिन के रात नहीं हो सकती। इसलिए वे विपरीत नहीं हो सकते हैं, भीतर गहरे में वे एक हैं।

जीवन और मृत्यु विपरीत दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि तुम विभाजित हो। अन्यथा जीवन मृत्यु हो जाता है और मृत्यु जीवन बन जाती है तुम पैदा हुए, और उसी दिन से तुमने मरना शुरू कर दिया है और जिस क्षण तुम मरते हो एक नया जीवन अस्तित्व में आ गया है। यह एक वर्तुल है यिन और यांग चीनियों का वर्तुल।

उस वर्तुल को बार-बार स्मरण करना चाहिए। वह उन मूलभूत प्रतीकों में से एक है जिनकी आज तक खोज हुई है। उसकी तुलना किसी अन्य प्रतीक से- क्रॉस से, स्वस्तिक से ओम से नहीं की जा सकती- चीनी यिन और यांग की तुलना किसी से नहीं की जा सकती क्योंकि यिन और यांग अस्तित्व की सारी विपरीतता का बोध कराता है अंधेरी रात और उज्जल दिन का, जीवन और मृत्यु का प्रेम और घृणा का।

अस्तित्व में सभी विपरीत एक साथ हैं। भीतर तुम खंडित हो बाहर वे खंडित हैं। जब तुम अपने स्रोत में गिरते हो और तुम एक हो जाते हो तो सारा अस्तित्व अकस्मात एक पंक्ति में खड़ा हो जाता है और हो जाता है। जब तुम एक हो, ब्रह्म प्रकट होता है, परमात्मा प्रकट होता है क्योंकि केवल एक के लिए एक प्रकट हो सकता है, दो के लिए दो अनेक के लिए अनेक। और तुम अनेक हो तुम भीड़ हो- दो भी नहीं, तुम्हारे भीतर अनेक-अनेक स्व हैं।

गुरजिएफ कहा करता था कि तुम एक वह घर हो जहां कोई नहीं जानता कि मेजबान कौन है। वहां बहुत से लोग हैं हर कोई मेहमान है- लेकिन कोई नहीं जानता कि मेजबान कौन है, इसलिए हरेक सोचता है कि वही मेजबान है। इसलिए जो भी जिस क्षण में शक्तिशाली हो जाता है मेजबान की भूमिका निभाता है।

जब क्रोध शक्तिशाली हो जाता है क्रोध मेजबान बन जाता है। जब प्रेम शक्तिशाली होता है प्रेम मेजबान हो जाता है। जब ईर्ष्या शक्तिशाली होती है ईर्ष्या मेजबान हो जाती है। लेकिन यह एक सतत संघर्ष है, क्योंकि मेहमान बहुत सारे हैं और उनमें से प्रत्येक मेजबान होना चाहेगा घर का मालिक होना चाहेगा। और कोई भी नहीं जानता कि मालिक कौन है। या तो घर का मालिक किसी लंबी यात्रा पर गया है और लौट कर नहीं आया, या फिर वह गहरी निद्रा में सोया है।

तुम्हारा स्व गहरी नींद में है। इसीलिए सभी जीसस कृष्ण बुद्ध इस बात पर बल देते हैं 'जागो!' जीसस अनेक बार 'जागो' शब्द का प्रयोग करते हैं 'जागो देखो सजग रहो।' बुद्ध कहे चले जाते हैं 'और चेतन बनो।'

अर्थ एक ही है अगर तुम जागरूक हो जाओगे तो मेजबान प्रकट होगा। और जिस क्षण- और यही इसका सौंदर्य है- मेजबान उपस्थित होता है मेहमान विलीन हो जाते हैं। जैसे ही स्वामी आता है सेवक पंक्तिबद्ध हो जाते हैं और दास बन जाते हैं। वे यह दावा नहीं करते कि वे मालिक हैं।

इसलिए वास्तविक समस्या क्रोध ईर्ष्या, घृणा से संघर्ष करना नहीं है। वास्तविक समस्या है मालिक को लाना और उसे सचेत करना। एक बार जब वह सजग हो जाता है तो सब ठीक हो जाता है। लेकिन यह सजगता तभी संभव है, जब तुम मूल-स्रोत में लौट जाते हो।

मन विभाजित ही रहेगा। मन का स्वभाव ही यही है वह एक हो नहीं सकता। मन की प्रकृति को समझने का प्रयत्न करो तभी सोसान के ये सूत्र स्पष्ट होंगे, पारदर्शी हो जाएंगे।

मन का स्वभाव चीजों को इस ढंग से देखना है कि विपरीत को बीच में लाना ही पड़ता है। मन बिना विपरीत के समझ ही नहीं सकता। यदि मैं कहता हूं 'प्रकाश क्या है?' मन इसे कैसे समझेगा? तत्काल अंधकार को बीच में लाना पड़ता है।

अगर तुम शब्दकोश में देखो- शब्दकोश एक दुब्जक है- अगर तुम यह देखने के लिए जाते हो कि प्रकाश क्या है तो शब्दकोश कहता है जो अंधकार नहीं है। प्रकाश को परिभाषित करने के लिए अंधकार को लाना पड़ता है। कैसी मूढ़ता है। और जब तुम अंधकार की परिभाषा देखने जाते हो- तो तुम चकित होओगे- तो प्रकाश को बीच में लाना पड़ता है। अंधकार क्या है? तब वे कहते हैं जो प्रकाश नहीं है।

तुमने दोनों की ही परिभाषा नहीं की, क्योंकि दोनों ही अपरिभाषित रह गए। और एक अपरिभाष्य से तुम दूसरे अपरिभाषित की कैसे परिभाषा दोगे? शब्दकोश का सारा यही खेल है कि तुम कभी पूरी चीज को नहीं देखते।

यदि तुम भाषाविदों से पूछो 'मन क्या है?' वे कहेंगे 'जो पदार्थ नहीं है।' और पदार्थ क्या है? वे कहते हैं 'जो मन नहीं है।' दोनों की परिभाषा नहीं दी गई। अपरिभाषित किसी चीज को कैसे परिभाषित कर सकता है? यदि मैं तुमसे पूछूं कि तुम कहां रहते हो तुम कहते हो 'मैं अ का पड़ोसी हूं।' यदि मैं तुमसे पूछता हूं कि यह अ कहां रहता है, तुम कहते हो? 'वह मेरा पड़ोसी है।' मैं वह जगह कैसे खोजूं जहां तुम रहते हो? क्योंकि न तो अ की परिभाषा हुई और न तुम्हारी। अब के समीप रहता है और अब के। लेकिन चीजें ऐसे ही चलती रहती हैं।

मन तब तक कुछ समझ नहीं सकता जब तक विपरीत बीच में न लाया जाए क्योंकि मन विपरीत के माध्यम से देखने में समर्थ होता है। जीवन को समझा नहीं जा सकता जब तक मृत्यु न हो। प्रसन्नता को अनुभव करना असंभव है यदि अप्रसन्नता न हो। तुम स्वास्थ्य को कैसे अनुभव करोगे यदि तुमने कभी रोग को नहीं जाना? तुम स्वस्थ हो सकते हो लेकिन उसे अनुभव नहीं कर सकते। बिना रोग के स्वस्थ होना संभव है लेकिन मन उसकी जांच नहीं कर सकता मन उसे जान नहीं सकता तुम्हें रोगी होना ही पड़ता है।

मन के लिए संत होने के लिए पहले पापी होना जरूरी है और स्वस्थ होने के लिए रोगी होना जरूरी है प्रेम में होने से पहले घृणा करना आवश्यक है। यदि तुम प्रेम करते हो और वहां कोई घृणा नहीं है तो तुम उसे जान नहीं सकोगे तुम्हारा मन किसी भी। तरह इसे पहचान नहीं पाएगा। और दूसरा कोई भी उसे नहीं जान पाएगा।

किसी बुद्ध की या किसी जीसस की यही कठिनाई है। बुद्ध प्रेम से परिपूर्ण हैं, लेकिन हम उनके प्रेम को पहचान नहीं पाते- उनके पास विपरीत की कोई पृष्ठभूमि नहीं है घृणा नहीं है। हमने उनकी आंखों में कभी घृणा नहीं देखी और हमने उनकी आंखों में कभी क्रोध नहीं देखा। हम कैसे पहचानें कि वे प्रेम करते हैं? उनका प्रेम समझ में नहीं आता है।

मन के लिए तभी कुछ समझना संभव है जब उसका विपरीत लाया जाए। लेकिन जैसे ही तुम विपरीत को बीच में लाते हो तुम अस्तित्व को झुठला देते हो, क्योंकि अस्तित्व में विपरीत जैसा कुछ नहीं है।

मन विपरीत के माध्यम से गति करता है और अस्तित्व एकात्मक है। अस्तित्व अद्वैत है अस्तित्व में द्वैत नहीं है- वहां कोई समस्या नहीं है। कहां है दिन की सीमा? जब दिन समाप्त होता है उसका होना मिटता है और रात प्रारंभ हो जाती है? क्या दोनों में कोई अंतराल है? यदि कोई अंतराल है तो सीमा हो सकती है। लेकिन कोई सीमा नहीं है! दिन सिर्फ रात में विलीन हो जाता है यह रात से मिल कर एक हो जाता है, और फिर रात दिन में विलीन हो जाती है। जीवन एक है अस्तित्व एक है- मन द्वैत है।

इसलिए अगर तुम चुनाव करते रहोगे तो तुम कभी स्रोत तक नहीं पहुंचोगे। तब तुम जीवन से चिपकोगे और मृत्यु से भयभीत रहोगे। तब तुम प्रेम से चिपकोगे और घृणा से भयभीत होओगे। तब तुम अच्छे के साथ चिपकोगे और बुरे से भयभीत रहोगे। तब तुम परमात्मा से चिपकोगे और शैतान से डरोगे।

जीवन एक है परमेश्वर, शैतान- एक। ऐसा कोई विभाजन नहीं है जहां परमेश्वर समाप्त होता है और शैतान प्रारंभ होता है ऐसा हो नहीं सकता। जीवन में राम और रावण एक हैं लेकिन मन के लिए वे शत्रु हैं, वे लड़ रहे हैं। मन के लिए सब संघर्ष है, युद्ध है। और यदि तुम चुनाव करते हो तो तुम इस खेल के हिस्से बने रहते हो। और धर्म की सारी कला यही है कि कैसे चुनाव न करें कैसे चुनावरहितता में हो जाएं।

लेकिन स्मरण रहे चुनावरहितता का चुनाव मत करना। नहीं तो मुझे, या सोसान को या कृष्णमूर्ति को सुनकर तुम ' चुनावरहितता ' शब्द से प्रभावित हो जाओगे। तुम्हारा मन कहेगा ' यह तो बहुत अच्छी बात है। यदि मैं चुनावरहित हो जाऊं तो समाधि संभव है और मुझे अधिक आनंद घटित होगा। तब जीवन के रहस्यों के द्वार खुल जाएंगे।' मन को लोभ पकड़ता है। मन कहता है ' ठीक है तो मैं चुनावरहितता को चुनता हूं।' द्वार बंद हो गया। केवल लेबल बदल गया है लेकिन तुम पुरानी चाल के शिकार हो गए।

अब इन सूत्रों को समझने का प्रयत्न करो। ये सूत्र पूरी धरती पर किसी मनुष्य द्वारा बोले गए सर्वश्रेष्ठ वचनों में से हैं।

मूल की ओर लौटना अर्थ को पा लेना है

लेकिन आभासों के पीछे जाना स्रोत से चूक जाना है।

‘मूल की और लौटना अर्थ को पा लेना है’....अस्तित्व की इस सारी लीला का क्या प्रयोजन है? इन सभी वृक्षों मनुष्यों, और पशुओं और पक्षियों का क्या प्रयोजन है? इस धरती और इस स्वर्ग की क्या सार्थकता है? इस संपूर्ण का क्या उद्देश्य है? तुम अर्थ को कहां पाओगे?

मन के लिए अर्थ अंत में अवश्य होना चाहिए- यह अस्तित्व जिस ओर जा रहा है-वही अर्थ होगा- वही लक्ष्य होगा। मन के लिए अर्थ कहीं मंजिल में होगा, जिसकी ओर हम जा रहे हैं।

और सोसान का यह सूत्र कहता है ‘ मूल की ओर लौटना अर्थ को पा लेना है’ – भविष्य में नहीं इच्छा में नहीं और लक्ष्य में नहीं कहीं और नहीं बल्कि मूलस्रोत में। अंत में नहीं बल्कि आरंभ में।

समझने की चेष्टा करो। बहुत सी बातें समझनी होंगी। पहली बात यदि कहीं कोई प्रयोजन है तो वह बीज में होना चाहिए- हो सकता है छिपा हुआ हो, अदृश्य हो लेकिन यह बीज में अवश्य होना चाहिए, क्योंकि ऐसा कुछ जो बीज में नहीं है वह बाहर नहीं आ सकता। ना-कुछ से कुछ भी उत्पन्न नहीं हो सकता।

अगर कोई लक्ष्य है तो उसे बीज में छिपा होना चाहिए जैसे फल बीज में छिपा रहता है- फूल वृक्ष का प्रयोजन है। जब उस पर फूल खिलते हैं तो वह हर्षित होता है, जब उस पर बहार आती है वह गाता और नाचता है। उसे उपलब्धि हो गई है वह प्रसन्न है आनंदित है उसे अब किसी चीज का अभाव नहीं है। फूल वृक्ष का आनंद है वृक्ष का नृत्य है कि ‘ मैंने पा लिया है।’

लेकिन उन फूलों को कहीं तो बीज में होना चाहिए अन्यथा वे कैसे हो सकते हैं? अंत को अवश्य ही आरंभ में होना चाहिए ओमेगा को अल्फा में छिपा होना ही चाहिए। जीसस कहते हैं ‘ मैं ही आरंभ और अंत हूं। मैं ही अल्फा हूं और मैं ही ओमेगा हूं।’

आरंभ ही अंत है क्योंकि हो सकता है अंत अभी प्रकट न हो परंतु वह वहां अवश्य होना चाहिए। और जब वह बीज में है तो तुम्हें भविष्य के आने की फूलों के खिलने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। तुम अभी इसी समय आरंभ को भीतर तक देख सकते हो क्योंकि वह यहीं है। स्मरण रहे बीज अतीत में नहीं है। बीज सदा वर्तमान में यहीं और अभी होता है क्योंकि पूरा अतीत वर्तमान में है।

निश्चित ही पूरा भविष्य भी वर्तमान में है लेकिन भविष्य अभी हुआ नहीं और अतीत हो चुका है आरंभ घटित हो चुका है। आरंभ में प्रवेश करो मूल की ओर स्रोत की ओर बढ़ो और अर्थ प्रकट हो जाएगा।

और तुम अब भी बीज को अपने भीतर लिए हो-बीज सभी अर्थों का सभी संभावनाओं का उन सभी द्वारों का जो खुल सकते हैं सभी रहस्यों का जो उदघाटित हो सकते हैं। बीज तुम लिए हुए हो! लेकिन अगर तुमने भविष्य की प्रतीक्षा की तो हो सकता है वह कभी न आए क्योंकि भविष्य अंतहीन है और प्रतीक्षा करना जीवन, समय और ऊर्जा को गंवाना है।

और अगर प्रतीक्षा की आदत हो जाती है तो हो सकता है फूल तो खिल जाए लेकिन तुम देखने के योग्य न रहो। क्योंकि तुम्हें भविष्य में देखने की आदत हो गई है, तुम्हारी नजरें अटक गई हैं। वे निकट की चीजों को और पास में नहीं देख पातीं, वे हमेशा दूर की चीजों को देख सकती हैं।

अगर तुम जन्म-जन्मांतरों से भविष्य में अर्थ को खोजते रहे हो और फूल खिलता है, तुम उसे देख न पाओगे- क्योंकि देखना फूल पर निर्भर नहीं है देखना तुम्हारी पैनी दृष्टि पर निर्भर करता है। और तुम्हारे पास वह भेदक दृष्टि नहीं है नहीं तो आरंभ सदा वहीं है बीज सदा वहीं है। तुमने उसे देख लिया होता।

अगर तुम भविष्य की ओर देखते हो और अर्थ के कहीं और प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हो तो देर-अबेर तुम्हें लगेगा कि जीवन अर्थहीन है। पश्चिम में यही हो रहा है, क्योंकि दर्शनशास्त्र निरंतर यही सोचता रहा है कि मंजिल कहीं भविष्य में है।

यह सोचना कि लक्ष्य आरंभ में है बहुत असंगत प्रतीत होता है। यह बात विरोधाभासी प्रतीत होती है क्योंकि लक्ष्य आरंभ में कैसे हो सकता है? इसलिए मन कहता है लक्ष्य निश्चित ही कहीं आगे होगा क्योंकि मन इच्छाओं के द्वारा जीता है, इच्छाओं के माध्यम से चलता है। प्रेरणा को कहीं भविष्य में होना चाहिए। और दो हजार वर्षों से निरंतर भविष्य के संबंध में सोचने के कारण अब पश्चिमी चित्त सोचता है कि कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि भविष्य नहीं आया है।

भविष्य कभी नहीं आता! अपनी प्रकृति के कारण वह कभी आ नहीं सकता, वह सदा अनागत रहता है। वह आ रहा है परंतु आता कभी नहीं। वह उस कल की तरह है जो कभी नहीं आता। वह जब भी आता है सदा आज ही आता है जब भी आता है सदा वर्तमान ही होता है।

भविष्य कभी नहीं आता आ नहीं सकता। इसका मूल स्वभाव आशा, स्वप्न के समान है- भ्रमपूर्ण। ऐसा लगता है जैसे कि वह आ रहा है ठीक क्षितिज की भांति, यह कभी आता नहीं। फिर प्रतीक्षा करते-करते तुम निरर्थक अनुभव करने लगते हो। आज पश्चिम का पूरा विचारशील चित्त अनुभव कर रहा है, कि जीवन निरर्थक है, असंगत है। और यदि तुम अनुभव करते हो कि जीवन असंगत अर्थहीन है तो आत्महत्या ही इससे छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय रह जाता है।

इस सदी के महान पश्चिमी विचारकों में एक मार्सल ने लिखा है कि आत्महत्या एक मात्र समस्या है। अगर तुम्हें लगता है कि जीवन अर्थहीन है तब क्या शेष रह जाता है? फिर इसे क्यों खींचते जाना? फिर जीना ही क्यों?

अगर कोई सार्थकता नहीं है और तुम कोल के बैल की तरह घूम रहे हो... प्रतिदिन तुम जागते हो काम पर जाते हो थोड़े से रुपये कमाते हो, रात को सो जाते हो, सपने देखते हो, फिर सुबह चक्र घूमता रहता है और तुम कहीं नहीं पहुंचते। अंत में मौत है इसलिए प्रतीक्षा क्यों करें? क्यों न आत्महत्या कर लें? इस अर्थहीन जीवन को नष्ट क्यों न कर दें? और उसके लिए जो अर्थहीन है क्यों चिंता करें और क्यों इतना बोझ उठाएं और क्यों इतनी दुख-पीड़ा सहे? यह एक तार्किक निष्पत्ति है।

अगर तुम भविष्य में देखते हो तो तुम्हें समझ में आएगा कि कोई अर्थ नहीं है। लेकिन यदि तुम सच में अर्थ चाहते हो तो इसका उपाय है- बीज में देखो और बीज अभी और यहीं है। लेकिन मन को भविष्य में देखना अच्छा लगता है यह सरल है। बीज में देख पाना कठिन है। यही तो सारी साधना है यही तो कठिन प्रयास है बीज में देखना- क्योंकि यदि तुम बीज में देखना चाहते हो तो तुम्हें एक अलग प्रकार की गुणवत्ता वाली दृष्टि की जरूरत होगी। तुम्हें तीसरी आंख की आवश्यकता होगी, क्योंकि ये साधारण आंखें केवल बाहरी खोल तक ही देख सकती हैं। लेकिन उस अदृश्य को जो पीछे छिपा है, जो रहस्य है- ये आंखें उतनी गहराई तक जाकर नहीं देख सकतीं।

आंखों की एक भिन्न प्रकार की गुणवत्ता की आवश्यकता है जो अभी भीतर तक पहुंच कर देख सके कि बीज में क्या छिपा है। यदि तुम बाहर-बाहर से देखते हो तो तुम्हारी नजर भीतर नहीं पहुंच सकती क्योंकि तुम्हारी निगाहें शरीरों से बीजों के खोल से टकराएंगी। यदि तुम वास्तव में बीज के भीतर देखना चाहते हो, तो अपने भीतर झांको- क्योंकि तब खोल से कोई अड़चन नहीं है- भीतर से तुम भी एक बीज हो।

तुम्हारा संबंध इस अस्तित्व से है, तुम इससे ही निकले हो। इस अस्तित्व का ब्लू-प्रिंट तुम्हारे भीतर है, यह अस्तित्व तुम्हारे माध्यम से किसी नियति को पूर्ण करने की कोशिश कर रहा है। भीतर देखो क्योंकि तब खोल से कोई समस्या नहीं है। तुम्हें खोल के भीतर घुस कर देखने की जरूरत नहीं है तुम उसके भीतर ही हो। यही ध्यान है बीज के भीतर देखना, स्वयं के भीतर देखना। वहां अर्थ खिल उठता है वह तत्काल खिल जाता है।

वह सदा से वहां था इसे बस तुम्हारे ध्यान की आवश्यकता थी। तुमने उसकी उपेक्षा की थी तुम उसके प्रति उदासीन थे। तुम दूसरी चीजों में उलझे हुए थे व्यस्त थे- और तुम स्वयं की ओर पीठ मोड़ कर खड़े थे।

और अर्थ प्रतीक्षा करता है, और सारे जीवन का प्रयोजन छिपा हुआ रहता है और आशीष और प्रसाद बस तुम्हारे वापस मुड़ने की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

ईसाई शब्द ' कनवर्जन ' का अर्थ है वापस आना। उसका अर्थ किसी हिंदू को या मुसलमान को ईसाई बनाना नहीं है-उसका अर्थ है सजगतापूर्वक अपने भीतर लौट आना।

मूल की ओर लौटना अर्थ को पा लेना है

लेकिन आभासों के पीछे जाना स्रोत से चूक जाना है।

बाहर केवल आभास हैं। तुम नहीं जान सकते कि बाहर क्या है, क्योंकि इंद्रियों के द्वारा तुम केवल आभासों को छू सकते हो। मैं तुम्हें देख नहीं सकता। मैं केवल तुम्हारा शरीर देख सकता हूँ- पूरा शरीर भी नहीं बल्कि केवल ऊपरी सतह केवल त्वचा की ऊपरी परत ही दिखाई पड़ती है। मैं नहीं जानता कि तुम वहां हो या नहीं। हो सकता है तुम केवल एक स्वचालित यंत्र एक रोबोट हो- कौन जानता है?

रोबोट संभव है अब तो और अधिका एक रोबोट बनाया जा सकता है। और अगर रोबोट है तो उसका बाहर से तुम्हें पता भी नहीं चलेगा क्योंकि वह आंखें झपकाएगा वह उत्तर भी देगा? यदि तुम कहते हो ' हेलो!' वह कहेगा, ' हेलो, आप कैसे हैं?' तुम कैसे जानोगे कि वह रोबोट नहीं है? ऊपर से वह बिलकुल मनुष्य जैसा है, कोई अंतर नहीं है।

वह बात करता है और वह बुद्धिमत्तापूर्वक बात करेगा- कभी-कभी वह तुमसे भी अधिक बुद्धिमत्तापूर्वक क्योंकि उसमें सभी कुछ पूरी तरह से भर दिया गया है। उसकी जानकारी बिलकुल सही है वह बहुत कुछ जानता है वह तुमसे अधिक जान सकता है। वे कहते हैं कि एक छोटा सा कंप्यूटर इतना कुछ जान सकता है जितना पांच सौ वैज्ञानिक पांच सौ जन्मों में जान सकते हैं। रोबोट के मस्तिष्क में एक कंप्यूटर रखा जा सकता है, निस्संदेह वह बैटरी द्वारा संचालित है। तुम पूछो वह उत्तर देता है। और उसके उत्तर तुम्हारे उत्तरों की भांति गलती की संभावना वाले नहीं होते। और वह कभी मूर्ख नहीं बनेगा, वह हमेशा एक बुद्धिमान व्यक्ति ही होगा।

कैसे निर्णय करें कि भीतर कौन है? तुम्हारी दृष्टि भीतर तक देख नहीं सकती। तुम सिर्फ बाहर घूम-घूम कर चारों ओर चक्कर लगा सकते हो। तुम सतह को छू सकते हो। तुम केवल अपने भीतर जा सकते हो। केवल वहीं तुम चेतना के संबंध में निश्चित हो सकते हो- और कहीं नहीं। सारा संसार भले ही एक सपना हो कौन जानता है? मैं सपना देख सकता हूँ कि तुम यहां बैठे हो और मैं तुम से बात कर रहा हूँ। तुम सपना देख सकते हो कि तुम यहां बैठे हो और मुझे सुन रहे हो। क्या तुम्हारे पास प्रमाणित करने के लिए कोई कसौटी है कि यह सपना नहीं है? कोई उपाय नहीं है।

आज तक कोई यह सिद्ध करने में समर्थ नहीं हुआ कि यह सपना नहीं है, क्योंकि सपने में भी चीजें इतनी वास्तविक लगती हैं- उससे भी अधिक वास्तविक जब तुम जाग रहे होते हो- क्योंकि जाग्रतावस्था में कभी-कभी मन में संदेह उत्पन्न हो जाता है कि यह सत्य है या नहीं। लेकिन स्वप्न में कभी मन में संदेह नहीं उठता स्वप्न में तुम्हें चीजें ऐसे प्रतीत होती हैं जैसे कि वे यथार्थ हों।

च्यांगत्सु के संबंध में कहा जाता है...

एक दिन सुबह च्यांगत्सु ने रोना और चिल्लाना शुरू कर दिया। उसके शिष्य इकट्ठे हो गए और उन्होंने पूछा गुरुदेव, आप क्या कर रहे हैं? आपको क्या हो गया है?

च्यांगत्सु ने कहा मैं दुविधा में पड़ गया हूँ। पिछली रात मैंने स्वप्न में देखा कि मैं तितली हो गया हूँ।

शिष्यों ने कहा लेकिन इसमें रोने- धोने और उदास होने की क्या बात है? सभी लोग कई चीजों के सपने देखते हैं। सपने में तितली बन जाना कोई अनुचित बात नहीं है।

नांगर ने कहा समस्या यह नहीं है। अब मैं चिंतित हूँ अब मन में एक संदेह उठ खड़ा हुआ है और मैं नहीं जानता कि निष्कर्ष पर कैसे पहुंचूँ। रात को नांगर ने स्वप्न देखा कि वह तितली हो गया है, अब संदेह उत्पन्न हो गया है यह हो सकता है तितली अब स्वप्न देख रही हो कि वह नांगर हो गई है।

और कौन है जो फैसला करे, और कैसे? यदि सपने में नांगर एक तितली बन सकता है तो इससे उलटा क्यों नहीं हो सकता है कि एक तितली फूल पर बैठी सपना देख रही हो कि वह एक बुद्ध बन गई है।

इसमें कोई कठिनाई नहीं, बात सीधी साफ है। नांगर ने एक सुंदर और मूलभूत समस्या को उठाया है तुम बाहर के संसार के संबंध में कैसे निश्चित हो सकते हो कि यह एक सपना नहीं है? ऐसे कई दर्शनशास्त्र हुए हैं जिन्होंने सिद्ध करने की कोशिश की है कि यह सारा जगत स्वप्न है। कोई भी उन सिद्धांतों में विश्वास नहीं करता, लेकिन कोई उनका खंडन भी नहीं कर सका।

पश्चिम में, बर्कले ने यह सिद्ध किया है कि संपूर्ण अस्तित्व एक स्वप्न है। कोई उसका विश्वास नहीं करता, वास्तव में, वह स्वयं भी उसमें विश्वास नहीं करता, क्योंकि उसका सारा जीवन यही दर्शाता है कि उसे भी जगत के स्वप्न होने में विश्वास नहीं है। यदि तुम उसका अपमान करते हो तो वह क्रोधित हो जाता है। यदि तुम उस पर पत्थर फेंकते हो वह बचने की कोशिश करता है। यदि तुम उसे चोट मारते हो, वह डाक्टर के पास भागा जाता है क्योंकि खून बह रहा है।

डॉक्टर जॉनसन ने इसी तरह बर्कले के सिद्धांत का खंडन करने का प्रयत्न किया है। वे दोनों मित्र थे और एक दिन टहलते हुए बर्कले ने कहा अब मैंने सिद्ध कर दिया है कि सारा जीवन सपना है, और मेरा खयाल है कि अब कोई इसे असिद्ध नहीं कर सकता।

और हां, वह ठीक था। अब तक कोई भी उसका खंडन करने में समर्थ नहीं हुआ था-खंडन करना असंभव है! कैसे उसका खंडन करें?

डॉक्टर जॉनसन नीचे झुका एक पत्थर उठाया और बर्कले के पैर पर दे मारा। वह चिल्लाया। डॉक्टर जॉनसन ने कहा : यह पत्थर वास्तविक है।

बर्कले हंसा और उसने कहा : यह मेरे दार्शनिक सिद्धांत का खंडन नहीं कर सकता क्योंकि हो सकता है मेरी चीख केवल एक सपना हो जो तुमने देखा है। मेरे पैर से बहता हुआ खून, तुम कैसे सिद्ध कर सकते हो कि यह यथार्थ है, और एक सपना नहीं है।

क्योंकि सपने में भी अगर तुम्हें चोट मारी जाती है तो खून बहेगा। और सपने में भी तुम बहुत बार चीखे-चिल्लाए हो। सपने में भी, जब तुम दुःस्वप्न देखते हो तो पसीना आ जाता है और तुम कांपने लगते हो और तुम्हारे हृदय की धड़कन तेज और अनियंत्रित हो जाती है, और सपने के टूट जाने पर भी सब शांत होने में कुछ मिनट लग जाते हैं। तुम जानते हो कि सपना टूट गया है, तुम जाग गए हो, और तुम जानते हो कि वह सपना था, लेकिन फिर दिल धक-धक करता रहता है और भय बना रहता है और माथे पर पसीना होता है।

ऐसा स्वप्न में घट सकता है, इसे अप्रमाणित करने का कोई उपाय नहीं है। बाहर ज्यादा से ज्यादा हम कह सकते हैं कि वहां प्रतीक होते हैं। वस्तुओं को अपने आप में इस तरह से जाना नहीं जा सकता है।

केवल एक सच्चाई है जिसके संबंध में तुम पूर्ण रूप से निश्चित हो सकते हो और वह सच्चाई भीतर है। तुम भीतर जा सकते हो। तुम केवल स्वयं के बारे में निश्चित हो सकते हो और किसी के बारे में नहीं। लेकिन एक बार अगर तुम भीतर गहरे में इस निश्चितता को देख लेते हो कि तुम हो।

स्मरण रहे स्वप्न में भी तुम होते हो। भले ही तुम तितली हो गए हो लेकिन तुम हो। स्वप्न के अस्तित्व के लिए भी कम से कम तुम्हारा होना आवश्यक है। सभी कुछ स्वप्न हो सकता है लेकिन तुम नहीं, क्योंकि बिना तुम्हारे स्वप्न भी नहीं हो सकता। स्वप्न देखने के लिए भी चेतना की जरूरत है।

तुम सिद्ध कर सकते हो कि सभी कुछ स्वप्न है लेकिन तुम यह सिद्ध नहीं कर सकते कि स्वप्न देखने वाला स्वप्न है क्योंकि स्वप्न देखने वाला वास्तविक होना चाहिए अन्यथा स्वप्नों का अस्तित्व नहीं हो सकता। एक बात निश्चित है और वह है तुम। केवल एक बात बिलकुल निश्चित है और वह है भीतर की तुम्हारी वास्तविकता। कनवर्जन का अर्थ है अनिश्चित जगत और आभासों के जगत से यथार्थ के जगत की ओर चले जाना। और एक बार जब तुम्हें आंतरिक निश्चितता का बोध हो जाता है तब तुम्हारी जड़ें धरती में दृढ़ हो जाती हैं; एक बार जब तुम जान जाते हो कि तुम हो, फिर उस निश्चयात्मकता के कारण दृष्टिकोण बदल जाता है, गुणवत्ता बदल जाती है। फिर तुम बाहर के जगत को देखते हो और एक भिन्न जगत प्रकट होता है-वह जगत ही परमात्मा है।

जब किसी निश्चित यथार्थ बिलकुल निश्चित वास्तविकता में तुम्हारी जड़ें जम जाती हैं, तब तुम्हारी दृष्टि एक अलग गुणवत्ता ग्रहण कर लेती है, तब एक श्रद्धा होती है। अब तुम देख पाते हो और सारा जगत बदल जाता है। फिर कोई प्रतीक नहीं होते, बल्कि यथार्थ होता है, जो वास्तव में वास्तविक है।

वह क्या है जो वास्तव में वास्तविक है? वह ये आकार नहीं है। आकार परिवर्तित हो जाते हैं, लेकिन जो रूपों में गतिमान है वह अपरिवर्तनीय है।

तुम बच्चे थे फिर तुम युवा हुए फिर तुम बूढ़े हो गए- रूप निरंतर परिवर्तित होता रहा। हर पल तुम्हारा शरीर बदल रहा है तुम्हारा रूप आकार बदल रहा है, लेकिन अगर तुम अपने भीतर झांको तो पाओगे कि तुम वही हो।

मां के गर्भ में तुम एक छोटी सी सूक्ष्म कोशिका थे, जिसे नग्न आंखों से देखा भी नहीं जा सकता था; फिर एक छोटे बच्चे थे, फिर एक युवा हुए-कई सपनों और कामनाओं से भरे- और फिर एक निराश, हतोत्साहित, असफल वृद्ध हो गए। लेकिन अगर तुम भीतर देखो तो पाते हो कि सभी कुछ वैसे का वैसे है। चेतना कभी नहीं बदलती।

अगर तुम भीतर देखो तो हैरान हो जाओगे तुम्हें यह भी पता नहीं चलेगा कि तुम्हारी आयु क्या है क्योंकि चेतना की आयु नहीं होती। यदि तुम आंखें बंद कर लो तो यह नहीं कह सकते कि तुम्हारी आयु बीस वर्ष है या चालीस वर्ष या साठ वर्ष क्योंकि आयु का संबंध शरीर से है ऊपरी खोल से है। तुम्हारा सत्य आयु-विहीन है, उसका कभी जन्म नहीं हुआ और उसकी मृत्यु भी नहीं होती है।

एक बार तुम इस शाश्वत, अपरिवर्तनशील अचल परमतत्व में केंद्रित हो जाते हो तो तुम्हारी गुणवत्ता बदल जाती है। तब तुम देख सकते हो, तब तुम एक दर्पण हो जाते हो। उस दर्पण में सत्य प्रतिबिंबित होता है। लेकिन पहले तुम्हें दर्पण होना पड़ेगा। तुम इतने तरंगित हो रहे हो इतने कंपित हो रहे हो कि तुम कुछ भी प्रतिबिंबित नहीं कर सकते- तुम सब विकृत कर देते हो।

मन वास्तविकता को विकृत करता है? और चेतना इसे प्रकट करती है।

मूल की ओर लौटना अर्थ को पा लेना है

लेकिन आभासों के पीछे जाना स्रोत से चूक जाना है।

अगर तुम आभासों के पीछे अपनी दौड़ जारी रखते हो तो स्रोत से चूक जाते हो क्योंकि आभास बाहर हैं। कभी तुम धन के पीछे भागते हो कभी तुम स्त्री या पुरुष के पीछे, कभी तुम प्रतिष्ठा और सत्ता के पीछे और तुम आभासों के पीछे भागते रहते हो। और पूरा समय तुम अपने को चूक रहे हो और पूरा समय तुम स्वप्नों की दुनिया में जी रहे हो।

अगर तुम मूल-स्रोत को चूक जाते हो तो तुम सब चूक जाते हो। बाहर के जगत में भले ही तुम बहुत कुछ पा लो, लेकिन अंत में तुम पाओगे कि तुम्हें कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ। तुमने उस एक को खो दिया है जिसमें सारे अर्थ समाए हुए हैं।

हो सकता है मरते समय तुम एक धनी व्यक्ति की मौत मर रहे होओ लेकिन भीतर तुम एक निर्धन व्यक्ति की, एक भिखारी की मौत मरोगे। मरते समय हो सकता है तुम बहुत शक्तिशाली होओ, हो सकता है किसी देश के महान राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री होओ, लेकिन भीतर कहीं गहरे में तुम्हें मालूम होगा कि तुम नपुंसक हो। मृत्यु सिद्ध कर देगी कि तुम्हारी शक्ति बस एक आभास थी मृत्यु के सामने तुम्हारी शक्ति निर्बल है, असहाय है। वास्तव में शक्ति वही है जो मृत्यु के भी पार जाती है- शेष सब नपुंसकता है। कुछ समय तुम इसमें विश्वास कर लो लेकिन मृत्यु तुम्हारे सामने सत्य को प्रकट कर देगी।

सदा स्मरण रखो कि मृत्यु आ रही है मृत्यु ही कसौटी है मृत्यु जिसे असिद्ध कर देती है वही अमान्य है और मृत्यु जो भी सिद्ध कर देती है वही मान्य है। जो भी मृत्यु का अतिक्रमण कर सकता है, जो भी मृत्यु से अधिक शक्तिशाली है, वही सत्य है। सत्य कभी नहीं मरता; असत्य हजारों बार मरता है।

आंतरिक बुद्धत्व के क्षण में दृश्य और खालीपन का अतिक्रमण केवल तब जब बुद्धत्व घटित होता है, जब तुम अंतर-प्रकाश से भर जाते हो.. प्रकाश तो वहां है लेकिन तुम उसे बाहर की ओर फेंकते रहते हो। वह तुम्हारी इच्छा से परिचालित होता है। इच्छा अवधान का केंद्र बन जाती है, प्रकाश निरंतर गतिशील रहता है। यदि तुम्हारी धन-संपदा में अधिक आसक्ति है तो तुम्हारे पूरे प्राण धन पर केंद्रित हो जाते हैं, फिर तुम केवल धन को देखते हो और कुछ भी नहीं। यदि तुम किसी व्यक्ति से मिलते भी हो तो उसे नहीं देखते तुम धन को देखते हो। यदि व्यक्ति निर्धन है तो उसकी कोई छाप तुम्हारे मन पर नहीं छूटती यदि वह धनी है तो एक छाप छूट जाती है। यदि वह बहुत ही धनी व्यक्ति है तब वह तुम्हें याद रहता है तब स्मृति बन जाती है।

यदि तुम सत्ता के पीछे हो और तुम किसी हिटलर या स्टैलिन या माओ से मिलते हो तो तुम एक व्यक्ति से मिल रहे हो लेकिन व्यक्ति गौण है। सत्ता.. जब निक्सन प्रेसिडेंट नहीं रहा, तुम उसे नहीं देख पाओगे हो सकता वह तुम्हारे पास से गुजर जाए, लेकिन अब वह वही व्यक्ति नहीं रहा है।

तुम वही देखते हो जो तुम्हारी इच्छा है, तुम्हारी इच्छा ही तुम्हारी दृष्टि है, और तुम्हारा प्रकाश सदा तुम्हारी इच्छा पर ही केंद्रित रहता है। जब यह प्रकाश लौटता है, परावर्तित होता है, भीतर की ओर वापस लौटता है। सब आलोकित हो जाता है। तुम प्रकाश से भर जाते हो। तुम ऐसा घर हो जाते हो जिसमें दीया है, अब भीतर तुम अंधकार नहीं हो।

‘आंतरिक बुद्धत्व के क्षण में दृश्य और खालीपन का अतिक्रमण होता है ‘ और सहसा तुम आभास और शून्यता के पार हो जाते हो। फिर कुछ भी केवल आभास नहीं है कुछ भी शून्यता नहीं है- सभी कुछ दिव्यता से परिपूरित हो जाता है। सब-कुछ भरा हुआ है उस दिव्य परमतत्व से छलकता हुआ- प्रत्येक वृक्ष प्रत्येक नदी

प्रत्येक सागर-दिव्यता से ओतप्रोत है। तब परमात्मा सर्वव्यापक है तुम उसे सत्य कहो या जो भी तुम्हें अच्छा लगे लेकिन सत्य सर्वव्यापी है।

जब तुम सत्य हो, तब जगत भी सत्य है; जब तुम झूठी इच्छाओं में जी रहे हो तो तुम आभासों का जगत निर्मित कर लेते हो। तुम जैसे हो तुम्हारा संसार वैसा ही है। और यहां उतने ही संसार हैं जितने लोग हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही दुनिया में जीता है, प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर अपना ही जगत निर्मित कर लेता है। वह तुम्हारा प्रक्षेपण और सृजन है।

जो परिवर्तन इस शून्य जगत में दिखाई देते हैं?

उन्हें हम अपने अज्ञान के कारण वास्तविक मानते हैं।

जो परिवर्तन इस शून्य जगत में घटित होते प्रतीत होते हैं उन्हें हम केवल अपने अज्ञान के कारण वास्तविक कहते हैं। तुम कहते हो कि कोई बूढ़ा है, तुम बुढ़ापे को एक सच्चाई समझते हो, क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि वास्तविक क्या है। वरना कोई भी युवा नहीं, कोई भी वृद्ध नहीं और कोई भी बच्चा नहीं है। अंतस आयुविहीन है, केवल बाहरी रूप ही परिवर्तित होता है।

मेरे वस्त्र पुराने हैं। क्या तुम मुझे इसलिए वृद्ध कहोगे क्योंकि मेरे वस्त्र पुराने हैं? मेरे वस्त्र नये हैं, बिलकुल नये, अभी-अभी दर्जी से आए हैं। क्या तुम इसलिए मुझे युवा कहोगे क्योंकि मेरे वस्त्र नये हैं? शरीर कुछ और नहीं सिर्फ कपड़े हैं। क्या तुम शरीर के कारण किसी को वृद्ध, किसी को युवा और किसी को बच्चा कहते हो? उस रूप-आकार के कारण जो सतत परिवर्तित हो रहा है? जिन्होंने जाना है वे कहते हैं, वास्तविक अचल है, अटल है अपरिवर्तनीय है। कपड़े बदलते रहते हैं।

रामकृष्ण की मृत्यु हो गई। मृत्यु से ठीक पहले जब चिकित्सक ने कहा, अब वे बच नहीं सकते, रामकृष्ण की पत्नी शारदा रोने लगी। और ये रामकृष्ण के अंतिम शब्द हैं उन्होंने कहा ' रोओ मत। मैं नहीं मर रहा हूं। चिकित्सक लोग जो कह रहे हैं वह कपड़ों पर लागू होता है।'

उनकी की मृत्यु कैंसर के कारण हुई थी। और रामकृष्ण ने कहा जहां तक मैं जानता हूं मुझे कैंसर नहीं है। कैंसर केवल कपड़ों पर लागू होता है। इसलिए स्मरण रखना, जब चिकित्सक कहें कि मैं मर गया हूं उनका विश्वास न करना मेरा विश्वास करना- मैं जीवित रहूंगा।

और शारदा, भारत के पूरे इतिहास में केवल वही एक ऐसी विधवा है जो कभी विधवा नहीं हुई- क्योंकि भारतीय विधवाओं को जब उनके पति मर जाते हैं अपना जीने का ढंग, अपना तौर-तरीका बदलना पड़ता है। वे रंगीन वस्त्र नहीं पहन सकतीं क्योंकि उनके जीवन से रंग विदा हो गया है। वे आभूषण नहीं पहन सकतीं क्योंकि अब वे किसके लिए पहनें?

लेकिन शारदा ने अपना जीवन वैसा ही रखा जैसे पहले था, जब रामकृष्ण जिंदा थे। और लोगों ने सोचा कि वह पागल हो गई है और वे उसके पास आते और कहते, अपने आभूषण उतार दो विशेष रूप से अपनी चूड़ियां उतार दो। उन्हें तोड़ डालो अब तुम विधवा हो।

और वह हंसती और कहती, मैं तुम्हारा विश्वास करूं या परमहंस रामकृष्ण का? क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा था, केवल वस्त्र मरेंगे मैं नहीं। और मेरा विवाह उनसे हुआ था, उनके वस्त्रों से नहीं। तो क्या मैं आपकी बात सुनूं या परमहंस रामकृष्ण की?

उसने रामकृष्ण की बात सुनी और अंत तक विवाहित ही बनी रही। और वह बहुत आनंद में जीती रही क्योंकि इस बात ने उसके जीवन को रूपांतरित कर दिया। उसे एक तथ्य समझ में आ गया- कि शरीर वास्तविक नहीं है।

उसने अपने जीवन का पुराना ढंग ही जारी रखा। यह पागलपन तो लगेगा ही क्योंकि पागलों की इस दुनिया में जहां कपड़ों को सच समझा जाता है, वहां किसी का इस प्रकार का असंगत व्यवहार पागलपन लगेगा ही।

वह रोज रात को बिस्तर तैयार करती और रामकृष्ण के कमरे में जाती और कहती : ' परमहंसदेव आइए, आपके सोने का समय हो गया है- और वहां कोई नहीं था। और वह हंसते-गाते प्रसन्नतापूर्वक उसी तरह भोजन पकाती जैसे वह सदा पकाती थी। फिर वह जाकर रामकृष्ण को बुलाती आइए, परमहंसदेव आपका भोजन तैयार है।'

उसने अवश्य कुछ जान लिया होगा। और ऐसा कोई एक दिन के लिए नहीं था, वर्षों ऐसा चलता रहा। रामकृष्ण के इस सीधे-सरल संदेश ने केवल वस्त्र ही मृत्यु को प्राप्त होंगे मैं नहीं- उसके जीवन को रूपांतरित करके पवित्र बना दिया। वह अपने स्वयं के अधिकार से बुद्धत्व को उपलब्ध हो गई।

जो परिवर्तन इस शून्य जगत में दिखाई देते हैं

उन्हें हम अपने अज्ञान के कारण वास्तविक मानते हैं। सत्य के लिए खोज मत करो;

केवल धारणाओं को पकड़ना छोड़ दो।

यह बीज-मंत्र है, एक बहुत ही गहरा संदेश:

सत्य के लिए खोज मत करो,

केवल धारणाओं को पकड़ना छोड़ दो।

तुम सत्य की खोज कैसे कर सकते हो? तुम असत्य हो! तुम दिव्यता की खोज कैसे कर सकते हो? तुम सत्य की खोज कैसे कर सकते हो? तुम खोज कैसे कर सकते हो? तुम क्या करोगे? अधिक से अधिक तुम्हारा मन चालाकी कर सकता है। ज्यादा से ज्यादा तुम सत्य को प्रक्षेपित कर लोगे तुम सत्य की कल्पना कर लोगे तुम सत्य का स्वप्न देख लोगे। इसी कारण हिंदू जब दिव्यता को उपलब्ध होते हैं तो उन्हें कृष्ण दिखाई देते हैं और ईसाई जीसस को देखते हैं जब वे सत्य तक पहुंचते हैं।

लेकिन सत्य न तो हिंदू है और न ईसाई सत्य न तो कुण है और न क्राइस्ट। ये रूप हैं कपड़े हैं। और यदि अब भी कपड़े ध्यान में आ रहे हैं तो इससे यही प्रकट होता है कि तुम अपनी धारणाओं से भरे हो- ईसाई हिंदू- और तुम प्रक्षेपित कर रहे हो।

सोसान कहता है सत्य के लिए खोज मत करो... तुम खोज नहीं कर सकते। तुम खोज कैसे कर सकते हो? तुम तैयार नहीं हो क्योंकि मन वहां है। कौन खोज करेगा? सारी खोज मन की है प्रत्येक खोज मन से आती है। चेतना कभी नहीं खोजती कभी तलाश नहीं करती चेतना तो बस है। वह ' होना ' है वह इच्छा नहीं है।

खोज एक इच्छा है। तुमने संसार में धन सत्ता प्रतिष्ठा को खोजा और तुम असफल हो गए। अब तुम परमात्मा को और सत्य को खोजते हो लेकिन तुम वही बने रहते हो। कुछ भी बदला नहीं केवल शब्द बदल गए हैं। पहले वह शक्ति था, अब यह परमात्मा है-लेकिन तुम वही खोजी बने रहते हो।

सत्य को खोजा नहीं जा सकता। इसके विपरीत जब सारी खोज बंद हो जाती है सत्य तुम्हारा द्वार खटखटाता है जब खोजी नहीं बचता सत्य तुम्हारे पास आता है। जब तुम सारी इच्छाएं छोड़ देते हो, जब कहीं जाने की कोई प्रेरणा नहीं, तब अचानक तुम पाते हो कि तुम आलोकित हो गए हो। अचानक तुम पाते हो कि तुम ही वह मंदिर हो जिसे तुम खोज रहे थे। अचानक तुम्हें बोध होता है कि तुम ही कृष्ण हो, तुम ही जीसस हो। कोई रहस्य तुम्हें उपलब्ध नहीं होता-तुमही सबके स्रोत हो, तुम ही परम वास्तविकता हो।

सत्य के लिए खोज मत करो;

केवल धारणाओं को पकड़ना छोड़ दो।

धारणाओं को मत पकड़ो- ईसाई हिंदू मुसलमान, जैन किसी धारणा को मत पकड़ो। शास्त्रों को सिर पर मत ढोओ नहीं तो तुम ज्ञानी हो सकते हो लेकिन विवेकशील कभी नहीं हो पाओगे। तुम बहुत ज्ञान और सूचनाओं से भर जाओगे लेकिन सब-कुछ उधार और मृत होगा। धारणा सत्य नहीं है हो ही नहीं सकता। धारणा मन से आती है और सत्य मन से नहीं आता सत्य तब घटित होता है जब मन नहीं होता। धारणा ज्ञात है और सत्य अज्ञात है। जब ज्ञात समाप्त हो जाता है तब अज्ञात तुम्हारे पास चला उगता है। जब ज्ञात आस-पास नहीं होता तो अज्ञात वहां होता है।

मन को साथ लिए तुम नहीं पहुंच सकते। केवल वही एक ही चीज त्यागने योग्य है मन धारणा, ईसाई हिंदू गीता बाइबिल, कुरान। तुम शान का बोझ नहीं ढो सकते क्योंकि ज्ञान का संबंध मन से है चेतना से नहीं।

भेद को देखो। मैंने तुम्हें बताया है कि चेतना बिलकुल दर्पण की भांति है जो कुछ भी उसके सामने आ जाता है, उसे किसी पूर्वाग्रह के बिना प्रतिबिंबित करती है। दर्पण नहीं कहेगा यह स्त्री सुंदर है मैं उसे प्रतिबिंबित करना चाहूंगा। और यह स्त्री मुझे पसंद नहीं, इसे प्रतिबिंबित नहीं करूंगा, यह कुरूप है।

नहीं दर्पण का अपना कोई मत नहीं है। दर्पण केवल प्रतिबिंबित करता है-वह उसका स्वभाव है।

लेकिन एक फोटो प्लेट भी है। वह भी प्रतिबिंब ग्रहण करती है लेकिन वह एक बार ही करती है और फिर प्रतिबिंब को पकड़ लेती है। कैमरे के पीछे छिपी फोटो प्लेट भी प्रतिबिंबित करती है, लेकिन एक ही बार। मन बिलकुल फोटो प्लेट के समान है वह प्रतिबिंब ग्रहण करता है और उस प्रतिबिंब को पकड़ लेता है। फिर वह मृत सूचनाओं को ढोता रहता है और फिर सदा-सदा के लिए उन्हीं जानकारीयों को ढोता रहता है।

एक दर्पण प्रतिबिंबित करता है और फिर खाली हो जाता है फिर वह प्रतिबिंब ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाता है। दर्पण प्रतिबिंब ग्रहण करने के लिए सदा स्वच्छ है, क्योंकि उसकी कोई पकड़ नहीं है। दर्पण का कोई मत नहीं है। मन के पास धारणाएं ही धारणाएं हैं विचार ही विचार हैं और इन धारणाओं की मोटी दीवाल से गुजर कर तुम कभी भी सत्य तक नहीं पहुंच पाओगे।

सत्य है। यह कोई सिद्धांत नहीं है यह वास्तविकता है-इसको अनुभव करना होगा। तुम इसके विषय में सोच-विचार नहीं कर सकते, तुम इसका दार्शनिक चिंतन नहीं कर सकते। जितना अधिक तुम दार्शनिक चिंतन करोगे उतना ही चूक जाओगे। पापियों को भले ही कभी झलकें मिल जाएं लेकिन दर्शनशास्त्र के विद्वानों को कभी नहीं मिलतीं। सोसान कहता है?:

सत्य के लिए खोज मत करो,  
केवल धारणाओं को पकड़ना छोड़ दो।  
द्वैत की स्थिति में मत रहो;  
ऐसे पथों से सावधानीपूर्वक बचो।  
यदि 'यह और वह' : 'उचित और अनुचित' इसका थोड़ा सा निशान भी रहे,  
तो मन का सार- तत्व उलझन में खो जाएगा।

कठिन है तुम जानकारियों को छोड़ने की बात तो समझ सकते हो, लेकिन साधारण जानकारियों से गहरा है अच्छे और बुरे का तुम्हारा विवेक। तुम सोच सकते हो, 'ठीक है, मैं अब न तो ईसाई हूँ न हिंदू हूँ।' लेकिन नैतिकता अच्छा और बुरा? क्या तुम सोचते हो कि नैतिकता ईसाई और हिंदू नहीं है?

नैतिकता मानवीय है; एक नास्तिक भी नैतिक बना रहता है वह किसी धर्म से नहीं जुड़ा होता, लेकिन वह भी अच्छे और बुरे की बात सोचता है- और यह बहुत गंभीर समस्याओं में से एक है जिसका सत्य के खोजी को समाधान करना है। एक प्रामाणिक खोजी को अच्छे और बुरे की सभी धारणाओं को छोड़ना पड़ता है।

मैंने सुना है कुछ लोग एक छोटी सी नौका में यात्रा कर रहे थे। अचानक समुद्र में तूफान उठा और ऐसा लगा कि नाव अभी डूबी कि अभी डूबी। सभी लोग घुटनों के बल बैठ गए और प्रार्थना करने लगे।

नौका में एक सुविख्यात संत और एक कुख्यात पापी भी था। पापी भी अपने घुटनों के बल बैठ गया और बोला : हे मेरे प्रभु हमें बचा लो!

संत उसके पास आया और बोला : इतनी ऊंची आवाज में नहीं। अगर परमात्मा को तुम्हारे बारे में पता चल गया कि तुम भी यहां हो तो फिर हममें से कोई भी नहीं बचाया जाएगा। फिर हम सभी डुबा दिए जाएंगे। इसलिए इतने जोर से नहीं!

लेकिन क्या एक संत-संत हो सकता है जो किसी में पापी को देख पाता हो? क्या संत वास्तव में प्रामाणिक रूप से संत हो सकता है अगर वह दूसरे को पापी समझता हो? वह महान नैतिकवादी हो सकता है लेकिन वह अब भी अच्छाई को पकड़े है और दूसरे के प्रति निंदा का भाव रखता है।

एक धार्मिक व्यक्ति के मन में निंदा नहीं होती वह बस स्वीकार कर लेता है।

धार्मिक व्यक्ति इतना विनम्र होता है कि वह कैसे कह सकता है 'मैं संत हूँ और तुम पापी हो?' धार्मिक व्यक्ति अच्छे और बुरे का वर्गीकरण करना सहज रूप से छोड़ देता है।

सोसान कहता है:

द्वैत की स्थिति में मत रहो;  
ऐसे पथों से सावधानीपूर्वक बचो।  
यदि 'यह और वह' : 'उचित और अनुचित' इसका थोड़ा सा निशान भी रहे,  
तो मन का सार- तत्व उलझन में खो जाएगा।

और सोचो तुम इसे अनुभव से भी जानते हो.. अगर तुम अच्छा बनने के विषय में बहुत सोचते हो, तो तुम क्या करोगे? बुरा तो वहां रहेगा ही तुम उसको दबा दोगे। ऊपर से तुम परिष्कृत दिखाई दोगे, लेकिन भीतर गहरे में अशांति होगी। बाहर से तुम संत होओगे भीतर गहरे में पापी छिपा होगा।

और यही पापी के साथ होता है ऊपर सतह पर वह पापी होता है लेकिन भीतर गहरे में उसकी भी संतत्व की गहरी इच्छा होती है। वह भी सोचता है ' यह बुरा है मैं इसे छोड़ दूंगा।' वह भी यही दिखाने का प्रयत्न करता है कि वह पापी नहीं है।

दोनों ही खंडित बने रहते हैं। अंतर विभाजन का नहीं है अंतर तो केवल इतना है कि ऊपर सतह पर क्या है और भीतर क्या छिपा है।

एक संत पाप के विषय में सोचता रहता है वह उन सब बुराइयों के निरंतर सपने देखता है जिनका उसने दमन किया है। यह एक अदभुत घटना है कि अगर तुम संतों के सपनों को देखो? तुम सदा पाओगे कि वे पापियों जैसे हैं और यदि तुम पापियों के सपनों को देखो तुम पाओगे कि वे सदा संतों जैसे हैं।

पापी सदा संत होने के सपने देखते हैं और संत सदा पापी होने के सपने देखते हैं, क्योंकि दबाया हुआ ही सपने में आता है, अचेतन ही अपने आप को सपनों में प्रकट करता है- लेकिन विभाजन बना रहता है, और अगर तुम विभाजित हो, तो तुम स्रोत तक नहीं जा सकते। यह ऐसे है एक वृक्ष है हजारों शाखाओं वाला बड़ा वृक्ष। शाखाएं बंटी हुई हैं। अगर तुम शाखाओं में ही अटक गए तो जड़ों तक कैसे पहुंचोगे? जितना तुम नीचे उतरते हो उतनी शाखाएं कम होती जाती हैं, अनेकता मिटती जाती है और तुम एक अविभाजित तने तक पहुंच जाते हो- सभी शाखाएं उसमें हैं और स्वयं वह अविभाजित है। सभी कुछ उसमें से निकलता है एक में से अनेक निकलते हैं, लेकिन एक-एक ही रहता है। और तुम्हें उस एक तक पहुंचना है। और वही मूल है, वही स्रोत है।

यद्यपि सभी द्वैत एक से ही आते हैं इस एक से भी आसक्त मत 'सभी द्वैत एक से ही आते हैं, इस एक से भी आसक्त मत हो जाओ।' इसे एक सिद्धांत मत बना लेना और इससे भी आसक्त मत हो जाना और यदि कोई ' नहीं ' कहे तो उसके साथ झगडा करना शुरू मत करना। भारत में ऐसा ही हुआ है।

अद्वैतवादियों का एक संप्रदाय है शंकर और उसका संप्रदाय। वे निरंतर इस बात के लिए तर्क देते हैं और लड़ते हैं और प्रमाणित करते हैं और दार्शनिक चिंतन करते हैं कि केवल एक का ही अस्तित्व है अद्वैत का। यदि कोई कहता है दो का अस्तित्व है तो वे विवाद करने के लिए तैयार हैं। द्वैतवादी कहे चला जाता है, ' एक का अस्तित्व कैसे हो सकता है? एक का अस्तित्व नहीं हो सकता क्योंकि एक के अस्तित्व के लिए दूसरे का होना आवश्यक है।'

क्या तुम एक अंक से गणित खड़ा कर सकते हो? दस अंकों की आवश्यकता नहीं लेकिन दो तो होने ही चाहिए। आइंस्टीन ने इस पर काम किया और उसने गणित में केवल दो अंकों का प्रयोग करने का प्रयत्न किया, एक और दो एक दो, फिर दस आ जाता है, ग्यारह बारह फिर बीस आ जाता है। इसी तरह यह आगे बढ़ता है। इससे काम चल जाएगा; नौ या दस अंकों की आवश्यकता नहीं है- लेकिन तुम केवल एक से काम नहीं चला सकते।

द्वैतवादी कहते हैं, एक के साथ अस्तित्व असंभव है। एक नदी को भी प्रवाहित होने के लिए दो किनारे चाहिए। एक बच्चे को जन्म देने के लिए भी पुरुष और स्त्री का होना आवश्यक है जीवन को बहने के लिए जन्म और मृत्यु के तौर पर दो किनारे चाहिए। एक तो नितान्त एकाकी हो जाएगा- एक से जीवन कैसे निकल सकता है? वे कहे चले जाते हैं दो। और वे लोग जो कहते हैं एक अद्वैत, वे द्वैतवादियों से निरंतर विवाद करते रहते हैं।

सोसान कहता है अगर तुम वास्तव में यह समझ गए हो कि सब-कुछ एक से ही निकलता है तब भी इसको ही मत पकड़े रहो, क्योंकि पकड़ का अर्थ है कि तुम किसी के पक्ष में हो और किसी के विपक्ष में। अगर तुम कहते हो मैं अद्वैतवादी हूँ तो तुमने अर्थवत्ता को खो दिया – क्योंकि अगर एक ही है तो तुम द्वैतवादी या अद्वैतवादी कैसे हो सकते हो? तुम्हारा अद्वैतवाद से क्या अभिप्राय है? यदि द्वैत है ही नहीं तो अद्वैतवाद से तुम्हारा क्या तात्पर्य है? चुप रह जाओ!

एक सच्चा अद्वैतवादी आग्रह नहीं कर सकता। वह नहीं कह सकता ' मैं इसमें विश्वास करता हूँ, ' क्योंकि विश्वास में विपरीत अंतर्निहित है। यदि मैं कहता हूँ, ' मैं इसमें विश्वास करता हूँ तो उसमें यह भी अंतर्निहित है कि मैं उसमें विश्वास नहीं करता। तब दो हो गए।

सोसान कहता है- वह वास्तव में अद्वैतवादी है- वह कहता है

यद्यपि सभी द्वैत एक से ही आते हैं,

इस एक से भी आसक्त मत हो जाओ? जब ध्यान की राह पर मन विचलित नहीं होता,

तब संसार में कुछ भी चोट नहीं पहुंचाता;

और जब किसी का भी चोट पहुंचाना समाप्त हो जाता है तो मन का पुराना रंग- ढंग समाप्त हो जाता है।

यह बहुत सुंदर है, इसे याद रखने का प्रयत्न करना।

जब ध्यान की राह पर मन विचलित नहीं होता,

तब संसार में कुछ भी चोट नहीं पहुंचाता;

और जब किसी का भी चोट पहुंचाना समाप्त हो जाता है: तो मन का पुराना रंग- ढंग समाप्त हो जाता है।

कोई तुम्हारा अपमान करता है। यदि तुम वास्तव में अविचलित बने रहते हो, तो तुम्हें अपमानित नहीं किया जा सकता; वह कोशिश कर सकता है, लेकिन तुम्हें अपमानित नहीं किया जा सकता। वह चाहे अपमानित करने के लिए सब-कुछ करे लेकिन तुम अपमान को लगे ही नहीं। और जब तक तुम उसे लेते ही नहीं वह असफल है।

ऐसा हुआ। एक मनोचिकित्सक अपने मित्र के साथ सुबह की सैर के लिए जा रहा था। एक आदमी जो उसी मनोचिकित्सक का रोगी था जरा सनकी था भागता हुआ आया और उसने मनोचिकित्सक की पीठ पर जोर से धक्का मारा। मनोचिकित्सक लड़खड़ाया और जमीन पर गिर पड़ा। वह आदमी तो भाग गया। मनोचिकित्सक ने अपने को समझाला और फिर सैर करना शुरू कर दिया।

मित्र बहुत हैरान हुआ। उसने कहा : तुम कुछ नहीं करोगे? कुछ तो करना चाहिए यह आवश्यक है! यह आदमी पागल है।

मनोचिकित्सक ने कहा यह उसकी समस्या है।

वह ठीक है क्योंकि यह चोट मारना उसकी समस्या है मेरी नहीं। मैं क्यों परेशान होऊँ वह ठीक है क्योंकि यदि कोई क्रोधित है तो यह उसकी समस्या है; यदि वह अपमान कर रहा है तो यह उसकी समस्या है; यदि वह गालियाँ दे रहा है तो यह उसकी समस्या है। यदि तुम अविचलित रहे तो तुम अविचलित हो। लेकिन तुम तुरंत

परेशान हो जाते हो- उसका अर्थ है कि उस आदमी का क्रोध और गाली तो मात्र बहाना है। तुम पहले ही भीतर उबल रहे थे, तुम अपने रास्ते में आने वाले किसी बहाने की बस प्रतीक्षा ही कर रहे थे।

सोसान कहता है 'जब मन विचलित नहीं होता' – और जब तुम मूल-स्रोत में पहुंच जाते हो विचलित नहीं होते- 'ध्यान की राह पर तब संसार में कुछ भी चोट नहीं पहुंचाता; और जब और जब किसी का भी चोट पहुंचाना समाप्त हो जाता है तो मन का पुराना रंग-ढंग समाप्त हो जाता है।' और मनोवृत्ति के साथ गुणवत्ता बदल जाती है। यदि कोई तुम्हारा अपमान करता है, वह अपमान जैसा लगता है क्योंकि तुम उससे अपमानित

हो जाते हो। मार तुम अपमानित नहीं होते, तो वह अपमान जैसा लगेगा ही नहीं। अगर। तुम अपमानित ही नहीं होते, तो वह अपमान जैसा लगेगा ही कैसे?

कोई क्रोधित है- तुम्हें वह क्रोध जैसा प्रतीत होता है क्योंकि तुम विचलित हो जाते हो। यदि तुम विचलित न होओ तो वह तुम्हें क्रोध जैसा महसूस नहीं हो सकता। गुण बदल जाता है क्योंकि तुम्हारी व्याख्या बदल जाती है, क्योंकि तुम अलग हो! कोई तुमसे घृणा आज इतना ही। करता है- तुम्हें वह घृणा जैसी प्रतीत होती है, क्योंकि तुम विचलित हो गए हो। यदि तुम विचलित नहीं हुए और कोई तुमसे घृणा करता है, तो क्या तुम उसे घृणा कहोगे? तुम उसे घृणा कैसे कह सकते हो? पुराना नाम काम नहीं आएगा; पुराना मन ही नहीं है।

हो सकता है तुम करुणा भी अनुभव करो, तुम दया अनुभव करो। हो सकता है तुम महसूस करो, 'इस व्यक्ति को क्या हो गया है? वह कितना कष्ट पा रहा है, और अनावश्यक रूप से और उसका कोई लाभ नहीं है।' हो सकता है तुम उसे इससे बाहर निकलने में सहायता भी करो, क्योंकि जब कोई क्रोध करता है, वह अपने ही शरीर को विषाक्त कर रहा है, वह अपने ही प्राणों को विषाक्त कर रहा है- वह बीमार है- तुम इससे बाहर निकलने में उसकी सहायता भी करोगे। यदि किसी को कैंसर का रोग है, तुम उसके साथ झगड़ना शुरू नहीं कर देते। तुम उसकी मदद करते हो, उसकी सेवा करते हो, तुम उसे अस्पताल ले जाते हो।

एक बुद्धपुरुष के लिए- एक सोसान जैसे व्यक्ति के लिए- जब तुम क्रोधित हो, तुम्हारे मन में कैंसर है, तुम करुणा के पात्र हो, तुम्हें बहुत सहायता की आवश्यकता है। और यदि संसार थोड़ा और प्रबुद्ध हो जाता है तो जब भी कोई क्रोधित हो तो पूरा परिवार और मित्र उसकी अस्पताल में चिकित्सा कराएंगे। उसे अस्पताल में चिकित्सा की जरूरत है। उसके साथ लड़ना और उस पर क्रोध करना मूर्खता है। यह नितांत मूर्खतापूर्ण और निरर्थक है क्योंकि वह तो पहले ही रोगी है, और तुम सब उसके विरुद्ध हो- तुम कैसे उसकी मदद करोगे?

शारीरिक रोगों के लिए हमारे मन में करुणा है, मानसिक रोगों के लिए हमारे मन में कोई दया नहीं- क्योंकि यदि कोई शारीरिक रूप से बीमार है, हमें उससे ठेस नहीं पहुंचती। यदि कोई मानसिक रूप से बीमार है तो हम सोचते हैं कि वह हमारे कारण मानसिक रूप से बीमार है। क्योंकि तुम भी रोगी हो, इसलिए ऐसा सोचते हो।

एक बार जब तुम विचलित होना छोड़ देते हो, सब-कुछ बदल जाता है, क्योंकि तुम्हारी मनोवृत्ति बदल गई है, तुममें अंतर आ गया है, सारे संसार में अंतर आ गया है: ....'तो मन का पुराना रंग-ढंग समाप्त हो जाता है।'

जब कोई पक्षपातपूर्ण विचार नहीं उठते, तो पुराना मन समाप्त हो जाता है।

पक्षपात-यह अच्छा है, वह बुरा है; यह मुझे पसंद है, वह मुझे पसंद नहीं-यह पक्षपात तुम्हारे मन का आधार है। अगर पक्षपात मिट जाता है तो मन अतल खाई में गिर जाता है। तुम अपने स्रोत में पहुंच जाते हो। और उसी स्रोत में सारे अर्थ, सारे आनंद सारे आशीष हैं।

आज इतना ही।

## मूलस्रोत की और लोटना

सूत्र:

जब विचार के विषय विलीन हो जाते हैं

विचार करने वाला भी विलीन हो जाता है;

जैसे मन विलीन हो जाता है विषय भी विलीन हो जाते हैं।

वस्तुएं विषय बनती हैं क्योंकि भीतर विषयी मौजूद हैं;

वस्तुओं के कारण ही मन ऐसा है। इन दोनों की सापेक्षता को,

और मौलिक सत्य शून्यता की एकात्मकता को समझो। इस शून्यता में इन दोनों की अलग पहचान खो जाती है

और प्रत्येक अपने आप में संपूर्ण संसार को समाए रहता है अगर तुम परिष्कृत और अपरिष्कृत में भेद नहीं करते,

तो तुम पूर्वाग्रहों और धारणाओं का मोह नहीं करोगे।

संसार है तुम्हारे कारण-तुम ही इसका सृजन करते हो तुम ही इसके स्रष्टा हो। प्रत्येक प्राणी अपने चारों ओर एक संसार का निर्माण कर लेता है, वह उसके मन पर निर्भर है। मन भले ही माया हो लेकिन यह रचनात्मक है- यह स्वप्नों का सृजन करता है। और यह तुम पर निर्भर है कि तुम नरक का निर्माण करते हो या स्वर्ग का।

अगर तुम इस संसार को त्याग देते हो तो भी तुम इसे त्याग नहीं सकोगे। तुम जहां भी जाओगे तुम फिर से वैसा ही संसार निर्मित कर लोगे क्योंकि संसार निरंतर तुम्हारे भीतर से ऐसे निकल रहा है जैसे पेड़ से पत्ते निकलते हैं।

तुम सब एक समान संसार में नहीं रहते-तुम रह भी नहीं सकते क्योंकि तुम्हारे मन एक समान नहीं हैं। हो सकता है तुम्हारे बिलकुल निकट ही कोई स्वर्ग में रह रहा हो और तुम नरक में रह रहे हो-और तुम्हें लगता हो कि तुम एक जैसे संसार में रहते हो? तुम कैसे एक जैसे संसार में रह सकते हो जबकि मन भिन्न हैं?

इसलिए समझ लेने जैसी पहली बात यह है कि तुम तब तक संसार का त्याग नहीं कर सकते, जब तक यह मन नहीं मिट जाता। वे परस्पर संबंधित हैं, वे एक-दूसरे पर आश्रित हैं, वे एक दुप्लक निर्मित करते हैं। अगर मन है.. और मन हमेशा एक विशिष्ट मन होता है। जब मन एक विशिष्ट मन नहीं रहता, तब वह आत्मा हो जाता है, मन नहीं रहता वह चेतना हो गया। मन सदा एक विशिष्ट मन है। और वह अपने चारों ओर विशेष विशिष्ट सुवास लिए रहता है- वही तुम्हारा संसार है।

मन संसार का सृजन करता है और फिर यह संसार मन का सृजन करता है, और मन को वैसा ही बने रहने में सहायता देता है। यही दुष्चक्र है। लेकिन स्रोत मन में ही है संसार तो केवल सह-उत्पाद है। मन महत्वपूर्ण है संसार केवल उसकी छाया है। तुम छाया को नष्ट नहीं कर सकते, लेकिन सभी उसे नष्ट करने की चेष्टा करते हैं।

अगर यह पत्नी तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, तो तुम सोचते हो दूसरी पत्नी उचित रहेगी। तुम संसार को बदलने का प्रयास कर रहे हो और तुम वैसे ही हो। तुम अगली पत्नी को भी पहले वाली पत्नी की हू-ब-हू अनुकृति बना दोगे। तुम फिर उसे निर्मित कर लोगे क्योंकि पत्नी तो बस एक पर्दा है।

और तुम हैरान होओगे जिन लोगों ने बहुत बार विवाह किए हैं, उनका अनुभव सच में ही अदभुत है। जिस व्यक्ति ने दस बार विवाह किया है उसे इस तथ्य का बोध हुआ कि यह कैसे होता है? – इतनी बड़ी दुनिया में मुझे हमेशा वैसी ही स्त्री कैसे मिल जाती है? संयोग से भी यह बात असंभव प्रतीत होती है! वही बार बार!

समस्या स्त्री नहीं है, समस्या मन है। मन फिर उसी प्रकार की स्त्री के प्रति आकर्षित हो जाता है फिर वही संबंध बनाता है, फिर उसे वही परेशानी और वही नरक मिलते हैं।

और तुम जो भी करते हो उन सभी में वही होता है। तुम सोचते हो कि महल में तुम सुखपूर्वक रहोगे? तुम गलत सोचते हो। कौन महल में रहने वाला है? तुम ही वहां रहोगे। अगर तुम अपनी झोपड़ी में सुखी नहीं हो तो तुम अपने महल में भी सुखी नहीं रह पाओगे। महल में कौन रहेगा? महल तुम्हारे बाहर नहीं होते।

अगर तुम झोपड़ी में प्रसन्नतापूर्वक रह सकते हो तो तुम महल में भी खुश रह सकते हो क्योंकि तुम ही अपने चारों ओर संसार निर्मित करते हो। अन्यथा जैसे झोपड़ी तुम्हें कष्ट देती है, वैसे ही महल कष्ट देगा- झोपड़ी से भी अधिक- क्योंकि वह उससे बड़ा है। यह नरक हो जाएगा वैसा ही- अधिक सुसज्जित लेकिन सुसज्जित नरक स्वर्ग नहीं हो जाता। और अगर तुम्हें बलपूर्वक स्वर्ग में फेंक दिया जाए तो तुम वहां से निकलने का मार्ग ढूंढने की चेष्टा करोगे, या फिर तुम वहां अपना नरक बना लोगे।

मैंने एक आदमी के बारे में सुना है एक बहुत बड़ा व्यापारी वस्त्रों का निर्माता। उसकी मृत्यु हो गई। किसी तकनीकी भूल के कारण वह स्वर्ग पहुंच गया। वहां उसकी भेंट अपने पुराने साझीदार के साथ हो गई। उसका पुराना साझीदार उसी तरह उदास था जैसे वह धरती पर था। इसलिए उस व्यापारी ने पूछा इसका क्या अर्थ है? तुम स्वर्ग में हो और इतने अप्रसन्न हो?

साझीदार ने कहा 'यह ठीक है लेकिन व्यक्तिगत रूप से मुझे मियामी अधिक पसंद है।' और कुछ ही दिनों में दूसरा भी इसी नतीजे पर पहुंचा। वे फिर से भागीदार बन गए और वे वस्त्र बनाने के लिए व्यावसायिक कंपनी शुरू करना चाहते थे।

तुम जहां भी जाओगे, यही होने वाला है, क्योंकि तुम ही संसार हो। तुम अपने चारों ओर संसार बना लेते हो, फिर संसार उसी मन की सहायता करता है जिसने इसे बनाया था। बेटा बाप की सहायता करता है, बेटा मां की सहायता करता है, तुम्हारी छाया विषय-वस्तु की सहायता करती है-तब मन और भी बलवान हो जाता है, तब फिर तुम उसी ढर्रे पर उसी तरह का जगत निर्मित कर लेते हो। रूपांतरण कहां से आरंभ करें? कैसे बदलें?

अगर तुम देखो तो पहली नजर यही कहेगी कि दुनिया को बदल डालो क्योंकि वही चारों ओर स्पष्ट दिखाई देती है। इसे बदल दो! कई जन्मों से तुम यही तो कर रहे हो निरंतर दुनिया को बदल रहे हो इसको बदल रहे हो उसको बदल रहे हो, घर बदल रहे हो शरीर, पत्नियां, पति, मित्र बदल रहे हो, लेकिन इस तथ्य को कभी नहीं देखते कि तुम वही हो, इसलिए तुम संसार को कैसे बदल सकते हो?

इसी कारण पूरे संसार में त्याग की एक भ्रामक परंपरा ने जन्म लिया। घर से पलायन करो और किसी मठ में चले जाओ। बाजार से निकल भागो और हिमालय चले जाओ। संसार से भाग जाओ! तुम आसानी से हिमालय जा सकते हो लेकिन तुम अपने आप से कैसे भागोगे? तुम वहां भी वैसा ही संसार निर्मित कर लोगे-

ठीक वैसा! भले ही वह संसार का लघु रूप हो भले ही वह इतना विशाल न हो लेकिन तुम वही करोगे। तुम वही हो- तुम और कुछ कर भी कैसे सकते हो?

गहन अंतर्दृष्टि यह प्रकट करती है। मन को बदलो, फिर जगत बदल जाता है। फिर तुम कहीं भी होओ एक भिन्न जगत प्रकट होता है। तुम गहराई में जाते हो और तब तुम्हें समझ में आता है कि अगर तुम वास्तव में अपने चारों ओर के जगत के बिना होना चाहते हो... क्योंकि संसार भले ही कितना सुंदर हो देर-अबेर यह ऊबाने वाला हो जाएगा, तुम इससे तंग आ जाओगे। भले ही यह स्वर्ग ही क्यों न हो तुम नरक की कामना करने लगोगे; क्योंकि मन को परिवर्तन चाहिए। वह शाश्वत में नहीं जी सकता, वह अपरिवर्तनीय में नहीं जी सकता क्योंकि मन को नई जिज्ञासा, नई संवेदना, नई उत्तेजना चाहिए। मन के लिए समय को रोकना और समयातीत में बने रहना संभव नहीं है।

इसीलिए मन अभी और यहीं नहीं हो सकता, क्योंकि अभी समय का हिस्सा नहीं है। 'अभी' 'कभी' परिवर्तित नहीं होता वह शाश्वत है। तुम नहीं कह सकते कि यह अपरिवर्तनशील है, कि यह स्थायी नहीं है कि यह शाश्वत है। यह बस जैसा है वैसा है। वहां कुछ घटित नहीं होता। यह खालीपन है।

बुद्ध ने उसे शून्यता परम शून्य कहा है। वहां कुछ घटित नहीं होता, न कोई आता है न कोई जाता है। वहां कोई नहीं है क्योंकि अगर वहां कोई हो तो कुछ न कुछ घटित होगा।

मन शाश्वत 'अभी' में जीवित नहीं रह सकता। मन को परिवर्तन चाहिए। वह आशा किए चला जाता है और आशा के विरुद्ध आशा किए जाता है। सारी स्थिति निराशाजनक है लेकिन मन है कि आशा किए चला जाता है।

मैंने सुना है, मुल्ला नसरुद्दीन कई वर्षों तक बेरोजगार रहा, क्योंकि वह एक अभिनेता बनना चाहता था और उसमें योग्यता न थी। लेकिन वह नित्य धार्मिक ढंग से एजेंट के पास जाता। वह बड़ी आशा से उसका द्वार खटखटाता दफ्तर में प्रवेश करता और पूछता, 'क्या कुछ हुआ? क्या किसी ने मुझे बुक किया?'

और वह एजेंट हमेशा वही कहता मैं कुछ नहीं कर सकता, कुछ भी संभव नहीं है।

दिन बीत गए, सप्ताह बीत गए फिर वर्ष बीत गए। और द्वार पर दस्तक देना मुल्ला का नित्यकर्म बन गया। जो भी मौसम हो जैसी भी जलवायु हो, अच्छी हो या बुरी लेकिन एजेंट के लिए एक बात निश्चित थी- कि मुल्ला आएगा। और वह बड़ी आशा से पूछेगा, और वह फिर वही बात कहेगा, नसरुद्दीन, मैं कुछ नहीं कर सकता। कुछ भी संभव नहीं है।

फिर एक दिन दस्तक अलग सी थी, उदास सी। और जब मुल्ला भीतर आया एजेंट भी हैरान हुआ वह इतना उदास क्यों है?

मुल्ला ने कहा सुनो, मैं दो सप्ताह के लिए छुट्टी पर जा रहा हूं मुझे कहीं बुक मत करना।

मन इस प्रकार काम करता है-आशा करता रहता है, वर्षों नहीं, जन्म-जन्मांतरों तक। तुम उसी जिज्ञासा से उसी इच्छा से दरवाजे पर दस्तक देते रहते हो और उत्तर हमेशा नहीं होता है। नहीं के सिवाय तुमने मन के द्वारा क्या उपलब्ध किया है?

हां उस रास्ते से कभी नहीं आती आ भी नहीं सकती। मन एक व्यर्थ प्रयास है। रेगिस्तान की भांति है, वहां कुछ उत्पन्न नहीं होता। लेकिन वह आशा किए जाता है। रेगिस्तान भी सपने देखता है, सुंदर उपवनों के, बहती नदियों के झरनों के जलप्रपातों के। रेगिस्तान भी सपने देखता है... और यह मन का सपना है।

सचेत रहने की आवश्यकता है, अब और समय नष्ट करने की जरूरत नहीं- एजेंट के द्वार पर दस्तक देने की जरूरत नहीं है। तुमने मन के साथ बहुत जी लिया है। उसके द्वारा तुम्हें कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ। क्या अब सजग और सचेत होने का सही समय नहीं आ गया?

निस्संदेह, तुमने बहुत से दुख, और बहुत से नरक संताप, हताशा एकत्रित कर लिए हैं- अगर तुम उन्हें उपलब्धियां मानते हो, फिर तो यह ठीक है। और जब भी तुम मन के साथ चलते हो तो कुछ न कुछ गलत हो जाता है, क्योंकि मन गलत का कल-पुरजा है। तुम देखते हो कुछ गलत हो जाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन के बेटे को स्कूल में दाखिल कराया गया। अध्यापिका भूगोल पढ़ा रही थी। वह धरती के आकार के विषय में सभी कुछ समझा रही थी। और फिर उसने मुल्ला नसरुद्दीन के बेटे से पूछा। धरती का क्या आकार है?

वह चुप बैठा रहा, उत्तर के लिए उसे उकसाते हुए उसने पूछा : क्या वह चपटी है?

बेटे ने उत्तर दिया नहीं।

उसे थोड़ी आशा हुई और उसने कहा तब क्या वह गोलाकार है गोल है?

नसरुद्दीन के बेटे ने कहा नहीं।

वह हैरान हुई। उसने कहा केवल दो ही संभावनाएं हैं-या तो वह चपटी है या गोल है और तुम दोनों को इनकार करते हो। फिर तुम्हारा क्या विचार है?

बेटे ने कहा. मेरे पिता ने कहा है कि वह टेढ़ी-मेढ़ी है।

मन के लिए सब टेढ़ा है; इसलिए नहीं कि सभी कुछ टेढ़ा है – जिस ढंग से मन देखता है जो कुछ भी मन के माध्यम से देखा जाता है वह टेढ़ा हो जाता है। जैसे तुम एक सीधी चीज एक सीधी लकड़ी पानी में डालते हो तो तुम देखते हो कि पानी के माध्यम ने अचानक कुछ कर दिया है; वह अब सीधी नहीं रही। तुम उसे पानी से बाहर निकालते हो, तो वह फिर से सीधी हो जाती है। उसे फिर पानी में डालो और तुम जानते हो कि पानी में भी लकड़ी सीधी ही रहती है, लेकिन तुम्हारी आंखें अब भी कहती हैं कि वह सीधी नहीं है। तुम सैकड़ों बार इसे पानी से बाहर निकाल सकते हो इसे पानी में डाल सकते हो। भले ही तुम भलीभांति जानते हो कि लकड़ी सीधी ही रहती है तो भी माध्यम तुम्हें गलत सूचना देगा कि वह सीधी नहीं है।

तुमने अनेक बार यह जाना है कि मन ही दुख का कारण है लेकिन फिर भी तुम उसका शिकार हो जाते हो। मन दुख उत्पन्न करता है वह कुछ और उत्पन्न नहीं कर सकता, क्योंकि वह सच का सामना नहीं कर सकता। वह केवल सपने देख सकता है- मन की यही सामर्थ्य है। वह केवल सपने देख सकता है। और सपने कभी पूरे नहीं होते क्योंकि जब भी उन्हें वास्तविकता का सामना करना पड़ता है वे चूर-चूर हो जाते हैं।

तुम शीशे के घर में रहते हो तुम सच का सामना नहीं कर सकते। जब भी सच सामने आता है तुम्हारा घर चकनाचूर हो जाता है और कई घर जिनमें तुम रहे हो, वे चूर- चूर हो गए हैं। तुम उनके खंडहर अपने मन में लिए हो और जो उसका परिणाम था- पीड़ा उस पीड़ा ने तुम्हें रूखा और कटु बना दिया है।

किसी को भी चख कर देखो और तुम उसमें कड़ुवाहट ही पाओगे। और यही अनुभव तुम्हारे बारे में दूसरों का भी है प्रत्येक का स्वाद कड़ुवा है। जरा निकट आओ और सब कड़ुवा हो जाता है दूर रहो सब सुहावना लगता है। निकट आओ सब कड़ुवा हो जाता है- क्योंकि जब तुम निकट आते हो मन एक-दूसरे के भीतर प्रवेश करते हैं और सभी कुछ आड़ा-तिरछा हो जाता है, फिर कुछ भी सीधा नहीं रहता।

यह बोध तुम्हारे अनुभव से आना चाहिए मेरे या सोसान के सिद्धांतों से नहीं। न तो सोसान तुम्हारी सहायता कर सकता है न मैं। यह तुम्हारी अपनी अनुभव की हुई घटना होनी चाहिए। अनुभव बन जाने पर, यह सच हो जाता है- फिर कई चीजें बदलनी शुरू हो जाती हैं तब तुम मन को छोड़ देते हो।

जब मन गिर जाता है तो सारे संसार विलीन हो जाते हैं। जब मन मिट जाता है वस्तुएं विलीन हो जाती हैं, तब वे वस्तुएं नहीं रह जाती। तब तुम यह नहीं जानते कि तुम कहां पर समाप्त होते हो और वस्तुएं कहां से शुरू होती हैं। तब कोई सीमाएं नहीं रहतीं- सीमाएं मिट जाती हैं।

आरंभ में तुम्हें ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कि सब-कुछ धुंधला हो गया है, लेकिन बाद में तुम इस नई घटना में स्थिर हो जाते हो, जो कि अ-मन की है। फिर वहां सितारे हैं लेकिन वे तुम्हारे ही अंश हैं, अब वे वस्तुएं नहीं हैं। फूल हैं पेड़ हैं लेकिन वे तुम में खिलते हैं, अब वे बाहर नहीं खिलते। तब तुम पूर्णता के साथ जीते हो।

अवरोध टूट गया है- तुम्हारा मन ही अवरोध था। तब पहली बार पता चलता है कि वहां कोई संसार नहीं है, क्योंकि संसार का अर्थ है वस्तुओं का समग्र जोड़। पहली बार वहां ब्रह्मांड होता है ब्रह्मांड का अर्थ है एक। इस शब्द 'यूनि' को याद रखो इस संसार को तुम यूनिवर्स कहते हो? यह गलत है। इसे यूनिवर्स मत कहो, तुम्हारे लिए यह मल्टीवर्स- एक नहीं अनेक संसार हैं। अभी यूनिवर्स नहीं हुआ है।

लेकिन जब मन विदा हो जाता है, संसार मिट जाते हैं। फिर कोई वस्तुएं नहीं हैं। सीमाएं विलीन होकर एक-दूसरे में मिल जाती हैं। वृक्ष चट्टान बन जाता है चट्टान सूर्य हो जाती है सूर्य तारा बन जाता है तारा स्त्री बन जाता है जिसे तुम प्रेम करते हो और सभी कुछ एक-दूसरे में घुल मिल रहा है। और वहां तुम अलग नहीं हो। तुम प्रत्येक में हो, प्रत्येक हृदय की धड़कन हो। तब यह एक ब्रह्मांड है।

मन विदा हो जाता है वस्तुएं मिट जाती हैं- सपनों का स्रोत विलीन हो जाता है। तुम क्या करते रहे हो? तुम एक सुंदर सपने को पाने की निष्फल चेष्टा करते रहे हो निसंदेह बिना किसी लाभ के। लेकिन मन का पूरा प्रयास एक सुंदर सपना पाना है। ऐसा मत सोचो कि मन तुम्हें एक सुंदर सपना दे सकता है- सपना तो सपना है। भले ही वह बहुत अच्छा हो लेकिन वह संतोषजनक नहीं होगा वह तुम्हें गहन संतुष्टि नहीं दे सकता। सपना तो सपना ही है!

अगर तुम्हें प्यास लगी है तो सपने का पानी नहीं असली पानी चाहिए। अगर तुम्हें भूख लगी है तो सपने की रोटी नहीं तुम्हें असली रोटी की आवश्यकता है। कुछ क्षणों के लिए भले ही तुम स्वयं को धोखा दे लो, लेकिन कितने लंबे समय तक?

हर रात को ऐसा घटता है तुम भूखे हो, मन एक स्वप्न निर्मित करता है- तुम खा रहे हो तुम स्वादिष्ट व्यंजन खा रहे हो। कुछ मिनटों के लिए तो यह ठीक है कुछ घंटों के लिए भी ठीक है लेकिन कितने समय तक? क्या तुम सदा-सदा के लिए इस स्वप्न में रह सकते हो?

इससे नींद को सहायता मिलती है तुम्हारी नींद टूटती नहीं। अन्यथा भूख के कारण नींद टूट जाएगी तुम्हें उठना पड़ेगा अपने फ्रिज के पास जाना पड़ेगा। इससे सहायता मिलती है तुम सोए रह सकते हो महसूस करते हुए कि तुम भोजन खा रहे हो, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। लेकिन सुबह तुम्हें पता लगेगा कि तुम्हारे मन ने तुम्हें धोखा दिया। तुम्हारा सारा जीवन स्वप्नवत है और तुम सपने वाली वस्तुओं को वास्तविक वस्तुओं का स्थान दे रहे हो। इसलिए प्रति दिन सब-कुछ चकनाचूर हो जाता है प्रतिदिन वास्तविकता से तुम धक रह जाते हो क्योंकि वास्तविकता तुम्हें यहां और वहां भारी चोट मारती रहती है। तुम इससे बचाव नहीं कर सकते! सपना एक बड़ी नाजुक बात है। क्योंकि वास्तविकता चोट मारती रहती है और सब तोड़ कर भीतर प्रविष्ट होती रहती है।

और यह अच्छी बात है यह तुम्हारे हित के लिए है; कि वास्तविकता तुम्हारे स्वप्नों को तोड़ देती है उन्हें टुकड़ों में चूर-चूर कर देती है। लेकिन तुम फिर से उन टुकड़ों को एकत्रित करने लगते हो और दूसरे सपनों को पैदा करने लगते हो। छोड़ दो इसको! तुमने बहुत कर लिया है। कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। अब और नहीं!

एक बार जब तुम समझ जाते हो कि स्वप्न देखना छोड़ देना पड़ेगा, तब वस्तुओं का संसार मिट जाता है। संसार तो होगा लेकिन वस्तुओं का नहीं। तब प्रत्येक वस्तु सजीव हो जाती है सब-कुछ स्वयंभू हो जाता है।

उन धार्मिक व्यक्तियों का यही अभिप्राय है जो कहते हैं कि सब परमात्मा है। वे क्या कह रहे हैं? परमात्मा तो केवल एक प्रतीक है। वह स्वर्ग में बैठा कोई व्यक्ति नहीं है, जो नियंत्रित कर रहा है प्रबंध कर रहा है सब नियंत्रित कर रहा है और सारी तकनीक जुटा रहा है। परमात्मा तो केवल एक प्रतीक है- एक प्रतीक कि जगत में वस्तुएं, वस्तुओं जैसी नहीं हैं वे व्यक्ति हैं। भीतर गहरे में आत्मसत्ता है। सभी वस्तुएं सजीव हैं और स्पंदित हैं। और यह स्पंदन कोई खंडित प्रक्रिया नहीं है यह स्पंदन अखंड स्पंदन है।

निस्संदेह तुम हृदय की धड़कन को हृदय के पास, हृदय पर ही अनुभव करते हो। लेकिन क्या तुम सोचते हो कि वह केवल हृदय में ही होती है? तब तुम गलत हो- पूरा शरीर धड़कता है। हृदय केवल इंगित करता है कि पूरा शरीर स्पंदित हो रहा है। इसीलिए जब हृदय रुक जाता है शरीर मृत हो जाता है। ऐसा नहीं था कि वास्तव में हृदय धड़क रहा था पूरा शरीर हृदय के माध्यम से धड़क रहा था हृदय तो केवल सूचक था।

तुम स्पंदित हो रहे हो लेकिन पूर्ण तुम्हारे माध्यम से स्पंदित हो रहा है। तुम केवल एक सूचक हो एक हृदय हो। ब्रह्मांड तुम्हारे माध्यम से धड़कता है और स्पंदित होता है। तुम नहीं हो ब्रह्मांड ही है।

और ब्रह्मांड वस्तुओं का जोड़ नहीं है, वह स्वयंभू है। उसका अस्तित्व व्यक्ति की भांति है। वह सजीव चेतन है। वह यांत्रिक प्रबंध नहीं है, वह सुव्यवस्थित एकात्मकता है।

अब सोसान के इन शब्दों को समझने का प्रयत्न करें :

*जब विचार के विषय विलीन हो जाते हैं*

*विचार करने वाला भी विलीन हो जाता है;*

*जैसे मन विलीन हो जाता है विषय भी विलीन हो जाते हैं। वस्तुएं विषय बनती हैं क्योंकि भीतर विषयी है;*

*वस्तुओं के कारण ही मन ऐसा है।*

वस्तुएं तुम्हारे कारण ही तुम्हारे चारों ओर हैं। तुम उन्हें आकर्षित करते हो। अगर तुम अपने चारों ओर नरक अनुभव करते हो तो तुम्हीं ने उसे आकर्षित किया है। उस पर क्रोध मत करो और उससे लड़ना मत शुरू करो यह व्यर्थ है। तुमने आकर्षित किया था, तुमने आमंत्रित किया था- तुम ने ही ऐसा किया है! और अब तुम्हारी कामनाएं पूरी हो गई हैं जो भी तुम्हें चाहिए था वह तुम्हारे आस-पास है। और फिर तुम संघर्ष करना आरंभ कर देते हो और क्रोधित हो जाते हो। तुम सफल हो गए हो!

सदा स्मरण रखो कि जो भी तुम्हारे आस-पास घट रहा है उसकी जड़ें तुम्हारे मन में हैं। मन ही सदा कारण है। वह प्रक्षेपक है, और बाहर तो केवल परदे हैं- तुम स्वयं को प्रक्षेपित करते हो। अगर तुम्हें ऐसा लगता है कि यह कुरूप है तब मन को बदलो। अगर तुम्हें लगता है कि मन से जो भी आता है वह नारकीय है और दुखस्वप्न की तरह है, तब मन को मिटा दो। मन के साथ कुछ करो परदे के साथ नहीं उसे ही मत रंगते और बदलते रहो। मन के साथ कुछ करो।

लेकिन एक समस्या है क्योंकि तुम समझते हो कि तुम मन हो। इसलिए तुम उसे कैसे छोड़ सकते हो? इसलिए तुम्हें लगता है कि तुम सब-कुछ छोड़ सकते हो, बदल सकते हो, फिर से रंग सकते हो, फिर से सुसज्जित कर सकते हो पुनर्व्यवस्थित कर सकते हो, लेकिन तुम स्वयं को कैसे छोड़ सकते हो। यही सारे कष्ट का मूल है।

तुम मन नहीं हो, तुम मनातीत हो। तुमने तादात्म्य बना लिया है, यह सच है लेकिन तुम मन नहीं हो।

और यही ध्यान का उद्देश्य है तुम्हें छोटी-छोटी झलकें देना कि तुम मन नहीं हो। भले ही कुछ क्षणों के लिए मन रुक जाता है.. फिर भी तुम होते हो। इसके विपरीत तुम और अधिक होते हो, होने से भर शु। जब मन रुक जाता है तो ऐसा होता है जैसे कि एक नाली जिसके माध्यम से निरंतर तुम बाहर की ओर बह रहे थे बंद हो गई। अचानक ऊर्जा का अतिरेक हो जाता है। लगता है तुम और भरे हुए हो।

अगर एक क्षण के लिए भी तुम इस बात के प्रति सचेत हो जाते हो कि मन वहां नहीं है लेकिन ' मैं हूं ' तो तुम सत्य की गहराई तक पहुंच गए। तब मन को त्यागना सरल होगा। तुम मन नहीं हो अन्यथा तुम स्वयं को कैसे गिरा सकते हो? पहले तादात्म्य को तोड़ना होगा तब मन को त्याग जा सकता है।

गुरजिएफ की सारी विधि यही है कि कैसे तादात्म्य को तोड़ा जाए। अगली बार जब कोई इच्छा जगे तो उसे देखना। अपने भीतर कहना, ' ठीक है मैं देखुंगा। कि मन कहां जा रहा है।' और तुम्हें एक दूरी का अनुभव होगा तुम उसे देख रहे हो। यह देखने वाला दर्शक कौन है? और इच्छा बढ़ती है और स्वप्नों को पैदा करती है।

हो सकता है कभी तुम भूल जाओ कभी तुम इच्छा के साथ एक हो जाओ। फिर स्वयं को पूरी तरह से खींच लो इच्छा को फिर से देखो? इच्छा अपने आप बढ़ रही है। यह ऐसा है जैसे कि एक बादल भीतर प्रविष्ट हो गया हो, एक विचार तुम्हारे अस्तित्व के आकाश में छा गया हो। बस उसे देखो, गौर से देखो। और स्मरण रखो कि यदि तुम एक पल के अंश के लिए भी उस तादात्म्य को तोड़ सके- इच्छा वहां है और तुम यहां हो और बीच में दूरी है- अचानक वहां प्रकाश होता है। तुम प्रकाशित हो गए हो।

अब तुम जानते हो कि मन अपने आप काम करता है वह एक यंत्र है। तुम उसे छोड़ सकते हो तुम उसका उपयोग करो या न करो यह तुम पर निर्भर है तुम उसके स्वामी हो। अब तुम गुलाम को यंत्र को यथास्थान रख सकते हो। अब वह स्वामी नहीं रहा। तब उसे छोड़ना संभव है। जब तुम उससे अलग हो केवल तभी उसको छोड़ना संभव है।

ध्यान साक्षीभाव मौन बैठे रहना और मन को देखना बहुत सहायक सिद्ध होंगे। बिना जबरदस्ती किए सिर्फ बैठे रहना और देखते रहना है। बिना कुछ ज्यादा किए केवल इस प्रकार देखते रहना जैसे कोई आकाश में उड़ते पक्षियों को देखता है। सिर्फ धरती पर लेटे रहना और देखते रहना कुछ भी नहीं करना तटस्थ। वे कहां जा रहे हैं इससे तुम्हारा कुछ लेना-देना नहीं है वे अपने आप जा रहे हैं।

स्मरण रहे, विचार बिलकुल पक्षियों की भांति हैं वे अपने आप चल रहे हैं। और कभी-कभी ऐसा होता है कि जो लोग तुम्हारे आस-पास हैं, उनके विचार तुम्हारे आकाश में प्रविष्ट हो जाते हैं और तुम्हारे विचार उनके आकाश में प्रवेश कर जाते हैं। इसीलिए कभी-कभी तुम अनुभव करते हो कि किसी व्यक्ति की संगति में तुम अचानक उदास हो जाते हो, किसी दूसरे व्यक्ति की संगति में तुम्हारे भीतर अचानक ऊर्जा की और हर्षोल्लास की लहर उमड़ आती है। किसी की ओर मात्र देखने से निकट होने से मनोदशा बदल जाती है।

ऐसा जगहों के साथ भी घटता है। तुम किसी घर में जाते हो और अचानक तुम्हें उदासी पकड़ जाती है। तुम किसी दूसरे घर में जाते हो और तुम अचानक एक हलकापन महसूस करते हो, मानो तुम्हें पंख लग गए हों तुम उड़ सकते हो, तुम निर्भर हो। तुम भीड़ में जाते हो और स्वयं को खो देते हो कुछ बदल जाता है। तुम किसी दूसरी भीड़ में जाते हो फिर कुछ बदल जाता है।

सत्संग का यही आधार है? सदगुरु के साथ होना, जो निर्विचार है। केवल उसकी संगति में कभी उसका निर्विचार उसका अ-मन तुम्हारा द्वारा खटखटा देगा कुछ ही क्षणों में.. यह चालाकी से नहीं किया जा सकता है तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी तुम्हें केवल प्रार्थना करनी होगी प्रतीक्षा करनी होगी और बस देखना होगा। इसे जबरदस्ती लाया नहीं जा सकता क्योंकि यह कोई विचार नहीं है। विचार एक चीज है वह तुम पर फेंकी जा सकती है। निर्विचार कोई वस्तु नहीं है इसे फेंका नहीं जा सकता।

विचार की अपनी स्वयं की गति और आगे बढ़ने की प्रवृत्ति है। जब भी तुम किसी ऐसे व्यक्ति के समीप होते हो जो बहुत से विचारों से भरा है वह तुम्हें भी अपने विचारों से भर देगा। केवल उसके निकट होने पर ही वह अपना मन तुम में उंडेलता रहेगा- चाहे वह बोले या न बोले वह जरूरी नहीं है। विचार उसके सिर से चिनगारियों की भांति लगातार चारों ओर गिर रहे हैं- तुम उन्हें ग्रहण कर लेते हो।

और कभी-कभी तुम सजग भी हो जाते हो कि यह तुम्हारा विचार नहीं है। लेकिन जब वह तुम्हारे पास आता है तो तुम उससे भर जाते हो बल्कि तादात्म्य भी बना लेते हो। यह तुम्हारा क्रोध नहीं है कोई और व्यक्ति क्रोधित था और तुम्हें अपने भीतर कुछ महसूस होने लगा। कोई व्यक्ति घृणा से भरा था और उस घृणा ने तुम्हें प्रभावित कर दिया। सभी कुछ संक्रामक होता है, और इस संसार में मन सबसे बड़ी संक्रामक बीमारी है। कोई रोग इससे मुकाबला नहीं कर सकता, सब तरफ यह लोगों को संक्रमित करता रहता है।

अगर तुम देख सको तो तुम किसी व्यक्ति के सिर से गिर रही चिनगारियों को देख सकते हो। वे भिन्न रंगों की होती हैं। इसीलिए रहस्यदर्शी आभामंडल देख पाए, क्योंकि अगर कोई उदास व्यक्ति आता है, तो वह उदास आभामंडल लेकर आता है। अगर तुम्हारी दृष्टि स्पष्ट है तो तुम उसे देख सकते हो। जब कोई प्रसन्न व्यक्ति तुम्हारे पास आता है तो तुम देख सकते हो। यद्यपि तुमने उसे आते नहीं देखा हो- वह पीछे की ओर से आ रहा है तुमने उसे देखा तक नहीं- लेकिन अचानक तुम महसूस करते हो कि तुम्हारे आस-पास कुछ प्रसन्नता घटित हो रही है।

विचार तुम्हारे अपने नहीं हैं, वे तुम नहीं हो। जब तुम मरते हो तुम्हारे विचार चारों ओर बिखर जाते हैं। ऐसा हुआ है और अगली बार जब तुम किसी मर रहे आदमी के पास जाओ उसे गौर से देखना वह अपने में एक अनुभव है। जब कोई आदमी मर रहा हो तो सिर्फ उसके पास बैठ जाना और देखना कि तुम्हारे मन पर क्या होता है। तुम चकित होओगे जो विचार पहले कभी वहां न थे जिन विचारों के तुम आदी नहीं थे जिन विचारों को तुमने कभी जाना नहीं था अचानक तुम्हारे मन में उठते हैं-विस्फोटित होते हैं! आदमी मर रहा है और वह अपने विचारों को चारों ओर ऐसे फेंक रहा है जैसे एक मरता हुआ वृक्ष अपने बीजों को फेंकता है। वह संतप्त है, मरने से पहले वृक्ष को अपने बीज फेंक देने चाहिए ताकि दूसरे पेड़ उग सकें।

अगर तुम सजग व्यक्ति नहीं हो तो मरणासन्न व्यक्ति के पास कभी मत जाना, क्योंकि तब मृतक तुम्हें प्रभावित कर देगा। मूलभूत रूप से जब तक तुम सजग नहीं हो जाते तुम्हें उस व्यक्ति के पास कभी नहीं जाना चाहिए जहां जाकर तुम्हें उदासी महसूस हो। अगर तुम सजग हो तब कोई चिंता की बात नहीं है। फिर विषाद आता है और गुजर जाता है तुम उसके साथ तादात्म्य स्थापित नहीं करते। क्या तुमने कभी ऐसा अनुभव किया है?.. तुम चर्च में जाते हो लोग प्रार्थना कर रहे हैं तुरंत तुम्हें एक अलग सी अनुभूति होती है। इतनी प्रार्थना, भले ही वह सच्ची न हो, केवल रविवारीय प्रार्थना हो फिर भी वे कर तो रहे हैं कुछ क्षणों के लिए ही सही पर खिड़कियां तो खुलती हैं- वे क्षण अलग से होते हैं। एक आग तुम्हें पकड़ जाती है तुम अपने भीतर अचानक एक परिवर्तन अनुभव करते हो।

सजग रहो! और देखो कि किस तरह विचार तुम्हारे मन में प्रवेश करते हैं; कैसे उनसे तुम तादात्म्य स्थापित कर लेते हो और उनके साथ एक हो जाते हो। और वे इतनी तेजी से चल रहे हैं उनकी गति बहुत तेज है

क्योंकि विचार से बढ़ कर और किसी की गति इतनी तेज नहीं है। विचार से बढ़ कर तेज गतिमान और कोई चीज बनाना संभव नहीं है। इसे कहीं भी पहुंचने में कुछ समय नहीं लगता। यह एक अनंतता से दूसरी पर छलांग लगा लेता है- उसके लिए स्थान का कोई अस्तित्व नहीं है।

विचार वहां हैं तीव्र गति से चल रहे हैं। तीव्र गति के कारण तुम दो विचारों को पृथक रूप से नहीं देख सकते। बैठ जाओ अपनी आंखें बंद कर लो शरीर की सभी प्रक्रियाओं की गति धीमी कर लो। श्वास गति धीमी हो जाती है, हृदय की धड़कन मंद हो जाती है रक्तचाप मंद हो जाता है। तुम सब-कुछ धीमा कर लो तुम विश्रान्त हो जाओ क्योंकि अगर सब धीमा हो जाता है तो विचार को भी धीमा हो जाना पड़ता है क्योंकि यह सुसंगठित संपूर्णता है। जब सब मंद हो जाता है विचार को भी मंद होना पड़ता है।

इसी कारण गहरी नींद में विचार थम जाता है क्योंकि सब इतना मंद है और विचार इतना द्रुतगामी है कि उसमें रुकावट आ जाती है- प्रक्रिया जारी नहीं रह सकती। आदमी इतना मंद है विचार इतना तीव्रगामी है, वे साथ-साथ नहीं चल सकते। विचार विलीन हो जाता है। गहरी नींद में कुछ घंटों के लिए रात को अधिक से अधिक दो घंटों के लिए विचार रुक जाते हैं क्योंकि तुम पूरी तरह से विश्राम में होते हो।

शिथिल हो जाओ, और सिर्फ देखो जैसे ही विचार प्रक्रिया धीमी होती है तुम्हें अंतराल दिखाई देने लगेंगे। दो विचारों के बीच में एक अंतराल है- अंतराल में चेतना है। दो बादलों के बीच एक अंतराल है- उस अंतराल में नीला आकाश है।

विचार-प्रक्रिया को धीमा करो और अंतरालों को देखो बादलों की अपेक्षा अंतरालों पर अधिक ध्यान दो। ध्यान का केंद्र बदलो देखने की दिशा बदलो दूसरी दिशा से देखो। आकृति की ओर मत देखो पृष्ठभूमि को देखो।

अगर मैं दीवाल के आकार का बड़ा ब्लैक बोर्ड यहां रखूं और उस पर सफेद खड़िया से एक बिंदु अंकित कर दूं और तुम से पूछूं कि तुम्हें क्या दिखाई देता है तो निन्यानबे प्रतिशत यही संभावना है कि तुम्हें ब्लैक बोर्ड नहीं दिखाई देगा तुम्हें सफेद बिंदु ही दिखाई देगा- क्योंकि हम आकृति को ही देखते हैं पृष्ठभूमि को नहीं।

इतना बड़ा ब्लैक बोर्ड लेकिन अगर मैं तुमसे पूछूं, 'तुम्हें वहां क्या दिखाई देता है?' तुम कहोगे, 'मुझे एक सफेद धब्बा दिखाई देता है।' इतना बड़ा ब्लैक बोर्ड दिखाई नहीं पड़ता, केवल एक छोटा सा सफेद धब्बा जो लगभग अदृश्य है, दिखाई देता है। क्यों? क्योंकि यह मन का निर्धारित ढांचा है आकृति की ओर दृष्टि का जाना पृष्ठभूमि की ओर नहीं; बादल पर दृष्टि का जाना आकाश पर नहीं र विचार पर दृष्टि का जाना, चेतना पर नहीं।

इस दृष्टिकोण को बदलना आवश्यक है। पृष्ठभूमि पर अधिक ध्यान दो और आकृति पर कम। तुम वास्तविकता के अधिक निकट होओगे। ध्यान में ऐसा लगातार किया जाना चाहिए। पुरानी आदत के अनुसार मन आकृति की ओर ही देखेगा। तुम बस वहां से फिर दृष्टि को हटा लो... पृष्ठभूमि की ओर देखो।

तुम यहां हो मैं यहां हूं। हम एक-दूसरे की ओर दो ढंगों से देख सकते हैं। मैं पृष्ठभूमि को देख सकता हूं पृष्ठभूमि में पेड़ हैं पौधे हैं हरियाली है आकाश है- विस्तृत जगत तुम्हारी पृष्ठभूमि है। या मैं तुम्हें देख सकता हूं तुम आकृति हो। लेकिन मन सदा आकृति को देखता है।

इसीलिए ऐसा होता है यदि तुम सोसान जीसस या बुद्ध जैसे व्यक्ति के पास जाते हो तो तुम्हें लगता है कि वे तुम्हारी ओर नहीं देख रहे हैं। तुम केवल आकृति हो और वे पृष्ठभूमि को देख रहे हैं। उनकी देखने की दिशा भिन्न है। तुम्हें ऐसा महसूस हो सकता है कि उनकी आंखें भाव-शून्य हैं क्योंकि वे तुम्हारी ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। तुम सिर्फ एक बादल हो।

बुद्ध जैसे लोग जब वे देखते हैं तुम वहां होते हो लेकिन पृष्ठभूमि पर केवल एक छोटे से अंश के रूप में। और पृष्ठभूमि विशाल है और तुम बस एक बिंदु हो। लेकिन तुम चाहोगे कि कोई तुम्हें देखे एक छोटे से बिंदु को जैसे कि तुम ब्रह्मांड हो जैसे कि तुम्हें छोड़ कर और किसी का अस्तित्व ही नहीं है।

तुम्हें बुद्धपुरुष का प्रेम ठंडा प्रतीत होगा। तुम्हें उष्मा से भरपूर प्रेम चाहिए वे आंखें चाहिए जो तुम्हें ही देखें और सब भूल जाएं। किसी बुद्ध के लिए ऐसा संभव नहीं है। तुम्हारा अपना स्थान है लेकिन फिर भी तुम एक छोटा सा बिंदु हो। कितने भी सुंदर होओ, तुम उस असीम पृष्ठभूमि का एक अंश हो- तुम पर पूरा ध्यान नहीं दिया जा सकता।

इसीलिए किसी बुद्धपुरुष के निकट तुम्हारे अहंकार को बहुत चोट पहुंचती है, क्योंकि अहंकार समग्र अवधान चाहता है, 'मुझे देखो मैं ही जगत का केंद्र हूं।' लेकिन तुम जगत के केंद्र नहीं हो। वास्तव में जगत का कोई केंद्र नहीं है। यदि वह सीमित वर्तुल है तब तो केंद्र संभव है- और वह तो असीम वर्तुल है।

केंद्र की बात सोचना असंगत है। जगत में कोई केंद्र नहीं है। संसार बिना किसी केंद्र के अस्तित्व में है। और यह बात सुंदर है। इसीलिए हर कोई सोच सकता है 'मैं केंद्र हूं।' अगर कोई केंद्र है तो यह बात असंभव हो जाती है।

इसीलिए मुसलमान और ईसाई और यहूदी हिंदुओं के इस दावे को नहीं मानते 'मैं ब्रह्म हूं अहं ब्रह्मास्मि।' वे कहते हैं 'यह परंपरा के विरुद्ध है। तुम क्या कह रहे हो? केवल ईश्वर ही केंद्र है; और कोई केंद्र नहीं है।' लेकिन हिंदू बड़ी सहजता से दावा करते हैं कि अहं ब्रह्मास्मि क्योंकि उनका कहना है कि कोई केंद्र नहीं है, या फिर सभी केंद्र हैं।

लेकिन जब तुम चाहते हो कि सारा ध्यान तुम पर दिया जाए तो यह मन है मन की पुरानी आदत है पृष्ठभूमि को न देखना, केवल आकृति को देखना।

ध्यान में तुम्हें आकृति से पृष्ठभूमि पर सितारों से आकाश पर अवधान को परिवर्तित करना होगा। जितनी अधिक यह बदलाहट हो सकेगी उतना ही तुम अनुभव करोगे कि तुम मन नहीं हो जितना अधिक ऐसा अनुभव कर सकोगे उतनी आसानी से इसे छोड़ सकोगे।

वह ऐसा ही है जैसे अपने वस्त्र को छोड़ना हो। तुमने उसे इतना तंग बना लिया है कि त्वचा ही प्रतीत होने लगे हैं- वे हैं नहीं। यह वस्त्र की भांति है, तुम उसे आसानी से छोड़ सकते हो। लेकिन यह समझना पड़ेगा कि व्यक्ति पृष्ठभूमि है आकृति नहीं। और जब यह मन मिट जाता है, सोसान कहता है, तब वस्तुगत जगत विलीन हो जाता है।

उसका क्या अभिप्राय है? क्या उसका अभिप्राय यह है कि यदि तुम गहरे ध्यान में हो यदि तुम अ-मन की मंजिल पर पहुंच गए हो तब क्या ये पेड़ विलीन हो जाएंगे, मिट जाएंगे? तब यह घर यहां नहीं रहेगा? तब तुम यहां नहीं बैठे होओगे? यदि मैं उपलब्ध हो गया हूं तो क्या यह कुर्सी जिस पर मैं बैठा हूं तिरोहित हो जाएगी?

नहीं वस्तुएं वस्तुओं के रूप में विलीन हो जाएंगी; यह कुर्सी नहीं, वह वृक्ष नहीं-वे ऐसे ही रहेंगे अब वे सीमित नहीं रहे। अब उनकी कोई सीमाएं नहीं रहीं। तब यह कुर्सी सूर्य से और आकाश से मिल रही है तब आकृति और पृष्ठभूमि दोनों एक हो गए हैं। कोई आकृति पृष्ठभूमि से पृथक नहीं है उनकी पहचाने खो गई हैं। और वे अब वस्तुएं नहीं हैं क्योंकि अब तुम वहां विषयी की भांति नहीं हो।

कृष्णमूर्ति एक बहुत सुंदर बात हमेशा कहते रहते हैं। कि गहरे ध्यान में दृष्टा, दृश्य हो जाता है। यह सत्य है लेकिन तुम्हें लगेगा कि यह असंगत है। अगर तुम एक फूल को देख रहे हो तो क्या कृष्णमूर्ति का यह अभिप्राय

यह है कि तुम फूल बन जाते हो? फिर तुम घर वापस कैसे लौटोगे? और हो सकता है कि तुम्हें कोई तोड़ ले और तुम मुश्किल में पड़ जाओगे।

‘द्रष्टा दृश्य हो जाता है’ – क्या इसका अभिप्राय है कि तुम फूल बन जाओगे? नहीं लेकिन फिर भी एक अर्थ में ‘हा’ तुम इस अर्थ में फूल नहीं हो जाते कि तुम्हें तोड़ा जा सकता है और कोई तुम्हें घर ले जाए और अब तुम मनुष्य नहीं रहे। नहीं, इस प्रकार से नहीं। लेकिन जब मन नहीं होता तब तुम्हें फूल से अलग करने वाली सीमा नहीं होती, फूल के लिए कोई सीमा नहीं होती जो फूल को तुमसे अलग कर दे। तुम दोनों एक सत्तावान सरोवर बन गए हो दोनों एक-दूसरे में विलीन होकर मिल रहे हो। तुम तुम बने रहते हो, फूल फूल बना रहता है कोई भूल से तुम्हें तोड़ नहीं सकता, लेकिन एक विलय हो रहा है।

यह तुम्हारे जीवन में भी घटता है कभी-कभी केवल कुछ क्षणों के लिए जब तुम किसी व्यक्ति को प्रेम करते हो। वह भी बहुत कम क्योंकि मनुष्य का मन उसे कभी नहीं छोड़ता प्रेम में भी। वह अपनी ही स्वयं की मूर्खता का सृजन करता रहता है, अपने स्वयं के संसार की रचना करता रहता है, और प्रेमी को भी कभी इतनी निकटता की अनुमति नहीं दी जाती कि वह पृष्ठभूमि तक पहुंच जाए। आकृति यानी अहंकार सदा बीच में खड़ा रहता है। लेकिन कभी-कभार ऐसा घटित हो जाता है।

निस्संदेह वह तुम्हारे बावजूद घटता होगा। वह इतना प्राकृतिक है कि यद्यपि तुमने सारे इंतजाम कर लिए हों फिर भी कभी-कभी वास्तविकता तुमसे टकरा जाती है। तुम्हारे सारे इंतजामों के बावजूद, सभी स्वप्नों के बावजूद कभी-कभी वह तुम्हारे भीतर प्रवेश कर जाती है कभी-कभी तुम सावधान नहीं होते। कभी-कभी तुम भूल जाते हो या किसी बात में इतने व्यस्त होते हो कि एक खिड़की खुलती है और खिड़की की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता और वास्तविकता प्रवेश कर जाती है।

प्रेम की किन्हीं घड़ियों में ऐसा घट जाता है, जब द्रष्टा दृश्य बन जाता है। यह एक सुंदर ध्यान है। अगर तुम किसी व्यक्ति को प्रेम करते हो उसके साथ बैठ जाओ और एक-दूसरे की आंखों में देखो- कुछ सोचना नहीं यह मत सोचना कि वह कौन है, विचार-प्रक्रिया को मत चलने देना केवल एक-दूसरे की आंखों में देखते रहना है।

हो सकता है तुम्हें कुछ झलकें मिल जाएं जब द्रष्टा दृश्य हो जाएगा, जब तुम खो जाओगे और तुम्हें यह भी मालूम न होगा कि तुम कौन हो- तुम प्रेमी हो गए हो या प्रेमी तुम हो गया है। आंखें एक दूसरे में प्रवेश करने का सुंदर द्वार हैं।

और मैं यह क्यों कहता हूँ कि प्रेम में ऐसा संभव है? क्योंकि केवल प्रेम में तुम अपना बचाव नहीं करते। तुम विश्रान्ति में होते हो, तुम्हें दूसरे का भय नहीं होता, तुम ग्रहणशील हो सकते हो तुम ऐसा करने में समर्थ हो अन्यथा तुम सदा सतर्क रहते हो क्योंकि तुम्हें पता नहीं कि दूसरा क्या कर देगा तुम्हें पता नहीं कि कहीं दूसरा तुम्हें चोट पहुंचा दे। और अगर तुमने बचाव नहीं किया तो चोट काफी गहरी हो सकती है।

प्रेम में तुम एक-दूसरे की आंखों में झांक सकते हो। जब आकृति और पृष्ठभूमि एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं तब कुछ झलकें मिल सकती हैं। तुम्हारी आधार शिला हिल जाती है। अचानक तुम्हें झलक मिलेगी तुम नहीं हो फिर भी तुम हो। कहीं भीतर गहरे में मिलन हो रहा है।

एक सच्चे ध्यानी का संसार के साथ कुछ ऐसा ही घटित होता है- ऐसा नहीं है कि वह एक वृक्ष हो जाता है लेकिन फिर भी वह एक वृक्ष बन जाता है। जब वह वृक्ष के साथ होता है सीमाएं मिट जाती हैं। जब वह इस सीमा- धरती के साथ लयबद्ध हो जाता है तब वह सीमाओं के बाहर हो जाता है।

सोसान का अभिप्राय यही है। जब मन मिट जाता है) वस्तुएं विलीन हो जाती हैं। जब वस्तुएं विलीन हो जाती हैं तुम मिट जाते हो अहंकार मिट जाता है। वे एक-दूसरे से जुड़े हैं।

इन दोनों की सापेक्षता को,  
और मौलिक सत्य शून्यता की एकात्मकता को समझो।

‘इन दोनों की सापेक्षता को और मौलिक सत्य शून्यता की एकात्मकता को समझो।’ तुम अपने आस-पास की वस्तुओं के कारण अस्तित्व में हो। तुम्हारी सीमा तुम्हारे चारों ओर की दूसरी वस्तुओं की सीमाओं के कारण है। जब उनकी सीमाएं खो जाती हैं तुम्हारी सीमा भी खो जाती है- तुम एक-दूसरे से संबंधित हो तुम एक साथ हो।

तुम्हारा मन और बाहर की तुम्हारी वस्तुएं दोनों जुड़े हैं उनमें एक सेतु है। अगर एक किनारा मिट जाता है तो सेतु गिर जाता है। और सेतु के साथ दूसरा किनारा भी मिट जाता है क्योंकि एक किनारे का अस्तित्व दूसरे किनारे के बिना नहीं हो सकता। सापेक्षता का यही अर्थ है।

और तब एक एकता है- शून्यता की एकता। तुम शून्य हो और फूल भी शून्य है, क्योंकि फूल की कोई सीमा नहीं फिर केंद्र भी कैसे हो सकता है? बुद्ध की गहनतम उपलब्धियों में से एक यह है केवल बौद्धों ने ही यह दावा बड़े सुंदर ढंग से किया है। वे कहते हैं, आत्मा नहीं है स्व नहीं है।

और इसे बहुत अधिक गलत समझा गया, क्योंकि हिंदुओं का कहना है कि उनका सारा धर्म आत्मा पर स्व पर, परमात्मा पर आधारित है और बुद्ध कहते हैं ‘जब सीमा ही नहीं है तो आत्मा का अस्तित्व कैसे हो सकता है?’ जब सीमा ही नहीं है और मन बिलकुल शांत हो गया है, ‘मैं’ कैसे बच सकता है? क्योंकि ‘मैं’ ही शोर है। जब पूर्ण है तो तुम कैसे कह सकते हो ‘मैं हूं।’ जब आकृति और पृष्ठभूमि एक हो गए हैं तुम कैसे कह सकते हो ‘मैं हूं।’

यही बुद्ध की शून्यता है : ‘अनता।’ यह सुंदर शब्द है- अनंता अहंता का न होना। तुम नहीं रहे और फिर भी तुम हो। वास्तव में पहली बार तुम हो, समष्टि के रूप में लेकिन एक व्यक्ति के रूप में परिभाषित, सीमांकित बंधे हुए नहीं। तुम पूर्ण की भांति हो लेकिन तुम एक व्यक्ति के रूप में अंकित एक परिभाषित पृथकता नहीं हो। तुम अब एक द्वीप नहीं हो तुम शून्यता का एक अपार विस्तार हो।

और ऐसा ही एक फूल के साथ है और ऐसा ही वृक्ष के साथ है और ऐसा ही पशु- पक्षी के साथ है; और ऐसा ही चंद्रान तारों और सूर्य के साथ है। जब तुम्हारा स्व मिट जाता है और स्व सब जगह से विलीन हो जाता है क्योंकि वह तुम्हारा स्व ही प्रतिबिंबित हो रहा था वह तुम्हारा स्व ही जगत् द्वारा प्रतिध्वनित हो रहा था वह तुम्हारा ही पागलपन प्रतिबिंबित हो रहा था। अब वह वहां नहीं है।

सोसान कह रहा है कि जब शून्यता है तब एकात्मकता है। अगर तुम हो तो एकात्मकता कैसे हो सकती है? तुम्हारी पृथक सत्ता ही अनेकता निर्मित करती है।

मुसलमान कहते हैं कि वे हिंदुओं से प्रेम करते हैं वे भाई- भाई हैं ईसाई कहते हैं कि वे यहूदियों से प्रेम करते हैं वे भाई- भाई हैं। प्रत्येक व्यक्ति भाई है लेकिन तुम भाई कैसे हो सकते हो जब कि तुम ईसाई हो? तुम भाई कैसे हो सकते हो जब कि तुम हिंदू हो? तुम्हारा अलग होना, तुम्हारी सीमा अपने में शत्रुता लिए हुए है। अधिक से अधिक तुम एक-दूसरे को सहन कर सकते हो लेकिन तुम दूसरे के साथ एक नहीं हो सकते। और केवल ‘भाई’ कहने से काम नहीं चलता क्योंकि जितनी भयानक लड़ाई भाइयों में हो सकती है उतनी और किसी में नहीं हो सकती।

अपने को हिंदू कहने का अर्थ है कि मैं अपने आप को समग्र से पृथक कर रहा हूँ। यह कहना कि मैं शक्तिशाली हूँ मैं स्वयं को संसार से पृथक कर रहा हूँ। यह कह कर कि मैं असाधारण हूँ मैं स्वयं को संसार से पृथक कर रहा हूँ। यही तो च्यांगत्सु कहता है बस साधारण हो जाओ। उसका अर्थ है कि किसी भी भांति पृथक मत होओ स्वयं के विषय में एकदम स्पष्ट निश्चय मत करो। तरल सीमाओं जो सदा द्रवित होकर मिलन के लिए तत्पर हैं- के साथ जीओ।

*इन दोनों की सापेक्षता को,*

और मौलिक सत्य शून्यता की एकात्मकता को समझो। इस शून्यता में इन दोनों की अलग पहचान खो जाती है;

और प्रत्येक अपने आप में संपूर्ण जगत को समाए रहता है।

उनमें भेद नहीं किया जा सकता उन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं माना जा सकता- – वे 'पृथक' हैं लेकिन यह पृथकता बिलकुल भिन्न है। तुम भेद कर सकते हो परंतु यह भेद अहंकार का नहीं है।

वह सागर में लहर की भांति है तुम भेद कर सकते हो लहर लहर है सागर नहीं है- लेकिन फिर भी वह सागर ही है। लहर का अस्तित्व सागर के बिना नहीं हो सकता। सागर उसमें लहरा रहा है सागर उसमें धड़क रहा है। वह आकार के रूप में भिन्न है और फिर भी अस्तित्व के रूप में भिन्न नहीं है। तुम अलग बने रहते हो और फिर भी अलग नहीं हो। यह मूलभूत विरोधाभास है जिसे आदमी तब अनुभव करता है जब उसे 'अनता' का अनुभव होता है।

....और प्रत्येक अपने आप में संपूर्ण संसार को समाए रहता है।

पृथक नहीं तुम कुछ गंवाते नहीं तुम्हें पूर्ण उपलब्ध हो जाता है। और तुम्हें हमेशा खो जाने का भय है। तुम हमेशा सोचते हो 'अगर मैं स्वयं को खो दूंगा तब मैं नहीं बचूंगा। मुझे क्या मिलने वाला है?' तुम खो देते हो और फिर तुम पूर्ण को उपलब्ध हो जाते हो। और तुम अपने दुख अपनी चिंता अपनी पीड़ा के सिवाय और कुछ नहीं खोते हो। तुम्हारे पास खोने के लिए है ही क्या? तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है- केवल तुम्हारे दुख तुम्हारे बंधन हैं।

....और प्रत्येक अपने आप में संपूर्ण संसार को समाए रहता है।

जब तुम खो जाते हो तुम संपूर्ण संसार हो जाते हो सब तुम्हारा है। तुम अपने ही कारण भिखारी हो तुम सम्राट हो सकते हो। मन भिक्षापात्र है।

मैंने एक सूफी कहानी सुनी है। यह सूफियों की सबसे पुरानी शिक्षाओं में से एक है। एक भिखारी एक सम्राट के महल में आया। सम्राट अपने बगीचे में था। इसलिए उसने भिखारी की आवाज सुन ली। द्वारपाल उसे कुछ देने ही वाला था कि भिखारी ने कहा मेरी एक शर्त है। मैं हमेशा मालिक के हाथ से लेता हूँ नौकरों के हाथ से नहीं।

सम्राट ने सुना। वह सैर कर रहा था इसलिए वह भिखारी को देखने बाहर आया क्योंकि भिखारियों की कोई शर्तें नहीं होतीं। अगर तुम भिखारी हो तो तुम्हारी शर्तें कैसे हो सकती हैं? लगता है कोई अनूठा ही भिखारी है। इसलिए वह देखने के लिए आया- और वह भिखारी सच में ही अनूठा था। सम्राट ने पहले कभी ऐसा सम्राट जैसा व्यक्ति नहीं देखा था; वह उसके सामने कुछ नहीं था। उस व्यक्ति के चारों ओर एक आभामंडल था, एक शालीनता थी। उसके वस्त्र चिथड़े-चिथड़े हो गए थे वह लगभग नग्न था, लेकिन भिक्षापात्र बहुत, बहुत बहुमूल्य था।

सम्राट ने कहा. शर्त रखने का क्या कारण है?

भिखारी ने कहा क्योंकि नौकर स्वयं भिखारी है और मैं किसी से अभद्र व्यवहार नहीं कर सकता। केवल मालिक ही दे सकता है। नौकर कैसे देने में समर्थ है? इसलिए अगर आप देने को तैयार हैं तो आप दें और मैं स्वीकार कर लूंगा। लेकिन इसके लिए भी मेरी एक शर्त है और वह है मेरा भिक्षापात्र पूरा भरना चाहिए।

एक छोटा सा भिक्षापात्र! सम्राट हंसने लगा उसने कहा तुम पागल मालूम होते हो। क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारा भिक्षापात्र भर नहीं सकता? और तब उसने अपने मंत्रियों से बहुमूल्य हीरे-जवाहरात लाकर उस भिक्षापात्र को भर देने का आदेश दिया।

लेकिन वे मुश्किल में पड़ गए, क्योंकि जितना वे भिक्षापात्र को भरते रत्न उसमें गिरते आवाज तक न होती, वे गायब हो जाते। और भिक्षापात्र खाली का खाली रहा।

तब सम्राट भी चकराया! उसका सारा अहंकार दांव पर लगा था। वह एक महान सम्राट जिसने सारी पृथ्वी पर राज्य किया था एक भिक्षापात्र नहीं भर पा रहा था! उसने आदेश दिया सब-कुछ ले आओ लेकिन यह भिक्षापात्र भर जाना चाहिए।

उसके सारे खजाने... कुछ ही दिनों में उसके सारे खजाने खाली हो गए, लेकिन भिक्षापात्र खाली का खाली ही रहा। अब शेष कुछ भी नहीं बचा था। सम्राट भिखारी हो गया था, सब-कुछ खो गया था। सम्राट भिखारी के चरणों पर गिर पड़ा और बोला अब मैं भी एक भिखारी हूं और मैं एक ही चीज मांगता हूं। मुझे इस भिक्षापात्र का रहस्य बताओ यह जादुई प्रतीत होता है!

भिखारी ने कहा कुछ भी नहीं यह आदमी के मन से बना है, इसमें कुछ जादू नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य का मन बस एक भिक्षापात्र है तुम उसे भरते रहते हो वह खाली का खाली रहता है। तुम सारा संसार एक नहीं कई संसार डाल देते हो और वे बिना कोई आवाज किए विलीन हो जाते हैं। तुम देते रहते हो और वह मांगता रहता है।

प्रेम दो और भिक्षापात्र वहां है तुम्हारा प्रेम विलीन हो गया। तुम अपना सारा जीवन दे दो और भिक्षापात्र वहां शिकायत भरी नजरों से तुम्हें देख रहा है, 'तुमने कुछ भी नहीं दिया मैं अब भी खाली हूं।' और तुम एक ही प्रमाण दे सकते हो अगर भिक्षापात्र भरा है- और वह कभी नहीं भरता। निस्संदेह तर्क स्पष्ट है तुमने दिया ही नहीं।

तुमने बहुत चीजें उपलब्ध की हैं- वे सब भिक्षापात्र में खो गई हैं। मन स्वयं की हत्या की प्रक्रिया है। जब तक मन नहीं मिट जाता, तुम भिखारी ही बने रहोगे। जो कुछ भी प्राप्त करोगे वह व्यर्थ होगा तुम खाली ही बने रहोगे।

और अगर तुम मन को मिटा दो तब तुम पहली बार रिक्तता के द्वारा भर जाते हो।

अब तुम नहीं बचे लेकिन तुम पूर्ण हो गए हो। अगर तुम हो तो तुम एक भिखारी ही रहोगे। और अगर तुम नहीं हो तुम सम्राट हो जाते हो।

इसी कारण भारत में हमने भिक्षुओं को ' स्वामी ' कहा है। स्वामी का अर्थ है एक मालिक एक सम्राट। संन्यासियों के लिए इससे अच्छा और कोई शब्द नहीं है। जब मैं सोच रहा था कि नये संन्यासियों को मैं क्या नाम दूँ मैं इससे अच्छा शब्द सोच नहीं पाया। स्वामी सबसे अच्छा प्रतीत होता है। इसका अर्थ है कि जिसने स्वयं को बिलकुल छोड़ दिया है, कि वह अब बचा ही नहीं; वह समस्त जगत हो गया है सबका स्वामी हो गया है। नहीं तो सम्राट भी भिखारी ही रह जाते हैं, वे कामना करते रहते हैं मांगते रहते हैं और दुखी होते रहते हैं।

अगर तुम परिष्कृत और अपरिष्कृत में भेद नहीं करते, तो तुम पूर्वाग्रहों और धारणाओं का मोह नहीं करोगे।

अगर तुम घटिया और बढ़िया, अच्छा और बुरा सुंदर और कुरूप यह और वह- अगर तुम इनमें भेदभाव नहीं करते, तुम पूर्ण को जैसा है वैसा ही स्वीकार कर लेते हो। तुम अपना मन बीच में नहीं लाते तुम निर्णय करने वाले नहीं बनते, तुम मात्र यही कहते हो ' यह ऐसा ही है।'

कांटा है तुम कहते हो ' यह ऐसा ही है गुलाब है तुम कहते हो ' यह ऐसा ही है एक संत है तुम कहते हो ' यह ऐसा ही है एक पापी है तुम कहते हो ' यह ऐसा ही है।' और पूर्ण ही जानता है और कोई नहीं जानता कि पापी की सत्ता क्यों है? जरूर कुछ कारण होगा, लेकिन वह रहस्य पूर्ण अस्तित्व के लिए है तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है।

पूर्ण ही संतों और पापियों को, गुलाबों और कांटों को जन्म देता है- केवल पूर्ण ही जानता है कि क्यों। तुम सिर्फ पूर्ण में समा जाओ और कोई भेद न करो। तुम्हें भी ज्ञात हो जाएगा कि क्यों लेकिन यह तभी होगा जब तुम पूर्ण हो जाओगे।

जब तुम स्वयं रहस्य हो जाते हो, रहस्य खुल जाता है। तुम-तुम बने रह कर उसे सुलझा नहीं सकते। अगर तुम-तुम बने रहे तो एक महान दार्शनिक बन जाओगे। तुम्हारे पास बहुत से उत्तर होंगे, लेकिन उत्तर नहीं होगा; तुम्हारे पास बहुत से सिद्धांत होंगे, लेकिन सत्य नहीं होगा। लेकिन अगर तुम स्वयं रहस्य बन गए तो तुम्हें ज्ञात हो जाएगा। लेकिन वह ज्ञान इतना सूक्ष्म है कि शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। वह ज्ञान इतना विरोधाभासी है कि सभी भाषाओं को चुनौती देता है। वह ज्ञान इतना परस्पर विरोधी है क्योंकि विपरीत सीमाएं खो देते हैं, वे एक हो जाते हैं- कोई शब्द उसे व्यक्त नहीं कर सकता।

आकृति का अर्थ है शब्द, और पृष्ठभूमि का अर्थ है मौन। उस ज्ञान में आकृति और पृष्ठभूमि एक हो गए हैं, मौन और शब्द एक हो गए हैं। तुम उसे कैसे कह सकते हो? लेकिन फिर भी उसे कहना तो पड़ेगा ही, क्योंकि उसके लिए बहुत लोग प्यासे हैं। हो सकता है इसके विषय में सुनने मात्र से किसी का हृदय उस यात्रा पर चल दे। इसीलिए सोसान वे बातें कह रहा है।

सोसान जानता है कि उन्हें कहा नहीं जा सकता, क्योंकि जब भी तुम उसे कहते हो, भेद करना ही पड़ता है। जब भी तुम्हें कुछ कहना हो तो तुम्हें शब्द चुनना ही पड़ता है, तुम इसे उससे अधिक पसंद करते हो और मन प्रवेश कर जाता है।

लेकिन सोसान से बेहतर और किसी ने प्रयत्न नहीं किया। वह अतुलनीय है। तुम ऐसा व्यक्ति नहीं खोज सकते जिसने मौन को शब्दों में इतने सुंदर ढंग से उड़ेल दिया हो। बुद्ध को भी ईर्ष्या होगी। यह सोसान वास्तव में सदगुरु है- मौन का सदगुरु और शब्दों का सदगुरु। उसने इस जगत को कुछ दिया है जो इस जगत का नहीं है। उसने शब्दों से अपने अनुभव के गहन मौन में प्रवेश किया है।

उसके शब्दों को सुनो- केवल सुनो ही नहीं, आत्मसात करो। उन्हें अपने हृदय में घुल जाने दो। उन्हें स्मरण मत करना। उन्हें अपने रक्त की धारा में बहने दो और अपना रक्त मांस-मज्जा हड्डी बन जाने दो। आत्मसात कर लो, उन्हें खाओ, पचाओ और भूल जाओ। और उनमें रूपांतरण की अदभुत शक्ति है।

आज इतना ही।

## लक्ष्य के लिए प्रयास न करे

सूत्र:

महापथ में जीना न तो सरल है न कठिन,  
लेकिन वे जिनके विचार सीमित हैं वे भयभीत और संकल्पहीन हैं।  
जितनी तीव्रता से वे शीघ्रता करते हैं उतना ही वे धीमे जाते हैं  
और पकड़ सीमित नहीं हो सकती,  
संबोधि के विचार से आसक्त हो जाना भी भटक जाना है।  
बस वस्तुओं को अपने ढंग से होने दो और फिर न आना होगा, न जाना।

वस्तुओं के स्वभाव (तुम्हारे अपने स्वभाव) के अनुसार चलो;  
और तुम मुक्त भाव से और अविचलित रह कर चलोगे।  
जब विचार बंधन में होता है सत्य छिपा रहता है  
क्योंकि सभी कुछ धुंधला और अस्पष्ट होता है  
और निर्णय करने का बोझिल अभ्यास कष्ट और थकान लाता है। भेदभावों और विभाजनों से क्या लाभ हो सकता है?

अगर तुम उस एक 'पथ' पर चलना चाहते हो,  
तो इंद्रियों और विचारों के जगत से भी घृणा मत करो।  
वास्तव में उन्हें पूर्ण रूप से स्वीकार करना वास्तविक संबोधि के समान है।  
बुद्धिमान व्यक्ति किसी लक्ष्य के लिए प्रयास नहीं करता,  
परंतु मूर्ख व्यक्ति स्वयं को ही बेड़ियां डाल लेता है।  
धर्म सत्य, नियम एक है अनेक नहीं।  
भेदभाव अज्ञानी व्यक्ति की पकड़ लेने की आवश्यकताओं के  
कारण उत्पन्न होता है।  
भेदभाव करने वाले मन के द्वारा 'मन' की  
खोज सभी गलतियों में सबसे बड़ी है।

इस सूत्र में अनेक सुंदर बातें हैं। और सत्य के खोजी के लिए सुंदर ही नहीं बल्कि मूलभूत और अनिवार्य भी- क्योंकि सोसान कवि नहीं है वह द्रष्टा है। जो भी वह कहता है वह अनंत का काव्य है लेकिन बात वह नहीं है। जब भी कोई बुद्धपुरुष बोलता है, वह जो भी बोलता है वह काव्य, एक सुंदर काव्य है जो कुछ भी उससे प्रस्फुटित होता है उसमें उसकी ही प्रतिध्वनि होती है उसे साथ लेकर आता है उसकी ही सुगंध होती है। लेकिन

वह इतनी अर्थपूर्ण बात नहीं है। उसके काव्य में मत खो जाना, क्योंकि काव्य साकार का है और सत्य निराकार है। सोसान जिस ढंग से बातें कहता है वह सुंदर और काव्यमय है लेकिन याद रहे, उसके काव्य में ही मत खो जाना। उपनिषदों के गीता के जीसस के वचनों के काव्य में मत खो जाना! रूप अपने में सुंदर है, लेकिन वह असली बात नहीं है। पात्र में निहित वास्तविकता को समझो पात्र को नहीं।

खोजी के लिए पात्र में रखी हुई वस्तु महत्वपूर्ण है, और वास्तविकता को समझ लेना वही हो जाना है- क्योंकि कोई सत्य समझ के पार नहीं है। वास्तव में समझ ही सत्य है। यह कहना कि तुम समझ के द्वारा सत्य तक पहुंच जाओगे गलत है क्योंकि समझ से और पृथक कोई सत्य नहीं है।

समझ ही सत्य है। तुमने समझा तुम सत्य हो गए। सत्य कहीं और तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं कर रहा है वह तुम्हारी समझ के द्वारा प्रकट होगा- तुम्हारे भीतर प्रकट होगा।

सोसान के ये निर्देश खोजी के लिए हैं और एक-एक शब्द बहुत ही अर्थपूर्ण है:

महापथ में जीना न तो सरल है न कठिन,

जब भी कोई मंजिल होती है, वह या तो सरल होती है या कठिन। यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम कहां हो तुम्हारे और मंजिल के बीच कितनी दूरी है, क्या वहां राजमार्ग है या तुम्हें पर्वतीय मार्ग पर चलना होगा। क्या सड़क का मानचित्र है, सड़क पर निशान बने हुए हैं या फिर तुम्हें अपना मार्ग स्वयं खोजना होगा।

अगर लक्ष्य है तो वह सरल या कठिन होगा। वह निर्भर करता है कि क्या तुमने पहले भी इस मार्ग से यात्रा की है। क्या रास्ता जाना-पहचाना है? -फिर वह सरल होगा। अगर रास्ता अनजाना है तो वह कठिन होगा। क्या तुम अच्छे यात्री हो? – तुम्हारी शारीरिक अवस्था, तुम्हारी मानसिक स्थिति, या तो उसे आसान बना देगी या मुश्किल।

लेकिन सत्य लक्ष्य बिलकुल नहीं है इसलिए वह कैसे सरल या कठिन हो सकता है?

ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि सत्य बहुत, बहुत कठिन है। वे जो कह रहे हैं वह बिलकुल ही अज्ञानता है। लेकिन एक विपरीत मत है जो कहता है, 'सत्य सहज है- कोई समस्या नहीं है। सिर्फ उसे समझो और वह सहज है।' वे भी कुछ ऐसा कह रहे हैं जो ठीक नहीं है। दोनों ही बातें मन के द्वारा समझी जा सकती हैं। कठिन? – मन तरकीबें, रास्ते और साधन ढूंढ सकता है और उसे सरल बनाया जा सकता है।

तीन हजार वर्ष पहले यात्रा करना कठिन था। अब वह बहुत ही सुगम हो गया है तुम सिर्फ हवाई जहाज में प्रवेश करो और कुछ नहीं करना बस आराम करना है। और जितने समय में तुमने चाय का प्याला खत्म किया और उतने समय में तुम पहुंच गए। मंजिल कठिन है उसे सरल बनाया जा सकता है।

महर्षि महेश योगी पश्चिमी देशों में यही सिखाए चले जाते हैं कि उन्होंने जेट-स्पीड वाली एक विधि खोज ली है। अगर मंजिल मुश्किल है। निस्संदेह अगर तुम बैलगाड़ी से यात्रा करोगे तो वह बहुत ही कठिन होगी और अगर तुम जेट से यात्रा करोगे तो सुगम हो जाएगी।

लेकिन क्या मंजिल है? यही मूल प्रश्न है। अगर कहीं वह मंजिल है, कहीं दूर तब उसे सुगम बनाने के साधनों की संभावनाएं हैं- वाहन हैं। लेकिन क्या वह मंजिल है? सोसान कहता है वह लक्ष्य नहीं है इसलिए वह कैसे कठिन या सरल हो सकता है? और अगर वह लक्ष्य नहीं है तो उसका मार्ग कैसे हो सकता है? और अगर वह लक्ष्य नहीं है तो उस तक पहुंचने के उपाय और विधियां कैसे हो सकती हैं? असंभव! वह कहता है वह न तो सरल है न कठिन क्योंकि वह लक्ष्य बिलकुल नहीं है।

महापथ में जीना न तो सरल है न कठिन,

फिर वह महापथ क्या है? महापथ तुम्हारा स्वभाव है- तुम पहले से ही वही हो! इसीलिए वह लक्ष्य नहीं है। वह कुछ ऐसा नहीं है जो भविष्य में होगा। उसके घटित होने के लिए समय की जरूरत नहीं है। तुम सदा से उसमें ही हो पहले से ऐसा ही है। तुम लक्ष्य पर हो तुम लक्ष्य में स्थित हो। तुम उसके बाहर जीवित नहीं रह सकते उससे बाहर जाने की कोई संभावना नहीं है। तुम चाहे कितना भटको तुम इसके बाहर नहीं जा सकते। तुम कहीं भी जाओ अपना स्वभाव अपने भीतर लिए चलोगे। वह तुम्हारा अंतर्निहित स्वभाव है। वह अपरिहार्य है तुम उसे कहीं रख कर भूल नहीं सकते। तुम पहले से वहीं हो क्योंकि वह यहीं है। तुम्हें भविष्य में देखने की जरूरत नहीं है तुम सिर्फ यहां होओ और तुम उसे पा लोगे।

खोजो और तुम चूक जाओगे। खोजो मत सिर्फ होओ और वह वहां है। तुम हंसोगे क्योंकि वह सदा वहां था- केवल खोजने के कारण तुम उसे चूक रहे थे। केवल इस कारण कि तुम इतनी जल्दी में थे कि तुम भीतर देख नहीं सके।

महापथ में जीना न तो सरल है न कठिन,

लेकिन वे जिनके विचार सीमित हैं वे भयभीत और संकल्पहीन है जितनी तीव्रता से वे शीघ्रता करते हैं उतना ही वे धीमे जाते हैं

और पकड़ सीमित नहीं हो सकती;

संबोधि के विचार से आसक्त हो जाना भी भटक जाना है।

बस वस्तुओं को अपने ढंग से होने दो और फिर न आना होगा,

तुम ही मार्ग हो और तुम ही मंजिल हो और तुम्हारे और मंजिल के बीच कोई दूरी नहीं है। तुम्हीं खोजी हो और तुम्हीं खोजे जाने वाले हो, खोजी और खोजे जाने वाले में कोई दूरी नहीं है; तुम्हीं उपासक हो और तुम्हीं उपास्य हो। तुम्हीं शिष्य हो और तुम्हीं गुरु हो। तुम्हीं साधन हो और तुम्हीं साध्य हो यही महापथ है।

वह सदा तुम्हें उपलब्ध था। इस क्षण भी तुम उसी में हो। जागे हुए तुम उसमें हो। सो जाओ तुम उसी में रहते हो, क्योंकि तुम नींद में हो इसलिए उसे देख नहीं सकते, और फिर तुम खोजना शुरू कर देते हो।

तुम उस शराबी की भांति हो जो अपना ही घर खोज रहा है किसी ऐसी चीज के बारे में पूछ रहे हो जो तुम्हारी आंखों के सामने है। लेकिन आंखें साफ नहीं हैं- वे मतों भेदभावों से भरी हैं वे शब्दों और सिद्धांतों से भरी हैं। इसीलिए तुम्हारी दृष्टि धुंधली है वैसे जिसको तुम खोज रहे हो वह तुम्हारी आंखों के ठीक सामने है।

हिंदुओं के पास नाक के अग्रभाग को देखने की एक विधि है। बस शांत बैठ जाओ और नाक के अग्रभाग को देखो और कुछ मत करो। लोग हंसेंगे कि क्या मूर्खता है! इससे क्या होगा? लेकिन मतलब से चूक गए। हिंदू कहते हैं कि वह ठीक तुम्हारे सामने है नाक के अग्रभाग की भांति। शांत बैठ जाओ और केवल नाक के अग्रभाग को देखो और किसी प्रकार के सोच-विचार में मत उलझों। और अचानक वह वहां है- नाक के अग्रभाग की भांति सदा तुम्हारे सामने।

और नाक के अग्रभाग का यही सौंदर्य है तुम कहीं भी जाओ वह हमेशा तुम्हारे सामने है। तुम ठीक चलो वह वहां है तुम गलत चलो वह वहां है। पापी हो जाओ वह सामने है, महात्मा हो जाओ वह सामने है। तुम जो कुछ भी करो- उलटे खड़े हो जाओ शीर्षासन में वह तुम्हारे सामने है। सो जाओ वह वहां है जाग जाओ वह वहां है। नाक के अग्रभाग को देखने का यही अर्थ है क्योंकि तुम जो कुछ भी करो तुम उसे सामने के सिवाय और कहीं नहीं रख सकते। जिस क्षण तुम चलते हो यह भी चल चुका होता है। केवल नाक के अग्रभाग को देखते रहने से ही तुम समझ जाओगे कि सत्य सदा तुम्हारे सामने है। तुम जहां भी गति करते हो यह तुम्हारे साथ गति करता है; जहां भी तुम जाते हो यह तुम्हारे साथ ही जाता है। तुम उसे खो नहीं सकते इसलिए खोजने का प्रश्न ही नहीं उठता। समझने के लिए तुमने उसे खोया नहीं है... लेकिन देखो आमतौर से तुम नाक के अग्रभाग को देखते नहीं हो, क्योंकि तुम दूसरी वस्तुओं को देख रहे हो तुम्हारी रुचि दूसरी चीजों में है। तुम नाक के अग्रभाग को कभी नहीं देखते।

हिंदुओं का एक और सुंदर सिद्धांत है। उनका कहना है कि जब कोई व्यक्ति अपनी नाक के अग्रभाग को देखने लगता है तो उसकी मृत्यु निकट है छह महीने के भीतर उसकी मृत्यु हो जाएगी। जब व्यक्ति देखने का प्रयत्न किए बिना ही इसको देखने लगता है- कुछ भी करते हुए वह उस नाक के अग्रभाग को ही देखता रहता है- छह महीने के भीतर उसकी मृत्यु हो जाएगी।

इसमें कोई बात है, क्योंकि तुम तभी नासाग्र भाग के प्रति सजग होते हो जब तुम्हारी सारी इच्छाएं, सभी वस्तुओं की कामनाएं व्यर्थ हो जाती हैं। इच्छाओं में गति करने के लिए तुम्हारे पास कोई ऊर्जा नहीं है मौत समीप आ रही है। तुम इतने ऊजाविहीन हो कि तुम्हारी सारी जीवंतता खतम हो चुकी है। तुम अपनी आंखें भी नहीं झपका सकते तुम वासनाओं और मंजिलों के पीछे नहीं भाग सकते, जीवन समाप्त हो रहा है। अंतिम घड़ी में नाक के अग्रभाग को देखने के सिवाय और कुछ शेष नहीं बचता। एक अर्थ यह है।

दूसरा अर्थ है, जो उससे भी अधिक महत्व का है, और वह है : जब कोई व्यक्ति अपने नाक के अग्रभाग को देखने में समर्थ होता है, तब वह इस जगत के प्रति मर जाएगा। एक नया जन्म होगा, क्योंकि उसने अपने ही सामने स्पष्ट रूप से देख लिया है। यह जगत मिट जाता है, यह जीवन विलीन हो जाता है। जहां तक उसके पुराने होने का संबंध था वह मर गया है। अब वह नया है, यह पुनर्जन्म है। अब आवागमन समाप्त हो गया है।

वह उपलब्ध हो गया है-क्या केवल नाक के अग्रभाग को देखने से? हां क्योंकि सारा सवाल ही यही है; कैसे इधर-उधर नहीं सामने देखना है। क्योंकि सत्य तुम्हारे सामने है वह अन्यथा नहीं हो सकता। वह न तो सरल है, न ही कठिन है।

यह प्रयत्न का प्रश्न नहीं है इसलिए यह कैसे सरल या कठिन हो सकता है? यह जागृति का प्रश्न है प्रयत्न का नहीं। यह कुछ करने का प्रश्न नहीं है। करने से तुम उसे खो दोगे क्योंकि तुम करने में तल्लीन हो जाओगे अगर तुम कुछ करते हो तो वह सरल या कठिन हो जाता है।

यह न करने का प्रश्न है। निष्क्रियता कैसे सरल या कठिन हो सकती है? अक्रिया कर्म के जगत से सर्वथा पार की बात है। वह सिर्फ होना है! होना कैसे कठिन या सरल हो सकता है? सिर्फ होना! वह ही महापथ है। सारा प्रयत्न जानने के लिए है और नासाग्र भाग को देखने के लिए है स्वच्छ आंखों से केवल अपने सामने देखने के लिए है।

... लेकिन वे जिनके विचार सीमित हैं वे भयभीत और संकल्पहीन हैं जितनी तीव्रता से वे शीघ्रता करते हैं उतना ही वे धीमे जाते हैं

यह विरोधाभासी प्रतीत होता है लेकिन ऐसा सबके साथ घटता है। यही तुम्हारे साथ हुआ है। जितना तुम तेजी से जाते हो उतने ही तुम धीमे हो जाते हो। क्यों? क्योंकि तुम बिना सामने देखे आगे बढ़ते हो और लक्ष्य वहीं है! जितनी तेजी से तुम आगे बढ़ते हो, उतनी ही तेजी से तुम भटक जाते हो।

अगर कोई तुम्हारी गति को देखे तो तुम तेज हो लेकिन अगर कोई इस दृष्टि से देखे कि तुम क्या चूक रहे हो तो तुम धीमे हो। जितना तुम तेजी से जाते हो उतने ही तुम धीमे हो। कहीं मत जाओ! बस यहीं रहो- और तुम तुरंत पहुंच जाते हो। किसी स्थान की यात्रा नहीं करनी किसी समय के पार नहीं जाना है। बस यहीं होना है अभी और यहीं को मंत्र बना लो तुम्हें और कुछ नहीं चाहिए। अभी और यहीं होओ। कहीं मत जाओ, धीमे या तेज।

ऐसा हुआ, एक छोटा सा बच्चा स्कूल बहुत देर से पहुंचा। वह हमेशा ही देर से आता था। अध्यापिका बहुत नाराज थी और उसने कहा फिर? तुम फिर देर से आए हो और कल से भी देर से आए हो! और मैं तुम्हें बार-बार कहती रही हूं। तुम सुनते ही नहीं! लड़के ने कहा लेकिन बड़ी मुश्किल हो गई थी। आप देख रही हैं बाहर वर्षा हो रही है, और कीचड़ के कारण सड़क पर बहुत फिसलन हो गई है। मैं एक कदम स्कूल की ओर चलता था, दो कदम पीछे सरकता था। सड़क इतनी फिसलन भरी है कि जितना मैं तेजी से चलने का प्रयत्न करता उतना ही मैं धीरे पहुंच रहा था। वास्तव में मैं उलटी दिशा में जा रहा था एक कदम आगे चलता और दो कदम पीछे सरका जा रहा था।

अध्यापिका ने कहा तुम बहुत होशियार हो लेकिन तुम पहुंचे कैसे?

लड़के ने कहा तब मैंने घर की तरफ चलना शुरू किया, इस तरह मैं पहुंचा हूं। तुम भी फिसलन भरी सड़क पर हो जहां तुम जितनी तीव्रता से चलते हो उतनी ही गति धीमी हो जाती है- क्योंकि तुम दूर जा रहे हो। अगर तुम्हारी दृष्टि लक्ष्य पर है तो तुम भटक रहे हो। तुम्हारी तीव्र गति खतरनाक है, वह लक्ष्य के विपरीत है, क्योंकि अ-गति की आवश्यकता है। तुम्हें केवल रुक जाना है और देखना है।

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं, हम बुद्धत्व को कब प्राप्त करेंगे? कब? अगर मैं कहता हूं अभी तो वे मुझ पर विश्वास नहीं कर पाते। और मैं तुमसे कहता हूं अभी। तुम इस अभी को चूक जाते हो, फिर दूसरा अभी- लेकिन हमेशा अभी। दूसरा और कोई समय नहीं है।

यह जब भी घटित होता है, यह अभी में घटित होगा, और जब भी यह घटित होता है यह यहीं में घटित होगा। अभी और यहीं दो शब्द नहीं हैं जैसे कि समय और स्थान दो शब्द नहीं हैं। आइंस्टीन ने एक नये शब्द का 'स्पेसियो-टाइम' का उपयोग किया। उन्होंने दो शब्दों को मिला कर एक शब्द बना दिया, स्पेसियो-टाइम। क्योंकि वैज्ञानिक रूप से उन्होंने पाया कि समय और कुछ नहीं बल्कि स्थान का चौथा आयाम है इसलिए दो शब्दों का प्रयोग करने की कोई जरूरत नहीं है।

और उसी प्रकार 'हियर' और 'नाउ' भी दो शब्द नहीं हैं। आइंस्टीन से हजारों वर्ष पूर्व सोसान जैसे रहस्यदर्शियों को इस बात का बोध था कि यह नाउ-हियर अभी-यहीं है। इन शब्दों को इकट्ठा कर देना चाहिए वे एक हैं, क्योंकि अभी यहीं का चौथा आयाम है- नाउ-हियर एक शब्द है।

जब भी यह घटित होता है यह अभी-यहीं में घटित होगा। यह बस अभी घटित हो सकता है प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं! लेकिन तुम डांवाडोल और भयभीत हो- वही समस्या खड़ी कर देता है। भयभीत होने का क्या अर्थ है? जब तुम भयभीत होते हो तब आंतरिक स्थिति क्या होती है? तुम उसे चाहते भी हो और नहीं भी

चाहते। यह एक भयभीत मन की स्थिति है वह जाना भी चाहता है और जाना नहीं भी चाहता, क्योंकि वह भयभीत है। वह चाहता भी है लेकिन वह निश्चित नहीं है डांवाडोल है।

जीसस ने हमेशा 'भय' शब्द का प्रयोग किया कई बार विश्वास के विपरीत भय शब्द का प्रयोग किया। जीसस ने विश्वास के विरुद्ध अविश्वास अश्रद्धा शब्द का प्रयोग नहीं किया उन्होंने विश्वास के विरुद्ध हमेशा 'भय' शब्द का ही प्रयोग किया। उन्होंने कहा जो भयभीत नहीं हैं वे विश्वास करने वाले हो जाते हैं क्योंकि विश्वास संकल्प है। विश्वास एक निश्चय है एक पूर्ण निश्चय। तुम समग्र रूप से उसमें जाते हो यह श्रद्धा है, बिना कुछ पीछे छोड़े बिना किसी शर्त के। उसे वापस नहीं लिया जा सकता। अगर तुम पूरी तरह आगे जा चुके हो तो कौन उसे वापस लेगा?

विश्वास आत्यंतिक है। अगर तुम उसमें चले जाते हो तो चले जाते हो। तुम उसमें से बाहर नहीं निकल सकते। कौन उसमें से वापस लौटेगा? कोई पीछे नहीं खड़ा है, जो तुम्हें पीछे खींच सके। यह गहरी खाई में छलांग है! और जीसस का भय को विश्वास का विपरीतार्थक शब्द बनाना बिलकुल उचित है। पहले किसी ने ऐसा नहीं किया। लेकिन वे बिलकुल ठीक हैं क्योंकि बाहर की भाषा से उनका कोई संबंध नहीं है उनका संबंध भीतर की भाषा से है।

यह भय है जो तुम्हें विश्वास नहीं करने देता। यह अविश्वास नहीं है याद रहे यह अविश्वास नहीं जो तुम्हारे विश्वास में बाधा बनता है यह भय है।

निस्संदेह तुम अपने अविश्वास अपने भय को तर्कसंगत बना लेते हो। तुम उसे शब्दों में छिपा लेते हो और कहते हो 'मैं शक्की हूं मुझे संदेह है। जब तक मुझे पूरा विश्वास न हो जाए मैं कैसे आगे बढ़ सकता हूं?' लेकिन अपने भीतर गहरे में झांको और तुम वहां भय को पाओगे।

भय का अर्थ है तुम्हारा आधा भाग जाना नाहता है और आधा जाना नहीं चाहता। आधा अज्ञात से आकर्षित है उसने पुकार को सुन लिया है और आधा अज्ञात से भयभीत है ज्ञात से चिपका है। क्योंकि ज्ञात तो ज्ञात है उसमें भय की कोई बात नहीं है।

तुम कुछ करते हो वह कुछ ज्ञात हो जाता है। अब अगर तुम कुछ नया काम करना चाहते हो, जीवन के नए ढांचे को, नई आदतों को, नई शैली को अपनाना चाहते हो तुम्हारा आधा भाग ज्ञात को पकड़े रखता है कहता है 'आगे मत बढ़ो कौन जानता है कि वह इससे भी बुरा हो। और एक बार तुम आगे बढ़ गए तो पीछे लौट नहीं सकते।' इसलिए आधा कहता है 'चिपके रहो।'

यह आधा अतीत से संबंधित है क्योंकि अतीत ज्ञात है स्मृति है। और दूसरा आधा हमेशा उत्सुक है। उस अज्ञात पथ पर चलने की पुकार को अनुभव करता है जिसका कोई नामोनिशान भी नहीं है क्योंकि कुछ नया आह्लादपूर्ण होगा।

यही भय है। तुम खंडित हो। भय तुम्हें खंडित कर देता है और अगर तुम खंडित हो तो अनिश्चय वहां होगा। तुम एक कदम अज्ञात की ओर उठाते हो, दूसरा कदम अतीत में अतीत की कब्र में ही रह जाता है। और फिर तुम अटक जाते हो क्योंकि कोई एक कदम एक टांग एक पैर के साथ आगे नहीं बढ़ सकता- तुम्हें भी दोनों पंखों से काम लेना होगा दोनों अंगों को इनमें लगाना होगा। केवल तभी तुम चल सकते हो।

अनिश्चय में और तुम अटक गए- और हर कोई अटक गया है। यही समस्या है यही चिंता है। अटक गए हो और तुम आगे नहीं बढ़ सकते और जीवन बहता रहता है, और तुम चट्टान की भांति हो गए हो अवरुद्ध अतीत के काराग्रह के कैदी।

.. लेकिन वे जिनके विचार सीमित हैं वे भयभीत और संकल्पहीन हैं जितनी तीव्रता से वे शीघ्रता करते हैं उतना ही वे धीमे जाते हैं

उनका पूरा जीवन परस्पर विरोधी हो जाता है। वे एक हाथ से कुछ करते हैं और शीघ्र ही दूसरे हाथ से मिटा देते हैं- अनिश्चय में। एक तरफ तुम किसी को प्रेम करते हो और दूसरी तरफ घृणा करते हो। एक तरफ प्रेम का सृजन करते हो और दूसरी तरफ घृणा के बीज बीते हो। और कभी नहीं देखते कि तुम कर क्या रहे हो।

अभी कल रात ही मैं किसी से बुखारा में एक गुप्त मठ के विषय में बात कर रहा था। गुरुजिएफ उस मठ में कम से कम छह वर्ष रहा। उसने सूफियों की कई विधियां सीखीं। उनमें से एक विधि का प्रयोग अब भी उस मठ में किया जाता है।

विधि बहुत सुंदर है। जब भी कोई व्यक्ति मठ में प्रवेश करता है, शिष्य बन जाता है उसे एक तख्ती दी जाती है एक साइनबोर्ड। उसके एक तरफ लिखा होता है ' मैं नकारात्मक हूं कृपया मुझे गंभीरतापूर्वक न लें- यदि मैं कुछ गलत कहता हूं तो मैं वास्तव में आपसे नहीं कह रहा हूं। क्योंकि मैं नकारात्मक हूं और मैं घृणा, क्रोध और अवसाद से भरा हूं। और अगर मैं कुछ करता हूं तो वह मेरी नकारात्मकता के कारण है, आपकी किसी गलती के कारण नहीं है।'

तख्ती के दूसरी ओर लिखा होता है ' मैं सकारात्मक हूं मैं प्रेमपूर्ण हूं मैं प्रेममय हूं? कृपया मुझे गंभीरतापूर्वक न लें- अगर मैं कहूं कि आप सुंदर हैं मैं आपके संबंध में कुछ नहीं कह रहा हूं- मैं बहुत आनंदित हूं।'

और जब भी व्यक्ति अनुभव करता है कि मनोदशा बदल रही है वह तख्ती का रुख बदल देता है, वह जिस अवस्था में होता है वह ठीक हिस्से को ऊपर की ओर कर देता है। और बहुत सी बातें इससे घट जाती हैं क्योंकि कोई भी उसे गंभीरतापूर्वक नहीं लेता। लोग उस पर हंसते हैं कि वह नकारात्मक मनोदशा में है।

अगर किसी को मितली हो रही है और वह उलटी कर देता है ठीक! वह तुम पर नहीं निकाल रहा वह तुम पर कुछ नहीं फेंक रहा है। वह कुछ ऐसा फेंक रहा है जो उसे तंग कर रहा है। और सिर्फ तब जब यह विभाजन समाप्त हो जाता है शिष्य गुरु के पास आता है और कहता है ' मैं दोनों नहीं हूं। अब मैं न तो नकारात्मक हूं न ही सकारात्मक हूं सब शांत हो गया है और मेरे दोनों पंख एक हो गए हैं अब मैं एक हूं ' सिर्फ तभी वह तख्ती ले ली जाती है।

जिस क्षण वह तख्ती ले ली जाती है वही क्षण संबोधि का होता है। तब तुम पूर्ण हो। अन्यथा तुम सदा स्वयं का विरोध करते रहते हो और तब दुख और पीड़ा अनुभव करते हो और सोचते हो 'मुझे क्या हो रहा है?' तुम्हें कुछ नहीं हो रहा है! एक हाथ से तुम कुछ अच्छा करते हो और दूसरे हाथ से तुरंत कुछ बुरा कर देते हो, दूसरे पक्ष को नष्ट करने के लिए जो आगे जा चुका है क्योंकि तुम अनिश्चयी हो तुम खंडित हो।

एक भाग पुरानी आदतों से चिपका रहता है और दूसरा भाग अज्ञात में जाना चाहता है। एक भाग संसार को पकड़े रहना चाहता है और दूसरा पक्षी हो जाना चाहता है और देवत्व के अज्ञात आकाश में या अस्तित्व की परम दिव्यता में उड़ जाना चाहता है। तुम फिर अटक गए।

इसे देखने का प्रयत्न करो। यह कठिन है क्योंकि तुमने उसे देखने की कभी चेष्टा नहीं की है वैसे वह बिलकुल कठिन नहीं है। वह न तो कठिन है न सरल है। सिर्फ यह देखो कि तुम अपने साथ और दूसरों के साथ क्या कर रहे हो।

तुम जो भी आधे मन से करते हो वह तुम्हारे लिए दुख ही लाएगा। अटके, तो गिरे, नरक में गिरोगे। नरक वह जगह है जहां लोग रुक गए हैं, स्वर्ग वह जगह है जहां लोग गतिमान हैं, जम नहीं गए हैं। नरक वह जगह है

जहां कोई स्वतंत्रता नहीं, स्वर्ग स्वतंत्रता है। हिंदुओं ने परम अवस्था को ' मोक्ष ' कहा है- परम स्वतंत्रता। कोई कहीं रुका हुआ नहीं है मुक्त नदी की भांति बहता हुआ है पक्षी की भांति पंखों से उड़ान भर रहा है चारों ओर असीम आकाश है किसी खूटे से बंधा नहीं है।

लेकिन वे जिनके विचार सीमित है वे भयभीत और संकल्पहीन हैं जितनी तीव्रता से वे शीघ्रता करते हैं उतना ही वे धीमे जाते है

और पकड़ सीमित नहीं हो सकती.

और स्मरण रहे जब भी तुम पकड़े रहते हो वह पकड़ ही समस्या है प्रश्न यह नहीं है कि तुम किसको पकड़े हो। इसलिए सोसान कहता है ' पकड़ की कोई सीमा नहीं ' – यह पकड़ इस संसार इस शरीर इन इंद्रियों इन मजों तक ही सीमित नहीं है। तुम्हारी पकड़ बुद्धत्व पर हो सकती है परमात्मा पर हो सकती है। तुम्हारी पकड़ प्रेम पर हो सकती है ध्यान और प्रार्थना पर हो सकती है। और पकड़ कर तुम अटक गए।

किसी को भी पकड़ो मत मुक्त और गतिमान बने रहो। जितना अधिक गतिमान उतना ही अधिक तुम स्वयं के निकट हो। जब तुम पूर्ण रूप से गतिमान हो तुम्हारी ऊर्जा कहीं अटकी नहीं है सत्य तुम्हारे द्वार पर दस्तक देता है। वह सदा से ही दस्तक दे रहा है लेकिन तुम अटके हुए थे और तुम सुन नहीं पाए। वह ठीक तुम्हारे सामने है ठीक तुम्हारे नासाग्र भाग पर।

संबोधि के विचार से आसक्त हो जाना भी भटक जाना है।

फिर वह समस्या बन जाता है। अगर तुम बहुत आसक्त हो जाते हो कि ' मुझे बुद्धत्व को प्राप्त करना ही है ' – तब यह भी तुम्हारी समस्या बन जाएगी। बुद्धत्व को कभी प्राप्त नहीं किया जाता है, वह घटित होता है। वह उपलब्धि नहीं है, और प्राप्त करने वाला मन उसे कभी उपलब्धि नहीं कर सकता है।

हो सकता है तुम इस संसार में शक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे होओ, फिर तुम उस संसार में शक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करना शुरू कर देते हो। पहले तुम इस संसार में धन पाना चाहते हो, फिर तुम उस जगत में धन पाने की चेष्टा करते हों-लेकिन तुम वही बने रहते हो, और मन और काम करने की प्रक्रिया और सारी योजना वही बनी रहती है। पाओ! पहुंचो! – यह अहंकार की यात्रा है। उपलब्धि को चाहने वाला मन ही अहंकार है। और जो पहुंचता है वह वही है जो उपलब्धि की चेष्टा नहीं कर रहा है जो बस प्रसन्न है जहां भी है जो बस आनंदित है जैसा भी वह है। उसका कोई लक्ष्य नहीं है। वह कहीं जा नहीं रहा है। वह चलता है लेकिन उसका चलना किसी लक्ष्य के लिए नहीं है। वह चलता है अपनी ऊर्जा के कारण, किसी लक्ष्य के लिए नहीं- उसका चलना किसी उद्देश्य से प्रेरित नहीं है।

निस्संदेह वह लक्ष्य पर पहुंच जाता है- वह दूसरी बात है, एक अलग मामला है। एक नदी हिमालय से निकलती है, वह सागर की ओर नहीं जा रही है उसे सागर का कुछ पता नहीं कि वह कहां है उसे सागर से कुछ लेना-देना नहीं है। हिमालय में गति करने का गीत इतना सुंदर है घाटियों से गुजरना चोटियों से बह कर पेड़ों से गुजरना फिर मैदानों में आना लोगों के पास.. यही गति सुंदर है। और हर क्षण यह गति सुंदर है क्योंकि यह जीवन है।

नदी को पता भी नहीं कि मंजिल है या सागर है उससे कोई संबंध नहीं है। अगर नदी इस बात का खयाल करने लगे तो तुम्हारी तरह झंझट में पड़ जाएगी। फिर वह सब जगह रुक कर पूछेगी कि कहा जाना है 'कौन सा ठीक मार्ग है?' और फिर उसे डर होगा कि उत्तर या दक्षिण पूरब या पश्चिम- कौन सी दिशा से वह पहुंच पाएगी- कहां जाए? और स्मरण रहे, सागर सब तरफ है। चाहे तुम उत्तर या पूरब या पश्चिम जाओ इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता है। सागर सब जगह है चारों ओर सागर है। वह सदा तुम्हारे सामने है तुम कहीं भी जाओ इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

मार्ग मत पूछो पूछो कैसे और गतिमान होना है। लक्ष्य के लिए मत पूछो वह कहीं निर्धारित नहीं है। जहां भी तुम जाते हो, नाचते हुए जाओ। तुम सागर तक पहुंच जाओगे- वह घटित हो जाता है। वह छोटी नदियों के साथ घटित होता है बड़ी नदियों के साथ घटित होता है वे सभी पहुंच जाती हैं। एक छोटी सी जलधारा- तुम सोच भी नहीं सकते कि यह छोटी सी जलधारा कैसे सागर तक पहुंच पाएगी लेकिन यह पहुंचेगी।

छोटे या बड़े की समस्या नहीं है। अस्तित्व की सब पर असीम कृपा है; छोटे या बड़े होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। छोटे पेड़ों पर फूल लगते हैं बड़े पेड़ों पर फूल लगते हैं। फूल लगने की बात है! और जब किसी छोटे पेड़ पर फूल आते हैं तो वह किसी बड़े पुष्पित वृक्ष से कम प्रसन्न नहीं होता प्रसन्नता वैसी ही होती है। प्रसन्नता का संबंध माप से नहीं होता, यह मात्रा का प्रश्न नहीं है। यह तुम्हारे होने की गुणवत्ता है। एक छोटी सी नदी भी नाचती है और पहुंच जाती है बड़ी नदी भी नाचती है और पहुंच जाती है।

तुम सब नदियों की भांति हो तुम सब सागर तक पहुंच जाओगे। लेकिन उसे लक्ष्य मत बनाओ नहीं तो वरना जितना तीव्र गति से जाओगे उतनी ही तुम्हारी गति मंद होगी। और जितना तुम पहुंचना चाहते हो उतना ही तुम अटक जाते हो, क्योंकि तुम और अधिक भयभीत हो जाते हो। लक्ष्य को चूक जाने का भय तुम्हें पकड़ लेता है न पहुंचने का भय तुम्हें अपंग कर देता है गलत हो जाने का भय तुम्हें अशक्त कर देता है। अगर कोई लक्ष्य नहीं है तो कोई भय नहीं है।

याद रखो, भय लक्ष्य निर्धारण के कारण है। अगर तुम कहीं जा नहीं रहे तो क्या भय? तुम चूक नहीं सकते तुम विफल नहीं हो सकते, इसलिए कैसा भय? भय का अर्थ है, असफल होने की संभावना। यह असफल होने की संभावना कहां से प्रवेश कर जाती है? यह लक्ष्य निर्धारण के रास्ते से प्रविष्ट होती है- तुम्हारी दृष्टि सदा लक्ष्य पर लगी है।

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं 'हम तीन महीने से ध्यान कर रहे हैं। कुछ भी नहीं हुआ।' कुछ होने वाला नहीं क्योंकि तुम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हो। तुम घटना की प्रतीक्षा भी नहीं कर सकते क्योंकि प्रतीक्षा करना भी एक तरिक चेष्टा बन जाती है। तुम देख रहे हो...

तुम विश्राम में जाओ। जब तुम वहां मौजूद नहीं होते वह घटना घट जाती है। वह तुम्हें कभी नहीं होगी वह केवल तभी होगी जब नौका खाली है जब घर खाली है। जब तुम नृत्य करते हो लेकिन कोई नर्तक वहां नहीं होता जब तुम देखते हो लेकिन कोई देखने वाला वहां नहीं होता जब तुम प्रेम करते हो और प्रेम करने वाला कोई वहां नहीं होता वह घटित होता है। जब तुम चलते हो और भीतर चलने वाला कोई नहीं होता वह घटना घटती है।

प्रतीक्षा मत करो, कोई चेष्टा मत करो, लक्ष्य निर्धारित मत करो बुद्धत्व भी बंधन बन जाएगा। पूरब में बहुत से लोगों के साथ ऐसा हुआ है। लाखों लोग संन्यास लेते हैं- वे बौद्ध भिक्षु बन जाते हैं हिंदू संन्यासी बन जाते हैं- वे मठों में चले जाते हैं और वे वहीं अटक जाते हैं।

वे मेरे पास आते हैं और वे संसार के दूसरे लोगों जैसे ही हैं। कोई बाजार में अटका है, और वे मठ में अटके हैं, बस इतना ही फर्क है। कोई बाजार में असफल है, वे मठ में असफल हैं। लेकिन वे कभी नहीं देखते। तुम असफल क्यों हो? तुमने खुद ही अपनी असफलता को बनाया है अगर तुम लक्ष्य की आकांक्षा करते हो तो तुम असफल होओगे। परमात्मा में लक्ष्य को निर्धारित करने वाला मन एक बाधा है सबसे बड़ी बाधा है। तुम सिर्फ होओ परमात्मा आएगा! इसे परमात्मा का निर्णय और समस्या रहने दो तुम्हारी नहीं। तुम उस पर छोड़ दो वह ज्यादा जानता है। इसे परमात्मा की समस्या रहने दो, उसे इसकी चिंता करने दो। तुम चिंता मत करो- तुम जीवन का आनंद लो जैसे चलता है, जब तक चलता है। तुम नार्चो और गाओ और आनंद मनाओ और परमात्मा को चिंता करने दो। तुम क्यों चिंता करते हो?

तुम बस निश्चित हो जाओ। और उपलब्ध करने वाले मत बनो, क्योंकि उपलब्ध करने वाले का मतलब ही है, इतना अधिक तनाव पैदा कर लेना जितना आदमी का मन कर सकता है। फिर तुम यहीं और अभी नहीं देख सकते हो फिर तुम दूर, बहुत दूर भविष्य में देख रहे हो लक्ष्य तो वहां है तुम्हारी कल्पना का आदर्श राज्य, स्वर्ण-नगरी, शंबाला तो वहां हैं। और तुम्हें पहुंचना ही है, इसलिए तुम दौड़ते हो। तुम कहां जा रहे हो? तुम किससे भाग रहे हो? तुम किसके लिए भाग रहे हो? वाला यहीं और अभी है, तुम्हारी कल्पना का आदर्श राज्य पहले से ही घटित हो चुका है।

जीसस ने अपने शिष्यों से कहा था 'तुम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? मैं तो यहां हूं।' बल्कि उसके शिष्य भी पूछ रहे थे 'मसीहा कब आएगा? कब?' क्योंकि यहूदी शताब्दियों से मसीहा के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आया, वे उसका स्वागत करने को तैयार नहीं थे। वे अब भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। और जीसस आ चुके हैं और वे अब भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। और जब जीसस भी वहां नहीं थे तब कई अन्य जीसस वहां थे और वे सदा आते रहे हैं।

परमात्मा सदा अभिव्यक्त होता रहा है। कभी वह मोहम्मद है, कभी वह जीसस है कभी वह बुद्ध है कभी वह सोसान है नागर है। वह लबालब भरा है, वह छलक रहा है वह लगातार अतिरेक में है वह इस बारे में कुछ नहीं कर सकता। वह कृपण नहीं है। लेकिन ईसाई कहते हैं उसका एक ही बेटा है। क्या वह नपुंसक है? क्या वह जीसस के जन्म के पश्चात नपुंसक हो गया? यह बात असंगत प्रतीत होती है- केवल वही इकलोता पुत्र। ऐसा संभव नहीं है नहीं तो तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर नहीं है- उसका कोई मूल्य नहीं।

मुसलमान कहते हैं कि एक ही पैगंबर है। मोहम्मद अंतिम हैं अंतिम पैगंबर। अंतिम क्यों? क्या तुम्हारा ईश्वर मर गया है? क्या वह उससे अच्छा कोई संदेश नहीं भेज सकता? क्या वह सुधार नहीं कर सकता? क्या वह अब सष्टा नहीं रहा? क्योंकि सृजनात्मकता का सदा यही अर्थ है स्वयं से श्रेष्ठ होते रहना, सदा अपने से आगे बढ़ना। एक चित्रकार चित्र बनाता चला जाता है और हमेशा अपने से आगे बढ़ता रहता है।

किसी ने वानगॉंग से पूछा तुम्हारा चित्रों में से कौन सा चित्र सबसे अच्छा है?

उसने कहा वह जो मैं अभी बना रहा हूं।

कुछ दिनों के पश्चात उसने फिर पूछा। वानगॉंग ने कहा मैंने तुम्हें बताया है। यह! और वह कोई और चित्र बना रहा था। यह जो मैं अब बना रहा हूं सबसे अच्छा है।

परमात्मा अतिरेक है अनंत अतिरेक है। जब मोहम्मद आते हैं, मोहम्मद सर्वोत्तम हैं; जब बुद्ध आते हैं बुद्ध सर्वश्रेष्ठ हैं। वास्तव में, वह कभी कुछ दूसरी बार नहीं बनाता। वह हमेशा सर्वश्रेष्ठ, अतुलनीय का सृजन करता है।

लेकिन लोग प्रतीक्षा करते रहते हैं। वे द्वार पर खड़े संदेशवाहक को चूक जाते हैं क्योंकि उनकी नजर वहां नहीं है उनकी आंखें उनकी कल्पना के किसी आदर्श राज्य को ढूंढ रही हैं कहीं और। वे वहां नहीं हैं वे घर पर नहीं हैं। परमात्मा कई बार तुम्हारे पास आता है और वह लौट जाता है क्योंकि तुम वहां नहीं होते। तुम वहां कभी नहीं होते जहां तुम हो। और वह वहां दस्तक देता है लेकिन तुम वहां नहीं होते।

उसे इसकी चिंता करने दो तुम चिंता मत करो- तुम बस शांत रहो। और यही दो स्थितियां हैं या तो तुम चिंतित हो या आनंदित हो और ये दोनों एक साथ नहीं हो सकतीं। अगर तुम प्रसन्न हो तो पागलों की तरह प्रसन्न हो। अगर तुम चिंतित हो तो पागलों की तरह चिंतित हो। पागल दो तरह के होते हैं एक पागलपन जो चिंता से आता है और एक पागलपन जो होने से होने के अतिरेक से आता है।

चुनाव तुम्हारा है। या तो तुम चिंतित पागल की तरह किसी मनोचिकित्सक के सोफे पर होओगे या तुम परमात्मा के पागल हो सकते हो किसी सेंट फ्रांसिस या सोसान की तरह। तब तुम्हारा सारा जीवन एक नृत्य हो जाता है, एक असीम आनंद, एक सतत आशीर्वाद हो जाता है और वह बढ़ता जाता है बढ़ता जाता है, बढ़ता ही चला जाता है। उसका कोई अंत नहीं है। यह आरंभ होता है लेकिन इसका अंत कभी नहीं होता।

बस वस्तुओं को अपने ढंग से होने दो  
और फिर न आना होगा, न जाना।

असीम कृपा है न आना न जाना। अनंत मौन; न आना, न जाना। लेकिन सिर्फ चीजों को अपने ही ढंग से होने दो- तुम बीच में मत आओ, तुम कुछ भी बदलने का प्रयास मत करो।

इस बात को समझना मन के लिए बहुत कठिन है क्योंकि मन का परिवर्तन में रस है अगर तुम पापी हो तो कैसे पुण्यात्मा बनो अगर तुम बदसूरत हो, तो कैसे खूबसूरत बनो अगर तुम बुरे हो तो कैसे अच्छे बनो।

मन बदलता रहता है बदलने का प्रयत्न कर रहा है और मन अच्छा लगता है क्योंकि ऐसा लगता है 'हां तुम बेहतर हो सकते हो इसलिए बदलने की चेष्टा करो।' और फिर तुम बेहतर नहीं हो सकते फिर तुम अटक गए- क्योंकि तुम पहले ही बेहतर हो! बात सिर्फ इतनी है कि चिंता करना कैसे छोड़ो और जीना शुरू करें। ऐसे व्यक्ति बनो जो जीवंत हो बस चीजों को अपने ढंग से होने दो।

स्वीकार करो! चिंता करने वाले तुम कौन होते हो? तुम पैदा हुए- तुमसे किसी ने नहीं पूछा कि तुम पैदा होना चाहते थे या नहीं। नहीं तो तुम वहीं रुक गए होते, क्योंकि तुम किसी बात का निर्णय नहीं कर सकते। तुम अनिश्चय में हो।

लक्ष्य के लिए प्रयास न करो

अगर तुमसे पूछा गया होता, अगर वहां परमात्मा होता तुमसे पूछने के लिए- उसने वह गलती कभी नहीं की क्योंकि वह जानता है कि तुम वहीं अटक जाओगे- अनंतकाल तक तुम यह निर्णय ही नहीं कर पाओगे कि तुम जन्म लो या न लो। उसने तुम्हारी अनुमति लिए बिना ही तुम्हें अचानक संसार में फेंक दिया। अन्यथा तुम यहां न होते। और अगर वह फिर तुम्हारी मृत्यु के बारे में पूछे, तुम अटक जाओगे। वह कभी नहीं पूछता वह सिर्फ तुम्हें ले जाता है। वह तुम्हें भलीभांति जानता है तुम फैसला नहीं कर सकते।

अगर वह आए और पूछे, 'तुम कब मरना चाहते हो?' क्या तुम निर्णय कर पाओगे? शनिवार की सुबह? रविवार? नहीं! केवल सात ही दिन हैं तुम निर्णय नहीं कर पाओगे। उसे तुम से पूछे बिना ही आना पड़ता है।

जब जीवन तुम्हारे बिना ही होता है- जन्म होता है मृत्यु घटती है प्रेम होता है बिना तुम्हारे- फिर तुम्हें चिंता करने की क्या आवश्यकता है? स्रोत कोई भी हो, अगर वह तुम्हें जन्म दे सकता है अगर वह तुम्हें मृत्यु दे सकता है अगर वह तुम्हारा सृजन और विनाश कर सकता है, फिर सारी चिंताएं उसे करने दो। तुम जब तक हो, आनंद मनाओ। और अगर तुम जब तक हो आनंद ले सकते हो तो अचानक तुम्हें पता चलता है यह है स्रोत। तुमने अनंत जीवन को छू लिया है।

जीसस कहते हैं 'मैं यहां तुम्हें भरपूर जीवन सिखाने को हूँ, असीम समृद्ध।' और इसका उपाय है बस चीजों को होने दो। तुम बीच में मत आओ तुम अपने ढंग से बीच में न आओ। अपने ताओ को प्रवाहित होने दो तुम्हारी प्रकृति को गति करने दो जहां भी यह जाती है।

वस्तुओं के स्वभाव (तुम्हारे अपने स्वभाव) के अनुसार चलो; और तुम मुक्त भाव से और अविचलित रह कर चलोगे।

जब विचार बंधन में होता है सत्य छिपा रहता है

क्योंकि सभी कुछ धुंधला और अस्पष्ट होता है

और निर्णय करने का बोझिल अभ्यास कष्ट और थकान लाता है। भेदभावों और विभाजनों से क्या लाभ हो सकता है?

जब तुम विचारों से भरे हो तुम्हारा मन धुंधला हो जाता है तुम्हारी दृष्टि स्वच्छ नहीं होती। लेकिन क्या किया जाए? विचार वहां हैं। उन्हें वहां होने दो। तुम निश्चित रहो। उन्हें वहां रहने दो- तुम उनमें मत उलझो। वे अपने आप से चलते रहते हैं, उन्हें चलते रहने दो। तुम उनमें क्यों उलझो और क्यों उन्हें परेशान करो? वे जलधारा की तरह बहते हैं- उन्हें बहने दो। तुम किनारे पर बैठ जाओ और विश्राम करो।

तुम अपने विचारों से कहो, 'ठीक है, अगर आकाश में बादल हैं और धरती पर वृक्ष और नदियां और सागर हैं तब मन में विचार क्यों न हों?' उन्हें स्वीकार करो! ठीक है! अगर तुम स्वीकार करते हो और कहते हो, ठीक है तो तुम अचानक एक परिवर्तन अनुभव करोगे क्योंकि उन्हें गति करने के लिए तुम्हारी ऊर्जा चाहिए।

अगर तुम उनके प्रति उदासीन हो तो धीरे- धीरे ऊर्जा स्वयं ही पीछे हट जाती है। वे और-और कम होते चले जाते हैं। फिर एक घड़ी आती है जब विचार केवल तभी आते हैं जब उनकी आवश्यकता होती है। विचार कोई बोझ नहीं हैं। अनावश्यक विचार बोझ हैं वे तुम्हारी दृष्टि को धुंधला कर देते हैं। धुंधलापन अनावश्यक विचारों के कारण आ जाता है। जब तुम चलना चाहते हो तुम अपनी टांगों का इस्तेमाल करते हो जब तुम सोचना चाहते हो तुम अपने विचारों का उपयोग करते हो जब तुम कुछ संवाद करना चाहते हो तुम अपने मन का उपयोग करते हो। लेकिन जब तुम पेड़ के नीचे बैठे हो तो अपनी टांगों को क्यों हिलाते हो? तुम पागल लगोगे। लेकिन तुम्हारा मन चलता रहता है। मन एक क्रियाकलाप है और क्रियाकलाप उचित समय पर ही उपयोगी है। जब उसकी जरूरत होती है मन कार्य करना शुरू कर देता है। मैं तुम से बात कर रहा हूँ मन कार्य कर रहा है वरना मैं तुमसे कैसे बात कर सकता हूँ? सोसान कुछ कह रहा है अगर मन न हो तो वह कैसे कह सकता है? लेकिन जैसे ही मैंने बात करना समाप्त किया क्रिया बंद हो गई तब वहां मन नहीं है- ऐसे जैसे कि टांगें नहीं हैं क्योंकि जब वे चल नहीं रहीं हैं तो वे नहीं हैं।

जब तुम्हें भूख लगती है तुम खाते हो। जब तुम कुछ संवाद करना चाहते हो तुम विचारों का उपयोग करते हो। जब तुम्हें भूख नहीं होती तुम खाते नहीं रहते। लेकिन ऐसे लोग हैं जो च्यूइंगम चबाते रहते हैं, जो सिगरेट पीते रहते हैं ये च्यूइंगम और सिगरेट भोजन के परिपूरक हैं। वे निरंतर खाते रहना चाहते हैं लेकिन यह असंभव है क्योंकि शरीर यह सहन नहीं कर पाएगा इसलिए उन्हें अपने मुंह के साथ कुछ करना पड़ता है। वे ज्यूइंगम खाएंगे पान चबाएंगे, सिगरेट पीएंगे या कुछ करेंगे!

या, अगर वे कुछ न कर पाएं- उदाहरण के लिए, अतीत में सारी दुनिया में औरतों को उन मुड़ता को करने की इजाजत नहीं थी जो पुरुषों को करने दी जाती हैं। उन्हें धूम्रपान करने की अनुमति न थी, उन्हें ज्यूइंगम या वैसी चीजें चबाने की अनुमति न थी; वे चीजें गरिमापूर्ण नहीं थीं। फिर वे क्या करती थीं? उन्होंने बातें करना शुरू कर दिया। इसीलिए लड़कियां ज्यादा बातें करती हैं क्योंकि किसी परिपूरक की जरूरत है। मुंह को हमेशा चलते रहना चाहिए वे बोलना शुरू कर देती हैं।

तुम कभी ऐसा नहीं पाओगे कि दो महिलाएं बैठी हों और एक-दूसरे से बात न कर रही हों- अगर वे अंग्रेज महिलाएं न हों जो कि महिलाएं बिलकुल नहीं होतीं। उनमें बहुत कुछ दमित है वे जिंदा लाश के समान हो गई हैं। अन्यथा महिलाएं निरंतर बोलती रहती हैं; पेड़ों पर पक्षियों की भांति वे लगातार बोलती रहती हैं। अभी उस दिन यहां कुछ महिलाएं बगीचे में काम कर रही थीं। सारा दिन वे बातें करती रहीं- पूरा दिन! वे बातें उपयोगी हो नहीं सकतीं क्योंकि वहां कुछ है नहीं, लेकिन वे लगातार बोलती रहीं-मुंह केवल लगातार खाते रहना चाहता है।

तुम थियेटर में बैठे लोगों को देखते हो। वे लगातार टांगे हिलाते रहते हैं। वे वहां क्यों बैठे हैं? उन्हें बाहर जाकर सैर करनी चाहिए। वे दोनों ही कर रहे हैं। वे शांत बैठ ही नहीं सकते। और यही तुम्हारे मन के साथ हो रहा है।

मन अपने में अच्छा है। हर चीज अपने आप में अपनी जगह पर अच्छी है। फिर हर चीज उचित होती है। जब सब चीजें अपनी जगह हैं तो जूता बिलकुल ठीक फिट हो जाता है। जब मन की आवश्यकता हो, इस्तेमाल करो जब उसकी आवश्यकता न हो, उसे एक तरफ रख दो। तुम मालिक बने रहो और सभी कुछ एक किया-कलाप है।

लेकिन मन ने कब्जा कर लिया है। तुम जो कुछ भी कर रहे हो यह चलता ही रहता है-जैसे कि तुम रेडियो बंद ही नहीं कर सकते उसका बटन ही टूट गया है। वह बजता ही रहता है। तुम सो रहे हो और रेडियो बजता ही चला जाता है। तुम विश्राम कर रहे हो भोजन कर रहे हो, प्रेम कर रहे हो, और रेडियो बजता जा रहा है। और तुम्हें लगातार उसे सहन करना पड़ता है। धीरे- धीरे तुम यह भूल ही जाते हो कि रेडियो बजता रहता है तुम सुनते ही नहीं।

यही तुम्हारे मन के साथ भी हुआ है। वह चलता रहता है, चलता ही रहता है तुम्हें पता नहीं है कि उसे बंद करने का बटन कहां है, जिसे घुमा दो। इसलिए तुम सुनते ही नहीं तुम सिर्फ सहन कर लेते हो उसकी उपेक्षा कर देते हो। तुमने मान ही लिया है जैसे कि यह ऐसा ही होता रहने वाला है।

यह ऐसा नहीं है अन्यथा कोई बुद्ध नहीं हो सकता। और जब मैं यह कहता हूं तो यह मैं अपने अनुभव से कहता हूं ऐसा नहीं है। बटन बदला जा सकता है। सभी ध्यान- विधियां यही तो करती हैं। वे तुम्हें संबोधि की ओर नहीं ले जातीं, वे केवल एक बटन बदल देती हैं जो वहां नहीं है या टूट गया है या अटक गया है या यह अभी भी वहीं है लेकिन तुम जानते नहीं कि उसका उपयोग कैसे किया जाए।

ध्यान एक विधि है और विधि किसी क्रियाकलाप को कुछ सहायता दे सकती है, तुम्हारे होने को नहीं। इसलिए कोई ध्यान तुण्डें सीधा तुम्हारी अंतर-सत्ता तक नहीं ले जाता, वह केवल तुम्हारी क्रियाकलापों को ठीक करता है, जूता पैर में ठीक बैठ जाता है और तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हो।

नांगर ठीक कहता है जब जूता पैर में ठीक बैठ जाता है पैर भूल जाता है। जब प्रत्येक क्रियाकलाप ठीक से चलता है, शरीर भूल जाता है; जब प्रत्येक क्रिया उचित ढंग से होने लगती है आभासों का यह संसार मिट जाता है। तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हो! अचानक सभी कुछ जैसा है वैसा ही आलोकित हो जाता है।

अगर तुम उस एक 'पथ' पर चलना चाहते हो,  
तो इंद्रियों और विचारों के जगत से भी घृणा मत करो।

यह सुंदर है! वह कहता है 'इंद्रियों और विचारों के जगत से भी घृणा मत करो।' दो प्रकार के लोग होते हैं। एक प्रकार के लोग अपनी इंद्रियों से लड़ते रहते हैं शरीर की हत्या कैसे कर दें शरीर के माध्यम से कैसे सुखों को न भोगें, प्रेम में न पड़े, भोजन का स्वाद न लें। वे अपनी इंद्रियों से लड़ते रहते हैं बहुत बड़े तपस्वी बन जाते हैं। मूल रूप से वे आत्मपीडक हैं, वे स्वयं को अपंग बनाने का मजा लेते हैं। लेकिन समाज उन्हें आदर देता है और यह आदर उनका लोभ बन जाता है।

उन्हें महान व्यक्ति समझा जाता है क्योंकि उन्हें अपनी इंद्रियों की कोई परवाह नहीं है। और वे महान नहीं हो सकते हैं क्योंकि इंद्रियां उस असीम से मिलन का द्वार हैं जिसने तुम्हें चारों ओर से घेरा हुआ है। इंद्रियां द्वार हैं उन्हीं द्वारों से असीम तुममें प्रवेश करता है और तुम असीम में प्रवेश करते हो।

वे अपने द्वार बंद करते चले जाते हैं। फिर उनके घर, उनके शरीर काराग्रह बन जाते हैं और वे कष्ट पाते हैं। और जितना अधिक वे कष्ट पाते हैं उतना ही उन्हें आदर मिलता है और उन्हें पूजा जाता है क्योंकि लोग सोचते हैं कि उन्होंने कुछ चमत्कार कर दिखाया है, वे शरीर के पार उठ गए हैं।

शरीर से पार जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। बात केवल इतनी है शरीर अपना कार्य ठीक ढंग से करे पूर्ण रूप से करे। वह एक कला है तपश्चर्या नहीं है। वह तपस्या नहीं है, तुम्हें उससे लड़ना नहीं है तुम्हें केवल उसे समझना है। और शरीर बहुत बुद्धिमान है तुम्हारे मन से अधिक स्मरण रहे क्योंकि शरीर मन से बहुत पहले अस्तित्व में आया। मन का आगमन नई घटना है मन अभी बच्चा है।

शरीर बहुत पुराना है बहुत-बहुत पुरातन। क्योंकि कभी तुम चट्टान के रूप में रहे शरीर तब भी था मन गहरी नींद में था। फिर तुम वृक्ष हो गए, शरीर था, अपनी सारी हरियाली और फूलों सहित। तब भी मन गहरी नींद में था, उतनी गहरी नींद में नहीं जितना चट्टान में था लेकिन अब भी सोया हुआ था। तुम एक पशु हो गए एक शेर शरीर बहुत सजीव और ऊर्जावान था लेकिन मन कार्य नहीं कर रहा था। तुम पक्षी हो गए तुम मनुष्य बन गए... शरीर लाखों वर्षों से काम कर रहा है।

शरीर ने कहीं अधिक बुद्धिमत्ता संगृहीत कर ली है शरीर बहुत बुद्धिमान है। इसलिए अगर तुम बहुत खाते हो तो शरीर कहता है 'बस करो!' मन इतना बुद्धिमान नहीं है। मन कहता है, 'स्वाद बहुत अच्छा है- थोड़ा सा और।' और अगर तुम मन की सुनते हो तो वह इस तरह से या उस तरह से शरीर के लिए विनाशकारी हो जाता है। अगर तुम मन की सुनो तो पहले कहेगा 'खाते जाओ।' क्योंकि मन मूर्ख है बच्चा है उसे नहीं मालूम कि वह क्या कह रहा है। वह नया-नया आया है उसने कुछ सीखा नहीं है। वह बुद्धिमान नहीं है वह अभी भी

मूर्ख है। शरीर की सुनो। जब शरीर कहता है ' भूख लगी है तब खाओ। जब शरीर कहे ' रुक जाओ तब रुक जाओ।

अगर तुम मन की सुनते हो तो ऐसा होगा जैसे कि एक बच्चा बूढ़े का मार्ग-दर्शन कर रहा हो- वे दोनों गड्डे में गिरेंगे। और अगर तुम मन की सुनते हो तो पहले तुम बहुत ही इंद्रियों के अधीन हो जाओगे और फिर ऊब जाओगे। प्रत्येक इंद्रिय तुम्हारे लिए दुख लाएगी, और प्रत्येक इंद्रिय तुम्हारे लिए और अधिक चिंता, संघर्ष, पीड़ा लाएगी।

अगर तुम अत्यधिक भोजन कर लेते हो तो पीड़ा होगी उलटियां हो जाएंगी सारा शरीर गड़बड़ा जाएगा। फिर मन कहता है 'भोजन करना बुरा है इसलिए उपवास रखो।' और उपवास भी हानिकारक है। अगर तुम शरीर की सुनते हो तो वह कभी ज्यादा नहीं खाएगा, वह कम भी नहीं खाएगा- वह ताओ का अनुसरण करेगा।

कुछ वैज्ञानिक इस समस्या पर काम करते रहे हैं और उन्होंने एक बहुत ही सुंदर घटना खोजी है छोटे बच्चे तभी खाते हैं जब उन्हें भूख लगती है, वे तभी सोते हैं जब उन्हें महसूस होता है कि नींद आ रही है- वे अपने शरीर की सुनते हैं। लेकिन माता-पिता उन्हें तंग करते हैं, वे जबरदस्ती करते हैं यह रात्रि- भोजन का समय है, यह दोपहर के भोजन का समय है, या यह और वह या सोने का समय है- जाओ! वे उन्हें शरीर की बात सुनने नहीं देते।

इसलिए एक प्रयोगकर्ता ने यह प्रयत्न किया कि बच्चों को उन पर ही छोड़ दिया जाए। उसने पच्चीस बच्चों के साथ कार्य किया। उनके साथ कोई जबरदस्ती नहीं की गई कि वे कब सोएं, उन पर कोई जोर जबरदस्ती नहीं की गई कि वे कब जागें। छह महीने उनसे बलपूर्वक कुछ भी नहीं करवाया गया। और एक बहुत गहरी समझ आई।

वे अच्छी तरह सोए। उन्होंने कम सपने देखे, कोई दुःस्वप्न नहीं आए, क्योंकि दुःस्वप्न उन माता-पिता के कारण आ रहे थे जो उनसे जबरदस्ती कर रहे थे। उन्होंने अच्छे से भोजन किया लेकिन कभी अधिक नहीं खाया- जितना चाहिए उससे कम भी नहीं खाया, उससे ज्यादा भी नहीं खाया। उन्होंने भोजन का आनंद लिया और कभी-कभी उन्होंने कुछ भी नहीं खाया। जब शरीर नहीं चाह रहा था, उन्होंने कुछ नहीं खाया, और भोजन की वजह से वे कभी बीमार नहीं हुए।

और एक बात जिसके बारे में कभी कोई संदेह नहीं हुआ था वह भी समझ आई और वह चमत्कारपूर्ण थी। केवल सोसान या लाओत्सु या नागर समझ सकते हैं क्योंकि वे ताओ के सदगुरु हैं। वह गजब की खोज थी। उन्हें यह बात समझ आई कि अगर कोई बच्चा बीमार होता, तो वह किसी विशेष प्रकार का भोजन नहीं करता था। फिर उन्होंने यह समझने की चेष्टा की कि वे उन भोज्य पदार्थों को क्यों नहीं खाता। उन भोज्य पदार्थों का विश्लेषण किया गया और पता चला कि वे भोज्य पदार्थ उस रोग के लिए खतरनाक हैं। बच्चा यह निर्णय कैसे करता था? बस, केवल शरीर।

और जब बच्चा विकसित हो रहा था उसके विकास के लिए जो भी आवश्यक था वह उसे अधिक खा रहा था। तब उन्होंने विश्लेषण किया और पाया कि भोजन के वे पदार्थ उपयोगी थे। और भोजन बदल जाता क्योंकि जरूरतें बदल जातीं। किसी दिन बच्चा कुछ खाता और वही बच्चा दूसरे दिन उसे न खाता। और वैज्ञानिकों को पता लगा कि एक देह की बुद्धिमत्ता होती है।

अगर तुम शरीर को अपनी सुनने देते हो तो तुम ठीक राह पर महापथ पर हो। और ऐसा केवल भोजन के साथ ही नहीं है, पूरे जीवन के साथ है। तुम्हारी कामवासना मन के कारण गलत हो जाती है तुम्हारा पेट मन के कारण खराब हो जाता है। तुम शरीर के कामों में हस्तक्षेप करते हो। हस्तक्षेप मत करो! अगर तुम ऐसा तीन

महीने भी कर सको, हस्तक्षेप मत करो। और अचानक तुम स्वस्थ हो जाओगे और एक अच्छापन तुम पर अवतरित होगा सभी कुछ अच्छा लगता है जूता ठीक बैठ जाता है। लेकिन मन ही समस्या है।

मन का अपना काम है वह है दूसरों के साथ कैसे संबंधित होना है संसार में कैसे व्यवहार करना जहां इतने सारे लोग रह रहे हों, कार कैसे चलानी है, यातायात के नियमों का कैसे पालन करना है दूसरों के लिए या अपने लिए कैसे खतरा पैदा नहीं करना है कैसे आगे देखना है और योजनाएं बनानी हैं। मन ठीक राडार की भांति है, वह आगे देखता है-कहां जाना है कैसे जाना है- लेकिन आधार शरीर ही बना रहता है।

जो लोग शरीर के विरोध में हैं और अपनी इंद्रियों को पंगु बना देते हैं। उनको बुद्धत्व प्राप्त करने में उन लोगों से अधिक समय लग जाता है जो अपनी इंद्रियों की सुनते हैं और उनकी सलाह को मान कर चलते हैं।

अगर तुम इंद्रियों की सुनते हो तो तुम सरल हो जाते हो। निस्संदेह तुम्हें कोई आदर नहीं देने वाला बल्कि वे लोग कहेंगे यह व्यक्ति विषयासक्त है भोगविलासी है। और एक भोगी व्यक्ति त्यागी से अधिक जीवंत होता है। लेकिन जीवन में किसी को रुचि नहीं है सब मृत वस्तु की पूजा करना पसंद करते हैं।

लोगों से आदर मत मांगो अन्यथा तुम मार्ग से भटक जाओगे। और एक घड़ी आती है जब हर कोई तुम्हारा आदर कर सकता है लेकिन तुम स्वयं का आदर नहीं कर पाते क्योंकि तुम पूरी तरह से भटक गए हो। कुछ भी ठीक नहीं बैठता, सभी कुछ गलत हो जाता है।

शरीर की सुनो- क्योंकि यह पल जो तुम्हें दिया गया है, जो आशीषपूर्ण है, जो सुंदर पल तुम पर घटित हुआ है तुम उसका आनंद उठाने के लिए यहां हो। तुम जीवंत हो, चेतन हो और यह संसार इतना विस्तृत है।

इस छोटे से ग्रह पर मानव जीवन एक चमत्कार है- छोटा सा, बहुत छोटा सा ग्रह! सूर्य इस धरती से साठ हजार गुना बड़ा है, और यह सूर्य मध्यम आकार का है। और इस सूर्य से लाखों गुना बड़े सूर्य हैं और लाखों सूर्य और लाखों जगत और लाखों ब्रह्मांड हैं। और अभी तक ऐसा लगता है- जहां तक विज्ञान पहुंचता है- कि जीवन और चेतना केवल इसी धरती पर घटित हुए हैं। यह धरती धन्य है।

तुम्हें पता नहीं है कि तुम्हें क्या उपलब्ध है। अगर तुम्हें अनुभव हो कि तुमने क्या पाया है तो तुम सिर्फ कृतश होओगे, कुछ और नहीं मांगोगे। तुम चट्टान हो सकते थे और तुम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। तुम मनुष्य हो- और तुम दुखी हो, और तुम चिंतित हो और तुम सारी बात से ही चूक रहे हो। इस क्षण का आनंद मनाओ, क्योंकि हो सकता है वह फिर न आए।

हिंदुओं का यही अभिप्राय है वे कहते हैं कि तुम फिर से चट्टान बन सकते हो। अगर तुम इसका आनंद नहीं लेते, तुम इसमें विकास नहीं करते तुम्हारा पतन हो जाएगा। तुम फिर एक पशु हो सकते हो। यही अर्थ है हमेशा याद रखो कि चेतना की यह पराकाष्ठा एक ऐसा शिखर है- अगर तुम आनंदित नहीं होते और इसके साथ एक नहीं हो जाते तुम्हारा पतन हो जाएगा।

गुरजिएफ कहा करता था कि अभी तुम्हारे पास आत्मा नहीं है जीवन केवल एक अवसर है उसे उपलब्ध करने का आत्मवान होने का। समय और शक्ति को व्यर्थ मत गंवाते जाओ, क्योंकि अगर तुम अनक्रिस्टलाइव्ड बिना एकीकृत हुए मर गए तो तुम बस खो जाओगे। और कौन जानता है, ऐसा अवसर फिर कब आए- या न आए? कोई नहीं जान सकता, कोई नहीं है जो इस विषय में कुछ कह सकता हो।

इतना कहा जा सकता है कि यह क्षण तुम्हारे लिए अवसर है। अगर तुम आनंदित हो तो वह और भी एकीकृत हो जाता है- अगर तुम इसके प्रति आनंद और कृतज्ञता अनुभव करते हो। स्मरण रहे धन्यभागी अनुभव करने के लिए कुछ और नहीं चाहिए। जो भी तुम्हारे पास है वह बहुत अधिक है, धन्यभागी और कृतज्ञ होने के

लिए यह बहुत अधिक है। अस्तित्व से और की मांग मत करो। जो भी तुम्हें मिला है उस का आनंद लो। और जितना तुम आनंद लोगे उतना ही अधिक तुम्हें दिया जाएगा।

जीसस एक बहुत ही विरोधाभासी बात कहते हैं 'अगर तुम्हारे पास अधिक है तो तुम्हें और अधिक दिया जाएगा, अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं है तो जो भी तुम्हारे पास है वह भी ले लिया जाएगा।' यह बात बहुत ही साम्यवाद विरोधी प्रतीत होती है। बहुत ही असंगत लगती है। यह किस प्रकार का गणित है? 'जितना अधिक तुम्हारे पास है, उतना अधिक तुम्हें दिया जाएगा; और अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं है तब जो भी तुम्हारे पास है वह भी ले लिया जाएगा।' यह बात धनवानों के पक्ष में और निर्धनों के विपक्ष में प्रतीत होती है। इसका संबंध साधारण अर्थशास्त्र से नहीं है- यह जीवन का परम अर्थशास्त्र है। केवल वे ही और अधिक पाएंगे जिनके पास है क्योंकि जितना वे आनंदित होते हैं उतना ही वह बढ़ता जाता है। जीवन आनंद द्वारा ही विकसित होता है। आनंद सूत्र है।

आनंदित होओ जो भी तुम्हारे पास है उसके लिए कृतज्ञ होओ। जो कुछ भी! उसके लिए आनंदित होओ उसके लिए और खुल जाओ। और जितना अधिक तुम पर बरसता है उतना ही तुम और आशीष पाने के योग्य हो जाते हो। जो कृतज्ञ नहीं है वह उसे भी गंवा देता है जो उसके पास है। जो कृतज्ञ है, उसको विकसित होने में पूरा अस्तित्व सहयोग देता है क्योंकि वह योग्य पात्र है और वह स्पष्ट रूप से समझ रहा है कि उसके पास क्या है।

और अधिक प्रेममय होओ, और तुम्हारे पास और अधिक प्रेम आएगा। और अधिक शांतिपूर्ण होओ, और तुम्हें और अधिक शांति मिलेगी। और अधिक दो, तुम्हें देने के लिए और अधिक मिलेगा। बांटो, और तुम्हारा होना और बढ जाता है।

लेकिन तुम कभी देते नहीं, तुम कभी प्रेम नहीं करते तुम कभी बांटते नहीं। वास्तव में तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम्हारे पास कुछ है। तुम केवल प्रतीक्षा कर रहे हो कि कहीं कुछ होगा। यह पहले से ही घटित हो चुका है! केवल इसे देखो- खजाना तुम्हारे भीतर है। और तुम कभी नहीं देते क्योंकि तुम नहीं जानते कि यह घटित हो चुका है और तुम नहीं जानते कि देने से वृद्धि होती है।

यहूदियों के समाज में ऐसा हुआ एक संत मर रहा था, वह गरीब आदमी था, लेकिन आत्मिक रूप से बहुत बहुत अमीर था, आनंद का धनी था। वह एक रहस्यदर्शी था।

और पूरे समाज को उसकी चिंता थी। सब तरह के चिकित्सक बुलाए गए लेकिन कुछ नहीं हो सका हर घड़ी मौत निकट आ रही थी। तब सारा समुदाय अंतिम काम के लिए प्रार्थना करने के लिए एकत्रित हो गया। लेकिन ऐसा लगा कि वह भी काम नहीं आ रही।

तो रबाई ने कहा. अब अंत में हम एक काम कर सकते हैं और जब तक हम वह नहीं करेंगे परमात्मा भी सहायता नहीं करेगा। हमें अपना जीवन उसके साथ बांट लेना चाहिए। इसलिए तुम अपने जीवन से कुछ दिन, कुछ वर्ष इस मरणासन्न व्यक्ति को दान कर दो। तो सभी लोग आगे आ गए; लोगों को उससे प्रेम था।

एक आदमी ने कहा 'पांच वर्ष।' दूसरे ने कहा 'एक वर्ष।' किसी ने कहा 'एक महीना।' किसी ने यह भी कहा 'एक दिन।' एक कृपण व्यक्ति ने कहा 'एक मिनट।' लेकिन वह भी – वह भी सोचो हंसो मत- जीवन का एक मिनट भी छोटी चीज नहीं है तुच्छ वस्तु नहीं है। जब तुम मर रहे होते हो तो वह एक मिनट भी तुम्हें नहीं मिलता।

फिर मुल्ला नसरुद्दीन भी जो वहां था आगे आया। वह यहूदी तो नहीं था लेकिन वह भी उस रहस्यदर्शी से प्रेम करता था। और उसने कहा 'बीस वर्ष।'।

कोई विश्वास न कर सका। एक यहूदी ने जो ठीक उसके पीछे बैठा था उसकी टांग खींची और कहा तुम क्या कर रहे हो, नसरुद्दीन? क्या तुम पागल हो गए हो? बीस वर्ष! तुम्हारा क्या मतलब है? बहुत अधिक हैं। क्या तुम पागल हो गए हो? और तुम तो यहूदी भी नहीं हो?

नसरुद्दीन ने कहा अपनी पत्नी के जीवन से।

कोई भी कुछ भी बांटने को तैयार नहीं है। और जब तक तुम बांटोगे नहीं तुम्हें और नहीं मिलेगा क्योंकि तुम उसके योग्य नहीं बनते हो। तुम्हारी पात्रता नहीं है। मांगो, और तुम खो दोगे दो और तुम पा लोगे।

यह जीवन जैसा है वह बहुत ही अधिक है। इसके प्रति आनंदित हो जाओ छोटी-छोटी चीजों का रस लो। भोजन भी पवित्र प्रसाद बन जाना चाहिए। हाथों को मिलाना एक प्रार्थना बन जानी चाहिए एक अर्पण बन जाना चाहिए। लोगों के साथ होना भी एक गहरा आनंद बन जाना चाहिए- क्योंकि जो तुम्हारे साथ घटा है वह और कहीं नहीं घटा।

सोसान कहता है:

अगर तुम उस एक 'पथ' पर चलना चाहते हो,  
तो इंद्रियों और विचारों के जगत से भी घृणा मत करो।

इंद्रियों के जगत से घृणा मत करो विचारों के जगत से घृणा मत करो, क्योंकि वे भी अपने में सुंदर हैं। अगर तुम किसी विचार में उलझते नहीं हो तो उसमें क्या बुराई है? यह एक सुंदर फूल है। मन अच्छा है अगर वह अपनी जगह पर है।

गुरजिएफ की एक शिक्षा है- आधुनिक मनुष्य के लिए बहुत उचित है- कि तुम्हारे सारे केंद्र एक-दूसरे में मिल गए हैं। उनकी शुद्धता नष्ट हो गई है; वे एक-दूसरे में दखल दे रहे हैं। और वह ठीक कहता है। जब तुम प्रेम करते हो मन की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन मन निरंतर काम करता रहता है। वास्तव में तुम मन के केंद्र द्वारा प्रेम करते हो काम-केंद्र के द्वारा नहीं।

कामवासना बुरी नहीं है वह अपने स्थान पर ठीक है- एक खिलावट है, एक गहरी साझेदारी है दो व्यक्तियों का गहन मिलन है। लेकिन मन निरंतर दखलअंदाजी करता रहता है। फिर वह कुरूप हो जाता है क्योंकि मन एक उपद्रव है। फिर काम-केंद्र अपना बदला लेगा। तुम गीता कुरान बाइबिल पढ़ रहे हो और कामवासना मन में घूमती रहती है तुम कामवासना के संबंध में सोचते रहते हो। ऐसा होना ही है क्योंकि तुमने काम-केंद्र को विचलित कर दिया है तो बदला कब लिया जाएगा?

अपने विज्ञापनों को देखो। अगर तुम्हें कुछ भी बेचना है, तो पहले उसे यौन-आकर्षक बनाना पड़ेगा। चाहे तुम्हें कार बेचनी है- तुम्हें उसके साथ एक नग्न स्त्री खड़ी करनी पड़ेगी या टूथपेस्ट हो तुम्हें नग्न स्त्री खोजनी ही पड़ेगी। कुछ भी! मानो टूथपेस्ट असली चीज नहीं है असली चीज नग्न स्त्री है कामवासना है। तुम्हें साबुन बेचना है और तुम्हें सुंदर नग्न शरीर को साथ जोड़ना ही पड़ेगा।

मैंने सुना है इटली की एक मॉडल महिला जो वर्षों से साबुन के विज्ञापन के लिए मॉडल के तौर पर काम कर रही थी जब वह बूढ़ी हो गई किसी को भी उसका खयाल भी नहीं रहा किसी ने उससे पूछा. आप वास्तव में किस प्रकार का साबुन इस्तेमाल करती हैं? उसने कहा. कोई भी नहीं क्योंकि प्रत्येक साबुन त्वचा की कोमलता को नष्ट करता है। मैं अपने शरीर पर केवल गीली ऊन इस्तेमाल करती हूं, इसी कारण वह इतनी सुंदर है। लेकिन मैंने सभी प्रकार के साबुनों के विज्ञापन में सहायता की है और वे बिक रहे हैं।

जब मुल्ला नसरुद्दीन सौ साल का हो गया मैंने उससे पूछा. नसरुद्दीन, तुम्हारी लंबी उम्र का राज क्या है?

उसने कहा. प्रतीक्षा करो! सात दिनों के भीतर सब तय हो जाएगा तब मैं कुछ कह सकूंगा।

मैंने पूछा मामला क्या है? क्या तय हो जाएगा?

उसने कहा : बहुत सी कंपनियां मेरे पीछे पड़ी हैं इसलिए मेरा वकील सब तय कर रहा है- किस विटामिन ने किस भोजन ने मदद की। इस समय मैं कुछ नहीं जानता लेकिन एक सप्ताह में सब निश्चित हो जाएगा और तब सबको पता चल जाएगा।

विचार अपने में सुंदर हैं कुछ भी गलत नहीं है। प्रत्येक चीज ठीक है यदि वह अपनी ठीक जगह पर है प्रत्येक चीज गलत हो जाती है अगर वह गलत जगह पर रखी हो-तब वह कभी ठीक नहीं बैठती।

तुम्हारे साथ यही बात है हर चीज गलत है। जब तुम काम- भोग में होते हो, मन बीच में आ जाता है। जब तुम ध्यान करते हो कामवासना बीच में आ जाती है। जब तुम खाते हो मन बीच में आ जाता है। जब सोने जाते हो भोजन बीच में आ जाता है। सभी केंद्र अराजक होकर एक-दूसरे में मिल जाते हैं।

प्रत्येक केंद्र को शुद्ध रहने दो और प्रत्येक केंद्र को अपने ढंग से, अपने समय में कार्य करने दो। उसका अपना समय है और उसकी अपनी भावदशा है और अपनी ऋतु है उसे दूसरे केंद्रों में गति मत करने दो।

और मन से आरंभ करो क्योंकि वह बहुत उपद्रवी है, बहुत शोर मचाने वाला है, और वह सबकी सीमाओं में घुस जाता है और वह सब पर प्रभावी हो जाना चाहता है। उसकी मालकियत को हटाओ। प्रत्येक इंद्रिय शुद्ध होनी चाहिए और उसे अपने अधिकार क्षेत्र में आनंदित होना चाहिए। मन को बीच में आने की कोई आवश्यकता नहीं। फिर जब तुम मन का आनंद लोगे कोई केंद्र उसमें बाधा नहीं डालेगा। फिर कोई समस्या नहीं होगी क्योंकि दूसरे सभी केंद्र बहुत निर्दोष हैं। तुम्हारा मन चालाक है- और तुम चालाक मन की सुनते हो तुम निर्दोष इंद्रियों की कभी नहीं सुनते। मन चतुर है हिसाबी-किताबी है। दूसरी सारी इंद्रियां सरल-सीधी हैं। वे मन के साथ लड़ नहीं सकतीं क्योंकि मन बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ है और सारी इंद्रियां सामान्य जनता हैं। कामवासना सीधी-सरल है मन निरंतर उसकी निंदा करता है। काम-केंद्र इसके सिवाय और कुछ नहीं कर सकता है फिर ऊर्जा गलत रास्तों पर चली जाती है।

प्रत्येक इंद्रिय का उसके क्षेत्र में मजा लो। और जब तुम उसका भोग कर रहे हो, तो वही हो जाओ- ताकि कहीं और जाने के लिए ऊर्जा बचे ही नहीं। सारी ऊर्जा उसमें लग जाए। उस समय कोई मन नहीं होता, उस समय कोई शरीर नहीं होता; तुम काम-ऊर्जा हो जाते हो। जब तुम्हें भूख लगी है, भूख ही हो जाओ इस तरह से खाओ जैसे कि तुम्हारे शरीर की प्रत्येक कोशिका भूखी है और भोजन को ग्रहण कर रही है, और उसे रस लेने दो। और जब तुम विचार -करना चाहते हो तब एक पेड़ के नीचे बैठ जाओ, अपनी आंखें बंद कर लो-विचारों का आनंद लो। विचारों के साथ कुछ भी गलत नहीं है। उनका फूलों की खिलावट सुंदर खिलावट की भांति, एक महाकाव्य की भांति रस लो। फिर एक स्पष्टता आती है, फिर तुम्हारा पानी गंदा नहीं है फिर मिट्टी बैठ जाती है और तुम चीजों के आर-पार देख सकते हो।

अगर तुम उस एक 'पथ' पर चलना चाहते हो,

तो इंद्रियों और विचारों के जगत से भी घृणा मत करो।

वास्तव में उन्हें पूर्ण रूप से स्वीकार करना वास्तविक संबोधि के

तुम जो कुछ भी हो अगर तुम उसे पूरी तरह से स्वीकार कर सको, तो यही संबोधि है। यह मत सोचो कि जब तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हो तुम प्रकाश और रहस्यपूर्ण दृश्य देखोगे- सब व्यर्थ की बकवास है। वह मार्ग पर ही घटता है लेकिन वह मन का ही हिस्सा है परम सत्य का बिलकुल भी नहीं। तुम्हारे सारे प्रकाश और अनुभव मन से ही आते हैं।

ऊर्जा शरीर में गति करती है सूक्ष्म इंद्रियां वहां छिपी हैं। वे सक्रिय हो जाती हैं और तुम कई चीजों को अनुभव कर सकते हो। उनमें कुछ बुराई नहीं है, आनंद लो लेकिन ऐसा मत समझो कि वह बुद्धत्व है।

संबोधि केवल उस क्षण में घटित होती है जब तुम्हारे भीतर कोई शिकायत नहीं होती, जब तुम कहीं नहीं जा रहे हो, कोई वासना नहीं कोई निंदा नहीं, कोई मूल्यांकन नहीं। तुम सिर्फ होते हो और पूर्ण स्वीकृति के साथ होते हो। उसी क्षण बुद्धत्व वहां है।

बुद्धत्व बहुत साधारण बात है। यह कुछ असाधारण नहीं यह कुछ विशेष नहीं- क्योंकि विशेष तो अहंकार की खोज है। यह बिलकुल साधारण है। कोई मांग नहीं किसी चीज के लिए कोई ललक नहीं, कोई पकड़ नहीं। बस तुम हो और तुम प्रसन्न हो- अकारण प्रसन्न हो।

इसे याद रखो। प्रसन्नता और आनंद में यही अंतर है। तुम्हारी प्रसन्नता सकारण है। कभी कोई मित्र आ गया है और तुम प्रसन्न हो। मित्र के साथ तुम कितनी देर प्रसन्न रह सकते हो? कुछ घड़ियां। और फिर तुम तब प्रसन्न होओगे जब वह चला जाएगा। यह किस प्रकार की प्रसन्नता है? यह सकारण है और कारण समाप्त हो गया है। देर- अवेर तुम तंग हो जाते हो और प्रसन्नता गायब हो जाती है। आनंद अकारण प्रसन्नता है। बस तुम जैसे हो, तुम प्रसन्न हो। इस संबंध में कुछ कहने को नहीं है कि तुम क्यों प्रसन्न हो।

सारे मामले को देखो। तुम कभी नहीं सोचते कि तुम क्यों दुखी हो- तुम सिर्फ दुखी हो। जब भी तुम प्रसन्न होते हो तुम देखना शुरू कर देते हो, 'मैं प्रसन्न क्यों हूं?' दुख स्वाभाविक प्रतीत होता है सुख कुछ अस्वाभाविक सी बात लगती है कभी-कभार घटित होने वाली। दुख तुम्हारी स्थिति है और सुख तुम्हारी अभिलाषा है।

एक बुद्धरुष वैसे ही बस सुखी है जैसे तुम बस दुखी हो। बस प्रसन्न और कभी दुखी नहीं होता। जब कभी जूता काटता है वह केवल उसे ठीक कर लेता है। यह दुख नहीं है, यह बस शारीरिक पीड़ा है- एक असुविधा लेकिन दुख नहीं। वह बस पैर को ठीक से रखता है- वह जूता बदलता है या वह जूते के बिना चलता है।

बुद्धपुरुष को भी असुविधा हो सकती है, लेकिन दुख कभी नहीं होता- क्योंकि दुख कैसे हो सकता है- जब उसके आनंद का कोई कारण नहीं है तो दुख असंभव है। अकारण, तुम उसे नष्ट नहीं कर सकते हो। अकारण, तुम उसे कैसे छीन सकते हो? अकारण, इसका कोई विपरीत नहीं है। यह आनंद है।

हिंदुओं के पास एक शब्द है, 'आनंद' दिव्य आशीष अकारण आनंद। जिसका कोई कारण नहीं है, कोई आधार नहीं है। इसीलिए जब कोई आनंदित होगा दुनियावाले सोचेंगे कि वह पागल हो गया है। वे पूछेंगे 'तुम इतने आनंदित क्यों हो? तुम क्यों हंस रहे हो?' जैसे कि हंसना कोई अपराध हो। और अगर तुम कहते हो 'मैं ऐसे ही हंस रहा हूं। हंसना बहुत अच्छा है।' वे समझ नहीं सकते। उनको हंसी के लिए भी तनाव चाहिए- और सभी चुटकुलों का यही आधार है।

जब कोई चुटकुला सुनाया जाता है तो तुम क्यों हंसते हो? तुम्हारे भीतर क्या घटित होता है? चुटकुला क्या करता है? वह एक तनाव पैदा करता है। कहानी आगे बढ़ती जाती है और तुम्हारे भीतर और तनाव बढ़ता जाता है और तुम कल्पना नहीं कर सकते कि क्या होने वाला है। फिर अचानक एक मोड़ आता है और बात ऐसी है कि तुमने कभी सोचा भी न था कि ऐसा घटित होगा।

अगर तुम अपेक्षा कर सकते हो इसका अर्थ है कि यदि तुम्हें चुटकुले का पता है, तब कोई हंसी नहीं आएगी। तुम बस कह दोगे कि चुटकुला कुछ भी नहीं है, क्योंकि तनाव बना ही नहीं। जब तुम्हें चुटकुला पता नहीं होता है तो एक तनाव बनता है तुम प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम सावधान हो जाते हो- क्या होने वाला है? और फिर सारी बात इस ढंग से मोड़ लेती है कि जिसकी तुमने आशा नहीं की थी। तनाव समाप्त हो जाता है, तुम हंस पड़ते हो। यह हंसी तनाव निकल जाने के कारण आती है।

काम-कृत्य तुम्हें क्यों सुख देता है? क्योंकि यह एक तनाव है। तुम भोजन करते हो तुम श्वास लेते हो ऊर्जा निर्मित होती है और जीवन हमेशा तुम्हें तुम्हारी आवश्यकता से अधिक देता है। जीवन अतिशय है जीवन ऐश्वर्य है पूर्ण ऐश्वर्य है। तुम्हारी जरूरतों से इसका कोई संबंध नहीं यह हमेशा तुम्हें तुम्हारी जरूरत से ज्यादा देता है।

वह अतिरिक्त ऊर्जा शरीर में संचित हो जाती है-वही काम-ऊर्जा है। जब वह इकट्ठी हो जाती है तुम्हारे शरीर में एक तनाव पैदा हो जाता है। जब तनाव बनता है और तब तुम्हें उसे मुक्त करना पड़ता है। जब तनाव समाप्त हो जाता है तुम प्रसन्नता का, विश्राम का अनुभव करते हो, तुम सो पाते हो।

लेकिन युक्ति तनाव में है। इसलिए अगर तुम बहुत अधिक काम- भोग करते हो और तनाव निर्मित नहीं होता तो सब-कुछ फीका हो जाता है – चुटकुला नीरस हो जाता है – कोई प्रसन्नता नहीं होती। अगर तुम बहुत अधिक काम- भोग करोगे तो तुम उससे तंग आ जाओगे क्योंकि वह काम- भोग पर निर्भर नहीं है वह निर्मित तनाव पर निर्भर है।

अगर तुम काम- भोग को प्रतिदिन की बात बना लेते हो, और ऊर्जा का अतिरेक नहीं है तब काम- भोग के बाद तुम प्रसन्न होने के बजाय दुखी हो जाओगे, निराश हो जाओगे। काम- भोग का चरम उत्कर्ष नहीं हो सकता क्योंकि उसके लिए शरीर को जितनी ऊर्जा की आवश्यकता होती है, उससे अधिक ऊर्जा चाहिए। ऊर्जा का अतिरेक चाहिए ताकि सारा शरीर उस से आदोलित हो उठे।

स्मरण रहे दमित समाजों के लोग काम- भोग का बहुत रस लेते थे क्योंकि अपनी खुद की पत्नी से मिलना भी बहुत कठिन था। दूसरे की पत्नी से मिलना तो लगभग असंभव ही था- अपनी खुद की पत्नी को मिलने के लिए भी बहुत सी बाधाओं को पार करना पड़ता था।

भारत में तुम दिन के प्रकाश में अपनी पत्नी को देख नहीं सकते थे। इतना बड़ा परिवार, सौ लोगों का इकट्ठे रहना, इकट्ठे सोना। कभी-कभी तो अपनी पत्नी से प्रेम करने के लिए भी तुम्हें कई प्रबंध करने पड़ते थे। वह बात सुंदर थी एक प्रकार से सुंदर क्योंकि तनाव इतना होता था कि उत्तेजना शिखर पर होती थी और फिर एक विश्राम की घाटी आती थी।

पश्चिम में सेक्स बिलकुल नीरस हो गया है। अब पश्चिम में किसी का कामवासना में रस नहीं रहा- वहां यह बहुत अधिक है। संगृहीत होने से पहले ही तुम ऊर्जा को फेंक देते हो। तुम्हारे पूरे जीवन में इसी भांति सुख घटता है तनाव बनाओ फिर विश्राम में जाओ।

आनंद वैसा नहीं है। वह अकारण है। वह तनाव और उससे मुक्ति नहीं है उसका संबंध तनाव और उससे मुक्ति से बिलकुल नहीं है- वह बस प्रसन्नता है जो तब आती है जब तुम्हें अस्तित्व के साथ अच्छी अनुभूति होती है। जब तुम्हें लगता है कि तुम स्वीकार करते हो। जब तुम्हें लगता है कि तुम स्वीकार करते हो तब तुम अचानक पाते हो कि पूरा अस्तित्व तुम्हें स्वीकार करता है। तब तुम पूरे अस्तित्व को आशीष दे सकते हो और पूरा अस्तित्व तुम्हें आशीष देता है। वह अकारण है। वह छीना नहीं जा सकता। तुम मुझे दुखी नहीं कर सकते। तुम अधिक से अधिक मेरे लिए असुविधा पैदा कर सकते हो बस इतना ही।

‘ आनंद ’ का कोई विपरीत नहीं है। वह बिलकुल अकारण है। इसी कारण यह शाश्वत हो सकता है। क्योंकि एक सकारण वस्तु शाश्वत नहीं हो सकती- जब कारण मिट जाता है, परिणाम भी मिट जाएगा।

वास्तव में उन्हें रूप से स्वीकार करना वास्तविक संबोधि के उँ व्यक्ति किसी लक्ष्य के लिए प्रयास नहीं करता,

परंतु व्यक्ति स्वयं को ही बेड़ियां डाल लेता है।

तुम्हारे सभी लक्ष्य तुम्हारे लिए बंधन बन जाते हैं- वे कारावास बन जाते हैं तुम उसके कटघरे में बंद हो जाते हो। और फिर तुम कष्ट भोगते हो, और फिर तुम पूछते हो ‘मुक्त कैसे हों?’ लक्ष्यों से मुक्ति पा लो और तुम मुक्त हो जाओगे! और कुछ भी नहीं करना। मंजिल मत बनाओ, तब कोई कारावास नहीं है।

धर्म सत्य, नियम एक है अनेक नहीं।

भेदभाव अज्ञानी व्यक्ति की पकड लेने की आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होता है।

भेदभाव करने वाले मन के द्वारा ‘ मन ’ की खोज सभी गलतियों में सबसे बड़ी है।

जब तुम लक्ष्य बनाते हो तो तुम क्या कर रहे हो? कौन लक्ष्य बनाता है? मन इसे बनाता है और तब मन उस तक पहुंचने का मार्ग खोजता है। तब मन तरकीबों, विधियों, रास्तों को खोजता है। और फिर तुम उन रास्तों का विधियों का अनुसरण करते हो। तुम क्या कर रहे हो? तुम मन के पीछे चल रहे हो? तुम एक चक्र में घूम रहे हो।

लक्ष्य मन के द्वारा बनाया जाता है साधन मन द्वारा बनाए जाते हैं और मन ही तुम्हारा मार्गदर्शन करता है। तुम मन से अ-मन तक कैसे पहुंच सकते हो?

और मन तनावग्रस्त है क्योंकि मन विश्राम में हो नहीं सकता। यह विपरीत पर निर्भर है। यह अतियों में जाने के लिए बाध्य है। यह निंदा कर सकता है यह प्रशंसा कर सकता है लेकिन पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं कर सकता है। और पूर्णता ही लक्ष्य है- यह केवल स्वीकार करने से ही आ सकती है।

मन स्वीकार नहीं कर सकता यह इनकार कर सकता है। और जब यह इनकार करता है, इसे बहुत अच्छा लगता है अहंकार के कारण तुम इनकार करने वाले हो। जब यह स्वीकार करता है अहंकार को बहुत बुरा लगता है-क्योंकि जब कोई इनकार नहीं, लड़ाई नहीं संघर्ष नहीं कहीं जाने को नहीं तब तुम करोगे क्या? जैसे कि केवल यहीं और अभी होना व्यर्थ है। आनंद कहीं और घटित हो रहा है और तुम यहां क्या कर रहे हो?

मैंने सुना है एक बार दो आलसी व्यक्ति एक पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे। वातावरण शांत और रमणीय था। पास ही एक झरना बह रहा था और सुंदर शीतल हवा चल रही थी। एक आलसी ने दूसरे से कहा ठीक इस समय अगर एक व्यक्ति के पास पचास हजार डॉलर होते मैं तब भी उसके साथ अपनी जगह न बदलता।

दूसरे ने कहा और अगर उसके पास एक लाख डॉलर हुए तब?

पहले ने कहा फिर भी नहीं।

दूसरा फिर भी बोलता चला -गया और उसने कहा माना अगर उसके पास दस लाख डॉलर हुए तो?

तब पहला उत्सुक हो गया। वह उठ कर बैठ गया और बोला अब बात अलग है। अब तुम असली रोटी की बात कर रहे हो।

मन का यही ढंग है कल्पना सपना और सपना असली रोटी बन जाता है। वहां कोई भी नहीं है लेकिन अब वहां उत्तेजना है।

किसी चीज के बारे में विचार करते हो और जल्दी ही तुम उत्तेजित हो जाते हो। नग्न स्त्री का एक चित्र और तुम उत्तेजित हो जाते हो इसीलिए दुनिया में इतना अक्षील साहित्य है। वह बस एक चित्र है- कागज पर कुछ रेखाएं और रंग, और कुछ नहीं है। वहां कोई नहीं है और तुम भलीभांति जानते हो लेकिन तुम उस चित्र को दूसरों से छिपाओगे, और जब तुम अकेले हो तो उस पर ध्यान लगाओगे। क्या कर रहे हो तुम? – असली रोटी।

मन बस कल्पना है, लेकिन तुम उत्तेजित हो जाते हो। और एक बार तुम उत्तेजित हो गए, तो मन ने तुम्हें कुछ बेच दिया। और फिर तुम दुखी रहोगे क्योंकि मन, खयाल बेच सकता है, लेकिन उसके पास देने के लिए माल नहीं है। यही समस्या है देने के लिए उसके पास सामग्री नहीं है वह तुम्हें खयाल बेच सकता है- एक अच्छा विक्रेता है, परंतु आपूर्ति के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है। और जब तक तुम उसके पास पहुंचो और पूछो वह आपूर्ति के लिए तुम्हें कुछ और पकड़ा देगा।

मैंने सुना है एक विक्रेता अपने मालिक के पास वापस आया और बोला मैं मुश्किल में फंस गया हूं। वह जमीन जो हमने बेची थी अब वह एक समस्या बन गई है। वह आदमी मुझे फोन किए जा रहा है क्योंकि उस सारी जमीन पर छह फुट पानी भरा हुआ है और वह कहता है यह कैसी जमीन तुमने मुझे दी है? और उस पर इमारत कैसे बनाई जा सकती है? तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं उसके पैसे लौटा दूं और सारा सौदा रह कर दूं?

मालिक ने कहा तुम कैसे विक्रेता हो? दो मोटर-बोट ले जाओ और उस आदमी को बेच दो!

विक्रेता को तो चीजें बेचने से मतलब है। अगर इससे काम नहीं बना कुछ और सही और अगर व्यक्ति पहली बार उत्तेजित हो गया था तो दूसरी बार क्यों नहीं होगा? तुम्हें केवल तरकीबों की जरूरत है।

मन तुम्हें भविष्य की योजनाएं बेचता रहता है। वह तुम्हें आपूर्ति नहीं कर सकता क्योंकि भविष्य कभी आता नहीं है। और जब भी वह आता है, वह हमेशा वर्तमान होता है। अप्रिर्त वर्तमान में है और विक्रेता भविष्य की बात करता है। आपूर्ति यहां है, और मन आशा सपने, कल्पना के संदर्भ में सोचता है।

जैसे तुम हो और जैसा संसार है उस वास्तविकता को स्वीकार करो। कुछ भी बदलने की कोशिश मत करो- और वहीं बुद्धत्व है। और फिर सभी कुछ बदल जाता है, क्योंकि अब तुम वही नहीं रहे। अगर तुम कुछ बदलते हो तो कुछ नहीं बदलेगा। अगर तुम स्वीकार करते हो, तो सब रूपांतरित हो जाता है। वह अज्ञात प्रकाश से आलोकित हो उठता है। अचानक एक ऐसा संगीत सुनाई देता है जो तुमने पहले कभी नहीं सुना है जो सौंदर्य छिपा था वह प्रकट हो जाता है। एक द्वार खुलता है अंधकार विलीन हो जाता है एक सूर्य उदित हो गया है।

लेकिन वह तभी घटता है जब तुम अपने साथ सुखपूर्वक होते हो। वह एक घटना है वह तुम्हारे प्रयासों का परिणाम नहीं है। और अप्रसन्न मत होओ क्योंकि यह तुम्हारे प्रयासों का परिणाम नहीं है तब तुम क्या कर सकते हो? प्रसन्न होओ क्योंकि यह तुम्हारे प्रयत्नों का प्रश्न नहीं है। तुम इसी क्षण इसे प्राप्त कर सकते हो। इसे स्थगित करने की आवश्यकता नहीं है।

समझ ही स्वीकृति है। स्वीकृति ही बुद्धत्व है। बौद्ध- और यह सोसान बौद्ध है बुद्ध का अनुयायी है-उनके पास स्वीकृति के लिए एक विशेष शब्द है। वे इसे ' तथाता ' कहते हैं। इसका अर्थ है कोई शिकायत नहीं। इसका

अर्थ है. कोई निंदा नहीं। इसका अर्थ है. कोई प्रशंसा नहीं। इसका अर्थ है चीजें जैसी हैं वैसी हैं। ऐसा है पथ-तथाता। और व्यक्ति तथाता में रहता है। जो भी होता है, वह इसे घटने देने के लिए तैयार है। जहां जीवन ले जाता है, वह इसके साथ जाता है। जो भी होता है ठीक ही होता है। तुम संघर्ष पैदा नहीं करते, तुम उसके साथ हो। तुम बहते हो, तैरते नहीं हो- और तुम धारा के विपरीत कभी नहीं तैरते हो। तुम बस धारा के साथ बहते हो, और धीरे- धीरे तुम्हें यह भी पता नहीं रहता कि कौन कौन है, क्या क्या है, कौन धारा है और कौन है जो धारा का अंग हो गया है। तुम प्रवाह बन जाते हो। यही बुद्धत्व है।

आज इतना ही।

## सभी स्वप्न समाप्त हो जाने चाहिए

सूत्र:

शांति और अशांति भ्रांति के परिणाम है;

बुद्धत्व के साथ कोई पसंदगी और नापसंदगी नहीं होती। सभी द्वैत अज्ञानपूर्ण निष्कर्ष से आते हैं।

वे ऐसे हैं जैसे कि सपने या आकाश-कुसुम;

उन्हें पकड़ने की चेष्टा करना मूढता है।

लाभ और हानि, उचित और अनुचित,

अंत में ऐसे विचार तत्काल समाप्त कर देने चाहिए।

अगर आंख कभी नहीं सोती,

तो स्वभावतः सारे स्वप्न समाप्त हो जाएंगे।

अगर मन कोई भेद नहीं करता,

दस हजार चीजें जैसी वे हैं? एक ही तत्व की हैं। इस एक तत्व के रहस्य को समझ लेना

सारे बंधनों से मुक्त हो जाना है।

जब सभी वस्तुएं समान रूप से देख ली जाती हैं तो समयातीत आत्मतत्व तक पहुंचना हो जाता है इस कारणरहित संबन्धरहित अवस्था में

कोई तुलनाएं या समानताएं संभव नहीं हैं।

मन की केवल एक सामर्थ्य है और वह है सपने देखना। और यह सपने देखने का क्रम तब भी चलता रहता है, जब तुम जाग रहे होते हो। वही कारण है कि सोसान या जीसस विश्वास नहीं करेंगे कि तुम कभी जागे हुए हो क्योंकि सपने की एक विशेषता है कि यह नींद में ही घटित हो सकता है।

पहले ये दो बातें समझ लेनी चाहिए मन सारे सपनों का स्रोत है लेकिन सपना केवल नींद में ही आ सकता है। और अगर तुम दिन के चौबीस घंटे सपने देख रहे हो, तो एक बात बिल्कुल निश्चित है कि तुम गहरी नींद में हो। किसी भी क्षण आंख बंद करो और सपना वहां है र वह अंतर्धारा की तरह लगातार चलता रहता है। उस समय भी, जब तुम किसी कार्य में व्यस्त हो सभी बाहर के प्रयोजनों के हिसाब से तुम जागे हुए मालूम पड़ते हो लेकिन भीतर गहरे में सपनों की एक धारा लगातार बहती ही रहती है।

किसी भी क्षण, आंखें बंद करो और यह वहां है। तुम्हारे काम-धंधे से उसमें कोई बाधा नहीं आती। तुम बाजार में चलते हो कार चलाते हो तुम फैक्ट्री में ऑफिस में काम करते हो- यह चलता रहता है। तुम सो जाते हो, तब तुम्हें यह अधिक अनुभव होता है, क्योंकि अब तुम कुछ कर नहीं रहे, सारा ध्यान मन की ओर चला जाता है।

वह ठीक सितारों की भांति है। तुम दिन के समय आकाश में सितारों को देख नहीं सकते। वे वहीं हैं, क्योंकि वे कहां जा सकते हैं? लेकिन सूर्य के प्रकाश के कारण तुम उन्हें देख नहीं पाते। अगर तुम किसी गहरे कुएं

में दो सौ फुट नीचे चले जाओ वहां से तुम दिन के समय भी आकाश में सितारे देख सकते हो। वे वहां हैं लेकिन अत्यधिक प्रकाश के कारण तुम देख नहीं पाते। उन्हें प्रकट होने के लिए अंधकार की जरूरत है।

यही सपनों के साथ होता है सपने वहां दिन के समय में भी होते हैं अंधकार की आवश्यकता है ताकि तुम उन्हें देख सको। यह वैसे ही है जैसे तुम सिनेमा देखने जाओ। अगर दरवाजे खुले हों भले ही पिक्चर चल रही हो लेकिन तुम देख नहीं पाते। दरवाजे बंद कर दो कमरे में अंधेरा कर दो और तब तुम देख पाते हो।

सपने तुम्हारा सातत्य है और जब तक यह सातत्य न टूट जाए तुम जान नहीं सकते कि सत्य क्या है। प्रश्न यह नहीं है कि सत्य बहुत दूर है या निकट, प्रश्न यह है कि मन सपने में है या नहीं।

इसलिए बुनियादी समस्या यह नहीं है कि सत्य को कैसे खोजें तुम सपने देखने वाले मन के साथ खोज नहीं कर सकते; क्योंकि जो कुछ भी तुम्हारे सामने आएगा तुम्हारे सपने उस पर आरोपित हो जाएंगे। तुम्हारे सपने उस पर प्रक्षेपित होंगे तुम उसकी व्याख्या करोगे। तुम उसे वैसे नहीं देख पाओगे, जैसा कि वह है। तुम उसे अपने सपनों के अनुसार देखोगे तुम उसे झुठला दोगे। सत्य वहां है क्योंकि केवल सत्य ही हो सकता है। असत्य हो नहीं सकता।

तो इससे पहले कि हम सूत्र में प्रवेश करें एक और बात शंकराचार्य ने सत्य को तीन कोटियों में विभाजित किया है और उन कोटियों को समझना अच्छा है। एक कोटि सत्य की कोटि है। वह जो है। वास्तव में और कुछ संभव नहीं है; केवल सत्य है, और केवल सत्य ही हो सकता है।

दूसरी कोटि उसकी है जो असत्य है जो हो नहीं सकता। उसके होने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि असत्य कैसे हो सकता है? होने के लिए सत्य की आवश्यकता है। इसलिए असत्य की सत्ता ही नहीं है। सत्य की सत्ता है। फिर शंकराचार्य तीसरी कोटी पाते हैं उसे वह स्वप्न कहते हैं आभास भ्रम माया जो दिखाई तो पड़ता है लेकिन है नहीं।

इसलिए तीन कोटियां हैं। सत्य, जो है। अगर तुम्हारी आंखें स्वच्छ हैं बादलों से आच्छादित नहीं हैं अगर मन सपने नहीं देख रहा, तब केवल एक ही कोटि है सत्य। लेकिन अगर तुम्हारा मन सपने देख रहा है तब दो अन्य श्रेणियां सत्ता में आ जाती हैं। स्वप्न है एक विशेष अर्थ में क्योंकि तुम सपना देखते हो और एक दूसरे विशेष अर्थ में यह नहीं है क्योंकि यह किसी सत्य के समान नहीं है। रात तुम सपना देखते हो कि तुम सम्राट हो गए हो; सुबह तुम पाते हो कि तुम बस वही भिखारी हो। स्वप्न मिथ्या था, लेकिन स्वप्न था, इसलिए इसमें सत्य की गुणवत्ता है क्योंकि यह घटित हुआ। और उन घड़ियों में जब यह घट रहा था तुम्हें उसकी वास्तविकता पर पूरा विश्वास था नहीं तो वह उसी क्षण रुक गया होता।

अगर तुम्हें पता चल जाए कि मैं स्वप्न देख रहा हूं और यह मिथ्या है, तो स्वप्न भंग हो जाता है तुम जाग ही चुके हो। स्वप्न कुछ घंटों तक चलता रहा; उसमें सत्य की एक गुणवत्ता थी, कि उसका अस्तित्व था। लेकिन यह सत्य नहीं है क्योंकि सुबह तुमने पाया कि यह नहीं था। यह केवल एक खयाल, हवा में एक लहर आकाश में एक फूल-सत्य जैसा लगता था, लेकिन असत्य था।

सत्य की सत्ता है असत्य की सत्ता नहीं है और दोनों के बीच में स्वप्नों का संसार है-जिसमें दोनों के गुण हैं। और मन स्वप्नों का स्रोत है, इसलिए मन भ्रांति है। मन सारी माया का स्रोत है।

हो सकता है तुम सोचते होओ कि अगर तुम संसार को छोड़ दो और हिमालय चले जाओ तो तुम्हें सत्य उपलब्ध हो जाएगा। तुम गलत हो- क्योंकि तुम्हारा घर माया नहीं है तुम्हारी पत्नी माया नहीं है तुम्हारे बच्चे नहीं तुम्हारा मन माया है। और यह कैसे हो सकता है कि तुम मन यहां छोड़ जाओ और स्वयं हिमालय चले

जाओ? मन तुम्हारे भीतर है। अगर तुम उसे छोड़ सकते तो तुम उसे कहीं भी छोड़ सकते हो। अगर तुम उसे छोड़ नहीं सकते तो नहीं छोड़ सकते चाहे तुम हिमालय जाओ या न जाओ।

पत्नी बच्चे, घर संसार को माया, भ्रम कहा गया है लेकिन दूसरे अर्थ में-क्योंकि पत्नी का अस्तित्व है उसकी सत्ता है। वह अपने स्वयं के अधिकार से ब्रह्म है, वह सत्य है- पत्नी के रूप में नहीं बल्कि आत्मा के रूप में।

तुम्हारा मन उसकी व्याख्या पत्नी के रूप में करता है, 'वह मेरी पत्नी है।' तब एक स्वप्न निर्मित होता है। वह वहां है, बिलकुल सत्य तुम यहां हो बिलकुल सत्य और दोनों के बीच एक स्वप्न घटता है। तुम उसे अपनी पत्नी कहते हो, वह तुम्हें अपना पति कहती है। अब दोनों के बीच एक स्वप्न है और सपने हमेशा दुःस्वप्न बन जाते हैं। इसलिए अंत में सभी संबंध दुःस्वप्न बन जाते हैं क्योंकि तुम भ्रम को बहुत समय तक सहन नहीं कर सकते। भ्रम थोड़े समय के लिए हो सकता है; देर-अबेर उसे मिट ही जाना है। वह शाश्वत नहीं हो सकता, वह स्थायी नहीं हो सकता।

तुम एक स्त्री से प्रेम करते हो एक सपना निर्मित हो जाता है- लेकिन तुम कब तक सपना देख सकते हो? जैसे ही हनीमून समाप्त हुआ, उससे पहले ही-सपना चला जाता है। फिर तुम क्या करोगे? फिर तुम दिखावा करोगे क्योंकि अब तुम अपने स्वयं के वादों के गुलाम हो।

तुम ढोंग करोगे कि तुम अब भी प्रेम करते हो तुम दिखावा करोगे कि तुम अब भी सुंदर हो, तुम ऐसा दिखाओगे कि तुम्हारे जैसा और कोई नहीं है लेकिन अब यह सब आडंबर है। और जब तुम झूठा दिखावा करते हो और सपना टूट जाता है और तुम अब भी सपने को पास समहाले हुए हो वह बोझ बन जाता है एक दुःस्वप्न बन जाता है। इसीलिए तुम इतने दुख में जीते हो।

दुख और कुछ नहीं सिर्फ टूटे सपने टूटे इंद्रधनुष टूटे भ्रम भ्रांतियां हैं। और तुमने उनमें इतनी पूंजी लगाई है कि तुम इस सत्य को नहीं देख सकते कि वे प्रारंभ से ही सपने

बजाय सत्य को देखने के तुम जिम्मेवारी दूसरों पर डाल दोगे। तुम कहोगे 'इस पत्नी ने मुझे धोखा दिया है। वह इतनी अच्छी नहीं थी जितनी वह दिखाई देती थी। उसने मुझे धोखा दिया उसने अपनी असलियत को प्रकट नहीं किया।' और तुम यह कभी नहीं देखोगे कि यह बात बिलकुल नहीं है। तुम उसके इर्द-गिर्द एक सपना निर्मित कर रहे थे, और उस सपने के कारण तुम सच्चाई को देख नहीं पाए। वह भी तुम्हारे इर्द-गिर्द एक सपना बुन रही थी।

इसलिए जब कभी दो व्यक्ति प्रेम में पड़ते हैं तो वे दो नहीं चार व्यक्ति होते हैं एक प्रेमी एक प्रेमिका और उन दो के बीच एक वह प्रेमिका जो प्रेमी के मन की रचना है, और वह प्रेमी जो प्रेमिका के मन की रचना है। ये दो सपने हैं और ये दोनों तुम्हारे मन में चलते रहते हैं।

देर- अबेर जब स्वप्न टूट जाता है, तुम दो रह जाते हो चार नहीं। जब तुम दो हो तो कठिनाई होगी। फिर तुम दूसरे पर जिम्मेवारी डालना चाहोगे 'यह दूसरे के कारण है।' तुम फिर असली बात से चूक गए। उसका अर्थ है तुम फिर किसी दूसरी स्त्री के इर्द-गिर्द वही सपना बुनोगे क्योंकि तुम सोचोगे 'यह स्त्री मुझे धोखा नहीं देगी, और अब मैं भी अधिक समझदार हो गया हूं।'

लेकिन मन कभी समझदार नहीं होता। मन का सार ही मूर्खता है इसलिए मन कभी समझदार नहीं हो सकता। वह चालाक हो सकता है अपनी मूर्खता में चालाक लेकिन वह कभी बुद्धिमान नहीं हो सकता है। वह उसका स्वभाव नहीं है क्योंकि बुद्धिमत्ता तभी घटती है जब स्वप्न समाप्त हो जाते हैं। इसलिए अगर स्वप्न देखना मन की मूलभूत वास्तविकता है तब वह कभी समझदार नहीं हो सकता।

एक बुद्धपुरुष समझदार होता है क्योंकि अब वहां मन नहीं है। एक सोसान ही समझदार है क्योंकि अब वह अ-मन में जीता है, अब सभी स्वप्न समाप्त हो गए हैं। वह चीजों को वैसे ही देखता है जैसी वे हैं। तुम चीजों को वैसे ही कभी नहीं देखते जैसी वे हैं तुम उनमें अपनी भ्रांतियां मिला देते हो। और तुम सीधा-सीधा देखने से बहुत डरते हो क्योंकि तुम अचेतन रूप से भीतर गहरे में कहीं जानते हो कि चीजें वैसी नहीं हैं जैसे तुम उन्हें देखते हो।

लेकिन तुम सोचते हो कि अगर तुम चीजों की वास्तविकता को देखोगे तो मुश्किल हो जाएगी, वास्तविकता इतनी बोझिल होगी कि शायद तुम उसे सहन न कर सको। तुम उसे थोड़ा मीठा बनाने के लिए उसमें सपने मिला देते हो। तुम सोचते हो कि वह कड़वी है, उस पर शक्कर चढ़ा देते हो। सपनों में तुम किसी व्यक्ति पर शक्कर चढ़ा देते हो और तुम्हें लगता है कि व्यक्ति मीठा हो गया? नहीं तुम केवल स्वयं को धोखा दे रहे हो, किसी और को नहीं। इसीलिए इतना दुख है।

जो दुख घटित हुआ है यह तुम्हारे सपनों से हुआ है और व्यक्ति को इस घटना के प्रति सचेत रहना होता है। दूसरों पर जिम्मेदारी मत डालो नहीं तो तुम दूसरे सपने निर्मित कर लोगे देखो कि यह तुम ही हो जो प्रक्षेपित कर रहे हो। लेकिन देखना कठिन है।

सिनेमा हॉल में तुम परदे को देखते हो तुम पीछे कभी नहीं देखते- प्रक्षेपण यंत्र पीछे लगा है। वास्तव में फिल्म परदे पर नहीं है परदे पर केवल प्रकाश और छाया का प्रक्षेपण है। फिल्म ठीक पीछे है लेकिन तुम उसे कभी नहीं देखते और प्रोजेक्टर वहीं है। सारी बातों के पीछे तुम्हारा मन है, और मन प्रोजेक्टर है। लेकिन तुम सदा दूसरे को देखते हो क्योंकि दूसरा पर्दा है।

जब तुम प्रेम में होते हो व्यक्ति सुंदर प्रतीत होता है अतुलनीय सुंदर। जब तुम घृणा करते हो वही व्यक्ति कुरूपतम मालूम होता है। लेकिन तुम इस बात के प्रति कभी सचेत नहीं होते कि कैसे वही व्यक्ति कुरूपतम हो सकता है और वही सुंदरतम हो सकता है।

जब तुम प्रेम में होते हो वही व्यक्ति एक फूल एक गुलाब का फूल बिना कांटों के गुलाबों का उद्यान है। जब तुम उसे पसंद नहीं करते उससे घृणा करते हो, तब फूल विलीन हो जाते हैं, वहां केवल कांटे ही कांटे हैं, फिर वह एक उद्यान नहीं रह जाता- वह सबसे बदसूरत सबसे गंदा.. तुम उसे देखना भी न चाहोगे। और तुम कभी सचेत भी नहीं होते कि तुम कर क्या रहे हो। गुलाब इतनी जल्दी एक मिनट में ही कैसे विलीन हो जाते हैं? एक मिनट के अंतराल की भी आवश्यकता नहीं है। इस क्षण तुम प्रेम में हो और दूसरे क्षण घृणा में होते हो वही आदमी वही पर्दा और सारी कहानी बदल जाती है।

जरा गौर करो और तुम देख पाओगे कि बात इस व्यक्ति की नहीं है तुम कुछ प्रक्षेपित कर रहे हो। जब तुम प्रेम प्रक्षेपित करते हो तब व्यक्ति प्रिय लगता है जब तुम घृणा प्रक्षेपित करते हो तब व्यक्ति कुरूप लगता है। व्यक्ति नहीं है, तुमने असली व्यक्ति को बिलकुल देखा ही नहीं है। तुम मन की आंखों से सत्य को देख ही नहीं सकते।

अगर तुम वास्तव में जानना चाहते हो कि सत्य क्या है तो शास्त्र सहायता नहीं करेंगे। न ही हिमालय पर जाना सहायक सिद्ध होगा। केवल एक बात सहायता कर सकती है चीजों को मनरहित होकर देखना शुरू करो। फूल को देखो और मन को कुछ भी कहने की इजाजत मत दो। जरा उसे देखो। व्याख्या करने की पुरानी आदत के कारण यह कठिन है। तुम व्याख्या करते चले जाते हो और व्याख्याएं भी अलग-अलग होती हैं। व्याख्याएं मन पर निर्भर हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन ने न्यायालय से तलाक की मांग की। उसने न्यायाधीश से कहा अब असंभव हो गया है। प्रतिदिन जब मैं घर लौटता हूँ और पाता हूँ कि मेरी पत्नी ने किसी न किसी आदमी को अलमारी में छिपा कर रखा है।

न्यायाधीश भी बहुत हैरान हुआ और उसने कहा प्रतिदिन?

नसरुद्दीन ने कहा प्रतिदिन! और वही आदमी नहीं- हर रोज नया आदमी।

नसरुद्दीन को सांत्वना देने के लिए न्यायाधीश ने कहा तब तो तुम्हें बहुत चोट पहुंचती होगी। तुम घर आते हो थके-मांदे और तुम सोचते हो कि पत्नी प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करने के लिए और प्रेम से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी। और तुम घर आते हो और देखते हो प्रतिदिन एक नया आदमी अलमारी में छिपा हुआ है। यह बहुत बुरी बात है।

नसरुद्दीन ने कहा हां मैं बहुत व्यथित होता हूँ-क्योंकि मेरे पास अपने कपड़े टांगने के लिए कोई जगह नहीं होती।

तुम चीजों की कैसे व्याख्या करते हो वह तुम्हारे मन पर निर्भर है।

फिर नसरुद्दीन ने अपनी पत्नी को छोड़ दिया और भाग गया। वह पकड़ा गया, फिर उसे कोर्ट में लाया गया। न्यायाधीश ने कहा तुम भगोड़े हो और तुम्हें दंड मिलना चाहिए। नसरुद्दीन ने कहा रुकिए! कोई निर्णय लेने से पहले आप मेरी पत्नी को अवश्य देख लें। अगर आप मेरी पत्नी को देखेंगे तो कभी नहीं कहेंगे कि मैं भगोड़ा हूँ। आप केवल इतना ही कहेंगे, नसरुद्दीन, तुम कायर हो! और मुझे वह स्वीकार है। मैं भगोड़ा नहीं हूँ सिर्फ कायर हूँ। लेकिन पहले मेरी पत्नी को देख लें।

तुम चीजों को कैसे देखते हो यह तुम पर निर्भर करता है, वस्तुओं पर नहीं। जब तक तुम उस अवस्था तक नहीं पहुंचते जहां तुम व्याख्या करने वाले मन को गिरा दो और सीधा-सीधा देखो, तत्काल देखो कि मन तुम्हारा मध्यस्थ है। वह चीजों को विकृत रूप में तुम्हारे सामने प्रस्तुत करता है, वह चीजों को व्याख्याएं मिला कर तुम्हारे सामने लाता है। वे विशुद्ध नहीं हैं।

इसलिए सत्य तक पहुंचने का एक ही मार्ग है कैसे सीखो कि तुम्हारी दृष्टि में तत्परता हो मन की सहायता लेना कैसे छोड़ो। मन की मध्यस्थता ही समस्या है क्योंकि मन केवल सपने देख सकता है। लेकिन मन सुंदर सपने बुन सकता है और तुम बहुत उत्तेजित हो सकते हो। उत्तेजना के माध्यम से सपने वास्तविकता जैसे दिखाई देने लगते हैं।

अगर तुम बहुत उत्तेजित हो तो तुम नशे में हो फिर तुम अपने होश में नहीं हो। फिर तुम जो भी देखते हो वह सिर्फ तुम्हारा प्रक्षेपण है। और फिर उतने ही संसार हैं जितने मन हैं, क्योंकि प्रत्येक मन अपने ही संसार में रहता है। तुम दूसरों की मूढ़ता पर हंस सकते हो, लेकिन जब तक तुम अपने ऊपर हंसना शुरू नहीं करते तब तक तुम ताओ के प्रकृति के सत्य के व्यक्ति नहीं हो पाओगे। इसलिए क्या करें?

छोटी-छोटी चीजों में मन को बीच में न लाने की कोशिश करो। तुम एक फूल को देखते हो- तुम बस उसे देखो मत कहो ' सुंदर, कुरूप, ' तुम कुछ भी मत कहो। शब्दों को मत लाओ शब्दों में व्यक्त मत करो-केवल देखो। मन को असुविधा प्रतीत होगी, बेचैनी होगी। मन कुछ कहना चाहेगा, तुम मन से बस इतना कहो ' चुप हो जाओ, मुझे देखने दो। मैं मात्र देखूंगा।'

शुरू-शुरू में यह कठिन होगा लेकिन उन चीजों से शुरू करो जिनमें तुम अधिक उलझे नहीं हो। अपनी पत्नी को बिना शब्दों को बीच में लाए देखना कठिन होगा। तुम उसमें बहुत उलझे हो भावात्मक रूप से बहुत जुड़े हो। क्रोध में या प्रेम में, लेकिन बहुत उलझे हो।

उन चीजों को देखो जो असंबंधित हैं- एक चट्टान, एक फूल, एक वृक्ष, सूर्योदय, उड़ान भरता हुआ पक्षी आकाश में चलता हुआ बादल। उन चीजों को बस देखो जिनसे तुम बहुत जुड़े नहीं हो जिनसे तुम निर्लिप्त रह सकते हो जिनसे तुम तटस्थ रह सकते हो। असंबंधित चीजों से आरंभ करो और केवल तभी भावपूर्ण स्थितियों की ओर बढ़ो।

लोग पहले भावपूर्ण स्थितियों से शुरू करते हैं, वे असफल हो जाते हैं, क्योंकि यह लगभग असंभव है। या तो तुम अपनी पत्नी से प्रेम करते हो या घृणा करते हो, बीच की स्थिति नहीं है। अगर तुम प्रेम करते हो, तो तुम पागल हो अगर तुम घृणा करते हो, तो तुम पागल हो- दोनों स्थितियों में शब्द बीच में आएंगे। लगातार कुछ कहने के इतने अभ्यास के कारण शब्दों को न आने देना कठिन है लगभग असंभव है।

एक दिन मैं सुबह मुल्ला नसरुद्दीन के घर गया। जब मैं वहां पहुंचा, वे दोनों चाय पी रहे थे। पत्नी ने कहा। प्रियतम रात को जब तुम नींद में थे तुम मेरे बारे में बहुत ही अप्रिय बातें कह रहे थे।

नसरुद्दीन ने मेरी ओर देखा और कहा? कौन कहता है मैं नींद में था? मैं जागते हुए नहीं कह सकता हूं इसीलिए मैं सोने का बहाना कर रहा था।

नींद में भी या जागते हुए जब तक तुम भावात्मक रूप से अत्यधिक उलझे हो तो मन को एक तरफ रख देना कठिन है। यह बीच में आएगा। इसलिए पहले हल्की स्थितियों को देखो। जब तुम्हें ऐसा एहसास हो कि ही तुम कुछ विशेष चीजों को मन को बीच में लाए बिना देख सकते हो, तब घनिष्ठ संबंधों के साथ प्रयत्न कर सकते हो।

धीरे- धीरे व्यक्ति कुशल हो जाता है। यह बिलकुल तैरने जैसा है। शुरू-शुरू में तुम डरते हो और तुम विश्वास ही नहीं कर सकते कि तुम कैसे बचोगे। और तुम इतने लंबे समय से मन के साथ काम करते आ रहे हो तुम सोच भी नहीं सकते कि तुम मन के बिना एक क्षण भी जी सकते हो। लेकिन प्रयास करो।

और जितना तुम मन को एक तरफ रखते हो उतना अधिक प्रकाश तुम पर घटित होगा, क्योंकि जब सपने नहीं होते द्वार खुले होते हैं खिडकियां खुली होती हैं, और आकाश तुम तक पहुंचता है और सूर्य उदय होता है, और यह ठीक हृदय तक आता है, प्रकाश तुम तक पहुंचता है। जैसे जैसे सपने और- और कम होने लगते हैं, तुम सत्य से और-और परिपूरित होने लगते हो।

और जब तुम जागे हुए हो, अगर सपने दिखाई देना बंद हो जाते हैं, तो धीरे- धीरे जब तुम नींद में होते हो, तो भी सपने दिखने बंद हो जाते हैं क्योंकि सपना एक अटूट चक्र है। अगर यह कहीं से टूट जाता है तो धीरे- धीरे सारा घर विलीन हो जाता है। तुम एक ईंट बाहर निकालते हो और पूरे मकान की खंडहर हो जाने की शुरुआत हो चुकी होती है।

अगर दिन के समय तुम चीजों को बिना सपनों के देख सको तो रात को भी कम से कम सपने दिखाई देंगे क्योंकि तुम्हारी रात दिन के प्रतिबिंब के सिवाय और कुछ नहीं, उसी का सातत्य है। जब दिन भिन्न होता है तो रात भी भिन्न हो जाती है। जब तुम जागे हुए हो और जागने से अभिप्राय है कि जब तुम सपने नहीं देख रहे, इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम आंखें खोल कर बैठे हो...।

जीसस अपने शिष्यों से निरंतर कहते हैं ' जागो!' क्या वे उनके सामने हमेशा सोए रहते थे, लगातार? क्योंकि वे प्रतिदिन कहते हैं ' जागो!' बुद्ध प्रतिदिन अपने शिष्यों को उपदेश देते हैं ' जागो!' क्यों? उनकी आंखें खुली थीं वे तुम्हारी ही तरह सतर्क थे लेकिन बुद्ध और जीसस निरंतर कहते हैं ' जागो!' उनका अभिप्राय है, ' सपने मत देखो, बस यहां होओ। कहीं और मत जाओ। स्मृतियों में अतीत में तुम सपने देखते हो; और तुम सपने देखते हो भविष्य में, कल्पना में। यहीं और अभी होओ- केवल तभी सपने नहीं होते।

वर्तमान में कोई सपना नहीं होता है। वर्तमान में कोई मन नहीं होता है। वर्तमान में तुम होते हो और सत्य होता है। और तुम्हारे और सत्य के बीच कोई अंतराल नहीं होता- क्योंकि दोनों सत्य हैं और बीच में कोई सीमा नहीं होती। तुम सत्य में पिघल जाते हो और सत्य तुम में द्रवित हो जाता है। तुम ब्रह्म हो जाते हो और ब्रह्म तुम हो जाता है। स्वप्न देखने की प्रक्रिया ने तुम्हारे चारों ओर घेरा बंदी कर रखी है बहुत अदृश्य लेकिन सूक्ष्म, शक्तिशाली...।

अब इस सूत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न करो:

शांति और अशांति भ्रांति के परिणाम है;

बुद्धत्व के साथ कोई पसंदगी और नापसंदगी नहीं होती।

तुम क्यों पसंद करते हो और तुम क्यों नापसंद करते हो? ऐसा कैसे होता है कि कोई विशेष वस्तु तुम्हें अच्छी लगती है और कोई वस्तु तुम्हें अच्छी नहीं लगती? यह विभाजन कैसे होता है?

क्या कभी तुमने पसंदगी और नापसंदगी की प्रक्रिया में प्रवेश किया है? यह प्रवेश करने योग्य है। तुम कहते हो ' मैं इस व्यक्ति को चाहता हूं और उस व्यक्ति को नहीं चाहता हूं।' क्यों? और अचानक एक दिन तुम इस व्यक्ति को पसंद नहीं करते हो और उस व्यक्ति को पसंद करने लगते हो। क्यों? प्रक्रिया क्या है? तुम क्यों किसी व्यक्ति को पसंद करते हो?

तुम एक व्यक्ति को पसंद करते हो अगर वह तुम्हारे अहंकार को पुष्ट होने देता है! अगर वह व्यक्ति पर्दा बन जाता है और तुम्हें स्वप्न देखने में सहायता करता है, तो तुम उस व्यक्ति को पसंद करते हो। तुम उस व्यक्ति को पसंद करते हो जो तुम्हारे सपनों के साथ समायोजित हो जाता है। तुम उस व्यक्ति को पसंद नहीं करते अगर तुम्हारे सपनों के साथ उसका समायोजन ठीक नहीं बैठता अगर वह तुम्हें सपने देखने की अनुमति नहीं देता। बल्कि इसके विपरीत वह खलल डालता है। वह फिट नहीं बैठता है वह पर्दे का काम नहीं करता है। वह निष्क्रिय नहीं है वह सक्रिय हो जाता है- तुम पसंद नहीं करते। तुम निष्क्रिय पर्दे को पसंद करते हो ताकि तुम जो भी सपना देखो दूसरा उसमें बस तुम्हारी मदद करे।

गुरजिएफ के महान शिष्य ऑस्पेस्की ने अपनी पुस्तक ' इन सर्च ऑफ दि मिरेकुलस ' अपने गुरु को इन शब्दों के साथ समर्पित की है ' उस व्यक्ति को जिसने मेरे सारे स्वप्न नष्ट कर दिए।' लेकिन तुम उस व्यक्ति को पसंद नहीं करोगे जो तुम्हारे सारे सपने तोड़ दे। बल्कि ऑस्पेस्की को भी गुरजिएफ को छोड़ देना पड़ा और अंतिम वर्षों में वह फिर कभी उसे मिलने नहीं आया। वह स्वयं अपने तौर पर काम करने लगा। अंत में वह गुरजिएफ के शत्रु के रूप में मरा।

ऑस्पेस्की जैसे सजगता वाले व्यक्ति को भी जो यह अनुभव कर सका कि यह व्यक्ति सपनों को नष्ट करता है छोड़ कर जाना पड़ा। चाहे तुम्हें यह अच्छा न लगे... लेकिन जब कोई व्यक्ति वास्तव में तुम्हारे सपने नष्ट ही करता चला जाए, तो तुम्हें लगता है कि यह आदमी दुश्मन है।

एक असली सदगुरु सदा एक शत्रु की भांति प्रतीत होता है, और यही कसौटी है। झूठा गुरु हमेशा तुम्हें सपने देखने में मदद करता है वह तुम्हारे सपनों में कभी खलल नहीं डालता। बल्कि इसके विपरीत वह तुम्हें सांत्वना देता है नींद की दवा देता है। वह तुम्हें तसल्ली देता है तुम्हें शांत करता है। उसके उपदेश सुंदर लोरी के समान होंगे। वह तुम्हारे चारों ओर गीत गाएगा ताकि तुम अच्छी नींद सो सको, बस इतना ही।

लेकिन असली सदगुरु खतरनाक है। उसके निकट जाना खतरे से भरा है। तुम खुद जोखिम उठा कर जा रहे हो क्योंकि वह तुम्हें सपने नहीं देखने दे सकता और वह सपने देखने में तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता क्योंकि तब सारा उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। वह नष्ट करेगा। और सपने तुम्हारे हृदय के बहुत निकट हैं। तुम सोचते हो, तुम्हारे सपने तुम्हारा हृदय हैं और जब स्वप्न नष्ट होते हैं तो तुम्हें लगता है कि तुम्हें ही नष्ट किया जा रहा है। यह ऐसा है जैसे कोई तुम्हारी हत्या कर रहा हो। हिंदू इस बात के प्रति सजग रहे हैं इसलिए वे कहते हैं एक असली गुरु मृत्यु के समान है।

जब तुम किसी सदगुरु के पास जाते हो तो तुम मृत्यु के पास जा रहे हो। तुम्हें मरना ही पड़ेगा, केवल इसलिए कि जब तक तुम मरते नहीं तुम्हारा पुनर्जन्म नहीं हो सकता। जब तुम्हारे सपने नष्ट हो जाते हैं सत्य अस्तित्व में आता है सत्य प्रकट हो जाता है।

तुम एक व्यक्ति को पसंद करते हो, क्योंकि वह तुम्हारे अहंकार का समर्थन करता है। तुम एक लड़की को पसंद करते हो क्योंकि वह कहती है तुम पूर्ण पुरुष हो।

एक बार मैंने दो युवा प्रेमियों को बात करते सुना। वे समुद्र के निकट बैठे थे और बड़ी बड़ी लहरें उठ रही थीं और गिर रही थीं। और लड़के ने कहा: सुंदर लहरों उठती रहो, उठती रहो और- और बड़े और-और बड़े और-और बड़े आकार में। और वे और- और बड़ी से बड़ी होती गईं।

और लड़की ने कहा आश्चर्यजनक! समुद्र तुम्हारी आशा मानता है।

तुम ऐसे व्यक्ति को पसंद करोगे। और अगर कोई तुम्हारे अहंकार की सहायता करता है तो तुम बदले में उसके अहंकार की सहायता करने के लिए तैयार होते हो।

तुम किसी व्यक्ति को तभी पसंद करते हो जब सब ठीक-ठाक रहता है। यह परस्पर समझौता है। जैसे ही कोई व्यक्ति अपने हिसाब से चलने लगता है, या कुछ ठीक नहीं बैठता, या वह जिद्दी हो जाता है, या वह तुम पर मालकियत करना आरंभ कर देता है, या वह तुम पर अपना अधिकार जताने लगता है, या वह तुम्हारे अहंकार को चोट पहुंचाने लगता है।

और यह होने ही वाला है क्योंकि वह व्यक्ति तुम्हें इसलिए पसंद नहीं करता कि तुम्हारा अहंकार पुष्ट होता है- वह व्यक्ति तुम्हें पसंद करता है क्योंकि उसका अपना अहंकार पुष्ट होता है। वह तुम्हें चाहता है अपने स्वयं के अहंकार के कारण और तुम उसे चाहते हो क्योंकि तुम्हारा अपना अहंकार पुष्ट होता है। तुम्हारे उद्देश्य भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए इस तरह की व्यवस्था हमेशा नहीं चल सकती। और तुम्हारे इरादे केवल भिन्न ही नहीं हैं वे परस्पर विरोधी हैं क्योंकि एक ही मालिक हो सकता है और दोनों ही मालिक होने का प्रयत्न कर रहे हैं।

शुरू-शुरू में वे दोनों बहुत मधुर होंगे क्योंकि दोनों एक-दूसरे की सीमाओं से अनजान होते हैं। धीरे- धीरे जब सब व्यवस्थित होने लगता है वे और अधिक कठोर, कब्जा जमाने वाले मालकियत करने वाले, एक-दूसरे के प्रति और अधिक आक्रामक हो जाएंगे। और फिर तुम नापसंद करना शुरू कर देते हो। तुम एक प्रकार से उस व्यक्ति से घृणा करने लगते हो जो तुम्हारी श्रेष्ठता को नीचे उतारने का प्रयत्न करता है। तुम उस व्यक्ति से प्रेम करते हो जो तुम्हें श्रेष्ठ समझता है।

अहंकार निरंतर हीनता की ग्रंथि से पीड़ित रहता है। इसी कारण पुरुष इस स्त्री से, उस स्त्री से, हजारों स्त्रियों से प्रेम करना चाहेगा। हो सकता है वह डॉन जुआन बन जाए, क्योंकि हर बार केवल आरंभ में, स्त्री सहायता करती है। यह तो एक चाल है, स्त्री कौशल है। केवल आरंभ में ही स्त्री सहायता करती है। जैसे ही उसे लगता है कि अब तुम दूर नहीं जा सकते, तुम पकड़ में आ गए, वह तुम पर मालकियत करना आरंभ कर देती है। तुम बहुत सी स्त्रियों को जीतना चाहते हो, लेकिन बस शुरू-शुरू में ही। तुम देखते हो सभी प्रेम संबंध प्रारंभ में

ही सुंदर होते हैं। अंत तक सुंदर रहने वाला प्रेम संबंध खोज पाना बहुत कठिन है, विरला है। अगर तुम ऐसा खोज पाओ तब तुम जान लेते हो कि यह संबंध वास्तव में प्रेम संबंध था।

अंत ही उसे सिद्ध करेगा आरंभ नहीं क्योंकि आरंभ में सभी प्रेम संबंध सुंदर होते हैं लेकिन बस आरंभ में ही- क्योंकि दोनों कूटनीतिज्ञ हैं दोनों ही अपना खूबसूरत मोहक चेहरा एक-दूसरे को दिखा रहे हैं यह बस विक्रय-कला का एक हिस्सा है। लेकिन जब माल बिक जाता है तब चेहरे बदल जाते हैं तब वास्तविक रूप सामने आता है, तब आक्रामक अहंकार अपना काम करना शुरू करता है। वही वास्तविक चीज है जो अंत में आती है।

वास्तविक चीज अंत में प्रकट होती है आरंभ में कभी नहीं क्योंकि शुरू-शुरू में दोनों निकट आने और घनिष्ठ होने की चेष्टा कर रहे होते हैं। एक बार निकट आ गए, जब ऐसा लगता है कि सब ठीक है तब असली चीज फूट कर बाहर निकल आएगी।

तुम किसी व्यक्ति को क्यों पसंद करते हो? किसी वस्तु को तुम क्यों पसंद करते हो? व्यक्तियों को तो एक तरफ रखो- तुम किसी वस्तु को क्यों पसंद करते हो? वस्तुएं भी तुम्हारे अहंकार की सहायता करती हैं। अगर तुम्हारा पड़ोसी बड़ी कार खरीदता है तो तुम्हें भी बड़ी कार खरीदनी पड़ेगी क्योंकि यह प्रश्न कार का नहीं है। अधिक छोटी कार और भी आरामदेह हो सकती है आधुनिक यातायात के और भी अनुकूल हो सकती है, छोटी कार के साथ कम कष्ट होता है। बड़ी कार बड़ी मुसीबत, अधिक महंगी है, और तुम उसे खरीदने में असमर्थ हो सकते हो- लेकिन अगर पड़ोसी ने बड़ी कार खरीदी है तो तुम्हें भी बड़ी कार ही खरीदनी है। तुम यही पसंद करते हो। तुम्हें यह क्यों पसंद है? तुम्हारी सभी रुचियां तुम्हारे अहंकार से आती हैं) बड़ी कार की प्रतिष्ठा है।

ऐसा हुआ एक बार मुल्ला नसरुद्दीन के बीस ने उसे अपने ऑफिस में आने को कहा। और वह बहुत गुस्से में था। उसने उसे दरी पर बिठाया और कहा नसरुद्दीन, यह बहुत ज्यादा है! मैं समझता हूं कि कल रात ऑफिस पार्टी के बाद तुमने एक पहिए वाला ठेला लिया और उस एक पहिए वाले ठेले पर तुम नगर के मुख्य बाजार में गए। क्या तुम्हें यह खयाल नहीं आता कि ऐसे ढंगों से कंपनी की प्रतिष्ठा खो जाएगी।

नसरुद्दीन ने कहा मुझे इस बारे में एक विचार भी नहीं आया, क्योंकि आप उस ठेले में खड़े थे। हम दोनों ही नशे में धुत थे इसलिए मैंने सोचा कि इसमें प्रतिष्ठा का कोई प्रश्न ही नहीं है- बीस भी ठेले में हैं इसलिए मैं मुख्य बाजार में घूमने चला गया। सब प्रसन्न थे और लोगों ने इसका खूब मजा लिया।

प्रतिष्ठा- तुम प्रतिष्ठा को केवल तभी भूल पाते हो, जब तुम नशे में होते हो, तब तुम वे काम करते हो जो मूढतापूर्ण हैं। लेकिन इस बात को समझना अच्छा है। तब प्रतिष्ठा अवश्य ही शराब की तरह होनी चाहिए क्योंकि जब तुम नशे में होते हो, तुम उसे भूल जाते हो। वैसे तो तुम हमेशा प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की खोज में ही रहते हो।

तुम किसी वस्तु को पसंद करते हो क्योंकि यह प्रतिष्ठा देती है। तुम्हें मकान पसंद है क्योंकि यह तुम्हें गौरव प्रदान करता है। यह भले ही अनुकूल न हो, तुम्हें सुख-सुविधा न देता हो। आधुनिक फर्नीचर को देखो- बिलकुल भी आरामदेह नहीं है लेकिन अपने घर में पुराना फर्नीचर कौन रखना चाहेगा? आधुनिक बेहतर है पुराने से अधिक असुविधाजनक लेकिन यह आधुनिक है। यह प्रतिष्ठा देता है। जो कुछ भी प्रतिष्ठा देता है वह मादक है वह तुम्हें नशा देता है। तुम्हें लगता है तुम शक्तिशाली हो।

लेकिन यह शक्ति की ललक क्यों है? और स्मरण रहे अगर तुम शक्ति के लिए लालायित हो तो तुम सत्य तक कभी नहीं पहुंचोगे। कभी-कभी तुम शक्ति के लिए परमात्मा का द्वार भी खटखटाते हो लेकिन तब तुम गलत

द्वार पर दस्तक दे रहे हो। लेकिन केवल वे जो यह भलीभांति जानते हैं कि शक्ति शक्ति की खोज विक्षिप्तता है पागलपन है वे ही उस द्वार तक पहुंच सकते हैं।

तुम अहंकार के अनुसार पसंद और नापसंद करते हो। अगर अहंकार न हो तो पसंद और नापसंद कहाँ होंगे? वे बस खो जाएंगे। तुम्हारे पास विभाजन करने वाला वह मन ही नहीं होगा जो हमेशा पसंद करता है और नापसंद करता है और विकल्प सामने खड़े कर देता है। जब तुम स्वयं के साथ सुख से हो... और अहंकार कभी अपने साथ विश्रान्ति में नहीं होता। वह तो एक सतत बेचैनी है क्योंकि अहंकार को चारों ओर देखना पड़ता है और वहाँ लाखों लोग हैं।

कोई और बड़ी कार खरीदता है तब क्या किया जाए? कोई जाता है, और भी सुंदर पत्नी पा लेता है, तब क्या किया जाए? कोई तुमसे अधिक स्वस्थ है तब क्या किया जाए? किसी की आंखें तुम से अधिक सुंदर हैं तब क्या किया जाए? कोई अधिक प्रतिभाशाली है अधिक होशियार है, किसी के पास अधिक धन है। और तुम्हारे चारों ओर लाखों लोग हैं और तुम्हारी सबके साथ प्रतियोगिता है। तुम पागल हो जाओगे। यह असंभव है। तुम्हारे लिए कभी वह क्षण नहीं आएगा जब तुम संतोष अनुभव कर सको? वह क्षण कैसे संभव है? यहाँ तक कि सम्राट भी...

मैंने सुना है एक बार ऐसा हुआ नेपोलियन दीवाल पर टंगी एक तस्वीर तक पहुंचने का प्रयत्न कर रहा था। तस्वीर ठीक तरह से नहीं टंगी थी, वह उसे ठीक करना चाहता था लेकिन वह उस तक पहुंच नहीं पा रहा था क्योंकि नेपोलियन एक छोटा आदमी था बस पांच फीट पांच इंच! उसका अंगरक्षक लगभग सात फीट लंबा था उसका हाथ तुरंत वहाँ तक पहुंच गया और उसने तस्वीर ठीक से टांग दी। लेकिन सिकंदर को चोट पहुंची उसे बहुत चोट पहुंची।

अंगरक्षक ने कहा. श्रीमान, आपको जब भी ऐसा कुछ करना हो मुझे बता दें। मैं आपसे ऊंचा हूँ।

नेपोलियन ने कहा. ऊंचा? नहीं! लंबा, लेकिन ऊंचा? नहीं!

और जब भी नेपोलियन अपने से लंबा कोई व्यक्ति देखता- और उसे देखना ही पड़ता, क्योंकि कई सिपाही उससे लंबे थे- उसे बहुत चोट पहुंचती थी।

तुम्हारे पास सारा संसार हो सकता है, लेकिन एक भिखारी तुमसे लंबा हो सकता है और तब सारा संसार खो जाता है, तुम कुछ भी नहीं हो। तुम भले ही सम्राट हो जाओ लेकिन एक भिखारी तुमसे बेहतर गा सकता है। तुम्हारे पास सब-कुछ नहीं हो सकता। जो भी तुम्हारे पास है वह तुम्हें संतोष नहीं देता है। मन, अहंकार हमेशा असंतुष्ट रहता है। पसंद और नापसंद अहंकार के कारण है और अहंकार बहुत दुख भोगता है। जब अहंकार नहीं होता पसंद और नापसंद का प्रश्न ही नहीं उठता। तुम इस जगत में हवा के समान विचरण करते हो। तुम चुनाव नहीं करते कि मैं उत्तर दिशा की ओर जा रहा हूँ तुम्हारी कोई पसंद नहीं कोई नापसंद नहीं। जहाँ भी प्रकृति ले जाती है, तुम विश्रान्ति से चले जाते हो। अगर प्रकृति का प्रवाह उत्तर की ओर है, हवा उत्तर की ओर बहती है। अगर प्रकृति बदलती है और दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है तो हवा दक्षिण की ओर बहना शुरू कर देती है। उसका अपना स्वयं का कोई चुनाव नहीं होता।

ताओ के व्यक्ति का अपना स्वयं का कोई चुनाव नहीं होता। जहाँ भी नदी उसे ले जाए वह उसके साथ चला जाता है। वह कभी नदी को धक्का नहीं देता, वह कभी उसके साथ संघर्ष नहीं करता। उसका कोई चुनाव नहीं होता उसकी कोई पसंद और नापसंद नहीं होती। तुम्हें ऐसा भी लग सकता है कि उसकी पसंद और नापसंद होती है, क्योंकि तुम समझ नहीं सकते। तुम्हें ऐसा लग सकता है कि यह बादल उत्तर दिशा की ओर जा रहा है? तुम व्याख्या कर सकते हो कि यह बादल उत्तर दिशा की ओर जा रहा है क्योंकि यह उसकी मर्जी है उसने उत्तर

दिशा की ओर जाने का चुनाव किया है। लेकिन तुम गलत हो, बादल का कोई चुनाव नहीं है। वह कहीं जाने के लिए बाध्य नहीं है, उसकी कोई नियति नहीं है। वह बस गतिमान है क्योंकि सारी प्रकृति उसी ढंग से चल रही है। उसने इसे नहीं चुना है। चुनाव का अधिकार परम सत्ता के पास है; पसंद नापसंद करना परम सत्ता की मर्जी है, यह उसका काम बिलकुल नहीं है। वह निश्चित है। और जहां भी बादल पहुंच जाए वही मंजिल है कोई पूर्व-निर्धारित लक्ष्य नहीं है; जहां भी वह पहुंच जाए वही लक्ष्य है। फिर तुम जहां भी हो संतुष्ट हो।

लेकिन मन अपने नियमों के अनुसार व्याख्या करता चला जाएगा। अगर तुम किसी बुद्ध के पास आते हो तुम्हें लगता है उसकी अपनी रुचियां और अरुचियां हैं, और तुम गलत होओगे क्योंकि तुम अपने मन के अनुसार उसकी व्याख्या करोगे। कभी वह उत्तर दिशा की ओर जा रहा होगा और तुम कहोगे कि उसने चुना होगा, अन्यथा क्यों? क्यों उत्तर की ओर जा रहा है? कभी वह किसी एक व्यक्ति पर तुमसे अधिक ध्यान दे रहा होगा तुम सोचोगे कि जरूर उसने चुनाव किया होगा 'क्यों? अन्यथा वह मुझ पर भी उतना ध्यान क्यों नहीं दे रहा है?' और मैं तुमसे कहता हूं। उसने चुनाव नहीं किया है, यह बस पूर्ण ब्रह्म है जो निर्णय करता है। वह निर्णायक नहीं है वह बादल के समान है।

अगर वह किसी पर अधिक ध्यान दे रहा है उसका बस इतना ही अर्थ है कि ध्यान बादल की भांति गति करता है। हो सकता है उस व्यक्ति को अधिक आवश्यकता हो हो सकता है वह व्यक्ति अधिक खाली हो और ध्यान को अधिक आकर्षित करता हो। ऐसे ही जैसे तुम जमीन में एक गड्ढा खोदते हो वह पानी को अपनी ओर आकर्षित करता है क्योंकि पानी नीचे की ओर बहता है। अगर वह व्यक्ति अधिक ध्यानपूर्ण है बुद्धपुरुष अधिक ध्यान देगा- लेकिन याद रहे वह दे नहीं रहा, उसे आकर्षित किया गया है। यह एक साधारण प्राकृतिक घटना है। वह उसका चुनाव नहीं है या उसकी रुचि और अरुचि नहीं है।

बुद्ध ने महाकश्यप को मौन-संदेश दिया। उन्होंने एक फूल दिया, और तब किसी ने पूछा 'लेकिन महाकश्यप को ही क्यों दूसरों को क्यों नहीं?' क्योंकि वहां उससे अधिक अन्य सम्मानित शिष्य भी थे। सारिपुत्र वहां था और वह सबसे बड़े मुख्य शिष्यों में से एक था, देश भर में उसकी ख्याति थी। वह अपने आप में एक सदगुरु था। जब वह बुद्ध के पास समर्पण करने के लिए आया था उसके साथ पांच सौ शिष्य थे। उन सभी ने समर्पण कर दिया था क्योंकि उनके गुरु ने समर्पण कर दिया था। और वह एक प्रसिद्ध विद्वान था। सारिपुत्र को क्यों नहीं?

आनंद को क्यों नहीं, जो छाया की भांति चालीस वर्ष तक उनके साथ रहा, दास की भांति हर प्रकार से बुद्ध की सेवा की, और जो बुद्ध का भाई था उसी राजवंश से था? आनंद को क्यों नहीं? मोदग्गलान को क्यों नहीं जो दूसरा प्रसिद्ध विद्वान था और जिसे हजारों लोग सम्मान देते थे?

और महाकश्यप को ही क्यों जिसे कोई जानता भी न था जो अनजाना व्यक्ति था? किसी ने उसके बारे में कभी सोचा भी न था और इस घटना के सिवाय और कुछ भी किसी को ज्ञात नहीं है-कि एक सुबह बुद्ध फूल लिए हुए आए और मौन खड़े रहे फूल को देखते हुए, मौन बैठ गए फूल को देखते रहे और कुछ भी नहीं कहा। लोग विचलित और बेचैन हो गए क्योंकि वे प्रवचन सुनने आए थे। और तब महाकश्यप हंसा और बुद्ध ने उसे बुलाया और फूल दिया और सभा को कहा 'जो कुछ भी कहा जा सकता है वह सब मैंने तुम्हें दे दिया है और जो कहा नहीं जा सकता वह मैं महाकश्यप को देता हूं।'

केवल यही एक प्रसंग है जो महाकश्यप के बारे में ज्ञात है। इससे पहले वह कुछ नहीं था इसके पश्चात उसके बारे में कुछ भी लिखा नहीं गया। महाकश्यप को क्यों?

यह चुनाव नहीं है, क्योंकि अगर यह चुनाव होता तो सारिपुत्र को मिल गया होता। यह पसंद करना नहीं है, क्योंकि यदि यह प्रश्न पसंद करने का सवाल होता तो आनंद को मिल गया होता। बुद्ध ने कहा कोई दूसरा विकल्प नहीं था। महाकश्यप ही अकेला ऐसा व्यक्ति था जो उसे ग्रहण कर सकता था, केवल वही था जो मौन था और जिसने समझा था। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने कहा 'अगर वह न भी हंसा होता तो भी मैं वहां जाता और उसे देता क्योंकि इस भरी सभा में केवल वही रिक्त था, शून्य था। यहां बहुत से महापंडित हैं लेकिन वे अपने पांडित्य से भरे हुए हैं। आनंद यहां है लेकिन वह मेरे प्रति अत्यधिक प्रेम और आसक्ति से भरा है। यह महाकश्यप बस खाली है, एक खाली घर वह मिट चुका है।'

उसने बादल को आकर्षित किया। लेकिन शिष्यों की प्रवृत्ति को देखो उन्होंने अवश्य सोचा होगा कि जरूर कुछ बात होगी 'बुद्ध का महाकश्यप से इतना लगाव क्यों है? उन्होंने हमें वह क्यों नहीं दिया जो शब्दों में नहीं कहा जा सकता? उन्होंने महाकश्यप को सर्वश्रेष्ठ क्यों बना दिया?'

लेकिन स्मरण रहे ताओ का व्यक्ति एक बुद्धरूप, बस बादलों के समान तैरता है। उसकी कोई रुचि नहीं कोई अरुचि नहीं क्योंकि उन सबका संबंध स्वप्रदर्शी मन के साथ है, स्वप्रदर्शी अहंकार के साथ है।

शांति और अशांति भ्रान्ति के परिणाम हैं;

बुद्धत्व के साथ कोई पसंदगी और नापसंदगी नहीं होती। सभी द्वैत निष्कर्ष से आते हैं।

वे ऐसे हैं जैसे कि सपने या आकास-कुसुम;

उन्हें पकड़ने की चेष्टा करना मुड़ता है।

लाभ और हानि, उचित और अनुचित,

अंत में ऐसे विचार तत्काल समाप्त कर देने चाहिए।

इस 'तत्काल' शब्द को स्मरण रखना जरूरी है। इसे अपने भीतर गहरे में प्रवेश करने दो, क्योंकि चीजों को दो ढंगों से किया जा सकता है धीरे-धीरे या तुरंत। अगर तुम उन्हें धीरे-धीरे करते हो तो तुम उन्हें कभी न कर पाओगे क्योंकि अगर तुम उन्हें धीरे-धीरे करते हो तो वे लटक जाएंगी।

उदाहरण के लिए तुम क्रोधित हो और तुम अपने क्रोध के बारे में चिंतित हो। यह एक पुरानी आदत हो गई है और तुम कहते हो 'बाद में धीरे-धीरे मैं इसे छोड़ दूंगा।' तुम इसे बाद में धीरे-धीरे कैसे छोड़ सकते हो? क्योंकि इस बीच तुम उसका अभ्यास कर लोगे और जितना अधिक तुम अभ्यास करते हो उतना ही वह पक्का हो जाता है। तुम कहते हो वक्त चाहिए। तो तुम क्या करोगे?

ज्यादा से ज्यादा तुम उसे और परिष्कृत और सुसंस्कृत कर लोगे। हो सकता है कोई तुम्हारे क्रोध के बारे में जान न पाए तुम उसे छिपा सकते हो। लेकिन तुम समय के साथ क्या करोगे? अगर तुम समझ गए हो कि वह गलत है तब क्यों कहो कि धीरे-धीरे? तुरंत क्यों नहीं? अगर समझ में आ गया है कि कुछ गलत है क्यों समय लेना? और अगर समझ में नहीं आया, तो बिना समझे तुम इसे धीरे-धीरे कैसे करोगे? और तब तक क्रोध आता रहेगा और तुम्हें इसकी और अधिक आदत हो जाएगी।

ज्यादा से ज्यादा तुम थोड़ा संशोधित कर सकते हो, लेकिन संशोधित क्रोध अक्रोध नहीं होगा वह फिर भी क्रोध ही रहेगा। तुम सूक्ष्म रूप से संशोधित कर सकते हो- वह वहां होगा। हो सकता है वह बिलकुल विपरीत रूप लेने लगे परंतु वह वहां होगा। हो सकता है कोई उसे पहचान न पाए लेकिन तुम्हें हमेशा पता होगा कि वह है।

नहीं समझ हमेशा तुरंत आती है। या तो तुम समझ जाते हो या नहीं समझते। अगर तुम समझे ही नहीं तो तुम कैसे कुछ छोड़ पाओगे? अगर तुम समझते हो तो धीरे- धीरे क्यों? अगर तुम समझते हो तो अभी इसी समय तत्काल छोड़ देते हो।

एक बार एक व्यक्ति फूल हाथ में लिए बुद्ध के पास आया। बुद्ध ने फूलों को देखा और कहा ' इन्हें छोड़ दो। तब उसने फूलों को बाएं हाथ से छोड़ दिया। उसने सोचा, हो सकता है बुद्ध के लिए बाएं हाथ में फूल लाना गलत हों-क्योंकि बायां हाथ गलत माना जाता है। दायां ठीक है और बायां गलत है और तुम बाएं हाथ से नहीं देते हो। तो उसने स्वयं को दोषी समझते हुए उनको छोड़ दिया।

बुद्ध हरसे और कहा छोड़ दो! तो उसे उन फूलों को दाएं हाथ से भी गिरा देना पड़ा, लेकिन तब वह उलझन में पड़ गया।

और जब दोनों हाथ खाली थे बुद्ध जोर से हंसे और कहा छोड़ दो! अब छोड़ देने के लिए कुछ भी न था। इसलिए वह इधर-उधर देखने लगा- क्या करे?

आनंद ने कहा बुद्ध का यह अभिप्राय कभी न था कि फूलों को छोड़ दो। जो फूलों को लाया है उसे छोड़ना है। फूलों को छोड़ देने से कुछ नहीं होगा। स्वयं को ही क्यों न छोड़ दो?

वह आदमी समझ गया और बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा। वह फिर कभी अपने महल में वापस नहीं लौटा।

प्रधानमंत्री आया और उसने कहा आप यह क्या कर रहे हैं? अगर आप त्याग करना चाहते हैं तो हमको थोड़ा समय दीजिए ताकि सब व्यवस्थित हो जाए। वापस चलिए। आपकी पत्नी, आपके बच्चे और आपका सारा राज्य और राजकार्य- हमें थोड़ा समय दीजिए। यदि आपने त्याग देने का निश्चय कर भी लिया है, तो भी इतनी जल्दी क्या है?

उस व्यक्ति ने कहा जब तुम समझ जाते हो, तब वह हमेशा तुरंत होता है। अगर तुम समझे नहीं, तो उसे हमेशा के लिए स्थगित कर दिया जाता है।'

केवल मूढता स्थगित करती है और मुड़ता स्थगित करके बहुत बड़ी चाल चलती है। तब तुम्हें लगता है कि तुम समझ गए तो हो लेकिन उसे तत्काल कैसे कर सकते हो? तुम उसे धीरे- धीरे करोगे- यह कभी न करने की चाल है। यह चालाकी है ' मैं इसे कल करूंगा।'

देखो जब तुम क्रोधित हो तो तुम तक्षण क्रोध करते हो लेकिन अगर तुम प्रेममय अनुभव करते हो तो तुम स्थगित कर देते हो। अगर तुम किसी को उपहार देना चाहते हो तो स्थगित करते हो, लेकिन अगर क्रोध करना चाहते हो तो उसी समय करते हो- क्योंकि तुम भलीभांति जानते हो कि अगर स्थगित किया तो फिर कभी नहीं किया जाता। स्थगन एक चाल है। इसलिए भीतर गहरे में तुम जानते हो कि उसे करने की कोई आवश्यकता नहीं है, और ऊपर-ऊपर से तुम यह विश्वास बनाए रख सकते हो कि मैं इसे अवश्य करूंगा। इसलिए तुम स्वयं को धोखा देते हो।

सोसान कहता है:

अंत में ऐसे विचार तत्काल समाप्त कर देने चाहिए।

समय मत दो! अगर कुछ गलत है, उसे देखो और छोड़ दो। वास्तव में इसे छोड़ने की जरूरत नहीं है। अगर तुम उसे देख पाओ, और तुम्हें लगे कि वह गलत है वह अपने आप से ही छूट जाएगा। तुम उसे ढो नहीं पाओगे।

तुम उसे ढोते हो क्योंकि तुम नहीं मानते कि यह गलत है। अगर तुम नहीं मानते तो यह कहना बेहतर है, 'मैं नहीं मानता कि यह गलत है। इसलिए मैं इसे खेऊंगा।' कम से कम तुम ईमानदार तो रहोगे और ईमानदारी अच्छी है। बेईमान मत बनो।

लोग मेरे पास आते हैं, वे कहते हैं, 'हां मैं जानता हूं लोभ बुरा है लेकिन धीरे-धीरे..' लेकिन कैसे, क्या कभी किसी ने लोभ को धीरे-धीरे छोड़ा है? तब तक उसकी जड़ें तुम में और गहरी चली जाती हैं। और यदि तुम उसे शीघ्र छोड़ नहीं सकते तो क्यों कहते हो कि लोभ बुरा है? कहो मुझे नहीं लगता कि यह गलत है मुझे यह अच्छा लगता है। जब मुझे लगेगा कि यह गलत है मैं इसे छोड़ दूंगा।' कम से कम तुम ईमानदार और निष्ठावान तो हो और एक ईमानदार आदमी समझ तक पहुंच जाएगा। एक बेईमान आदमी कभी समझ तक नहीं पहुंच सकता।

तुम सभी कहते हो क्रोध बुरा है- तब इसकी क्यों ढोते हो? कौन तुम्हें इसे अपने पास रखने के लिए विवश कर रहा है? शान रूपांतरण है। अगर तुम सच में जानते हो कि क्रोध बुरा है तब तुम इसे एक पल के लिए भी पास नहीं रखोगे तुम तुरंत इसे छोड़ दोगे। यह आकस्मिक है इसे घटने में समय नहीं लगता एक क्षण भी नहीं खोता। लेकिन तुम चालाक हो तुम सोचते हो कि तुम जानते हो और तुम जानते नहीं हो। तुम यह मान लेना चाहते हो कि तुम जानते हो और तुम विश्वास कर लेना चाहते हो कि तुम धीरे-धीरे स्वयं को बदलने की चेष्टा कर रहे हो। तुम कभी नहीं बदलोगे।

रूपांतरण कभी धीरे-धीरे नहीं होता वह सदा तक्षण होता है।

एक जैन कहानी है एक आदमी दिन भर काम करने के बाद थका-मांदा घर आया। उसकी पत्नी उसे स्नान करवा रही थी- यह पुरानी कहानी है अब तो कोई पत्नी पति को स्नान नहीं करवाती। उसकी पत्नी उसे स्नान करवा रही थी और जब उसके शरीर पर पानी डाल रही थी और उसके थके अंगों को शीतल कर रही थी वह साथ-साथ बातें भी कर रही थी और उसने कहा. मेरा भाई महावीर का अनुयायी हो गया है, और वह संसार-त्याग का विचार बना रहा है।

वह आदमी हंसा और बोला सोच रहा है? फिर तो वह संसार को कभी नहीं छोड़ेगा पत्नी को चोट पहुंची क्योंकि यह उसके भाई का सवाल था। उसने कहा. आपका क्या मतलब है? और मैंने आपको महावीर या बुद्ध या किसी और के पास जाते नहीं देखा, और आप समझते हैं कि आप जानते हैं? वह महापंडित है और महावीर जो कहते हैं वह समझता है। और वह ध्यान करता है पूजा करता है और वह एक धार्मिक व्यक्ति है। और आप? आपमें मुझे कोई धार्मिकता दिखाई नहीं देती। मैंने आपको कभी ध्यान करते या प्रार्थना करते नहीं देखा है। और आप ऐसी बात कहने का साहस रखते हैं कि वह कभी त्याग नहीं करेगा?

वह व्यक्ति खड़ा हो गया.. वह नग्न था, स्नान कर रहा था-स्नानागार से बाहर आया गली में निकल गया। पत्नी चिल्लाई क्या आप पागल हो गए हैं? आप यह क्या कर रहे हैं?

उसने कहा मैंने त्याग दिया है।

सभी स्वप्न समाप्त हो जाने चाहिए

फिर वह कभी नहीं लौटा। यह है आदमी- वह समझ गया। उसने कभी इसकी तैयारी न की थी किसी को उसके बारे में पता न था कि वह एक धार्मिक व्यक्ति था, लेकिन यह गुणवत्ता.. वह महावीर के पास गया उसने स्वयं को समर्पित किया वह एक नग्न फकीर हो गया।

पत्नी रोती-चिल्लाती हुई आई। पत्नी का भाई भी समझाने आया जल्दी नहीं है। मेरी तरफ देखो। मैं बीस वर्षों से सोच रहा हूँ। और तुम पागल हो- क्या त्याग करने का यह ढंग है?

उस आदमी ने कहा मुझे कोई परवाह नहीं है, क्या कोई और भी ढंग है? तुम बीस वर्षों से सोच रहे हो तुम बीस जन्मों तक सोचते रहोगे। जब कभी तुम त्याग करोगे इसी ढंग से करोगे क्योंकि केवल यही एक ढंग है- तुरंत।

तुम जिसे स्पष्ट देखते हो वह घट जाता है। प्रश्न स्पष्टता का है। वस्तु के स्वभाव में तत्काल एक नजर, फिर कहीं भविष्य में बदलने का प्रश्न ही नहीं रह जाता। भविष्य में कोई भी नहीं बदलता- रूपांतरण हमेशा यहां और अभी होता है। यही क्षण केवल एक क्षण है जिसमें कुछ घट सकता है। और दूसरा कोई क्षण नहीं है।

अगर आंख कभी नहीं सोती,  
तो स्वभावतः सारे सपने समाप्त हो जाएंगे।  
अगर मन कोई भेद नहीं करता,  
दस हजार ची, जैसी वे है? एक ही तत्व की हैं।

‘अगर आंख कभी नहीं सोती’... इन दो आंखों को सोना पड़ता है क्योंकि वे शरीर के अंग हैं, और शरीर एक शाश्वत ऊर्जा नहीं है। वह एक मिश्रण है, यह एक मौलिक शक्ति नहीं है। बहुत से तत्व इसे जोड़ते हैं। वह एक यांत्रिक साधन है, एक जैव-यांत्रिकता है। यह लगातार ऊर्जा-पूर्ति पर निर्भर करता है भोजन, पानी, हवा। ऊर्जा बनती है, ईंधन बनता है और शरीर चलता है- वह एक यांत्रिकता है। तुम्हारी आंखें थक जाएंगी क्योंकि प्रत्येक यंत्र थक जाता है।

तुम यह जान कर हैरान होओगे कि हाल ही के कुछ वर्षों में एक बहुत बड़ी खोज हुई है कि मशीनों को भी आराम करना चाहिए। मशीनें! तुम ऐसा कभी भी न सोचते। मशीनें क्यों? उन्हें आराम की आवश्यकता नहीं। तुम एक कार को चौबीस घंटे तीस घंटे चलाते हो कार को आराम की जरूरत है। तुम उलझन में पड़ जाओगे। क्यों? कार मन नहीं है कार चेतना नहीं है। आराम क्यों? अगर सब कल-पुर्जे ठीक काम रहे हैं फिर तुम चलते चले जा सकते हो सिर्फ कार में ईंधन डलवाते जाओ।

तुम गलत हो। अब उपाय हैं यह जानने के कि कब कार थक गई है। और कार थक गई है क्योंकि प्रत्येक यंत्र-रचना थक जाने को बाध्य है। अगर तुम कार को कुछ घंटों के लिए गैरेज में छोड़ोगे ऐसे साधन हैं जो बताएंगे कि कब तुम्हारी कार फिर से चलने योग्य होगी।

प्रत्येक यांत्रिकता को विश्राम की आवश्यकता होती है। केवल तुम्हारे शरीर को ही नहीं-प्रत्येक यांत्रिकता को विश्राम की जरूरत होती है तब वह फिर से जीवंत हो जाता है। केवल चेतना को विश्राम की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वह यंत्र-रचना नहीं है। उसे किसी ईंधन की जरूरत नहीं है। यह चिर स्थायी ऊर्जा है यह अनंत-ऊर्जा है यह अकारण ऊर्जा है। यह नित्य है शाश्वत है।

इसीलिए सोसान शब्द के एकवचन रूप का प्रयोग करता है ‘अगर आंख कभी नहीं सोती...’ अन्यथा वह कहता, ‘अगर आंखें।’ यह तीसरी औख है जिसके विषय में वह बात कर रहा है। जब तुम्हारा शरीर सोता है, तो तुमने देखा है? थोड़ा गौर से देखो, तुम जान पाओगे- तुम्हारे भीतर कुछ जागता रहता है। जब तुम गहरी नींद भी सो रहे होओ कुछ, तुम्हें भले ही बिलकुल स्पष्ट न हो लेकिन किसी बिंदु पर कहीं तुम्हारे भीतर साक्षी बना रहता है।

इसीलिए सुबह तुम कह पाते हो रात बहुत अच्छी नींद आई। अगर तुम वास्तव में सोए हुए हो कौन जानता है? तुम इसे कैसे जान सकते हो, क्योंकि तुम तो गहरी नींद में थे? सुबह यह बताने के लिए कि रात बहुत गहरी अच्छी और स्वप्नरहित नींद आई, कौन इसे देखता रहा? किसी दिन तुम कहते हो कि नींद ठीक से नहीं आई, सपने और सपने और सपने और मैं ठीक से सो नहीं पाया। कौन जानता है? – कोई लगातार देखता है।

यह तीसरी आंख है जो सदा खुली रहती है- पलक भी नहीं झपकती सदा खुली रहती है- अपलक। इसकी पलक ही नहीं है यह कभी बंद नहीं होती। तीसरी आंख मात्र प्रतीकात्मक है। तीसरी आंख का अर्थ है कि तुम्हारे भीतर शाश्वत दृष्टि है शाश्वत सतर्कता है शाश्वत साक्षी है जो कभी नहीं सोता। और क्योंकि वह कभी नहीं सोता इसलिए कभी स्वप्न नहीं देखता क्योंकि स्वप्न देखना निद्रा का अंग है। वह तीसरी आंख सत्य देख सकती है क्योंकि कोई निद्रा नहीं है कोई स्वप्न नहीं है।

तुम्हें अपने भीतर उस बिंदु को खोजना है और अन्वेषण करना है जो कभी नहीं सोता है। यही सारी खोज है, खोजी की सारी चेष्टा यही है। सत्य कहीं बाहर नहीं है। कुल प्रश्न यह है कि भीतर उस बिंदु को कैसे खोजें जो कभी नहीं सोता, जो कभी अचेतन नहीं होता जो सदा सतर्क है सजग है। वही तुम्हारे भीतर परमात्मा की किरण है।

और एक बार तुम सतत सजगता की उस किरण को खोज लेते हो तो उस किरण के द्वारा तुम स्रोत तक यात्रा कर सकते हो। वह स्रोत परमात्मा है। अगर तुम एक किरण को भी पकड़ पाओ तो तुम सूर्य तक पहुंच सकते हो आखिरी स्रोत तक। तुम्हें बस यात्रा करनी है- वही तुम्हारा साधन और तुम्हारा मार्ग बन जाता है।

भीतर साक्षी को पाकर तुमने मार्ग को पा लिया है। अब और-और और- और वह सजगता बनते जाओ। अपनी सारी ऊर्जा को सजगता की ओर गति करने दो। और जितना अधिक तुम सजग होते हो उतने ही सपने कम हो जाते हैं.. और-और कम होते जाते हैं। एक क्षण आता है अचानक तुम केवल साक्षी होते हो, मन मिट गया है। मन की सारी ऊर्जा तीसरी आंख में विलीन हो गई है। दो आंखें तिरोहित हो गई हैं, अब तुम केवल साक्षी हो। यह स्व-साक्षी ही वह बिंदु है जहां से संसार मिट जाता है और परमात्मा प्रकट हो जाता है।

अगर आंख कभी नहीं सोती,  
तो स्वभावतः सारे स्वप्न समाप्त हो जाएंगे।  
अगर मन कोई भेद नहीं करता,  
दस हजार चीजें, जैसी वे हैं एक ही तत्व की हैं।

और जब ' तुम ' एक हो स्मरण रहे, अभी तुम्हारे पास दो आंखें हैं, तुम्हारी दृष्टि भी दोहरी है। जीसस अपने शिष्यों से कहते हैं ' अगर तुम एक आंख हो गए हो तो सब- कुछ ठीक हो जाएगा।'

शरीर में सब दो-दो हैं- दो आंखें दो कान दो हाथ, दो टांगें, दो गुर्दे- सब दो हैं, क्योंकि शरीर द्वैत है। तुम्हारे भीतर केवल एक चीज एक रूप में विद्यमान है और वह है साक्षी-आंख। वह शरीर का हिस्सा नहीं है क्योंकि शरीर में सदा दो हैं। हर चीज दो है, विभाजित। शरीर का अस्तित्व दो ध्रुवों के बीच में है।

तुम्हारे मस्तिष्क भी दो हैं तुम्हारे पास बायां और दायां अलग-अलग मस्तिष्क है और वे दोनों विभाजित हैं। अगर उनके बीच का सेतु टूट जाए और कभी-कभी ऐसा हो जाता है, तब एक व्यक्तित्व खंडित हो जाता है। कभी कोई रेलगाड़ी से गिर जाता है और दाएं और बाएं मस्तिष्क के बीच का सेतु टूट जाता है- यह सेतु बहुत ही

नाजुक है। तब वह व्यक्ति दो हो जाता है- फिर वह एक नहीं रह जाता है। फिर कभी वह 'अ' और कभी 'ब' हो जाता है, या कभी-कभी दोनों हो जाता है। और तुम समझ नहीं सकते कि वह क्या कर रहा है क्या हो रहा है। वह खंडित है।

दाएं हाथ से काम करने वाले व्यक्ति अपने बाएं मस्तिष्क का विकास करते हैं; बाएं हाथ से काम करने वाले व्यक्ति अपने दाएं मस्तिष्क का विकास करते हैं। इसलिए अगर बाएं हाथ से काम करने वाले को जबरदस्ती दाएं हाथ से काम करवाएंगे तो वह अनावश्यक रूप से मुसीबत में पड़ जाएगा, क्योंकि उसका बायां मस्तिष्क बिलकुल विकसित नहीं हुआ है। इसलिए वह लिखेगा... तुम कोशिश करो। आपमें से कुछ बाएं हाथ से काम करने वाले होंगे क्योंकि दस प्रतिशत लोग बाएं हाथ से काम करते हैं भले ही वे जानते हों या नहीं।

क्योंकि संसार में दाएं हाथ से काम करने वालों की प्रधानता है, क्योंकि वे निन्यानबे प्रतिशत हैं, बहुत से बच्चों को दाएं हाथ से लिखने के लिए लगातार विवश किया जाता है। वे व्यर्थ में ही कष्ट उठाते हैं, वे जीवन भर अल्पबुद्धि ही रह जाएंगे केवल इसलिए कि उन्हें मजबूर किया गया था। वे दाएं हाथ से काम करने वालों के साथ मुकाबला नहीं कर सकेंगे। उनका बायां मस्तिष्क ठीक से काम नहीं कर रहा है और अगर वे उससे काम करेंगे तो उन्हें कठिनाई होगी।

अगर तुम दाएं हाथ से काम करने वाले व्यक्ति हो तो बाएं हाथ से लिखने का प्रयत्न करो। तुम छोटे बच्चों की भांति लिखोगे। क्यों? क्योंकि वह भाग छोटे बच्चे की भांति है वह अविकसित है।

मस्तिष्क भी विभाजित है शरीर में सब विभाजित है। केवल तीसरी आँख ही एक है- साक्षी। वह एक है। अगर तुम भीतर एक हो जाना चाहते हो, तो साक्षी चेतना के बिंदु को खोजो। चलते समय, देखो। खाते समय, देखो। सोते समय, यह देखते हुए कि क्या हो रहा है- नींद में प्रवेश करो।

देर- अबेर एक दिन अचानक तुम्हें बोध होगा कि शरीर सो गया है लेकिन फिर भी तुम देख रहे हो। शरीर नींद में जा रहा है, धीरे- धीरे और धीरे- धीरे तुम मृतप्राय हो रहे हो और फिर भी तुम देख रहे हो। फिर तुम देखते हो मन के सपने छूट रहे हैं समाप्त हो रहे हैं विलीन हो रहे हैं। तुम फिर भी देख रहे हो- और अचानक तुम आलोकित हो जाते हो। तुमने साक्षी को उपलब्ध कर लिया है।

साक्षी के साथ सपने समाप्त हो जाते हैं और सपनों के साथ सारे भ्रम माया। और तब तुम्हें बोध होता है कि सब एक ही सार-तत्व से संबंधित हैं। वृक्ष भिन्न हो सकते हैं- उनका आकार लेकिन उनके भीतर निराकार एक ही है। चट्टान वृक्ष से जुड़ी है वृक्ष सितारे से जुड़ा है और सितारा तुमसे जुड़ा है। सब-कुछ एक साथ जुड़ा है।

ठीक अभी तुम्हें केवल आकार दिखाई पड़ते हैं क्योंकि मन के द्वारा आकार ही देखे जा सकते हैं। अ-मन के द्वारा निराकार देखा जा सकता है। जब तुम निराकार को देखते हो तब समस्त जगत एक सागर की भांति है और सारे रूप लहरें हैं। सभी लहरों में सागर लहरा रहा है- वही एक।

ठीक अभी प्रत्येक वस्तु अनेक है। ऐसा नहीं है कि चीजें अनेक हैं, यह इसलिए है कि तुम भीतर खंडित हो। इसीलिए चीजें अनेक दिखाई पड़ती हैं। यह ऐसा है जैसे कि तुम एक दर्पण तोड़ देते हो-कई टुकड़े हो जाते हैं। तब प्रत्येक टुकड़ा प्रतिबिंबित करेगा और तुम्हें कई चेहरे दिखाई पड़ेंगे। तुम वहां पर खड़े हो- तुम एक हो लेकिन दर्पण टूटा हुआ है- तुम्हें कई चेहरे दिखाई पड़ते हैं।

मैंने एक पुरानी कहानी सुनी है:

एक सम्राट ने एक महल बनवाया। सारा महल छोटे-छोटे शीशों से बना था- लाखों शीशे थे। तुम महल में प्रवेश करते और तुम्हें अपने लाखों प्रतिबिंब दिखाई पड़ते चारों ओर अपने लाखों चेहरे दिखाई पड़ते। तुम एक हो, लेकिन दर्पण अनेक हैं।

एक बार ऐसा हुआ, एक कुत्ता महल में चला गया और बहुत संकट में पड़ गया क्योंकि उसने देखा और वह डर गया। उसने भौंकना शुरू कर दिया, और चारों तरफ सभी लाखों कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। उसने सोचा अब कोई बचाव नहीं है। और यह एक शत्रु का सवाल नहीं है-लाखों कुत्ते हैं और सभी खतरनाक! वह उन पर टूट पड़ा, उसने उनसे लड़ना शुरू कर दिया। वह दीवारों से टकराया और मर गया। यही तो तुम्हारे साथ हुआ है यही सबके साथ हो रहा है। सत्य एक है, लेकिन मन के कई खंड हैं। सब-कुछ विभाजित हो जाता है और फिर तुम भयभीत हो जाते हो- सभी ओर शत्रु हैं। फिर तुम भौंकते हो, फिर तुम लड़ना शुरू कर देते हो तुम आक्रामक हो जाते हो तुम अपना बचाव करने की चेष्टा करने लगते हो- व्यर्थ ही क्योंकि कोई भी नहीं है जो तुम पर आक्रमण कर रहा है। तुम भ्रमित हो जाते हो। और फिर तुम अपने स्वः को अपनी ही भ्रांतियों से टकरा कर तोड़ बैठते हो और अपने प्राण गंवा देते हो।

तुम दुखों में जीते हो, तुम दुखों में मर जाते हो। भीतर एक हो जाओ और अचानक बाहर भी सब एक हो जाता है। जैसे तुम होते हो वैसा ही जगत होता है- तुम विभाजित, जगत विभाजित; तुम अविभाजित जगत अविभाजित।

... दस हजार चीजें जैसी वे है? एक ही तत्व की हैं। इस एक तत्व के रहस्य को समझ लेना सारे बंधनों से मुक्त हो जाना है।  
जब सभी वस्तुएं समान रूप से देख ली जाती हैं तो समयातीत आत्मतत्व तक पहुंचना हो जाता है। इस कारणरहित संबंधरहित अवस्था में कोई तुलनाएं या समानताएं संभव नहीं हैं।

इसीलिए इस परम आलोक के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता- क्योंकि यह एक है और शब्द द्वैत के लिए हैं। तुम कुछ कह सकते हो, लेकिन तुम जो भी कहते हो वह ठीक नहीं होगा, क्योंकि वह एक भिन्न तल है एक भिन्न आयाम है।

क्रिसमस पास आ रहा था और एक बड़े उद्योगपति एक बहुत ही धनी व्यक्ति ने अपने पुत्र से पूछा : तुम अपने लिए कैसा क्रिसमस उपहार अपने लिए क्या भेंट पसंद करोगे?

लड़के ने कहा एक छोटा भाई।

उद्योगपति ने कहा. लेकिन उसके लिए तो मुझे पर्याप्त समय चाहिए। अभी तो दो सप्ताह ही बचे हैं।

तब लड़के ने कहा : तो क्या हुआ? क्या आप इस काम के लिए अधिक आदमी नहीं लगा सकते?

... क्योंकि वह हमेशा यही सुनता था- अगर कोई काम करवाना है तो ज्यादा आदमियों को काम पर लगा दिया जाता।' तो क्यों क्या मुश्किल है? क्या आप ज्यादा आदमी काम पर नहीं लगा सकते?' और इस बच्चे को यह बताना कठिन है कि वह जो कह रहा है वह गलत है- वह बिलकुल तर्कसंगत है।

यही स्थिति है। तुम अनेक के जगत को जानते हो। बच्चा घर के चारों ओर के फुटकर कामों की दुनिया से परिचित है प्रतिदिन यही हो रहा है। और एक धनी पिता हर समय कई लोगों को काम पर लगा देता है और जल्दी काम करवा लेता है। वह उसी भाषा को जानता है लेकिन उसे यह रहस्य ज्ञात नहीं कि कैसे एक जीवन जगत में प्रवेश होता है।' काम पर अधिक लोग लगा दो!' वह तर्कसंगत है और उसे यह समझाना कठिन है, जब तक कि वह बड़ा नहीं हो जाता उसकी समझ विकसित नहीं होती।

तुम द्वैत की भाषा को इस जगत की भाषा को जानते हो। तुम्हें एक तत्व के विषय में कुछ भी बताना असंभव है। जो भी कहा जाएगा वह गलत समझा जाएगा- जब तक कि तुम विकसित नहीं हो जाते। यही सारी समस्या है।

बहुत बार लोग मेरे पास आते हैं और वे प्रश्न पूछते हैं। उनके प्रश्न तर्कसंगत होते हैं लेकिन मैं उत्तर नहीं दे पाता क्योंकि उत्तर तभी संभव है जब वे विकसित हो जाते हैं। और वे सोचते हैं, तुम पूछो और उसका उत्तर जरूर होना चाहिए, बना-बनाया। वे सोचते हैं, अगर तुम पूछ सकते हो और एक प्रश्न को स्पष्ट बोल सकते हो, इतना काफी है- अब उत्तर दीजिए।

लेकिन कुछ उत्तर हैं जो तुमको केवल तभी दिए जा सकते हैं जब तुम विकसित हो जाओ। और यही समस्या है जब तुम विकसित हो जाते हो तब उन्हें तुम्हें देने की कोई जरूरत नहीं रहती तुम बस समझ जाते हो। जब यह बच्चा बड़ा हो जाता है तो क्या हमें उसे यह बतलाने की कोई जरूरत होती है कि तुम मूर्ख थे! वह हंसेगा, और कहेगा हां मैं समझता हूं। यह आदमियों को काम पर लगाने का सवाल नहीं है। यह काम ही नहीं है।

जब तुम बड़े हो जाते हो तुम समझते हो लेकिन तुम तभी पूछते हो जब तुम बच्चों के समान होते हो। और तुम सोचते हो कि तुम्हारा प्रश्न उचित है उत्तर दिया जाना चाहिए। सत्य का कुछ भी तुमसे कहा नहीं जा सकता, और जो भी तुमसे कहा जाता है, वह लगभग-लगभग होता है। और स्मरण रहे लगभग सत्य जैसा कुछ नहीं होता है। या तो वह सत्य है या असत्य। इसलिए जो भी कहा जाता है वह निरर्थक है। जब तुम जानोगे तो हंसोगे। लेकिन और कोई उपाय नहीं है कुछ और किया नहीं जा सकता।

इसलिए सोसान या बुद्ध या किसी और के वचन तुम्हें विकास की ओर आकर्षित करने के लिए हैं। जो वे कहते हैं वह महत्वपूर्ण नहीं है। अगर तुम्हारी रुचि उसमें हो जाती है और तुम उस आयाम की ओर विकास करने लगे बढ़ने लगे जिसके विषय में तुम कुछ नहीं जानते तो बात पूरी हो जाती है।

इस एक तत्व के रहस्य को समझ लेना,

सारे बंधनों से मुक्त हो जाना है।

जब सभी वस्तुएं समान रूप से देख ली जाती हैं तो समयातीत आत्मतत्व तक पहुंचना हो जाता है। इस कारणरहित संबन्धरहित अवस्था में

कोई तुलनाएं या समानताएं संभव नहीं हैं।

परम सत्य का कोई कारण नहीं है, क्योंकि कारण कहां से आएगा? परम सत्य पूर्ण है। परम सत्य असंबद्ध है क्योंकि वह किसके साथ संबंधित होगा? वह अकेला है।

तो क्या करें? कैसे कहें? अगर कुछ संबंधित हो, तो उसके बारे में कुछ कहा जा सकता है अगर कुछ सकारण है, तो उसके विषय में कुछ कहा जा सकता है क्योंकि कम से कम दो का प्रवेश तो हो जाता है। अगर दूसरा है तो भाषा संभव हो जाती है। अगर केवल एक है तो सारी भाषा पूरी तरह से निरर्थक हो जाती है।

उस अकारण एक के विषय में क्या करें? केवल एक बात की जा सकती है और वह है अपने भीतर उसे खोजो जो अकारण है। अपने भीतर कुछ खोजो जो एक है और तुम ठीक मार्ग पर हो।

तुम दार्शनिक सिद्धांतों की चिंता न करो इस तरह के और उस तरह के तर्कों में न पड़ो। लाखों तर्क हैं और प्रत्येक एक उलझन बन जाता है और प्रत्येक दार्शनिक सिद्धांत एक नया बंधन बन जाता है। तुम दार्शनिक सिद्धांतों मतों वादों शास्त्रों की चिंता न करो।

तुम बस एक काम करो और वह है अपने भीतर उसे खोजो जो अकारण है, और उसे खोजो जो एक तुम्हारे भीतर है- और वह वही है, क्योंकि वह एक ही अकारण एक हो सकता है।

और एक बार जब तुम्हें उस अकारण की उस एक की छोटी सी झलक भीतर मिल जाती है तुम्हें रास्ता मिल जाता है। अब मंजिल बहुत दूर नहीं है। अब तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है। अब गुरुत्वाकर्षण की भांति मंजिल तुम्हें खींच लेगी अब, चुंबक की तरह, तुम उसकी ओर आकर्षित कर लिए जाओगे। अब तुम उस क्षेत्र में प्रविष्ट हो गए हो जहां से चुंबक काम कर सकता है। तुम्हें बस एक काम करने की जरूरत है- इसमें प्रवेश कर लेना। तब केंद्र तुम्हें खींच लेगा तब किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं है।

सारा प्रयास यह है कि किस तरह तुम्हारा अपने ऊर्जा-स्रोत से संपर्क स्थापित हो जाए। संपर्क खो गया है और टूट गया है। तुम बिलकुल निकट हो बिलकुल करीब होना भी दूरी है। एक छोटा सा मोड़ जरा पीछे मुड़ कर देखना और चीजें बदलनी शुरू हो जाती हैं।

जब वे घटती हैं तुम हंसोगे – 'वह इतना कठिन क्यों था?' लेकिन अगर वे नहीं हो रहीं तो यह कठिन है। ये सोसान जैसे लोग क्यों कहते रहते हैं कि यह 'अभी शीघ्र तस्का' घटित हो सकता है? अपने भीतर उस अकारण को खोजने की चेष्टा करो। तुम इसे कैसे करोगे? मेरे साथ प्रयास करो- उस एक चीज को खोजो जो तुम्हारे भीतर अपरिवर्तनशील है।

सुबह तुम उठते हो, दिन भर काम करते हो- लाखों व्यस्तताएं मुलाकातें रिश्ते हैं। हर चीज बदल जाती है कई भाव-दशाएं आती हैं और चली जाती हैं; कभी तुम क्रोधित होते हो कभी तुम प्रसन्नता अनुभव करते हो, कभी तुम उदास हो जाते हो और कभी बहुत ही आनंदित होते हो कभी नकारात्मक और कभी सकारात्मक।

सब-कुछ बदलता है- मौसम की भांति प्रत्येक चीज बदल जाती है। दिन में तुम जागते हो, रात को तुम्हें सोना ही पड़ता है। दिन में तुम सोचते हो, रात को सपने देखते हो। प्रवाह की भांति सभी कुछ निरंतर गतिशील है। उसे खोजो जो इस सारे प्रवाह में वैसा ही बना रहता है, वह है साक्षी।

रात को तुम सपनों के साक्षी हो, सपने बदलते हैं लेकिन साक्षी, साक्षी वैसा ही रहता है। दिन में तुम अपनी भाव-दशाओं- उदासी, क्रोध, प्रसन्नता के साक्षी हो। भाव- दशाएं बदलती हैं लेकिन साक्षी वैसा ही बना रहता है। स्वस्थ हो, तुम स्वास्थ्य के साक्षी होते हो, बीमार हो, तुम बीमारी के साक्षी होते हो। धनी हो, तुम संपत्ति के साक्षी होते हो, निर्धन हो, तुम निर्धनता के साक्षी होते हो। एक चीज सतत वही बनी रहती है और वह है साक्षी। और सब-कुछ सकारण है। यह साक्षी अकारण है।

कोई कुछ कहता है, तुम्हारी प्रशंसा करता है, तुम प्रसन्न होते हो- यह सकारण है। एक मित्र तुम्हें मिलने आता है, तुम आनंदित होते हो- यह सकारण है। कोई कुछ कहता है, तुम्हारा अपमान करता है, तुम अप्रसन्न होते हो- यह सकारण है। मौसम अच्छा नहीं है, तुम उदास और निराश हो- उसका कारण है। धूप खिली है, तुम अच्छा, जीवंत, सक्रिय महसूस करते हो- इसका कारण है। यदि दिन में तुमने भोजन नहीं किया, तो रात को तुम सपना देखते हो कि तुम स्वादिष्ट भोजन खा रहे हो- यह सकारण है।

जो चीजें तुम पर घटती हैं, उन्हें देखो। क्या उनका कारण है? अगर वे सकारण हैं तो उनके संबंध में अधिक चिंता न करो, वे भ्रांतियों के जगत से संबंधित हैं। तुम उसकी खोज में हो जो अकारण है। साक्षी, तुम पाओगे कि केवल साक्षी ही है जो अकारण है। उसका कारण नहीं है, कोई उसे करता नहीं है।

इसीलिए बुद्धपुरुष कहते हैं कि कोई सदगुरु ही तुम्हें मार्ग दिखा सकता है। वह रूपांतरण का कारण नहीं बन सकता है, क्योंकि सारी बात अकारण को खोजने की है, इसलिए सदगुरु कैसे उसे कर सकता है? कोई भी नहीं कर सकता। वह केवल तुम्हें मार्ग दिखा सकता है-यात्रा तुम्हें करनी पड़ती है।

कोई बुद्ध तुम्हें रूपांतरित नहीं कर सकता। अगर कोई बुद्ध तुम्हारा रूपांतरण कर सकता तो वह भी तुम्हारे माया के जगत का हिस्सा होगा, क्योंकि फिर तुम्हारे लिए कारण होगा। अगर तुम मेरे पास आते हो और प्रसन्नता अनुभव करते हो, तो उस अनुभूति का कारण है। अगर तुम मुझसे दूर जाते हो और अप्रसन्नता का अनुभव करते हो, तो उस अनुभूति का कारण है।

जरा देखो? सुख, दुख, उदासी, हर्ष, वे आते हैं और जाते हैं, वे ऋतुएं हैं तुम्हारे चारों ओर। साक्षी केंद्र बना रहता है, अकारण, अपरिवर्तनशील। उसे अपने भीतर खोजो, और तब सब-कुछ स्पष्ट हो जाता है। जब तुम भीतर स्पष्ट होते हो, सभी कुछ पारदर्शी हो जाता है। सत्य तुम्हारे चारों ओर सब तरफ है, केवल तुम्हें एक हो जाना है।

आज इतना ही।

## सच्ची श्रद्धा का जीवन

सूत्र:

गति को स्थिरता और स्थिरता को गतिमय समझो,  
और गति और स्थिरता की दशा दोनों विलीन हो जाती हैं। जब द्वैत नहीं रहता, तो अद्वैत भी नहीं रह सकता।

इस परम अंत की अवस्था पर कोई नियम,  
या कोई व्याख्या लागू नहीं होती।  
मार्ग के अनुरूप हो चुके अखंड मन के लिए  
सभी आत्म-केंद्रित प्रयास समाप्त हो जाते हैं।  
संदेह और अस्थिरता तिरोहित हो जाते हैं  
और सच्ची श्रद्धा का जीवन संभव हो जाता है।  
एक ही प्रहार से हम बंधन से मुक्त हो जाते हैं;  
न हमें कुछ पकड़ता है और न हम कुछ पकड़ते हैं।  
मन की शक्ति के प्रयास के बिना,  
सभी कुछ शून्य है स्पष्ट है स्व-प्रकाशित है।  
यहां विचार, भाव, ज्ञान, और कल्पना का कोई मूल्य नहीं  
गति को स्थिरता और स्थिरता को गतिमय समझो,  
और गति और स्थिरता की दशा दोनों विलीन हो जाती हैं।

यह सर्वाधिक बुनियादी बातों में से एक है। इसे जितना संभव हो सके उतनी गहराई से समझने की चेष्टा करो। मन केवल एक ही छोर देख सकता है और वास्तविकता दो छोर हैं, दोनों विपरीत छोर एक साथ। मन एक अति देख सकता है एक अति में दूसरी अति छिपी है लेकिन मन इसे देख नहीं पाता है। जब तक तुम दोनों विपरीत पक्षों को एक साथ न देख सको तब तक तुम वह न देख पाओगे जो है और जो भी तुम देखोगे वह झूठा होगा क्योंकि वह आधा होगा।

स्मरण रहे सत्य केवल पूर्ण हो सकता है। यदि वह आधा है तो वह झूठ से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि आधा सत्य-सत्य होने का भाव लिए होता है और वह सत्य नहीं है। तुम उससे धोखा खा जाते हो। सत्य को जानना सभी में पूर्ण को जान लेना है।

उदाहरण के लिए, तुम गति को देखते हो कोई चीज चल रही है- लेकिन क्या वह चलना उसके बिना संभव है जो उसके भीतर छिपा है, जो चल नहीं रहा है? गति उसके बिना असंभव है जो उसके भीतर स्थिर है।

एक पहिया घूमता है लेकिन पहिए का केंद्र स्थिर बना रहता है वह स्थिर केंद्र पर घूमता है। अगर तुम केवल पहिए को ही देखते हो तो तुमने आधा ही देखा है और आधा बहुत खतरनाक है। और अगर तुम अपने मन में आधे को पूरा बना लेते हो तो तुम भ्रान्त धारणाओं के जगत में गिर चुके हो।

तुम एक व्यक्ति को प्रेम करते हो, तुम यह कभी नहीं देखते कि तुम्हारे प्रेम में घृणा छिपी है। वह वहां मौजूद है, तुम्हें वह पसंद है या नहीं इसका सवाल नहीं है। जब भी तुम प्रेम करते हो, घृणा वहां मौजूद रहती है- विपरीत ध्रुव- क्योंकि बिना घृणा के प्रेम का अस्तित्व हो नहीं सकता। वह तुम्हारी पसंद का प्रश्न नहीं है। वह ऐसा है।

प्रेम का अस्तित्व घृणा के बिना नहीं हो सकता। तुम एक व्यक्ति को प्रेम करते हो और उसी से घृणा भी करते हो लेकिन मन केवल एक को ही देख सकता है। जब मन प्रेम को देखता है तो वह घृणा को देखना बंद कर देता है जब घृणा ऊपर आती है जब मन घृणा को पकड़ लेता है तो वह प्रेम को देखना बंद कर देता है। और अगर तुम मन से पार जाना चाहते हो तो तुम्हें दोनों को एक साथ देखना होगा- दोनों अतियां दोनों विपरीतताएं।

यह बस घड़ी के पेंडुलम की भांति है। पेंडुलम दाएं जाता है जो दिखाई पड़ता है वह यह कि पेंडुलम दाईं ओर जा रहा है। लेकिन कुछ अदृश्य भी है और वह है कि जब पेंडुलम दाईं ओर जा रहा है तो वह बाईं ओर जाने के लिए बल प्राप्त कर रहा है। वह इतना स्पष्ट नहीं है लेकिन शीघ्र ही तुम देखोगे।

एक बार जब उसने एक अति को छू लिया तो पेंडुलम विपरीत छोर की ओर गति करना प्रारंभ कर देता है वह बाईं ओर चला जाता है। और वह बाईं ओर भी उसी सीमा तक जाता है जिस सीमा तक वह दाईं ओर गया था। जब वह बाईं ओर जाता है तुम फिर धोखा खा सकते हो। तुम देखोगे कि वह बाईं ओर जा रहा है लेकिन भीतर गहरे में वह दाईं ओर जाने की शक्ति भी एकत्रित कर रहा है।

जब तुम प्रेम करते हो तुम घृणा के लिए ऊर्जा इकट्ठी कर रहे हो जब तुम घृणा करते हो तुम प्रेम के लिए ऊर्जा इकट्ठी कर रहे हो। जब तुम जीवित हो तुम मरने के लिए ऊर्जा इकट्ठी कर रहे हो और जब तुम मर जाते हो तुम पुनर्जन्म के लिए ऊर्जा इकट्ठी कर रहे हो।

अगर तुम केवल जीवन को ही देखते हो तो तुम चूक जाओगे। जीवन में सर्वत्र छिपी मृत्यु को देखो। और अगर तुम यह देख पाओ कि जीवन में मृत्यु छिपी है, तो फिर तुम उलटा भी देख सकते हो कि मृत्यु में जीवन छिपा है। तब दोनों छोर समाप्त हो जाते हैं। जब तुम उन्हें इकट्ठे एक ही साथ देखते हो, तब उसके साथ ही तुम्हारा मन भी विदा हो जाता है। क्यों? -क्योंकि मन केवल आशिक हो सकता है, वह कभी पूर्ण नहीं हो सकता।

अगर तुम्हें प्रेम में छिपी घृणा दिखाई दे तो तुम क्या करोगे? अगर तुम्हें घृणा में छिपा प्रेम दिखाई तो तब तुम क्या चुनोगे चुनाव करना असंभव हो जाएगा, क्योंकि अगर तुम देखते हो ' मैं प्रेम को चुनता हूं ' तुम यह भी देखते हो कि तुम घृणा को भी चुन रहे हो। और एक प्रेमी घृणा का चुनाव कैसे कर सकता है?

तुम चुन पाते हो क्योंकि घृणा तुम्हें दिखाई नहीं देती। तुमने प्रेम को चुना था, और फिर तुम सोचते हो कि किसी दुर्घटनावश घृणा आ गई है। लेकिन जैसे ही तुम प्रेम को चुनते हो, तुमने घृणा को भी चुन लिया है। जैसे ही तुम जीवन को पकड़ते हो तुमने मृत्यु को भी पकड़ लिया है। कोई भी मरना नहीं चाहता- तब जीवन से न चिपको क्योंकि जीवन मृत्यु की ओर अग्रसर है।

जीवन का अस्तित्व ध्रुवीयता में है और मन ध्रुवीयता का एक अंश है इसीलिए मन असत्य है। और मन उस एक अंश को संपूर्ण बनाने की चेष्टा करता है। मन कहता है, 'मैं इस पुरुष या स्त्री से बस प्रेम करता हूं और मैं सिर्फ प्रेम करता हूं। मैं इस स्त्री से घृणा कैसे कर सकता हूं? जब मैं प्रेम करता हूं मैं प्रेम ही करता हूं; घृणा करना असंभव है। '

मन तर्कसंगत प्रतीत होता है लेकिन वह गलत है। अगर तुम प्रेम करते हो तो घृणा संभव है घृणा सिर्फ तभी संभव है जब तुम प्रेम करते हो। तुम किसी व्यक्ति को बिना प्रेम किए घृणा नहीं कर सकते तुम किसी को पहले अपना मित्र बनाए बिना शत्रु नहीं बना सकते। वे दोनों साथ-साथ चलते हैं वे एक ही सिक्के के दो पहलू जैसे हैं, तुम एक ही पक्ष को देखते हो दूसरा पीछे छिपा है- लेकिन दूसरा वहां है, हमेशा प्रतीक्षा करता हुआ। और जितना तुम बाईं ओर जाते हो उतनी ही तुम दाईं ओर जाने की तैयारी कर रहे हो।

क्या होगा अगर मन दोनों को एक साथ देख सके? मन का होना संभव नहीं है क्योंकि फिर सब असंगत अतर्क हो जाता है। मन केवल एक स्पष्ट तर्कसंगत ढांचे में ही जी सकता है, विपरीत अस्वीकृत होता है। तुम कहते हो ' यह मेरा मित्र है और वह मेरा शत्रु है। ' तुम ऐसा कभी नहीं कह सकते ' यह मेरा मित्र और मेरा शत्रु है। ' अगर तुम यह कहते हो तो बात तर्क के विरुद्ध हो जाती है। अगर तुम असंगत बातों को मन में प्रवेश करने देते हो तो वे मन को पूरी तरह चकनाचूर कर देती हैं- मन गिर जाता है।

जब तुम जीवन की असंगति को देखते हो जीवन किस तरह परस्पर विरोधों के बीच घूमता है जीवन कैसे विपरीतताओं में जीता है तो तुम्हें मन को छोड़ना ही पड़ता है। मन को स्पष्ट सीमा-रेखाएं चाहिए और जीवन में एक भी सीमा-रेखा नहीं है। तुम्हें जीवन से अस्तित्व से अधिक और कुछ भी इतना असंगत नहीं मिल सकता। ' असंगत ' ही इसके लिए शब्द है अगर तुम दोनों ध्रुवीयता को एक साथ देखते हो।

तुम मिलते हो- तुम केवल बिछुड़ने के लिए मिलते हो। तुम किसी व्यक्ति को चाहते हो- तुम किसी व्यक्ति को चाहते हो केवल ना चाहने के लिए। तुम प्रसन्न हो- तुम प्रसन्न हो केवल अप्रसन्नता के बीज बोने के लिए। क्या तुम इससे अधिक बेतुकी परिस्थिति की कल्पना कर सकते हो? अगर तुम्हें सुख चाहिए, तो तुमने पहले ही दुख की चाहना कर ली है अब तुम निरंतर दुखी रहोगे।

क्या किया जाए? मन के पास करने को कुछ बचा नहीं है। मन बस मिट जाता है। और जब मन मिट जाता है तब जीवन असंगत प्रतीत नहीं होता है, तब जीवन एक रहस्य बन जाता है।

इसे समझ लेना जरूरी है क्योंकि जीवन मन की अति तर्कसंगता के कारण असंगत दिखाई पड़ता है; जीवन जंगली प्रतीत होता है क्योंकि तुम बहुत लंबे समय से मानव-निर्मित उपवन में रहे हो। तुम जंगल में जाओ और वह जंगली दिखाई देता है, लेकिन वह तुलना के कारण जंगली प्रतीत होता है। एक बार जब तुम्हें यह समझ में आ जाता है कि जीवन ऐसा है जीवन ऐसा है कि विपरीत सदा साथ जुड़ा है...।

किसी व्यक्ति से प्रेम करो और घृणा आ जाएगी। एक मित्र बनाओ और एक शत्रु का जन्म हो जाता है। प्रसन्न होओ और कहीं से पिछले दरवाजे से अप्रसन्नता प्रवेश कर जाती है। इस क्षण का मजा लो और शीघ्र ही तुम रोओगे और चिल्लाओगे। हंसो, और हंसी के ठीक पीछे आसूर फूट कर बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। फिर क्या करें? कुछ भी करने को नहीं बचा। ऐसी ही हैं चीजें।

और सोसान कहता है:

गति को स्थिरता समझो.....

वह यही कह रहा है। वह कह रहा है जब तुम किसी चीज को चलते हुए देखते हो, तो याद रखो भीतर कुछ अचल है। और सारी गति स्थिर की ओर ले जाएगी। वह कहां जाएगी? तुम दौड़ते हो, चलते हो आगे बढ़ते हो। तुम कहां जा रहे हो? – बस कहीं विश्राम करने के लिए जरा कहीं बैठने के लिए। तुम बस कहीं आराम करने के लिए दौड़ रहे हो। इसलिए दौड़ विश्राम पर पहुंचती है गति स्थिर होने की अवस्था पर पहुंचती है। और वह

स्थिरता पहले से ही वहां है। तुम दौड़ लगाओ और देखो- तुम्हारे भीतर कुछ है जो दौड़ नहीं रहा है वह दौड़ नहीं सकता। तुम्हारी चेतना अचल बनी रहती है। तुम चाहो तो सारी दुनिया में घूम लो तुम्हारे भीतर कुछ है जो कभी नहीं घूमता घूम ही नहीं सकता- और सारी गति उस स्थिर केंद्र पर निर्भर है। तुम सब प्रकार की स्थितियों, भाव- दशाओं में उलझ जाते हो लेकिन तुम्हारे भीतर कुछ अनछुआ अलिप्त रह जाता है। और उलझनों का यह सारा जीवन उसी अलिप्त तत्त्व के कारण संभव है।

तुम एक व्यक्ति को प्रेम करते हो तुम जितना हो सके उतना प्रेम करते हो। लेकिन भीतर गहरे में कुछ ऐसा है जो अलग निर्लिप्त बना रहता है। उसे ऐसा होना ही चाहिए अन्यथा तुम खो जाओगे। कुछ है जो आसक्ति में भी अनासक्त बना रहता है। जितनी अधिक आसक्ति होगी उतनी ही अधिक विरक्ति की अनुभूति तुम्हारे भीतर होगी क्योंकि बिना विपरीत के किसी का अस्तित्व नहीं हो सकता। वस्तुओं की सत्ता विपरीत के कारण है।

गति को स्थिरता और स्थिरता को गतिमय समझो,...

और जब तुम कुछ स्थिर देखते हो, तो मूर्ख मत बनना- वह अचल है लेकिन कुछ पहले से ही चल रहा है। अब वैज्ञानिक कहते हैं कि सब-कुछ गतिमान है यह अचल दीवाल भी, चट्टान भी। वे इतनी तीव्र गति से चल रहे हैं उनके अणु इतनी तीव्रता से गति कर रहे हैं कि तुम गति को देख नहीं पाते। इसीलिए वे स्थिर दिखाई देते हैं।

गति बहुत तीव्र है उतनी ही तेज है जितनी तेज प्रकाश की किरण चलती है। प्रकाश की किरण एक सेकेंड में एक लाख छियासी हजार मील प्रति सेकेंड के वेग से गति करती है। यही एक अणु की गति है। वह एक वर्तुल में घूमता है। वह इतनी तीव्र गति से घूमता है कि स्थिर दिखाई देता है।

कुछ भी स्थिर नहीं है और कुछ भी पूरी तरह से गतिमान नहीं है। प्रत्येक दोनों है- कुछ गतिमान कुछ स्थिर और स्थिर सारी गति का आधार बना रहता है। जब तुम कुछ स्थिर देखो तो धोखा मत खाना भीतर देखना और तुम पाओगे कि कहीं पहले ही गति घटित हो रही है। अगर तुम कुछ गतिमान देखो तो स्थिर की खोज करना। तुम उसे सदा वहां पाओगे यह बिलकुल निश्चित है क्योंकि एक अति अकेली नहीं हो सकती।

अगर मैं तुम्हें एक छड़ी दूं और कहूं कि इस छड़ी का एक ही सिरा है, इसका दूसरा- सिरा नहीं है तुम कहोगे कि यह असंभव है। अगर इसका एक सिरा है तो दूसरा भी होना चाहिए हो सकता है वह छिपा हुआ हो लेकिन यह असंभव है कि छड़ी का एक ही सिरा हो। दूसरा अवश्य होगा अगर आरंभ है तो अंत अवश्य होगा।

बुद्ध निरंतर यही कहते हैं अगर तुम्हारा जन्म हुआ है, तो मृत्यु भी अवश्य होगी। जो भी जन्मा है, वह मरेगा। क्योंकि एक छोर प्रारंभ है तो दूसरा छोर कहां है छड़ी का दूसरा सिरा? उसे वहां होना ही चाहिए। हर चीज जो जन्मी है, उसे मरना ही पड़ेगा, हर चीज जो बनी है वह मिटेगी हर चीज जो संयुक्त हुई है अलग हो जाएगी प्रत्येक मिलन वियोग है प्रत्येक आगमन प्रस्थान है।

दोनों को एक साथ देखो और मन तुरंत मिट जाएगा। हो सकता है तुम थोड़ा चकरा जाओ क्योंकि मन सदा तर्कसंगत सीमा-रेखाओं में, तर्कसंगत स्पष्टता में जीया है। जब सब विभेद मिट जाते हैं सबमें छिपा विपरीत भी तो मन चकरा जाता है।

उस व्याकुलता को होने दो उसे घटित होने दो। जल्दी ही वह व्याकुलता चली जाएगी और तुम एक नई बुद्धिमत्ता एक नई जानकारी सत्य की एक नई दृष्टि में स्थिर हो जाओगे।

सत्य की यह नई दृष्टि संपूर्ण है, और इस संपूर्ण के साथ तुम शून्य हो। अब इसके संबंध में कोई मत नहीं है अब तुम जानते हो कि प्रत्येक मत असत्य होने वाला है।

किसी ने महावीर से पूछा – क्या परमात्मा है?

और महावीर ने कहा हां ना ही और न दोनों।

आदमी उलझन में पड़ गया। उसने कहा मैं समझा नहीं। या तो आप हां कहें या न कहें, लेकिन दोनों एक साथ न कहें।

महावीर ने कहा ये तो केवल तीन ही दृष्टिकोण हैं। अगर तुम पूरी बात सुनना चाहते हो तो मेरे पास प्रत्येक बात के लिए सात दृष्टिकोण हैं।

और महावीर के पास हैं! पहले वे कहते हैं हां- यह पूरा सत्य नहीं है केवल एक दृष्टिकोण है। फिर वे कहते हैं नहीं- यह भी पूरा सत्य नहीं है- दूसरा दृष्टिकोण है। फिर वे कहते हैं ही और न दोनों- तीसरा दृष्टिकोण। फिर वे कहते हैं हां और न, दोनों नहीं- चौथा दृष्टिकोण। फिर वे कहते हैं, हां और हां, और न दोनों- पांचवां दृष्टिकोण। न और हां और दोनों नहीं- छठवां दृष्टिकोण। न और हां और साथ ही दोनों नहीं- सातवां दृष्टिकोण।

वे कहते हैं सात पक्ष हैं और तब वह बात पूरी है। और वे ठीक हैं, लेकिन मन चकरा जाता है। लेकिन वह तुम्हारी समस्या है उनकी नहीं। वे ठीक हैं, क्योंकि उनका कहना है कि जब भी तुम कहते हो ही वह आधा है। एक अर्थ में एक वस्तु है, लेकिन दूसरे अर्थ में वह न होने के मार्ग पर चल ही चुकी है।

तुम कहते हो यह बच्चा जीवित है या मृत? वह जीवित है ही। लेकिन महावीर कहते हैं वह मृत्यु के मार्ग पर चल चुका है। वह मरेगा और मृत्यु निश्चित है इसलिए वक्तव्य में इसे भी समाविष्ट कर लो; नहीं तो वक्तव्य आधा होगा, असत्य होगा।

इसलिए महावीर कहते हैं हां एक अर्थ में बच्चा जीवित है और एक अर्थ में नहीं, क्योंकि इस बच्चे की मृत्यु होगी- न केवल मृत्यु होगी वास्तव में वह मरा ही हुआ है क्योंकि वह जीवित है। मृत्यु वहां छिपी है, वह उसका एक हिस्सा है। और इसीलिए वे कहते हैं कि यह तीसरा कथन कहना बेहतर होगा? वह दोनों है।

लेकिन बच्चा जीवित और मृत दोनों कैसे हो सकता है?- क्योंकि मृत्यु जीवन को नकार देती है और जीवन मृत्यु को नकार देता है। इसीलिए महावीर कहते हैं कि चौथा दृष्टिकोण भी होने दो। वे दोनों ही नहीं है। इसी तरह वे कहे जाते हैं और जब तक वे अपना सात संभावनाओं वाला वक्तव्य समाप्त करते हैं तुम इतनी अधिक उलझन में पड़ जाते हो जितना तुम पूछने से पहले भी न थे। लेकिन वह तुम्हारी समस्या है। वे कहते हैं मन को छोड़ दो क्योंकि मन संपूर्ण को नहीं देख सकता वह केवल पहलुओं को ही देख सकता है।

क्या तुमने कभी गौर किया है? अगर मैं तुम्हें एक कंकड़ दूं क्या तुम पूरे कंकड़ को देख सकते हो? तुम जब भी देखते हो केवल एक ही तरफ को देखते हो दूसरा छिपा है। अगर तुम दूसरे को देखते हो तो फिर पहला हिस्सा छिपा है। एक छोटा सा कंकड़ जिसे तुम हथेली पर रख सकते हो उसे भी पूरा नहीं देख सकते।

मन किसी भी चीज को पूरा-पूरा नहीं देख सकता। मैं तुमको देख रहा हूं लेकिन तुम्हारी पीठ छिपी हुई है। तुम मुझको देख रहे हो मेरा चेहरा तुम्हें दिखाई देता है लेकिन मेरी पीठ नहीं। और तुमने मुझे कभी पूरा-पूरा नहीं देखा क्योंकि जब तुम मेरी पीठ देखते हो तो तुम मेरा चेहरा नहीं देखोगे।

किसी भी चीज को पूर्ण रूप में देख पाना मन की संभावना नहीं है। वह केवल आधा ही देख सकता है दूसरे आधे का अनुमान लगाया जाता है। वह अनुमान है, इसे मान लिया गया है कि वह वहां होगा ही क्योंकि यह कैसे हो सकता है कि चेहरा हो और पीठ न हो? इसलिए हम अनुमान लगाते हैं कि पीठ तो होगी, होनी ही चाहिए।

लेकिन अगर तुम दोनों को एक साथ देख सको तो घबड़ाहट होगी। अगर तुम उसे सहन कर सकते हो और उससे गुजर जाओ, तब स्पष्टता आती है तब सारे बादल विलीन हो जाते हैं। दरवेश नृत्य में सारा जोर इस बात पर है कि मन चक्कर में डाल दिया जाए। कई उपाय हैं महावीर ने एक बहुत ही तर्कपूर्ण युक्ति का उपयोग किया सप्त आयामी तर्क। वह बिलकुल दरवेश नृत्य की भांति है वह तुम्हें चक्कर में डाल देता है।

जो बहुत ही बौद्धिक हैं उनके लिए महावीर की विधि बहुत अच्छी है। वह चक्कर में डाल देती है और सब-कुछ उलटा-पुलटा हो जाता है और तुम सच में ही कुछ नहीं कह सकते-तुम्हें मौन हो जाना पड़ता है। तुम जो भी कहते हो वह असंगत प्रतीत होता है और तुम्हें तुरंत उसे अस्वीकार करते रहना पड़ता है। और जब तक तुमने सब कह दिया है, कुछ भी नहीं कहा गया, क्योंकि प्रत्येक वक्तव्य ने दूसरे का खंडन कर दिया।

महावीर का यह सप्त आयामी तर्क ठीक मन के दरवेश नृत्य के समान है। वह तुम्हें चक्कर में डाल देता है। दरवेश नृत्य मन को चकरा देने की शारीरिक विधि है और वह मन को चकरा देने की मानसिक विधि है।

अगर तुम तेजी से नृत्य करते हो तेजी से घूमते हो तो तुम्हें अचानक लगता है कि चक्कर आ रहे हैं मितली आ रही है ऐसे लगता है जैसे कि मन मिट रहा है। अगर तुम उसे कुछ दिन जारी रखो तो कुछ दिन चक्कर आएंगे और फिर सब व्यवस्थित हो जाएगा। जैसे ही चक्कर आने समाप्त हुए, तुम पाओगे कि मन भी विदा हो गया है, क्योंकि अब चक्करों को अनुभव करने वाला कोई नहीं बचा। और तब एक स्पष्टता आती है। फिर तुम मन के बिना चीजों को देखते हो। मन के बिना संपूर्ण प्रकट हो जाता है- और संपूर्ण के साथ रूपांतरण होता है।

जब द्वैत नहीं रहता, तो अद्वैत भी नहीं रह सकता।

और स्मरण रहे जब हम ' एकता ' शब्द का प्रयोग करते हैं; वह भी द्वैत का ही एक अंश है। अगर द्वैत नहीं है तो एकता कैसे हो सकती है? इसीलिए हिंदू ' एकता ' का प्रयोग नहीं करते। अगर तुम शंकराचार्य से पूछो अस्तित्व का क्या स्वभाव है? वे कहते हैं, अद्वैत दो नहीं।

वे कभी नहीं कहेंगे एक क्योंकि तुम एक कैसे कह सकते हो? अगर केवल एक है, तो तुम कैसे कह सकते हो एक? इसकी सार्थकता के लिए दो की आवश्यकता है। अगर दूसरे की, दो की कोई संभावना नहीं है, फिर यह कहने की क्या जरूरत है कि वह एक है? शंकर कहते हैं ' अधिक से अधिक मैं कह सकता हूँ दो नहीं लेकिन मैं निश्चित रूप से एक नहीं कह सकता हूँ। मैं वह कह सकता हूँ जो सच्चाई नहीं है वह दो नहीं है। मैं नहीं कह सकता जो वह है क्योंकि अर्थ शब्द सब निरर्थक हो जाते हैं। '

जब द्वैत नहीं रहता,

जब तुम प्रेम को घृणा से अलग नहीं देख सकते, तब तुम प्रेम को क्या अर्थ दोगे? सोसान द्वारा शब्दकोश नहीं लिखे जा सकते। अगर कोई मुझसे शब्दकोश लिखने के लिए कहे तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। वह असंभव है क्योंकि मैं प्रेम को क्या अर्थ दूंगा? शब्दकोशों की संभावना केवल तभी है अगर प्रेम और घृणा भिन्न हों केवल भिन्न ही नहीं बल्कि विपरीत हों। इसलिए तुम लिख सकते हो प्रेम घृणा नहीं है। जब तुम्हें घृणा की परिभाषा करनी ही पड़े तो तुम कह सकते हो प्रेम नहीं।

लेकिन सोसान क्या करेगा? अगर तुम उससे पूछते हो प्रेम क्या है? तो वह प्रेम की परिभाषा कैसे करे? क्योंकि प्रेम घृणा भी है। वह कैसे जीवन की परिभाषा देगा? – क्योंकि जीवन मृत्यु भी है। वह बच्चे की क्या

परिभाषा करेगा? – क्योंकि बच्चा बूढ़ा भी है। वह सौंदर्य की क्या परिभाषा करेगा? -क्योंकि सौंदर्य कुरूपता भी है। जब सीमाएं मिट जाती हैं तब तुम किसी की परिभाषा नहीं कर सकते क्योंकि परिभाषा के लिए सीमाएं चाहिए, और परिभाषा विपरीत पर निर्भर है सभी परिभाषाएं विपरीत पर निर्भर हैं।

अगर हम कहें कि पुरुष क्या है, हम कह सकते हैं स्त्री नहीं- और वह परिभाषा हो गई। लेकिन अगर तुम सोसान को देखो और उसे समझो प्रत्येक पुरुष एक स्त्री है, प्रत्येक स्त्री एक पुरुष है। चीजें ऐसी ही हैं। अब मनोवैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य की खोज कर ली है ' कि पुरुष और स्त्री द्विलिंगी हैं। प्रत्येक पुरुष के पास भीतर एक स्त्री छिपी है और प्रत्येक स्त्री के पास भीतर एक पुरुष छिपा है- वे वहां हैं। कोई स्त्री केवल स्त्री नहीं है हो नहीं सकती। इस अस्तित्व में बिना विपरीत के कुछ नहीं हो सकता। और कोई पुरुष स्त्री के बिना नहीं हो सकता स्त्री वहां मौजूद है।

तुम माता और पिता, दोनों से जन्मे हो एक पुरुष था, एक स्त्री थी। तुम अपने भीतर दोनों को आधा-आधा लिए हो। ऐसा होना ही चाहिए पैदा होने का और कोई रास्ता नहीं है। तुम केवल स्त्री से ही उत्पन्न नहीं हुए हो अन्यथा तुम केवल स्त्री ही होते। तुम केवल पिता से पैदा नहीं हुए अन्यथा तुम केवल पुरुष होते। तुम द्वैत से स्त्री और पुरुष से उत्पन्न हुए हो। उन दोनों का योगदान है तुम दोनों हो।

उसी से कठिनाई पैदा होती है क्योंकि जब मन स्त्री के विषय में सोचता है तो हमेशा नारी सुलभ गुणों के बारे में ही सोचता है। लेकिन तब तुम्हें पता नहीं है... अगर स्त्री उग्र रूप धारण करती है तो वह किसी भी पुरुष से कहीं अधिक उग्र हो सकती है; अगर वह क्रोधित होती है तो कोई पुरुष उसका मुकाबला नहीं कर सकता है अगर वह घृणा करती है कोई पुरुष उसके समान घृणा नहीं कर सकता है।

क्यों? – क्योंकि ऊपरी तल पर उसका स्त्री-पक्ष थक चुका है और उसका पुरुष- पक्ष हमेशा विश्राम में है और वह ऊर्जा से अधिक भरा है। इसलिए जब भी वह क्रोधित होती है वह बहुत अधिक क्रोधित होती है क्योंकि पुरुष काम करना शुरू कर देता है, और वह पुरुष विश्राम में है। और जब कभी पुरुष समर्पण करता है या अत्यधिक प्रेमपूर्ण होता है वह किसी भी स्त्री से अधिक खैण होता है क्योंकि तब वह स्त्री-पक्ष जो सदा विश्राम में है और पीछे छिपा है और सदा ताजा और युवा है, उभर आता है।

हिंदुओं के देवी-देवताओं को देखो। उन्होंने उचित बात को अपनाया है उन्होंने द्वैत को बहुत अच्छी तरह समझ लिया है। तुमने काली माता का चित्र देखा होगा। वह बहुत ही उग्र स्त्री है उसके गले में मुंडमाला है, एक हाथ में खून और कटा हुआ सिर है, और अनेक हाथों में शस्त्र पकड़े हैं। वह शिव की पत्नी है और शिव नीचे लेते हुए हैं और वह उनकी छाती पर खड़ी है।

जब पहली बार पश्चिम वासियों ने इस प्रतीक के बारे में सोचना शुरू किया, तो वे बहुत हैरान हुए ' क्यों? आप इस स्त्री को मां क्यों कहते हैं? वह मृत्यु जैसी दिखती है!' लेकिन हिंदू कहते हैं कि मां में मृत्यु भी है क्योंकि वह जन्म देती है फिर मृत्यु, विपरीत कौन देगा? मां तुम्हें जन्म देती है फिर वह तुम्हें मृत्यु भी देगी। ऐसा होना ही चाहिए।

काली मां दोनों है भयानक विनाशक और सर्जक। वह मा है सर्जनात्मक शक्ति और वह मृत्यु भी है, विध्वंसात्मक शक्ति। वह शिव से प्रेम करती है लेकिन उसकी छाती पर खड़ी है जैसे उसकी हत्या करने को तैयार हो।

लेकिन जीवन का यही स्वभाव है। प्रेम मारता है, जन्म मृत्यु बन जाता है सौंदर्य मिट जाता है कुरूपता आ जाती है। प्रत्येक वस्तु विपरीत में खो जाती है, विपरीत में मिल जाती है। सारा तर्क व्यर्थ दिखाई देता और बुद्धि चकरा जाती है।

जब द्वैत नहीं रहता,

और जब तुम सबके भीतर आर-पार देख लेते हो उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है- क्योंकि प्रेम घृणा है। उचित शब्द होगा ' प्रेम-घृणा ' एक शब्द दो शब्द नहीं। उचित होगा कहना ' जीवन-मृत्यु ' – एक शब्द, दो शब्द नहीं। उचित शब्द होगा ' पुरुष-स्त्री, ' ' स्त्री-पुरुष ' – दो शब्द नहीं एक शब्द इकट्ठे।

लेकिन फिर एकत्व भी विलीन हो जाता है उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। तब यह कहने का क्या अभिप्राय है कि जीवन एक है? दो विलीन हो गया उसी कम में एक भी विलीन हो जाता है।

इसीलिए सोसान और बुद्ध के अनुयायी इस पर बल देते हैं कि जब तुम्हें सत्य का बोध होता है वह न तो एक है न दो। वह शून्यता है। अब तुम समझ सकते हो कि वे क्यों कहते हैं शून्यता, खालीपन। सब विलीन हो जाता है, क्योंकि जब दो विलीन हो जाते हैं, एक भी विलीन हो जाता है- फिर क्या बचता है? कुछ भी नहीं बचता, या केवल ना- कुछ बचता है। यह ना-कुछ बुद्धत्व का चरम शिखर है जब तुम्हें सब-कुछ शून्य दिखाई देता है, जब सब-कुछ शून्य हो जाता है।

इस परम अंत की अवस्था पर कोई नियम,

या कोई व्याख्या लागू नहीं होती।

मार्ग के अनुरूप हो चुके अखंड मन के लिए, सभी आत्म-केंद्रित प्रयास समाप्त हो जाते हैं।

तुम इस शून्यता से क्या प्राप्त करने की चेष्टा करोगे? कहां है मंजिल और कौन है खोज करने वाला और कौन है खोजा जाने वाला? पाने के लिए कोई लक्ष्य नहीं है, वहां कोई नहीं है जो प्राप्त कर सकता है। और सभी प्रयास समाप्त हो जाते हैं।

यही है बुद्ध की शांति पूर्ण मौन- क्योंकि न कुछ पाने को है, न ही कोई पाने वाला है, न कहीं जाना है, न कोई जाने वाला है। सभी कुछ शून्य है। अचानक सारा प्रयास विलीन हो जाता है। तुम कहीं नहीं जा रहे हो। तुम हंसना शुरू कर देते हो, तुम इस शून्यता का आनंद लेने लगते हो। तब तुम्हारे आनंद में कोई बाधा नहीं तब परमानंद तुम पर बरसने लगता है।

अगर अस्तित्व शून्य सा लगता है तब कोई तुम्हारे आनंद को आ नहीं कर सकता क्योंकि उसे भंग करने वाला कोई नहीं है। यह तुम हो- तुम अपने द्वैत के कारण अशांत होते हो। तुम प्रेम में पड़ते हो, और फिर घृणा आती है और घृणा परेशान करती है। तुम सुंदर होना चाहते हो और फिर कुरूपता प्रविष्ट हो जाती है और कुरूपता तुम्हें बेचैन करती है। तुम सदा-सदा के लिए जीवित रहना चाहते हो, और फिर मृत्यु दरवाजे पर दस्तक देती है और मृत्यु अशांत करती है।

अगर तुम देख सको कि विपरीत छिपा हुआ है, अचानक तुम कुछ चाहते नहीं, तुम कुछ खोजते नहीं, क्योंकि तुम जानते हो कि जो भी तुम मांगोगे विपरीत भी साथ आ जाएगा। अगर तुम मान-प्रतिष्ठा चाहते हो तो सब तरफ से अपमान आकर रहेगा अगर तुम फूलों की मांग करते हो, कांटे तुम पर बरसेंगे अगर तुम चाहो कि तुम्हें स्मरण रखा जाए, तुम भुला दिए जाओगे अगर तुम सिंहासन पर पहुंचना चाहते हो तुम पूरी तरह फेंक दिए जाओगे।

तुम जो भी मांगोगे, उसका विपरीत तुम्हें दे दिया जाएगा। तब मांगने से क्या प्रयोजन, फिर क्यों कुछ मांगना? इच्छाएं पूरी हो जाएंगी और जब तक वे पूरी होंगी तुम्हें हैरानी होगी विपरीत तुम्हारे हाथ में आ गया है। तुम मंजिलें पा लोगे। लेकिन जब तुम पा लोगे तुम रोओगे, चिल्लाओगे क्योंकि विपरीत मंजिल में छिपा है। तुम जहां चाहोगे पहुंच जाओगे लेकिन वह पहुंचना ही निराशा बन जाएगी।

...' सभी आत्म-केंद्रित प्रयास समाप्त हो जाते हैं '... जब यह रिक्तता शून्य की भांति दिखाई देती है। प्रयास करने के लिए है क्या? उपलब्धि करने वाला मन गिर जाता है धूल में मिल जाता है।

संदेह और अस्थिरता तिरोहित हो जाते हैं  
और सच्ची श्रद्धा का जीवन संभव हो जाता है।

यही अंतर है। सोसान के इन वचनों को चीनी भाषा में कहते हैं ' सच्ची श्रद्धा की किताब। ' ईसाइयों मुसलमानों, हिंदुओं के लिए इसे समझना बहुत कठिन है कि यह किस तरह की सच्ची श्रद्धा है। समझने की कोशिश करो यह श्रद्धा की गहनतम समझ है।

आमतौर से जो चर्चों में मंदिरों में सिखाया जाता है- जिसकी ईसाई मुसलमान, हिंदू चर्चा करते हैं- वह श्रद्धा नहीं बल्कि विश्वास है ईश्वर में विश्वास रखो! लेकिन तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? – क्योंकि हर विश्वास का अपना संदेह है। इसीलिए तुम आग्रहपूर्वक कहते हो ' मैं पूरी तरह से विश्वास करता हूं। '

जब तुम कहते हो, ' मैं पूरी तरह से विश्वास करता हूं ' वास्तव में तुम क्या कह रहे हो? यह पूरे पर इतना जोर क्यों? इसका मतलब यह है कि कहीं संदेह छिपा है और तुम उसे ' पूरी तरह से ' और ' पूरे ' जैसे शब्दों से छिपा रहे हो- उस पर जोर देकर छिपा रहे हो। किसको तुम धोखा दे रहे हो? तुम अपने आप को धोखा दे रहे हो। वह जोर देकर कहना यही प्रकट करता है कि कहीं विपरीत छिपा है।

जब तुम किसी से कहते हो ' मैं तुम्हें प्यार करता हूं- और केवल तुम्हें कोई संदेह कहीं छिपा है। क्यों ' केवल तुम्हें?' तुम क्यों ऐसा कहते हो? तुम इस पर क्यों जोर देना चाहते हो? किसी दूसरे को प्यार करने की संभावना वहां छिपी है, इसलिए उस संभावना को छिपाने के लिए तुम जोर देते हो। अगर तुम छिपाते नहीं हो तो हो सकता है कि वह प्रकट हो जाए वह ऊपर आ जाए वह सतह पर उभर आए। फिर क्या किया जाए? सिर्फ उसे छिपाने के लिए हर प्रकार का प्रबंध किया जाए।

तुम क्यों कहते हो ' मैं सच्चा विश्वासी हूं?' क्या कोई झूठा विश्वासी भी हो सकता है? यह सच्चा विश्वास क्या है? सच्चे विश्वास का अर्थ है कि तुमने संदेह को पूरी तरह से ऐसे छिपाया हुआ है कि कोई भी जान न पाएगा, लेकिन तुम भलीभांति जानते हो। और इसीलिए विश्वास करने वाले उन बातों को सुनना पसंद नहीं करते जो उनके विश्वास के विरुद्ध हों। वे बहरे बन जाते हैं क्योंकि वे हमेशा भयभीत हैं। तुम दूसरे से डरे हुए हो कि वह क्या कहेगा, तुम भयभीत हो कि कहीं वह छिपे हुए संदेह को न छू ले और संदेह प्रकट हो जाए।

इसलिए साधारण धार्मिक व्यक्ति नास्तिक की बात नहीं सुनना चाहते। वे कहेंगे ' नहीं वह कहीं विश्वास को न तोड़ दे। ' लेकिन क्या विश्वास को नष्ट किया जा सकता है? और अगर विश्वास नष्ट किया जा सकता है तो क्या उससे चिपके रहना कोई मूल्य रखता है? अगर विश्वास भी नष्ट किया जा सकता है तो वह किस प्रकार का विश्वास है? लेकिन इसे नष्ट किया जा सकता है क्योंकि संदेह वहां है, संदेह पहले से ही उसको नष्ट कर रहा है।

प्रतिदिन ऐसा होता है। विश्वासी अविश्वासी हो जाते हैं अविश्वासी विश्वासी हो जाते हैं- वे बदल जाते हैं आसानी से बदल जाने वाले हैं। क्यों? क्योंकि दूसरा वहां छिपा है। विश्वास संदेह को लिए हुए है जैसे प्रेम घृणा लिए हुए है। जीवन मृत्यु को लिए हुए है विश्वास अपने में संदेह को लिए हुए है। फिर विश्वास क्या है?

सोसान के पास वास्तव में समझ है कि श्रद्धा क्या है। श्रद्धा केवल तभी घटित होती है जब द्वैत गिर जाता है; वह संदेह के विपरीत विश्वास नहीं है। जब विश्वास और संदेह दोनों मिट जाते हैं, तब कुछ ऐसा घटता है जो श्रद्धा है आस्था है। किसी परमात्मा में आस्था नहीं क्योंकि अब कोई द्वैत नहीं क्योंकि वहां दो नहीं तुम और परमात्मा। ऐसा नहीं कि तुम विश्वास करते हो क्योंकि अब तुम नहीं हो – क्योंकि अगर तुम हो तो दूसरे भी होने चाहिए। सभी कुछ खाली और आस्था खिलती है; शून्यता ही श्रद्धा की खिलावट बन जाती है।

बौद्धों का एक शब्द है ' श्रद्धा ' – फेथ ट्रस्ट- बहुत बहुत ही भिन्न है। ' विश्वास ' शब्द जो अर्थ रखता है उससे पूरी तरह से भिन्न। कोई विश्वास करने वाला नहीं है- कोई नहीं है जिसमें विश्वास किया जाए; सारे द्वैत समाप्त हो गए हैं फिर श्रद्धा। फिर तुम क्या कर सकते हो? तुम संदेह नहीं कर सकते तुम विश्वास नहीं कर सकते- तुम क्या कर सकते हो? तुम सिर्फ श्रद्धा रखो और प्रवाह में बहो। तुम जीवन के साथ चलो, जीवन के साथ विश्राम करो।

अगर जीवन जन्म लाता है तुम जन्म में श्रद्धा करते हो- तुम लालसा नहीं करते। अगर जीवन मृत्यु लाता है तुम मृत्यु में आस्था रखते हो- तुम यह नहीं कहते कि यह अच्छा नहीं है। अगर जीवन फूल लाता है ठीक अगर जीवन कांटे लाता है ठीक। अगर जीवन देता है ठीक अगर जीवन छीन लेता है ठीक।

यही आस्था है अपनी ओर से कोई चुनाव नहीं है सब जीवन पर छोड़ दिया है जो भी हो... कोई इच्छा नहीं कोई मांग नहीं। जहां कहीं भी जीवन ले जाए बस वहीं चले जाना क्योंकि अब तुम जानते हो कि जैसे ही तुम मांगते हो परिणाम उलटा होगा। इसलिए तुम मांगते नहीं ' हमें शाश्वत जीवन दो क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें शाश्वत मृत्यु मिलेगी।

क्या तुमने कभी गौर किया है कि सारी दुनिया में केवल ईसाई ही शाश्वत जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं? केवल ईसाई ही प्रार्थना करते हैं, ' हे ईश्वर हमें शाश्वत जीवन देना और केवल ईसाइयों का ही नरक ऐसा है जो शाश्वत है! उसे विपरीत होना ही चाहिए। और कोई धर्म नहीं है जिसका नरक शाश्वत है। उनके नरक हैं लेकिन अस्थायी हैं; तुम वहां कुछ दिनों कुछ महीनों कुछ वर्षों के लिए हो फिर तुम्हारा स्थानांतरण हो जाता है क्योंकि कोई भी दंड शाश्वत नहीं हो सकता। कैसे हो सकता है?

जब प्रत्येक सुख अस्थायी है दंड कैसे शाश्वत हो सकता है? जब पुरस्कार अस्थायी है तब दंड कैसे शाश्वत हो सकता है? जब तुम्हें जीवन में कभी कुछ शाश्वत प्राप्त नहीं होता तो फिर तुम उसके लिए अनंतकाल तक दंडित कैसे हो सकते हो? यह अन्यायपूर्ण लगता है।

लेकिन ईसाइयत मांगती है, शाश्वत जीवन के लिए प्रार्थना करती है। फिर तुम्हें संतुलन बनाना पड़ता है शाश्वत नरक। एक बार तुमने पाप किया और तुम नरक में फेंक दिए गए, फिर तुम उससे कभी बाहर न आ पाओगे। सदा-सदा के लिए तुम वहां रहोगे। ऐसा होगा ही, क्योंकि तुमने शाश्वत जीवन मांगा था।

बौद्धों की श्रद्धा का अर्थ है इस तथ्य की गहरी समझ कि तुम जो भी मांगोगे गलत हो जाएगा। इसे समझने की चेष्टा करो। मैं फिर दोहराता हूं : तुम जो भी इच्छा करोगे वह गलत हो जाएगा।

यह समझ लेने पर चाह समाप्त हो जाती है। जब चाह मिट जाती है, श्रद्धा वहां होती है! श्रद्धा का अर्थ है बिना अपनी अपेक्षाओं इच्छाओं, मांगों के जीवन के साथ चलना; कुछ न मांगना, कोई शिकायत न करना जो कुछ भी हो उसे स्वीकार करना।

और स्मरण रहे यह ऐसा कुछ नहीं है जो तुम कर रहे हो। अगर तुम कर रहे हो तो यह अस्वीकृति है। यदि तुम कहते हो ' हां मैं स्वीकार करूंगा तुमने अस्वीकार कर दिया है। तुम कहते हो ' जो भी होगा मैं स्वीकार करूंगा ' - इसके पीछे गहरी अस्वीकृति है। तुम वास्तव में स्वीकार नहीं करते हो। तुम केवल इस लिए स्वीकार कर रहे हो क्योंकि तुम असहाय अनुभव करते हो क्योंकि कुछ किया नहीं जा सकता है इसलिए क्या करें? - स्वीकार करो। लेकिन इस स्वीकार में एक गहरी निराशा एक अस्वीकृति है। अगर अस्वीकार करना संभव होता तो तुमने अस्वीकार को चुन लिया होता। तब यह श्रद्धा नहीं है।

केवल सच्चाई को देखने से कि विपरीत सब जगह समाविष्ट है सोसान कहता है, ' श्रद्धा घटित हो जाती है। ' ऐसा नहीं है कि तुम कहते हो, ' मैं स्वीकार करता हूं ' यह किसी असहाय अवस्था में स्वीकार करना नहीं है। यह तो जीवन का स्वभाव है कि विपरीत अंतर्निहित है। अपने भीतर गहरे में इस तथ्य इस सच्चाई को देखना ही तुम्हें श्रद्धा देता है। तथ्य को देखने से आस्था उत्पन्न होती है।

अगर मैं देखूं कि मेरा जन्म हुआ था तो यह भी तथ्य है कि मैं मरूंगा। वह सीधा सा तथ्य है। मैं इसे स्वीकार नहीं करता क्योंकि कोई अस्वीकार नहीं है मैं केवल श्रद्धा करता हूं। जब मैंने जन्म लेने में श्रद्धा की तो जीवन ने मुझे जन्म दिया और मैंने श्रद्धा की। जीवन मुझे मृत्यु देगा और मैं श्रद्धा करता हूं। अगर जन्म इतना सुंदर था तो मृत्यु सुंदर क्यों न होगी? और तुम कौन हो निर्णय करने वाले? अगर जन्म ने तुम्हें इतना दिया है, मृत्यु क्यों नहीं देगी?

अज्ञात सदा वहां है। श्रद्धा का अर्थ है अशांत में जाना कोई मांग नहीं रखना। फिर तुम दुखी नहीं हो सकते तब परमानंद तुम पर बरसता रहता है। अगर तुम मांगते ही नहीं तो कैसे दुखी होओगे? अगर तुम मांगते नहीं तो कौन तुम्हें दुखी कर सकता है? जीवन दुखद प्रतीत होता है क्योंकि तुम जो कुछ भी मांग करते हो जीवन उससे विपरीत जाता हुआ दिखाई देता है। अगर तुम मांग न करो जीवन आशीष बन जाएगा; जो कुछ भी होता है सुंदर है। जो भी होता है सुंदर है- तुम बस इसके साथ चलते हो।

नागर ठीक कहता है, ' सरल ही ठीक है। ' और ' जब जूता ठीक बैठ जाता है पैर भूल जाता है। ' और जब तुम जीवन के साथ गहराई तक ठीक बैठ जाते हो, संदेह, अविश्वास विलीन हो जाते हैं। जूते का ठीक बैठ जाना श्रद्धा है। एक आस्था पैदा होती है जो विश्वास नहीं है। एक आस्था उत्पन्न होती है, जिसको किसी परमात्मा में विश्वास करने की जरूरत नहीं होती।

इसलिए बौद्ध परमात्मा के विषय में बात ही नहीं करते हैं। बुद्ध धर्म वास्तव में धर्म के गहनतम अंतस तक पहुंचा, और सोसान जैसे व्यक्ति दुर्लभ होते हैं। उनकी समझ परिपूर्ण होती है। पूर्ण उनकी समझ में आ गया है। उन्हें परमात्मा की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे कहते हैं ' परमात्मा क्यों? क्या अस्तित्व पर्याप्त नहीं है? उसका व्यक्तित्व का नाम क्यों दें? और तुम जो कुछ भी रचोगे, वह ठीक तुम्हारे जैसा होगा- वह प्रक्षेपण होगा। इसलिए सभी परमात्मा प्रक्षेपण हैं। '

हिंदू एक परमात्मा बनाते हैं उसे देखो वह ठीक उनकी भारतीय देह का मूर्तमान रूप है- नाक आंखें ऊंचाई सब-कुछ। जापानी परमात्मा को देखो नीग्रो परमात्मा को देखो और तुम पाओगे कि वे उनके मन के ही प्रक्षेपण हैं। अगर घोड़ों के परमात्मा होते तो वे आदमी नहीं, घोड़े होते। क्या तुम सोच सकते हो कि घोड़ों का परमात्मा एक आदमी हो? असंभव! घोड़ों का परमात्मा घोड़ा होगा। अगर पेड़ों का परमात्मा होगा तो वह पेड़ ही होगा।

तुम्हारे देवता क्या हैं? तुम्हारे प्रक्षेपण। और तुम क्यों प्रक्षेपित करते हो? क्योंकि तुम प्रक्षेपित होना चाहते हो। तुम बिना परमात्मा के अकेला, खाली अनुभव करते हो तुम्हें सहायता के लिए कोई चाहिए। इस

सहायता मांगने के कारण तुम स्वयं के लिए दुख पैदा कर रहे हो। अब विपरीत आएगा। हर घड़ी तुम यही महसूस करोगे कि ईश्वर सुन नहीं रहा है, तुम प्रार्थना कर रहे हो और पुकार रहे हो और वह है कि सुन नहीं रहा है। और हर क्षण तुम्हें लगता है कि तुमने सब-कुछ किया है और तुम्हें वह सब नहीं मिला जिसके तुम अधिकारी हो।

संत-महात्मा, तथाकथित संत-महात्मा सदा शिकायत करते हैं क्योंकि उन्होंने संसार को त्याग दिया है और अभी तक उन्हें परमानंद प्राप्त नहीं हुआ है। वे ब्रह्मचारी हैं लेकिन फिर भी उन पर फूल नहीं बरसे हैं। उन्होंने यह किया है वह किया है उनके पास लंबी सूची है, और उन्होंने बहुत कुछ किया है, फिर भी परमात्मा उतना ही दूर है जितना हमेशा था। वे श्रद्धा नहीं करते वे अब भी जीवन से संघर्ष कर रहे हैं। वे जीवन को उसके अपने ढंग से होने नहीं देते। उनके पास जीवन पर लागू करने के लिए अपने ही विचार हैं- वही अश्रद्धा है।

अश्रद्धा का अर्थ है तुम्हारे पास लागू करने के लिए अपने विचार हैं। तुम अपने को जीवन से अधिक बुद्धिमान समझते हो। वह अश्रद्धा है, वह अविश्वास है। तुम स्वयं को थोपना चाहते हो। गिरजाघरों यहूदियों के पारसी सभा भवनों में भी जाओ और वहां ईश्वर से प्रार्थना करते हुए लोगों को देखो। वे क्या कह रहे हैं? वे सलाह दे रहे हैं। वे कह रहे हैं ' यह मत करो यह गलत है। मेरा बेटा बीमार है उसे स्वस्थ कर दो। '

पहली बात तो यह है अगर तुम सच में ही श्रद्धा करते हो तो फिर ' उसने ' ही तुम्हारे बेटे को बीमार किया है- इसलिए श्रद्धा रखो। क्यों शिकायत और प्रार्थना करते जाओ? क्या तुम सोचते हो कि तुम उससे ज्यादा सुधार कर सकते हो? सभी प्रार्थनाओं का अर्थ ईश्वर से विनती करना है कि कृपया दो और दो को चार न होने दो। जो भी हो रहा है जो भी प्राकृतिक है उसे न होने दो। कुछ उपदेश सुझाव देने के लिए तुम्हारे पास कुछ विचार हैं-यह श्रद्धा नहीं है।

श्रद्धा का अर्थ है ' मैं कोई नहीं हूं और मैं वहीं चला जाता हूं जहां जीवन ले जाता है जहां भी- अज्ञात में अंधकार में मृत्यु या जीवन में। जहां कहीं भी ले जाए मैं तैयार हूं। मैं हमेशा तैयार हूं और मैं ठीक फिट बैठ जाता हूं। ' लेकिन तुम कब फिट बैठते हो? तुम तभी फिट बैठते हो जब द्वैत समाप्त हो जाता है जब तुम देख पाते हो और वह देखना ही ठहराव बन जाता है- इच्छा की मांग की समाप्ति।

मार्ग के अनुरूप हो चुके अखंड मन के लिए सभी आत्म- केंद्रित प्रयास समाप्त हो जाते हैं। संदेह और अस्थिरता तिरोहित हो जाते हैं

और सच्ची श्रद्धा का जीवन संभव हो जाता है। एक ही प्रहार से हम बंधन से मुक्त हो जाते हैं;

' एक ही प्रहार से हम बंधन से मुक्त हो जाते हैं'? यह धीरे- धीरे नहीं होता है। ऐसा नहीं है कि तुम धीरे- धीरे सत्य तक पहुंचोगे यह कोई मात्रा डिग्री का प्रश्न नहीं है। एक ही प्रहार से, जब तुम सत्य को देखते हो, एक ही क्षण में तुम सभी बंधनों से मुक्त हो जाते हो। यह प्रयास करने का प्रश्न नहीं है क्योंकि तुम जो कुछ भी करोगे मन के द्वारा करोगे और मन सारे दुखों का कारण है। और मन के द्वारा जो कुछ भी करोगे वह मन को और शक्ति देगा। मन के द्वारा जो भी करोगे वह प्रयास होगा। और मन के द्वारा जो भी करोगे वह दो विपरीत ध्रुवों के बीच एक का चुनाव होगा। तुम और भी उलझते जाओगे। इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि क्या करें, प्रश्न है कैसे देखें। प्रश्न तुम्हारे चरित्र को बदलने का नहीं है, प्रश्न और अच्छा बनने और अधिक संत बनने का, कम पापी हो जाने का नहीं है-नहीं, यह सवाल नहीं है। सवाल है बिना मन के कैसे देखें, बिना चुनाव के कैसे देखें। प्रश्न करने और कृत्य से संबंधित नहीं है, प्रश्न सजगता की गुणवत्ता से संबंधित है। इसीलिए पूरब में हम ध्यान पर जोर देते रहे हैं

और पश्चिम में उनका सारा जोर नैतिकता पर है। जब पहली बार उपनिषदों का अनुवाद पश्चिमी भाषाओं में हुआ, तो विद्वान लोग उलझन में पड़ गए, क्योंकि उपनिषदों में ' दस आशाओं ' जैसा कुछ भी नहीं है- ' यह मत करो वह करो ' - उनमें ऐसा कुछ भी नहीं था। वे उलझन में पड़ गए। ये उपनिषद कैसे धार्मिक ग्रंथ हैं? क्योंकि धर्म का अर्थ नैतिकता है धर्म का अर्थ है ' यह मत करो, वह करो ' यह कृत्य है। और उपनिषद इस संबंध में कुछ नहीं कहते कि क्या करना है वे केवल यही बताते हैं कि कैसे होना है, क्या होना है।

कैसे अधिक सजग और सचेत हों यही एक मात्र सवाल है- कैसे इतना होशपूर्ण हो कि तुम भीतर तक देख सको और विपरीत एक हो जाएं और द्वैत समाप्त हो जाएं। सजगता में गहरे प्रवेश करने पर पापी विलीन हो जाते हैं संत भी, क्योंकि उन दोनों का संबंध द्वैत से है। ईश्वर मर जाता है तो शैतान भी मर जाता है क्योंकि वे भी द्वैत से संबंधित हैं- मन ने उनकी रचना की है।

और ईसाइयत लगातार एक गहरी उलझन में पड़ी रही, क्योंकि ईश्वर और शैतान दोनों के साथ कैसे व्यवस्था बैठाई जाए? यह वास्तव में एक समस्या है। पहली बात, यह शैतान बीच में कहां से आ गया? अगर तुम कहो कि परमात्मा ने उसे बनाया तो जिम्मेवारी खुद परमात्मा की हो जाती है। और अंत में क्या होगा? जीत किसकी होगी? अगर तुम कहते हो कि अंत में जीत परमात्मा की होगी तो फिर मार्ग में सड़क पर यह मूर्खता क्यों? अगर अंत में परमात्मा की जीत होने वाली है अभी क्यों नहीं?

और अगर तुम कहते हो कि कोई अंतिम जीत नहीं हो सकती, संघर्ष चलता रहेगा फिर शैतान उतना ही शक्तिशाली हो जाता है जितना परमात्मा। और कौन जानता है? हो सकता है अंत में वही जीत जाए। और अगर वह जीत जाता है, तो फिर तुम्हारे सारे संतों का क्या होगा? फिर पापी प्रसन्न होंगे और संत नरक में फेंक दिए जाएंगे। लेकिन सारी बात मन के द्वैत होने के कारण है।

मन यह नहीं देख सकता कि परमात्मा और शैतान एक हैं। वे हैं! शैतान सिर्फ विपरीत है दूसरी अति, घृणा, मृत्यु। इसलिए तुम कहते हो, परमात्मा प्रेम है और शैतान घृणा है परमात्मा करुणा है और शैतान हिंसा है, और परमात्मा प्रकाश है शैतान अंधकार है। कैसी मूर्खता है! क्योंकि अंधकार और प्रकाश एक ही ऊर्जा के दो पहलू हैं। अच्छा और बुरा भी, गलत और ठीक नैतिक और अनैतिक एक ही घटना की दो ध्रुवीयताएं हैं। और वह एक घटना है अस्तित्व।

सोसान उसे परमात्मा नहीं कहेगा, क्योंकि अगर तुम उसे परमात्मा कहते हो तो तुम शैतान को इनकार करते हो- वह परमात्मा और शैतान का जोड़ है। अस्तित्व दोनों है, रात और दिन, सुबह और शाम दोनों, प्रसन्नता, अप्रसन्नता- सब। वह सब एक साथ है। और जब तुम यह देखते हो, स्वर्ग और नरक दोनों साथ-साथ देखते हो, फिर कहां है चुनाव? और किसी चीज को चुनने या मांगने में क्या सार है?

सभी मांगें समाप्त हो जाती हैं। आस्था उत्पन्न होती है सत्य की शून्यता में- जहां द्वैत समाप्त हो जाता है, जहां तुम यह भी नहीं कह सकते कि एक है; एक अज्ञात अदभुत घटना का फूल खिलता है, जो श्रद्धा है। कुछ खिलता है जो अति सुंदर है, अत्यंत मूल्यवान है और वह है श्रद्धाकाफूल।

एक ही प्रहार से हम बंधन से मुक्त हो जाते हैं;

न हमें कुछ पकड़ता है और न हम कुछ पकड़ते हैं।

मन की शक्ति के प्रयास के बिना,

सभी कुछ शून्य है स्पष्ट है स्व-प्रकाशित है।

यहां विचार, भाव, ज्ञान, और कल्पना का कोई मूल्य नहीं है।

तब कोई जीता है सिर्फ जीता है। कोई श्वास लेता है सिर्फ श्वास लेता है। कोई कल्पना नहीं कोई विचार नहीं कोई मन नहीं -उन सबका कोई मूल्य नहीं है। तुम्हें अस्तित्व पर श्रद्धा है और जब तुम अस्तित्व पर श्रद्धा करते हो अस्तित्व तुम पर श्रद्धा करता है। श्रद्धा का यह मिलन परमानंद है समाधि है।

तो इसके लिए क्या करे इ करने का प्रश्न ही नहीं है कुछ भी नहीं किया जा सकता। तुम्हें देखना होगा जीवन को गौर से देखना होगा; द्रष्टा हो जाओ, सब चीजों को देखो। अगली बार जब तुम प्रेम का अनुभव करो तो इससे धोखा मत खाना। प्रेम करो लेकिन भीतर देखो – घृणा वहां प्रतीक्षा कर रही है। और ध्यानपूर्वक देखो। और अचानक वहाँ प्रकाश ही प्रकाश होगा। तुम यह देखने में समर्थ हो जाओगे कि प्रेम और कुछ नहीं है सिर्फ घृणा का पहला कदम है।

फिर किसे चुनें? फिर क्यों मांगें ' हे परमात्मा हमें और प्रेम दे?' क्योंकि और घृणा आ रही होगी- तुम प्रेम में बहोगे और तुम्हें ज्ञात होगा कि घृणा आ रही है। न तो तुम प्रेम को पकड़ोगे... क्योंकि पकड़ का अर्थ घृणा के विरुद्ध लड़ना है। और तुम्हें पता है, जैसे दिन के बाद रात आती है प्रेम के बाद घृणा आएगी। तब क्या होगा? न तो तुम प्रेम को पकड़ोगे और न घृणा से घृणा करोगे।

और जब तुम ऐसे संतुलन में होते हो ऐसी शांति में होते हो जहां तुम प्रेम की मांग नहीं करते जहां तुम घृणा से दूर नहीं होना चाहते जहां तुम किसी चीज को पकड़ते नहीं, कोई चीज तुम्हें नहीं पकड़ती अचानक - तुम न तो प्रेम करते हो न घृणा। अचानक एक ही चोट से द्वैत टूट जाता है। कहीं से भी...

गुरजिएफ अपने शिष्यों से कहा करता था ' तुम अपनी मुख्य विशिष्टता को खोजो। ' यह अच्छी बात है। खोजो तुम्हारी मुख्य विशिष्टता क्या है- भय? घृणा? प्रेम? लोभ? कामवासना? तुम्हारी मुख्य विशिष्टता क्या है? बस गौर से देखो, और उस मुख्य विशिष्टता पर काम करो और उसके विपरीत को एक साथ देखने की चेष्टा करो।

अगर वह प्रेम है तब प्रेम और घृणा को साथ-साथ देखो। अगर तुम देख सको तो वे एक-दूसरे को नकारते हैं। अचानक तुम खाली हो जाते हो – वहां न प्रेम है, न चुरणा है। एक समय में एक ही हो सकता है। दोनों एके साथ वे एक दूसरे को नकारते हैं।

अचानक वे दोनों ही नहीं होते- अपने समग्र एकांत में केवल तुम अकेले बचते हो। कुछ भी वहां नहीं होता किसी का चिह्न तक नहीं रहता। यही वह शून्यता है जिसकी सोसान बात कर रहा है।

और अगर तुम उसे एक द्वैत में देख सको, तो तुम उसे सबमें देख सकते हो- यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है। एक बार तुमने उसे एक द्वैत में प्रेम-घृणा में देख लिया तुमने उसे सब जगह देख लिया। सब जगह पर वही है। एक बिलकुल अलग प्रकार की होने की गुणवत्ता उत्पन्न होगी।

श्रद्धा। यह कोई सिद्धांत नहीं है जिसमें विश्वास किया जाए उसका किसी परमात्मा से किसी जीसस कृष्ण मोहम्मद, किसी कुरान बाइबिल गीता से संबंध नहीं है। नहीं इसका तुम्हारी होशपूर्णता, सजगता से कुछ संबंध है। पूर्ण सचेत आर-पार देखते हुए, तुम मुक्त हो जाते हो- और एक ही प्रहार से।

एक ही प्रहार से हम बंधन से मुक्त हो जाते हैं;  
न हमें कुछ पकड़ता है और न हम कुछ पकड़ते हैं।  
मन की शक्ति के प्रयास के बिना,  
सभी कुछ शून्य है स्पष्ट है स्व-प्रकाशित है।

यहां विचार, भाव, ज्ञान, और कल्पना का कोई मूल्य नहीं है।

इस पर विचार मत करो इसे जीवन में देखने की चेष्टा करो। ऐसा करना कष्टदायक होगा क्योंकि जब तुम प्रेम को अनुभव कर रहे हो, तुम घृणा के बारे में जरा भी सोचना नहीं चाहते। तुम सच में भयभीत हो कि अगर तुम घृणा की बात सोचते हो, तो प्रेम का सारा आनंद समाप्त हो जाएगा। जब तुम जीवित हो तुम मृत्यु के बारे में बिलकुल सोचना नहीं चाहते क्योंकि तुम डरते हो कि अगर तुम मृत्यु के विषय में अत्यधिक सोचते हो तो तुम जीवन का मजा नहीं ले सकोगे।

लेकिन तुम्हारा भय एक प्रकार से उचित है। अगर तुम सच में मृत्यु के प्रति सजग हो जाते हो, तुम जीवन का इस तरह से मजा न ले पाओगे जिस तरह से तुम इसका मजा ले रहे हो। वह सुख है भी नहीं। वह नहीं है- वह सिर्फ दुख है। तुम इस तरह उसका सुख न ले पाओगे। और इस तरह वह सुखमय बिलकुल नहीं है यह स्मरण रहे।

अगर तुम प्रेम करते समय घृणा के बारे में सोचते हो, तुम उसका सुख वैसे ही न ले पाओगे जैसे तुम ले रहे थे। लेकिन क्या वह वास्तव में सुख है या मन का आदत से ग्रस्त होना है? क्या तुमने वास्तव में प्रेम का आनंद लिया है? अगर तुमने वास्तव में उसका आनंद लिया था तो तुम्हारा फूल खिल गया होता, तब तुम्हारी अलग ही सुगंध होती- और वह नहीं है। फिर तुम्हारे प्राणों में भिन्न प्रकार का प्रकाश होता और वह नहीं है। तुम खाली हो, निर्धन हो- भीतर गहरे में अंधकार है-कोई ज्योति नहीं। फिर इस प्रेम में और जीवन में और प्रत्येक चीज में किस प्रकार का सुख है? नहीं, तुम स्वयं को सिर्फ धोखा देते आ रहे हो।

तुम्हारा प्रेम एक नशीले द्रव्य, मादक औषधि के सिवाय और कुछ नहीं है, कुछ क्षणों के लिए तुम इसके प्रभाव में सब भूल जाते हो। फिर आती है घृणा और तुम दुखी होते हो। और फिर दुबारा, क्योंकि तुम दुख में हो, तुम प्रेम खोजते हो, और तुम्हारा प्रेम फिर से गहरी नींद में डूब जाने के सिवाय और कुछ नहीं है। यही तुम्हारा ढंग रहा है। जिसे तुम सुख कहते हो वह नींद में खो जाने के सिवाय और कुछ नहीं है। जब भी तुम्हें अच्छी नींद आती है तुम उसे सुख की भांति लेते हो।

तुम्हारे मन में एक सुखी व्यक्ति कौन है? वह व्यक्ति जो चीजों से दुखी नहीं होता। इसीलिए नशीले द्रव्यों, मादक औषधियों में इतना आकर्षण है, क्योंकि तब सारी चिंताएं भूल जाती हैं। तुम्हारा प्रेम क्या है? ऐसा लगता है कि वह स्वयं को नशे में रखने के लिए भीतर बनी बनाई जैविक प्रक्रिया है। और वह रासायनिक है, शरीर के कुछ रसायन छूटते हैं, इसलिए रसायनों का संतुलन बदल जाता है। वह मारिजुआना या एल. एस. डी. से बहुत भिन्न नहीं है, क्योंकि बुनियादी बात है शरीर में रासायनिक बदलाव।

प्रेम बदल देता है, उपवास भी बदल देता है, शरीर के रसायन अपने अनुपात की पुरानी व्यवस्था खो देते हैं, अपने नये ढांचे में, कुछ क्षणों के लिए तुम अच्छा अनुभव करते हो। फिर घृणा आती है, फिर संसार प्रवेश करता है, और चिंताएं आती हैं, और फिर तुम दुष्क्रम में फंस जाते हो। ऐसा तुम जन्मों-जन्मों से करते आ रहे हो।

अब उसे करके देखो जो सोसान कह रहा है, और यही सभी बुद्धों ने कहा है। जब तुम प्रेम में हो, देखो, जब तुम प्रेम कर रहे हो- डरो नहीं- देखो, कैसे वह घृणा में परिवर्तित हो रहा है। जब तुम जीवित हो, देखो, वह कैसे मृत्यु में प्रवेश कर रहा है- प्रत्येक श्वास और तुम मृत्यु की ओर जा रहे हो। समय का हर पल खिसक रहा है, मृत्यु और-और निकट आ रही है। देखो, कैसे तुम्हारी जवानी बुढ़ापा बन रही है। विपरीत को देखो!

साहस की आवश्यकता है, क्योंकि पुराने ढांचे को सहयोग नहीं मिलेगा, इससे वह नष्ट हो जाएगा। लेकिन एक बार तुम प्रेम में घृणा को देख सको, तुम्हें ऐसी शांति मिलेगी जो दोनों के पार होगी। अगर तुम जीवन और मृत्यु दोनों को एक साथ देख सको, तो तुम पार हो जाते हो। एक ही प्रहार में तुम पार हो जाते हो। एक ही चोट में तुम बंधनों से बाहर हो जाते हो, तुम पहली बार तुम एक स्वतंत्र आत्मा हो- तुम स्वयं स्वतंत्रता हो। इसीलिए हम इस परम अवस्था को मोक्ष, स्वतंत्रता कहते हैं।

कुछ भी नहीं करना है। तुम्हें अपने कृत्यों के प्रति और भी होशपूर्ण होना है और ज्यादा सचेत होना है। केवल वही ध्यान है और अधिक सजग। तीक्षा सजगता के क्षण में सजगता एक शस्त्र बन जाती है, और एक ही प्रहार से सारे बंधन टूट जाते हैं।

आज इतना ही।

सूत्र:

तथाता के इस जगत में न तो कोई स्व है और न ही स्व के अतिरिक्त कोई और।  
इस वास्तविकता से सीधे ही लयबद्ध होने के लिए-जब संशय उठे, बस कहो, 'अद्वैत।  
इस 'अद्वैत' में कुछ भी पृथक नहीं है कुछ भी बाहर नहीं है।  
कब या कहा कोई अर्थ नहीं रखता; बुद्धत्व का अर्थ है इस सत्य में प्रवेश।  
और यह सत्य समय या स्थान में घटने- बढ़ने के पार है;  
इसमें एक अकेला विचार भी दस हजार वर्ष का है।

पहले तथाता' शब्द को समझने का प्रयत्न करो। बुद्ध इसी शब्द पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। बुद्ध की अपनी भाषा में यह तथाता है। बौद्ध धर्म का सारा ध्यान इस शब्द में जीना है इस शब्द में इतनी गहनता से जीना है कि यह शब्द विलीन हो जाए और तुम स्वयं ही तथाता हो जाओ।

उदाहरण के लिए तुम बीमार हो। तथाता का भाव है उसे स्वीकार करो और स्वयं से कहो ' शरीर का यही ढंग है या ' चीजें ऐसी ही हैं। ' लड़ी नहीं संघर्ष करना शुरू मत करो। तुम्हारे सिर में दर्द है- उसे स्वीकार कर लो चीजों का स्वभाव ऐसा ही है। अचानक बात बदल जाती है क्योंकि जब यह भाव उठता है एक परिवर्तन छाया की तरह पीछे चला आता है। अगर तुम अपने सिरदर्द को स्वीकार कर सको तो सिरदर्द मिट जाता है। तुम इसे करके देखो। अगर तुम किसी रोग को स्वीकार कर लेते हो तो वह दूर होना शुरू हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? ऐसा होता है क्योंकि जब भी तुम संघर्ष करते हो तुम्हारी ऊर्जा विभाजित हो जाती है आधी ऊर्जा बीमारी में सिरदर्द में चली जाती है और आधी ऊर्जा सिरदर्द से लड़ने में लग जाती है- एक दरार एक अंतराल और एक संघर्ष। वास्तव में यह संघर्ष और भी गहरा सिरदर्द है।

एक बार जब तुम स्वीकार कर लेते हो एक बार जब तुम शिकायत नहीं करते, एक बार जब तुम संघर्ष नहीं करते, ऊर्जा भीतर एक हो जाती है। दरार भर जाती है। और पर्याप्त ऊर्जा मुक्त होती है क्योंकि अब कोई संघर्ष नहीं है-ऊर्जा की मुक्ति ही रोग का उपचार बन जाती है। रोग का उपचार बाहर से नहीं होता है। सारी औषधियां बस शरीर की अपनी रोग-निवारण शक्ति को कार्य करने में सहायता देती हैं। डॉक्टर जो कुछ तुम्हारी सहायता कर सकता है वह यही है कि तुम अपनी रोग-निवारण शक्ति को प्राप्त कर सको। स्वास्थ्य बाहर से जबरदस्ती नहीं दिया जा सकता, वह तुम्हारी ही ऊर्जा की खिलावट है। यह ' तथाता' शब्द इतनी गहराई से काम कर सकता है कि शारीरिक रोग मानसिक रोग और अंत में आध्यात्मिक रोग के लिए- यह एक रहस्यमय विधि है-वे सब मिट जाते हैं। लेकिन शरीर से शुरू करो, क्योंकि वह निम्नतम तल है। अगर तुम वहां सफल हो जाते हो, तो उच्चतर तलों पर भी कोशिश की जा सकती है। अगर तुम वहां असफल हो जाते हो तो उच्चतर तल पर गति करना कठिन है।

शरीर में कुछ गड़बड़ है विश्रांत हो जाओ और उसे स्वीकार कर लो, और भीतर केवल इतना कहो- केवल शब्दों में नहीं बल्कि उसे गहराई से अनुभव करो- कि ऐसा ही चीजों का स्वभाव है। शरीर एक संयोजन है इसमें

कई चीजें मिली हुई हैं। शरीर की उत्पत्ति होती है, वह मरण धर्मा है। और वह एक यंत्र-रचना है, और जटिल है; कुछ न कुछ विकार उत्पन्न होने की बहुत संभावना है।

इसे स्वीकार कर लो और उसके साथ तादात्म्य मत बनाओ। जब तुम स्वीकार करते हो तुम उससे ऊपर ही बने रहते हो तुम उससे पार ही बने रहते हो। जब तुम लड़ते हो तो तुम्हें उसी तल पर आना पड़ता है। स्वीकार करना पार हो जाना है। जब तुम स्वीकार करते हो तुम पहाड़ की चोटी पर हो शरीर पीछे छूट जाता है। तुम कहते हो 'ऐसी ही है प्रकृति। जो चीजें उत्पन्न होती हैं वे मरेगी भी। और अगर जो चीजें पैदा हुई हैं उन्हें मरना पड़ेगा तो वे कभी बीमार भी होंगी बहुत चिंता करने की आवश्यकता नहीं है' – मानो वह तुम पर नहीं घट रहा बस वस्तुओं के जगत पर घट रहा है।

यही तो सुंदरता है कि जब तुम संघर्ष नहीं कर रहे तुम पार हो जाते हो। तुम अब उसी तल पर नहीं रहे। और यह पार हो जाना रोग निवारण शक्ति बन जाता है। अचानक शरीर बदलने लगता है। ऐसा ही मानसिक चिंताओं तनावों, दुखों पीड़ाओं के साथ भी होता है। तुम किसी चीज के लिए चिंतित हो। चिंता क्या है? तुम सच्चाई को स्वीकार नहीं कर पाते वही चिंता है। तुम चाहते हो कि वह जिस ढंग से घट रही है उससे भिन्न ढंग से घटित हो। तुम चिंतित हो- क्योंकि तुम्हारे पास प्रकृति पर थोपने के लिए कुछ विचार हैं।

उदाहरण के लिए तुम बूढ़े हो रहे हो। तुम चिंतित हो। तुम सदा युवा बने रहना चाहोगे-यही चिंता है। तुम पत्नी को प्रेम करते हो तुम उस पर आश्रित हो और वह तुम्हें छोड़ने का विचार कर रही है या किसी दूसरे पुरुष के साथ जा रही है, और तुम चिंतित हो-चिंतित हो क्योंकि तुम्हारा क्या होगा? तुम उस पर बहुत निर्भर हो, तुम उसके साथ बहुत सुरक्षा अनुभव करते हो। जब वह चली जाएगी तब कोई सुरक्षा नहीं होगी। वह केवल तुम्हारी पत्नी ही नहीं रही वह मां भी बनी रही थी एक आश्रय का स्थान सारी दुनिया से बच कर छिपने के लिए तुम उसके पास आ सकते हो। तुम उस पर भरोसा कर सकते हो, वह वहां होगी। सारी दुनिया के तुम्हारे विरुद्ध हो जाने पर भी वह तुम्हारे विरुद्ध न होगी, वह एक सांत्वना है। अब वह छोड़ कर जा रही है तुम्हारा क्या होगा? अचानक तुम भयभीत और चिंतित हो जाते हो।

तुम क्या कह रहे हो? तुम अपनी चिंता के द्वारा क्या कह रहे हो? तुम कह रहे हो कि यह जो हो रहा है, तुम स्वीकार नहीं कर सकते, यह ऐसा नहीं होना चाहिए। तुम ठीक इससे अन्यथा की आशा कर रहे थे ठीक इसके विपरीत? तुम चाहते थे कि यह पत्नी सदा- सदा के लिए तुम्हारी रहे और वह छोड़ कर जा रही है। लेकिन तुम क्या कर सकते हो?

जब प्रेम नहीं रहता तुम क्या कर सकते हो? कोई उपाय नहीं है तुम प्रेम के लिए जोर जबरदस्ती नहीं कर सकते हो। तुम इस पत्नी को अपने साथ रहने के लिए विवश नहीं कर सकते हो। हां, तुम जोर जबरदस्ती कर सकते हो- यही सब लोग कर रहे हैं- तुम जबरदस्ती कर सकते हो। वहां मृत शरीर होगा लेकिन जीवित आत्मा जा चुकी होगी। फिर वह तुम्हारे लिए तनाव बन जाएगी।

प्रकृति के विरुद्ध कुछ नहीं किया जा सकता है। प्रेम एक फूल की खिलावट थी, अब फूल मुझा गया है। एक हवा का झोंका तुम्हारे घर आया था, अब वह दूसरे घर में चला गया है। वस्तुओं की प्रकृति ऐसी ही है, वे आगे बढ़ती रहती हैं और परिवर्तित होती रहती हैं।

वस्तुओं का जगत परिवर्तनशील है वहां कुछ भी स्थायी नहीं है। आशा मत करो! अगर तुम इस संसार में जहां सब अस्थायी है स्थायित्व की अपेक्षा करते हो, तो तुम चिंता पैदा कर लोगे। तुम चाहोगे कि यह प्रेम सदा-सदा बना रहे। इस जगत में कुछ भी सदा के लिए नहीं हो सकता- जो भी इस जगत का है वह क्षणिक है। वस्तुओं की यही प्रकृति है 'तथाता।'

इसलिए तुम्हें अब पता है कि प्रेम समाप्त हो गया है। यह बात तुम्हें उदास कर देती है ठीक है उदासी को स्वीकार करो। तुम भयभीत हो रहे हो, भय को स्वीकार करो, उसको दबाओ मत। तुम्हारा रोने का मन हो रहा है रोओ। उसे स्वीकार करो! जबरदस्ती न करो, नकली चेहरा मत बनाओ। ऐसा दिखावा मत करो कि तुम चिंतित नहीं हो, क्योंकि इससे कोई सहायता मिलने वाली नहीं है। अगर तुम चिंतित हो तो तुम चिंतित हो। अगर पत्नी छोड़कर जा रही है तो वह जा रही है। अगर अब प्रेम नहीं रहा तो नहीं रहा। तुम वास्तविकता से लड़ नहीं सकते तुम्हें उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा।

और अगर तुम उसे धीरे- धीरे स्वीकार करते हो तब तुम लगातार दुखी और पीड़ित रहोगे। अगर तुम उसे बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लेते हो असहाय अवस्था में नहीं बल्कि समझ पूर्वक स्वीकार कर लेते हो तो वह तथाता बन जाता है। तब तुम्हें कोई चिंता नहीं रही कोई समस्या नहीं रही- क्योंकि समस्या सच्चाई के कारण नहीं बल्कि इस कारण से उत्पन्न हो रही थी कि तुम जिस तरह वह घटित हो रही थी उसे स्वीकार नहीं कर सके। तुम चाहते थे कि वह तुम्हारा अनुसरण करे।

स्मरण रहे जीवन तुम्हारा अनुगमन नहीं करने वाला तुम्हें जीवन के पीछे चलना पड़ेगा-शिकायत करते हुए या प्रसन्नतापूर्वक वह तुम्हारा चुनाव है। अगर तुम शिकायत करते हुए जीवन जीते हो तो तुम दुख पाओगे। अगर प्रसन्नतापूर्वक जीवन का अनुसरण करते हो तो तुम एक बुद्धरुप हो जाओगे, तुम्हारा जीवन एक आनंद बन जाएगा।

बुद्धरुप को भी मरना पड़ता है – चीजें बदलेंगी नहीं-लेकिन वे अलग ढंग से मरते हैं। वे इतने सुखपूर्वक मरते हैं मानो मृत्यु है ही नहीं। वे तो बस विलीन हो जाते हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि जिस चीज ने जन्म लिया है वह मरेगी। जन्म में मृत्यु समाविष्ट है, इसलिए ठीक ही है, इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता है।

तुम दुखी भी हो सकते हो और मर सकते हो; तब तुम उस सार को, उस सौंदर्य को जो मृत्यु तुम्हें दे सकती है, उस प्रसाद को जो अंतिम घड़ी में घटित होता है, उस प्रकाश को जो उस क्षण घटता है जब शरीर और आत्मा अलग हो रहे होते हैं, चूक जाते हो। तुम उसे चूक जाओगे क्योंकि तुम इतने चिंतित हो, तुम अतीत को और शरीर को इतना पकड़े हुए हो कि तुम्हारी आंखें बंद हैं। तुम देख नहीं पाते कि क्या घट रहा है क्योंकि तुम स्वीकार नहीं कर पाते, इसलिए तुम आंखें बंद कर लेते हो, तुम अपने समग्र अस्तित्व को बंद कर लेते हो। तुम मरते हो। तुम कई बार मरोगे, और तुम इस के सार से चूकते ही चले जाओगे।

अगर तुम स्वीकार कर सको तो मृत्यु सुंदर है; अगर तुम सदभावना से भरे हुए हृदय से द्वार खोल सको, प्रेम से स्वागत कर सको ' हां क्योंकि यदि मेरा जन्म हुआ है तो मृत्यु भी होगी। अब वह दिन आ गया है वर्तुल पूरा हो गया है। ' तुम अतिथि की भांति मृत्यु का स्वागत करते हो, और घटना की गुणवत्ता तुरंत बदल जाती है।

अचानक तुम अमर हो जाते हो शरीर मर रहा है तुम नहीं मर रहे हो। अब तुम देख सकते हो केवल वस्त्र छूट रहे हैं तुम नहीं, केवल आवरण पात्र छूट रहा है अंतर- वस्तु नहीं। चेतना अपने में प्रकाशित ही बनी रहती है- इसलिए, क्योंकि जीवन में इस पर कई आवरण थे मृत्यु में वह नग्न है। और जब चेतना अपनी पूर्ण नग्नता में होती है तो उसकी अपनी ही महिमा होती है; वह संसार में सबसे सुंदर घटना है।

लेकिन उसके लिए तथाता के दृष्टिकोण को आत्मसात करना पड़ता है। जब मैं कहता हूं आत्मसात करना, तो मेरा अभिप्राय है आत्मसात कर लेना, केवल बौद्धिक विचार से नहीं तथाता के दर्शन से नहीं है बल्कि तुम्हारी समस्त जीवन-शैली तथाता हो जाती है। तुम उसके विषय में सोचते तक नहीं, वह बस स्वाभाविक हो जाता है।

तुम तथाता में खाते हो, तुम तथाता में सोते हो तुम तथाता में श्वास लेते हो, तुम तथाता में प्रेम करते हो तुम तथाता में रोते हो। वह तुम्हारा जीने का ढंग हो जाता है, तुम्हें उसके संबंध में चिंता लेने की जरूरत नहीं रहती है तुम्हें उसके बारे में सोचने की भी जरूरत नहीं है, वह तुम्हारा होने का ढंग हो जाता है। आत्मसात से मेरा यही अभिप्राय है। तुम उसे आत्मसात करते हो पचाते हो वह तुम्हारे रक्त में प्रवाहित होता है वह तुम्हारी अस्थियों में गहरे में चला जाता है, वह तुम्हारे हृदय की धड़कनों तक पहुंच जाता है। तुम स्वीकार कर लेते हो।

स्मरण रहे 'स्वीकार' शब्द बहुत अच्छा नहीं है। वह बोझिल है- तुम्हारे कारण, शब्द के कारण नहीं- क्योंकि तुम तभी स्वीकार करते हो जब तुम असहाय अनुभव करते हो। तुम शिकायत करते हुए स्वीकार करते हो आधे मन से स्वीकार करते हो। तुम तभी स्वीकार करते हो जब तुम कुछ कर नहीं सकते लेकिन भीतर कहीं गहरे में तुम अब भी यही चाहते हो अगर कुछ और हो गया होता तो तुम खुश हो गए होते। तुम भिखारी की भांति स्वीकार करते हो सम्राट की भांति नहीं- और भेद बहुत गहरा है।

अगर पत्नी छोड़ जाती है या पति छोड़ जाता है अंत में तुम स्वीकार कर लेते हो। क्या किया जा सकता है? तुम रोते हो और चिल्लाते हो और कई रातें सोचते हो और चिंतित होते हो और कई दुखस्वप्न तुम्हें घेर लेते हैं और पीड़ा और फिर क्या किया जाए? समय घाव को भर देता है समझ नहीं। समय- और याद रहे समय की इसलिए आवश्यकता पड़ती है क्योंकि तुम समझ नहीं रहे हो वरना तत्काल घाव भर जाता है।

समय की जरूरत है क्योंकि तुम समझ नहीं रहे हो। इसलिए धीरे- धीरे- छह महीनों में आठ महीनों में एक वर्ष में- बातें मंद पड़ जाती हैं, स्मृति में खो जाती हैं धूल से ढक जाती हैं। एक वर्ष का अंतराल आ जाता है धीरे- धीरे तुम भूल जाते हो।

अभी भी कभी-कभी घाव पीड़ा देता है। कभी-कभी कोई स्त्री सड़क से गुजरती है और तुम्हें याद आ जाती है। कुछ समानता, वह कुछ इस तरह चलती है कि पत्नी की याद आ जाती है और वह घाव याद आ जाता है। फिर तुम किसी के प्रेम में पड़ते हो फिर और भी धूल इकट्ठी हो जाती है फिर तुम्हें कम याद आती है। लेकिन नई स्त्री के साथ भी, कभी वह इस तरह दिखती है- और तुम्हारी पत्नी की याद। जिस ढंग से वह बाथरूम में गाती है, और उसकी याद। और घाव हरा हो जाता है।

वह पीड़ा देता है क्योंकि तुम अतीत को ढो रहे हो। तुम हर चीज को ढो रहे हो इसीलिए तुम इतने बोझ से दबे हो। तुम सभी कुछ साथ लिए हो। तुम बच्चे थे वह बच्चा अब भी वहां है तुम उसे ढो रहे हो। तुम युवक थे वह युवक अपने सभी घावों अनुभवों, छत्राओं को लिए अब भी वहां है। तुम अपना सारा अतीत लिए हुए परत दर परत सभी कुछ वहां है। इसी कारण कभी-कभी तुम पीछे लौट जाते हो।

अगर कुछ ऐसी घटना घटती है और तुम असहाय अनुभव करते हो तुम बच्चे की भांति रोने लगते हो। तुम समय में पीछे लौट जाते हो बच्चा हावी हो गया है। बच्चा रोने में तुमसे अधिक कुशल है, इसलिए बच्चा भीतर आ जाता है और तुम पर हावी हो जाता है, तुम चिल्लाने लगते हो रोने लगते हो। तुम झल्लाहट में बच्चे की तरह पैर से ठोकर मारने लगते हो- लेकिन सब-कुछ वहां मौजूद है।

इतने बोझ को क्यों ढोया जाता है? क्योंकि तुम वास्तव में कभी किसी भी बात से राजी नहीं होते। सुनो यदि तुम किसी बात से राजी हो जाते हो तो फिर वह कभी बोझ नहीं बनती फिर घाव नहीं बना रहता। तुम घटना से राजी हो गए उसमें से कुछ भी ढोने योग्य नहीं है तुम उसके बाहर हो। स्वीकार करते ही तुम उससे बाहर हो जाते हो। आधे असहायपन से स्वीकार करने पर तुम घाव ढोते रहते हो।

एक बात याद रखो कुछ भी जो अधूरा रह जाता है वह सदा-सदा के लिए मन में रह जाता है जो पूरा हो जाता है वह छूट जाता है। क्योंकि मन की यह प्रवृत्ति है कि वह अधूरी बातों को इस आशा में सम्हाल कर रखता

है कि हो सकता किसी दिन उनके पूरा होने का अवसर आ जाए। तुम अब भी पत्नी या पति के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहे हो या जो दिन बीत गए हैं उनके लौट आने की अब भी प्रतीक्षा कर रहे हो। तुम ने अतीत का अतिक्रमण नहीं किया है।

और अत्यधिक बोझिल अतीत के कारण तुम वर्तमान में नहीं जी पाते। तुम्हारा वर्तमान अतीत के कारण गड़बड़ हो गया है, और तुम्हारा भविष्य भी ऐसा होने वाला है क्योंकि अतीत और-और भारी होता जाएगा। प्रति दिन वह और- और भारी हो रहा है।

जब तुम वास्तव में स्वीकार कर लेते हो तथाता के उस भाव में कोई शिकायत नहीं होती, तुम असहाय नहीं होते। तुम बस इतना समझ जाते हो कि यह वस्तुओं का स्वभाव है। उदाहरण के लिए अगर मैं इस कमरे से बाहर जाना चाहता हूं तो मैं दरवाजे से बाहर जाऊंगा, दीवाल से नहीं क्योंकि दीवाल से निकलने का अर्थ उससे टकरा कर सिर फोड़ना होगा, यह बिलकुल मूर्खतापूर्ण है। यह दीवाल की प्रकृति है रोकना इसलिए तुम उससे निकलने का प्रयत्न नहीं करते! यह दरवाजे का स्वभाव है, कि तुम उससे गुजर जाते हो क्योंकि दरवाजा खाली है, तुम उससे निकल सकते हो।

जब एक बुद्धपुरुष स्वीकार करता है, वह चीजों को दीवाल और दरवाजे की भांति स्वीकार करता है। वह दरवाजे से होकर निकलता है वह कहता है, वही एक मात्र रास्ता है। पहले तुम दीवाल से निकलने का प्रयत्न करते हो, और तुम लाखों ढंगों से स्वयं को घायल कर लेते हो। और जब तुम बाहर नहीं निकल पाते- कुचले हुए परास्त, निराश गिरे हुए- तब तुम दरवाजे की ओर रेंगते हो। तुम पहले ही दरवाजे से निकल सकते थे। क्यों तुमने ऐसी चेष्टा की और दीवाल से लड़ना शुरू कर दिया?

अगर तुम चीजों को स्पष्टतापूर्वक देख सको तुम बिलकुल ऐसा नहीं करते- दीवाल का दरवाजा बनाने की कोशिश नहीं करते। अगर प्रेम समाप्त हो गया है, वह समाप्त हो गया है। अब वहां दीवाल है उससे निकलने की चेष्टा मत करो। अब वहां द्वार नहीं है, वहां हृदय नहीं है, हृदय अब किसी और के लिए खुला है। और तुम यहां अकेले नहीं हो और लोग भी हैं।

अब तुम्हारे लिए यह द्वार नहीं रहा है वह एक दीवाल हो गया है। प्रयत्न मत करो और अपने सिर को उस पर न मारो। तुम व्यर्थ ही घायल हो जाओगे। और आहत पराजित- तुम्हारे गुजरने के लिए द्वार भी इतना अच्छा न लगेगा।

बस चीजों को देखो। अगर कोई चीज स्वाभाविक है, तो उस पर कुछ अस्वाभाविक लादने की चेष्टा न करो। द्वार को चुनो-उससे बाहर निकल जाओ। प्रतिदिन तुम दीवाल से गुजरने की मूर्खता कर रहे हो। फिर तुम तनावग्रस्त हो जाते हो, और फिर निरंतर दुविधा महसूस करते हो, मानसिक पीड़ा तुम्हारा जीवन, उसका केंद्र बन जाती है- फिर तुम ध्यान की मांग करते हो। लेकिन पहले ही क्यों नहीं? तथ्यों को वैसे ही क्यों न देखें जैसे वे हैं? तुम तथ्यों को क्यों नहीं देख पाते हो? क्योंकि तुम्हारी बहुत इच्छाएं हैं। तुम आशा के विपरीत आशा करते चले जाते हो। इसीलिए तुम्हारी स्थिति इतनी निराशाजनक हो गई है।

बस देखो जब भी कोई परिस्थिति बनती है, कोई इच्छा न करो क्योंकि इच्छा तुम्हें भटका देगी। कामना न करो और कल्पना न करो। बस अपनी समग्र चेतना से जो उपलब्ध है उस तथ्य को देखो और अचानक द्वारा खुल जाता है और तुम कभी दीवाल से नहीं निकलते तुम द्वार से निकलते हो, बिना किसी खरोंच के। तब तुम निर्भर बने रहते हो। स्मरण रहे तथाता एक समझ है एक असहायता से भरी नियति नहीं है। यही भेद है। कुछ लोग हैं जो भाग्य में, नियति में विश्वास करते हैं। वे कहते हैं, 'तुम क्या कर सकते हो? विधाता की यही इच्छा थी। मेरा छोटा सा बच्चा मर गया है, यह ईश्वर की इच्छा है और यह मेरा भाग्य है। वह लिखा गया था ऐसा

होना ही था। ' लेकिन भीतर कहीं गहरे में इनकार है। ये इनकार को संवारने की चालाकिया हैं। क्या तुम विधाता को जानते हो? क्या तुम भाग्य को जानते हो? क्या तुम जानते हो कि ऐसा लिखा गया था? नहीं, ये तर्कसंगत व्याख्याएं हैं कि अपने को सांत्वना कैसे दी जाए।

तथाता का भाव भाग्यवादी प्रवृत्ति नहीं है। वह विधाता को या भाग्य को, या नियति को किसी को बीच में नहीं लाता है। वह कहता है बस चीजों को देखो। बस वस्तुओं की वास्तविकता की देखो समझो और वहां द्वार है वहां द्वार सदा से है। तुम पार हो जाओ।

तथाता का अर्थ है पूरे स्वागतपूर्ण  
हृदय से स्वीकृति असहाय अवस्था में नहीं।  
तथाता के इस जगत में न तो कोई स्व है  
और न ही स्व के अतिरिक्त कोई और।

और एक बार जब तुम विलीन हो जाते हो- तुम ' तथाता ' में समझ में विलीन हो जाते हो- वहां तुम्हारी तरह से कोई नहीं है और न ही तुम्हारे अतिरिक्त कोई है न स्व है, न स्व के अतिरिक्त कोई है। तथाता में वस्तुओं के स्वभाव की गहरी समझ में सीमाएं मिट जाती हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन बीमार था। डॉक्टर ने उसका परीक्षण किया और कहा अच्छा है, नसरुद्दीन बहुत अच्छा है। सुधार हो रहा है तुम अच्छे हो रहे हो, सब-कुछ लगभग ठीक है। जरा थोड़ी सी कमी रह गई है तुम्हारी फ्लोटिंग किडनी की बीमारी अभी ठीक नहीं हुई है। परंतु मुझे उसकी जरा भी चिंता नहीं है।

नसरुद्दीन ने डॉक्टर की ओर देखा और कहा तो तुम क्या सोचते हो अगर तुम्हें फ्लोटिंग किडनी की बीमारी होती तो क्या मैं उसकी चिंता करता?

मन हमेशा विभाजन करता है दूसरा और मैं। और जिस क्षण तुम विभाजित करते हो मैं और दूसरा; तो दूसरा शत्रु बन जाता है दूसरा मित्र नहीं हो सकता है। यह बुनियादी बातों में से एक बात है जिसे गहराई से समझ लेना चाहिए। तुम्हें इसमें भीतर तक देखने की जरूरत है दूसरा कभी मित्र नहीं हो सकता, दूसरा शत्रु है। उसके दूसरा होने में, वह तुम्हारा शत्रु है। कुछ लोग अधिक शत्रुतापूर्ण होते हैं, कुछ कम, लेकिन दूसरा शत्रु ही बना रहता है।

मित्र कौन है? शत्रुओं में से कम से कम शत्रु वास्तव में ही, और कोई नहीं। मित्र वह है जो तुम्हारे प्रति कम से कम शत्रुतापूर्ण है, और शत्रु वह है जो तुम्हारे प्रति कम से कम मित्रतापूर्ण है, लेकिन वे एक ही पंक्ति में खड़े हैं। मित्र अधिक निकट खड़ा है, शत्रु दूर खड़ा है लेकिन वे सब शत्रु हैं। दूसरा मित्र नहीं हो सकता है। वह असंभव है क्योंकि दूसरे के साथ प्रतियोगिता, ईर्ष्या संघर्ष अवश्य होगा।

तुम मित्रों के साथ भी लड़ रहे हो- निस्संदेह, मित्रतापूर्ण ढंग से लड़ रहे हो। तुम मित्रों के साथ भी प्रतियोगिता कर रहे हो क्योंकि तुम्हारी आकांक्षाएं भी वही हैं जो उनकी हैं। तुम प्रतिष्ठा और शक्ति पाना चाहते हो वे भी प्रतिष्ठा और शक्ति पाना चाहते हैं। तुम अपने चारों ओर एक बड़ा साम्राज्य पा लेना चाहते हो, वे भी चाहते हैं। तुम भी उसी के लिए संघर्ष कर रहे हो और उसे केवल कुछ ही लोग प्राप्त कर सकते हैं।

संसार में मित्र पाना असंभव है। बुद्ध के पास मित्र हैं, तुम्हारे पास शत्रु हैं। बुद्ध का शत्रु नहीं हो सकता है, तुम्हारा मित्र नहीं हो सकता है। बुद्ध के पास मित्र क्यों हैं? – क्योंकि दूसरा विलीन हो गया है अब वहां उसके सिवाय और दूसरा कोई नहीं है। और जब यह दूसरा मिट जाता है, मैं को भी मिटना पड़ता है क्योंकि वे एक ही

घटना के दो छोर हैं। यहां भीतर अहंकार है और वहां बाहर दूसरा मौजूद है- एक ही घटना के दो ध्रुव। अगर एक ध्रुव विलीन हो जाता है, अगर तू विलीन हो जाता है मैं उसके साथ ही विलीन हो जाता है अगर मैं मिट जाता है, तो तू भी मिट जाता है।

तुम दूसरे को मिटा नहीं सकते तुम केवल अपने को मिटा सकते हो। अगर तुम विलीन हो जाते हो तो दूसरा है ही नहीं है; जब मैं छूट जाता है तो वहां कोई तू नहीं है। यही एक उपाय है।

लेकिन हम प्रयत्न करते हैं हम ठीक उसके विपरीत प्रयत्न करते हैं- हम तू को मार डालने की चेष्टा करते हैं। तू को मारा नहीं जा सकता, तू पर अधिकार नहीं जमाया जा सकता, नियंत्रण नहीं किया जा सकता। तू एक विद्रोही बना रहेगा क्योंकि तू तुम्हें मारने की कोशिश में है। तुम दोनों एक ही अहंकार के लिए लड़ रहे हो- वह अपने अहंकार के लिए, तुम अपने अहंकार के लिए।

संसार की सारी राजनीति यही है कि तू की कैसे हत्या की जाए ताकि केवल मैं ही बचे और सब शांत हो जाए। क्योंकि जब अन्य कोई नहीं है, तुम अकेले वहां हो, तब सब शांतिपूर्ण होगा। लेकिन ऐसा न कभी हुआ है और न कभी होगा। तुम दूसरे को कैसे मार सकते हो? तुम दूसरे को कैसे नष्ट कर सकते हो? दूसरा बहुत विस्तृत है संपूर्ण ब्रह्मांड ही दूसरा है।

धर्म एक भिन्न आयाम से काम करता है वह मैं को मिटा देने की चेष्टा करता है। और एक बार जब मैं मिट जाता है दूसरा भी नहीं बचता है दूसरा विलीन हो जाता है। इसीलिए तुम अपने शिकवे-शिकायतों से चिपके रहते हो-क्योंकि वे मैं को बचाने में सहायता करते हैं। अगर जूता काटता है तब मैं की सत्ता और आसानी से बनी रह सकती है। अगर जूता काटता नहीं है तो पैर की याद ही नहीं रहती फिर मैं मिट जाता है।

लोग अपनी बीमारियों से चिपके रहते हैं, वे अपनी शिकायतों से चिपके रहते हैं, वे उन सबसे चिपके रहते हैं जो उन्हें चुभते हैं और वे निरंतर कहते रहते हैं कि ये घाव हैं और हम उन्हें ठीक करना चाहेंगे। लेकिन भीतर कहीं गहरे में वे घाव बनाते जाते हैं, क्योंकि अगर सारे घाव भर जाएं तो उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

जरा लोगों को देखो वे बीमारी से चिपके रहते हैं। वे उसकी चर्चा करते हैं जैसे कि वह कुछ ऐसी चीज है जिसके बारे में चर्चा करना बड़ा मूल्यवान है। लोग दूसरी बातों से ज्यादा अपनी बीमारी अपनी नकारात्मक भाव-दशाओं की बात करते हैं। उन्हें सुनो, और तुम देखोगे कि वे उनकी चर्चा करने में रस ले रहे हैं।

प्रत्येक शाम मुझे सुनना पड़ता है कई वर्षों से मैं सुनता आ रहा हूं। उनके चेहरों को देखो- वे उसका मजा ले रहे हैं। वे शहीद हैं... उनकी बीमारी उनका क्रोध, उनकी घृणा उनकी यह और वह समस्या उनका लोभ उनकी महत्वाकांक्षाएं। और जरा देखो, सारी बात ही बस पागलपन है- क्योंकि वे उन चीजों से छुटकारा पाना चाहते हैं, लेकिन उनके चेहरे देखो वे उनमें रस ले रहे हैं। और अगर वे सच में ही चली जाएं, तब वे किसका मजा लेंगे? अगर उनकी सारी बीमारियां दूर हो जाएं और वे पूरी तरह स्वस्थ हो जाएं उनके पास चर्चा करने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।

लोग मनोचिकित्सकों के पास जाते हैं और फिर निरंतर इसी बात की चर्चा करते हैं कि वे इस मनोचिकित्सक और उस मनोचिकित्सक के पास गए, वे इस गुरु के और उस गुरु के पास गए। वास्तव में वे यह कहने में रस लेते हैं ' सब हर कोई मेरे साथ विफल हो गया। मैं अब भी वही हूं कोई भी मुझे बदल नहीं पाया है। ' वे इसका एक तरह से मजा लेते हैं जैसे कि वे सफल हो रहे हैं? क्योंकि वे प्रत्येक मनोचिकित्सक को असफल सिद्ध कर रहे हैं। सभी चिकित्सा-विधियां असफल हो गई हैं।

मैंने एक व्यक्ति के बारे में सुना है जो बहुरोग- भ्रम का शिकार था, जो निरंतर अपनी बीमारियों की बात करता था। और कोई उसका विश्वास नहीं करता था, क्योंकि उसका हर संभव तरह से परीक्षण किया गया था। और कुछ भी गलत नहीं था। लेकिन प्रतिदिन वह डॉक्टर के पास भागा जाता- वह बड़ी मुश्किल में था।

फिर धीरे- धीरे डॉक्टर को यह बात समझ में आ गई कि वह जो भी सुनता है- अगर टी. थी. पर किसी औषधि का विज्ञापन दिखाया जाता है या किसी बीमारी की चर्चा होती है- तुरंत वह बीमारी उस पर आ जाती है। अगर वह किसी पत्रिका में किसी बीमारी के बारे में पड़ता है तुरंत दूसरे ही दिन वह डॉक्टर के दवाखाने पर पहुंच जाता है- बीमार पूरी तरह बीमार। और वह सभी लक्षणों को अपने ऊपर आरोपित कर लेता है।

तो एक बार डॉक्टर ने कहा मुझे ज्यादा परेशान न करो क्योंकि मैं भी वही पत्रिका पड़ता हूं जो तुम पढ़ते हो और टी. वी. पर वही कार्यक्रम देखता हूं जो तुम देखते हो। और दूसरे ही दिन तुम उसी बीमारी के साथ यहां पहुंच जाते हो।

उस आदमी ने कहा तुम क्या सोचते हो? क्या इस शहर में तुम ही अकेले डॉक्टर हो? उसने इस डॉक्टर के पास आना छोड़ दिया लेकिन बीमारियों के बारे में अपने पागलपन को नहीं छोड़ा।

फिर वह मर गया, जैसा कि सभी को मरना पड़ता है। मरने से पहले उसने अपनी पत्नी को अपनी समाधि पर लगे संगमरमर के पत्थर पर लिखवाने के लिए कुछ शब्द बताए। वे अब भी वहां लिखे हुए हैं। उसके समाधि के पत्थर पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है, ' अब तुम्हें विश्वास आया कि मैं सही था?'

लोग अपने दुख को लेकर बहुत प्रसन्न होते हैं। मैं भी कभी-कभी महसूस करता हूं कि अगर उनके सारे दुख मिट जाएं, तो वे क्या करेंगे? वे इतना खाली हो जाएंगे कि आत्महत्या कर लेंगे। और मैंने देखा है तुम उन्हें एक दुख से बाहर निकलने में मदद करो, अगले ही दिन वे दूसरे के साथ उपस्थित हो जाते हैं। तुम उन्हें उससे बाहर निकलने में सहायता करते हो वे फिर तैयार हैं... मानो दुख पर उनकी गहरी पकड़ है। उन्हें उसमें से कुछ मिल रहा है, वह उनका निवेश है- और वह लाभदायी है।

निवेश क्या है? निवेश यह है कि जब जूता ठीक नहीं बैठ रहा तुम्हें ज्यादा महसूस होता है कि तुम हो। जब जूता पूरी तरह ठीक फिट हो जाता है, तुम तनावमुक्त हो जाते हो। अगर जूता पूरी तरह से ठीक बैठ जाता है तब केवल पैर ही नहीं भूल जाता मैं भी विलीन हो जाता है। आनंदपूर्ण चेतना के साथ कोई मैं नहीं हो सकता- यह असंभव है!

केवल दुखी मन के साथ ही मैं का अस्तित्व है तुम्हारे सारे दुखों के कुल जोड़ के सिवाय मैं और कुछ भी नहीं है। और अगर तुम सच में ही मैं को छोड़ देना चाहते हो, तो केवल तभी तुम्हारे दुख मिटेंगे। अन्यथा तुम नये दुख पैदा करते रहोगे। कोई तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता है, क्योंकि तुम ऐसे पथ पर हो जो स्व-विनाशक स्व-पराजित है। इसलिए अगली बार जब भी कोई समस्या लेकर मेरे पास आओ तो पहले अपने भीतर पूछ लो कि क्या तुम उसे हल करना चाहोगे, क्योंकि ध्यान रहे, मैं उसे हल कर सकता हूं। क्या तुम वास्तव में उसका समाधान चाहते हो या मात्र उसकी बात ही कर रहे हो? तुम्हें उसके बारे में बात करना अच्छा लगता है।

भीतर जाओ और पूछो और तुम्हें महसूस होगा तुम्हारे सारे संताप इसी कारण हैं कि तुम उन्हें सहारा दे रहे हो। बिना तुम्हारे सहारे के कुछ नहीं हो सकता है। क्योंकि तुम उसे ऊर्जा देते हो इसलिए उसका अस्तित्व है; अगर तुम उसे ऊर्जा न दो तो उसका अस्तित्व नहीं हो सकता। और कौन तुम्हें उसे ऊर्जा देने के लिए विवश कर रहा है? जब तुम उदास भी होते हो ऊर्जा की आवश्यकता होती है, क्योंकि बिना ऊर्जा के तुम उदास भी नहीं हो सकते।

उदासी की घटना को घटित होने के लिए तुम्हें ऊर्जा लगानी पड़ती है। इसी कारण उदासी के बाद तुम कितना बिखरे से शक्तिहीन महसूस करते हो। क्या हुआ? – क्योंकि अवसाद में तुम कुछ कर नहीं रहे थे तुम सिर्फ उदास थे। फिर क्यों तुम इतना खाली सा, शक्तिहीन अनुभव करते हो? तुम्हें तो ऊर्जा से भरे हुए उदासी से बाहर आना चाहिए था- लेकिन नहीं।

स्मरण रहे सभी नकारात्मक मनोभावों को ऊर्जा चाहिए, वे तुम्हें खाली कर देते हैं। और सभी सकारात्मक मनोभाव और मनोप्रवृत्तियां शक्तिदायी हैं। वे और ऊर्जा निर्मित करती हैं वे तुम्हारा शोषण नहीं करती।

अगर तुम प्रसन्न हो अचानक सारे जगत की ऊर्जा तुम्हारी ओर बहने लगती है सारा संसार तुम्हारे साथ हंसता है। और लोग अपनी कहावतों में ठीक हैं यदि वे कहते हैं जब तुम हंसते हो तो सारा संसार तुम्हारे साथ हंसता है जब तुम रोते हो तो अकेले रोते हो। यह सच है यह बिलकुल सच है।

जब तुम सकारात्मक होते हो तो सारा अस्तित्व तुम्हें निरंतर और-और देता रहता है, क्योंकि जब तुम प्रसन्न हो, सारा अस्तित्व तुम्हारे साथ प्रसन्न है। तुम कोई बोझ नहीं हो तुम एक फूल हो; तुम चट्टान नहीं हो, तुम एक पक्षी हो। सारा अस्तित्व तुम्हारे साथ प्रसन्न होता है।

जब तुम एक चट्टान की तरह अपनी उदासी के साथ मृतप्राय बैठे हो अपनी उदासी का पोषण कर रहे हो कोई तुम्हारे साथ नहीं होता। कोई तुम्हारे साथ नहीं हो सकता। तुम्हारे और जीवन के बीच एक अंतराल आ जाता है। फिर तुम जो भी कर रहे हो तुम्हें अपने ऊर्जा-स्रोत पर निर्भर होना पड़ता है। वह बिखर जाएगी; तुम अपनी ऊर्जा का अपव्यय कर रहे हो तुम अपनी मूर्खता के कारण अपने को खाली कर रहे हो।

लेकिन एक बात है कि जब तुम उदास और नकारात्मक होते हो तो तुम्हें अहंकार की प्रतीति अधिक होगी। जब तुम प्रसन्न आनंदित, शरीर के पार परम अवस्था में होते हो, तुम्हें अहंकार की अनुभूति नहीं होगी। जब तुम प्रसन्न और परमानंदित होते हो तो वहां कोई मैं नहीं होता और दूसरा भी मिट जाता है। तुम प्रकृति के साथ जुड़ जाते हो टूटकर अलग नहीं हो जाते, तुम साथ-साथ हो।

जब तुम उदास क्रोधित लोभी होते हो अपने ही भीतर घूमते हुए अपने घावों का मजा लेते हो उन्हें बार-बार देखते हो उनके साथ खेलते हो शहीद बनने की कोशिश करते हो तब तुम्हारे और अस्तित्व के बीच एक अंतराल आ जाता है। तुम अकेले छोड़ दिए जाते हो और वहां तुम्हें मैं का अनुभव होगा। और जब तुम मैं का अनुभव करते हो तो सारा अस्तित्व तुम्हारे प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाता है। ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारे मैं के कारण विरोधी हो जाता है- वह विरोधी दिखाई पड़ता है। और अगर तुम्हें लगता है कि हर कोई तुम्हारा शत्रु है तो तुम इस प्रकार व्यवहार करोगे कि हर एक को तुम्हारा शत्रु हो जाना ही पड़ेगा।

तथाता के इस जगत में न तो कोई स्व है  
और न ही स्व के अतिरिक्त कोई और।

जब तुम प्रकृति से राजी हो जाते हो और उसमें विलीन हो जाते हो, तुम उसके साथ चलते हो। तुम्हारे अपने कोई कदम नहीं होते, तुम्हारा अपना कोई नृत्य नहीं होता, तुम्हारे पास गाने के लिए अपना खुद का छोटा सा गीत भी नहीं होता- समग्र का गीत तुम्हारा गीत होता है, समग्र का नृत्य तुम्हारा नृत्य होता है। तुम अब अलग नहीं हो।

तुम यह महसूस नहीं करते कि मैं हूँ तुम बस महसूस करते हो, ' समग्र ही है। मैं तो मात्र तरंग हूँ आती और जाती हुई, आगमन और प्रस्थान होना और न होना। मैं आती और जाती हूँ समग्र सदा है। समग्र के कारण ही मेरा अस्तित्व है मेरे माध्यम से समग्र का ही अस्तित्व है। '

कभी वह साकार हो जाता है, कभी वह निराकार हो जाता है, दोनों ही सुंदर हैं। कभी वह शरीर में प्रकट होता है, कभी शरीर से विलुप्त हो जाता है। उसे ऐसा होना ही चाहिए; क्योंकि जीवन एक लयबद्धता है। कभी तुम्हें आकार में होना पड़ता है, फिर तुम्हें आकार से विश्राम लेना पड़ता है। कभी तुम्हें सक्रिय और गतिमान एक तरंग होना पड़ता है। कभी तुम गहराई में चले जाते हो और विश्राम करते हो, स्थिर। जीवन एक लयबद्धता है।

मृत्यु शत्रु नहीं है। वह बस लय का बदल जाना है दूसरे की ओर चले जाना है। शीघ्र ही तुम जन्म लोगे- जीवंत, युवा, अधिक ताजे! मृत्यु एक आवश्यकता है। तुम मृत्यु में मरने वाले नहीं हो; सिर्फ वह धूल जो तुम्हारे इर्द-गिर्द इकट्ठी हो गई है उसे धोने की जरूरत है। पुनर्जावित होने का यही एक मात्र उपाय है। केवल जीसस ही पुनर्जावित नहीं होते, अस्तित्व में हर चीज पुनर्जावित होती है।

अभी- अभी उस बादाम के पेड़ ने – जो बाहर लगा हुआ है- अपने सारे पत्ते गिरा दिए, अब नये पत्तों ने उनकी जगह ले ली है। ऐसा ही होता है! अगर पेड़ पुराने पत्तों से चिपका रहता है तो कभी नया नहीं हो सकता और फिर वह सड़ जाएगा। संघर्ष क्यों निर्मित करना? नये के आगमन के लिए पुराना मिट जाता है। वह जगह देता है नये के आगमन के लिए स्थान बनाता है। और नया सदा आ रहा होगा और पुराना सदा जा रहा होगा।

तुम मरते नहीं। केवल पुराने पत्ते गिर जाते हैं नये के लिए जगह बनाने के लिए। यहां तुम मरते हो, वहां तुम पैदा हो जाते हो यहां तुम विलीन होते हो, वहां तुम प्रकट हो जाते हो। सरूप से अरूप, अरूप से सरूप शरीर से अशरीर अशरीर से शरीर गति विश्राम विश्राम, गति यही लयबद्धता है। अगर तुम लय को देखो तो तुम्हें किसी बात की चिंता नहीं होगी। तुम श्रद्धा रखते हो।

तथाता के इस जगत में श्रद्धा के जगत में

... न तो कोई स्व है और न ही स्व के अतिरिक्त कोई और।

फिर वहां न तुम हो न ही कोई तू है। दोनों ही विलीन हो जाते हैं दोनों एक की लय में हो गए हैं। उसी एक का अस्तित्व है वह एक ही वास्तविकता है, सत्य है।

इस वास्तविकता से सीधे ही लयबद्ध होने के लिए-

जब संशय उठे, बस कहो, ' अद्वैत।

यह प्राचीनतम मंत्रों में से एक है। जब भी संशय उठे, जब भी तुम खंडित अनुभव करो जब भी तुम देखो कि द्वैत खड़ा होने वाला है बस भीतर कहो ' अद्वैत ' – लेकिन इसे होशपूर्वक कहो इसे यंत्रवत मत दोहरा।

सभी मंत्रों के साथ यही कठिनाई है वास्तव में, हर चीज के साथ यही समस्या है। तुम इसे यंत्रवत कर सकते हो तब तुम सारी बात ही चूक गए; तुम सब-कुछ करते हो और फिर भी तुम चूक जाते हो। या तुम इसे पूरी सजगता, बुद्धिमत्ता, समझ से कर सकते हो और फिर कुछ घटित होता है।

जब भी तुम महसूस करो कि प्रेम उठ रहा है तो कहो ' अद्वैत '। अन्यथा घृणा वहां प्रतीक्षा कर रही है- वे दोनों एक हैं। जब तुम अनुभव करो कि घृणा पैदा हो रही है तो कहो ' अद्वैत। ' जब तुम्हें ऐसा लगे कि तुम

जीवन को पकड़ रहे हो, तो कहो ' अद्वैत। ' जब तुम्हें मृत्यु के प्रति भय अनुभव हो तो कहो ' अद्वैत केवल एक है '।

और ऐसा कहना तुम्हारी अपनी समझ होना चाहिए यह बुद्धिमत्ता और गहन स्पष्टता से पूर्ण होना चाहिए। और अचानक तुम अपने भीतर एक विश्रान्ति अनुभव करोगे। जिस क्षण तुम कहते हो ' अद्वैत ' – अगर तुम उसे समझपूर्वक कह रहे हो यंत्रवत नहीं दोहरा रहे तो- तुम अचानक एक आलोक अनुभव करोगे।

किसी ने तुम्हारा अपमान किया है और तुम अपमानित अनुभव करते हो। सिर्फ स्मरण रखो और कहो ' अद्वैत ' क्योंकि वह जो अपमान करता है और जो अपमानित होता है, एक हैं। इसलिए क्यों चिंतित होना? उस व्यक्ति ने तुम्हारे साथ कुछ नहीं किया है उसने अपने साथ किया है। क्योंकि केवल एक का ही अस्तित्व है।

ऐसा हुआ अठारह सौ सत्तावन में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध बगावत हुई। एक रात एक संन्यासी एक रास्ते से गुजर रहा था लेकिन उसे पता नहीं था कि वहां एक सेना का शिविर है। वह पकड़ा गया। और वह तीस वर्षों से मौन था।

जब सैनिकों ने उसे पकड़ा और अंग्रेज अधिकारियों ने उससे पूछा तुम यहां क्यों घूम रहे हो? इस क्षेत्र में प्रवेश निषिद्ध है। बिना अनुमति के तुम अंदर नहीं आ सकते हो। वह केवल खड़ा रहा, क्योंकि वह बोल नहीं सकता था। तीस वर्षों से वह मौन था तो क्या किया जाए? और उसने लिख कर भी नहीं बताया उसने किसी संवाद का उपयोग भी नहीं किया।

उन्होंने सोचा कि यह व्यक्ति धोखा देने का प्रयत्न कर रहा है वह मूर्ख भी दिखाई नहीं देता था वह बड़ा प्रतिभाशाली मालूम पड़ता था। उसकी आंखों की गुणवत्ता जिस ढंग से वह खड़ा था वह सुंदर व्यक्ति था। वह जड़बुद्धि या मूर्ख नहीं था।

तो उन्होंने कहा. तुम हमें बताओ, नहीं तो हम तुम्हें गोली मार देंगे। लेकिन वह वैसे ही खड़ा रहा। तो उन्होंने सोचा वह निश्चित ही कोई जासूस है और गेरुए वस्त्र पहन कर घूम रहा है वह शिविर में कुछ खोजने की चेष्टा कर रहा है इसीलिए यह चुप है।

तो उन्होंने कहा तुम बोलो, नहीं तो हम तुम्हें गोली से मार देंगे।

लेकिन वह खड़ा रहा, तो उन्होंने उसे मार डाला।

उसने तीस वर्ष पहले यह प्रण किया था कि अपने जीवन में एक बार ही बोलेगा। इसलिए जब उसे मारा गया, अंग्रेज सैनिक ने भाले से उसको मार डाला जब भाला उसके हृदय तक पहुंचा, उसने एक ही शब्द कहा। वह आधारभूत है, पूरब की समझ और प्रज्ञा का आधार है; यह शब्द उपनिषदों से है। उसने कहा. ' तत्वमसि ' – तुम वही हो- और वह मर गया!

कहा तुम वही हो : एक ही है। जिसने हत्या की और जिसकी हत्या हुई दोनों एक हैं इसलिए चिंता की क्या आवश्यकता है? इसलिए किसी दृष्टिकोण की क्या आवश्यकता है? क्यों न दूसरे में मिल जाएं। क्योंकि दूसरा भी मैं हूं और दूसरा और मैं भी एक है वही। केवल एक है।

कोई भी समझ न सका कि वह क्या कह रहा है क्योंकि उसने संस्कृत भाषा का शब्द कहा था. ' तत्वमसि। ' लेकिन मरने वाले की गुणवत्ता ऐसी थी कि हत्यारों को भी लगा कि उन्होंने कुछ अनुचित कर दिया है। क्योंकि उन्होंने कभी किसी जासूस को इस तरह मरते हुए नहीं देखा था। जासूस तो जासूस ही होता है! और जब वह आदमी मरा तो उससे जो आनंद और जो ऊर्जा प्रसारित हुई वह अदभुत थी। उस शिविर में सभी ने ऐसा महसूस किया, जैसे कि अचानक बिजली कौंध गई हो।

तीस वर्ष का मौन और फिर अगर तुम कोई शब्द बोलते हो उसे ऐसा होना ही चाहिए। इतनी ऊर्जा तीस वर्ष का मौन उस एक शब्द में तत्वमसि वह आणविक हो जाता है उसका विस्फोट होता है।

उस शिविर में जो अपने तंबुओं में सो रहे थे उन्होंने भी महसूस किया कि कुछ हुआ है। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

फिर वे यह जानने के लिए कि उसने क्या कहा था किसी विद्वान ब्राह्मण की खोज में निकले। वहां उन्हें पता चला कि उसने अंतिम परमतत्व की बात कही थी तुम वही हो तत्वमसि एक ही है।

जब कभी तुम्हारा द्वंद्व के साथ संशय के साथ विभाजन के साथ संघर्ष के साथ सामना होता है, जब कभी तुम किसी चीज का चुनाव करने जा रहे हो स्मरण रहे अद्वैत। इसे निरंतर अपने प्राणों में गूंजता हुआ एक गहरा मंत्र बना लो। लेकिन स्मरण रहे इसे समझपूर्वक होशपूर्वक सजगतापूर्वक करना होगा। वरना तुम कहते रहोगे ' अद्वैत, अद्वैत अद्वैत ' और तुम लगातार दो करते रहोगे। और वे दो अलग- अलग चीजें हो जाती हैं उनका कभी मिलन नहीं होता है।

जब मैं कहता हूं यंत्रवत तो मेरा यही अभिप्राय है। यंत्रवत का अर्थ है एक तल पर तुम सुंदर-सुंदर बातें कहते रहते हो और दूसरे तल पर कुरूप कार्य करते चले जाते हो। एक तल पर तुम कहते हो कि सब ईश्वरीय है और दूसरे तल पर तुम मैं अहं बने रहते हो संघर्षरत हिंसक आक्रामक।

और आक्रमण केवल युद्ध में ही नहीं होता आक्रमण केवल तभी नहीं होता जब तुम किसी व्यक्ति की हत्या करते हो। आक्रमण बहुत सूक्ष्म रूप में होता है, यह तुम्हारे हाव- भाव में होता है। तुम देखो और अगर तुम विभाजित हो तू और मैं में तुम्हारी दृष्टि हिंसक होती है।

मैंने सुना है एक बार ऐसा हुआ:

एक कैदी को एक जेलर के पास लाया गया और वह एक बहुत ही आदर्श कैदी था। पिछले पांच वर्षों में उसकी कोई शिकायत नहीं आई थी और जेल अधिकारी अब उसे मुक्त करने की बात सोच रहे थे। वह एक हत्यारा था और वह जेल में जीवन भर के लिए था लेकिन पांच वर्ष तक वह एक बहुत ही अच्छा एक आदर्श कैदी सिद्ध हुआ, और प्रति वर्ष उसे अच्छे कैदी होने का पुरस्कार मिलता रहा। लेकिन अचानक वह अपनी कोठरी के साथी पर टूट पड़ा और उसे बहुत बुरी तरह मारा-पीटा इसीलिए उसे लाया गया था।

जेलर भी हैरान था। उसने कहा क्या हो गया है? हम तुम्हें पिछले पांच वर्षों से देख रहे हैं-मैंने अपने जीवन में तुम्हारे जैसा अच्छा शांत शिष्ट कैदी नहीं देखा है हम तुम्हें मुक्त करने की बात सोच रहे थे। और अचानक क्या हो गया है? तुम अपने कोठरी के साथी पर क्यों टूट पड़े तुमने उसे मारना क्यों शुरू कर दिया?

वह आदमी सिर झुकाए लज्जित सा वहा खड़ा रहा। और फिर उसने कहा, यह इसलिए हुआ क्योंकि मेरे साथी ने कैलेंडर से पृष्ठ फाड़ डाला जब कि उसे फाड़ने की बारी मेरी थी।

उनके पास कोठरी में एक कैलेंडर था और वही एक चीज थी जो वे कर सकते थे केवल यही एक काम था जिसे करने की उनको अनुमति थी। इसलिए उन्होंने उसे ही बांट रखा था एक दिन एक आदमी पृष्ठ फाड़ेगा और दूसरे दिन दूसरा। और उस आदमी ने कहा आज मेरी बारी थी और उसने पृष्ठ फाड़ डाला।

अगर तुम हिंसक हो तो यह भी समस्या बन सकता है। और उसने अपने साथी को इस बुरी तरह से पीटा केवल खाली हाथों से ही कि उसे मार ही डाला होता और समस्या इतनी साधारण थी। अगर तुम सच में यह सोचते हो कि यह मामूली बात है तो तुम बात ही नहीं समझे ऐसा नहीं है। पांच सालों से कोठरी में रहना कुछ भी न करना, इससे व्यक्ति में इतनी आक्रामकता इकट्ठी हो जाती है कि छोटी सी बात भी बहुत बड़ी हो जाती है।

और यही तुम सबके साथ हो रहा है। जब भी तुम अपने मित्र अपनी पत्नी अपने पति पर बरस पड़ते हो जब भी तुम क्रोधित हो उठते हो- क्या तुमने कभी इस बारे में सोचा है? – कि यह बात वास्तव में इतनी मामूली है केवल कैलेंडर से पृष्ठ फाड़ना। और कारण के मुकाबले बहुत ज्यादा तुम्हारा संचित क्रोध और आक्रामकता बाहर निकल आती है।

जब भी ऐसा हो दोहराओ, यंत्रवत नहीं लेकिन होशपूर्वक ' अद्वैत ' और अचानक तुम हृदय में भीतर गहरे में एक विश्रान्ति अनुभव करोगे। कहो, ' अद्वैत ' और कोई चुनाव नहीं है चुनाव करने के लिए कुछ नहीं है कोई पसंदगी और नापसंदगी नहीं है। फिर सब-कुछ ठीक है और तुम सबको आशीष दे सकते हो। वरदान है। फिर जहां भी जीवन ले जाता है तुम चले जाते हो। तुम जीवन पर श्रद्धा करते हो।

अगर तुम कहते हो ' दो ' तब तुम्हें श्रद्धा नहीं है। श्रद्धा केवल तभी संभव है जब मैं और पूर्ण एक हैं, वरना श्रद्धा कैसे संभव हो सकती है। श्रद्धा कोई बौद्धिक दृष्टिकोण मनोवृत्ति नहीं है। यह इस भाव की पूर्ण प्रतिसंवेदना है कि एक ही है दो नहीं। तुम इसे मंत्र बना लो इसे सोसान से सीखो।

जितनी बार तुम अनुभव करो कि संशय दुविधा विभाजन संघर्ष उत्पन्न हो रहा है, तब चुपचाप और भीतर गहरे में दोहराओ, पहले संघर्ष के प्रति सजग हो जाओ और फिर चुपचाप कहो, 'दो नहीं' और देखो क्या होता है। द्वंद्व मिट जाता है। अगर एक क्षण के लिए भी वह विलीन हो जाता है तो वह बहुत बड़ी घटना है तुम निश्चित हो जाते हो। सहसा संसार में तुम्हारा कोई शत्रु नहीं रहता अचानक हर चीज एक है। यह एक परिवार है और सारा अस्तित्व तुम्हारे साथ आनंदमय हो जाता है।

इस 'अद्वैत' में कुछ भी पृथक नहीं है? कुछ भी बाहर नहीं है। कब या कहा कोई-अर्थ नहीं रखता, बुद्धत्व का अर्थ है इस सत्य में प्रवेश।

अद्वैत का सत्य बुद्धत्व का अर्थ है अद्वैत के इस सत्य में प्रवेश। जितना भी हो सके उसका स्वाद लेते रहो जितना संभव हो उतना उसे अनुभव करते चलो। दिन के चौबीस घंटों में कई अवसर अवसर पर अवसर, अनंत अवसर आते हैं। उन्हें चूकने की जरूरत नहीं है।

प्रत्येक अवसर पर जब तुम भीतर कुछ तनाव अनुभव करते हो, तो कहो ' अद्वैत ' और शरीर को शिथिल छोड़ दो। और भीतर देखो कि क्या घट रहा है जब तुम कहते हो, ' अद्वैत। ' कोई दूसरा मंत्र इतना गहरा नहीं हो सकता है। लेकिन यह ओम या राम दोहराने की भांति नहीं है। यह ऐसी बात नहीं है जैसे कि तुम राम, राम राम दोहराते हो नहीं।

जब भी विभाजन का अवसर आए, जब भी तुम ऐसा महसूस करो कि अब तुम खंडित हो जाओगे अब तुम चुनाव करने ही वाले हो इसके विपरीत उसे चुनने की, इसके विपरीत उसको पसंद करने की स्थिति बन गई है जब भी तुम्हें लगे कि अवसर आ रहा और तनाव उत्पन्न हो रहा है जब भी तुम्हें एहसास हो कि तनाव बन रहा है अचानक कहो, ' अद्वैत ' – और तनाव शिथिल हो जाएगा, और ऊर्जा फिर से तुम्हारे भीतर समा जाती है और वह ऊर्जा आनंद बन जाती है।

तरिक ऊर्जा के साथ काम करने के दो ढंग हैं। एक है जब भी तनाव पैदा हो तो उसे बाहर निकाल दो। सेक्स इसी तरह से काम करता है। वह सुरक्षात्मक उपाय है, क्योंकि इतनी ऊर्जा संचित हो सकती है कि तुम विस्फोटित हो सकते हो और तुम उसके कारण मर भी सकते हो। इसलिए सुरक्षा के लिए प्रकृति ने शरीर में स्वचालित प्रबंध कर रखा है जब भी ऊर्जा बहुत हो जाती है, तुम कामुकता अनुभव करने लगते हो।

क्या होता है? एक केंद्र है जिसे हिंदू तीसरा नेत्र कहते हैं। जब भी ऊर्जा तीसरी आंख पर पहुंचती है... जब भी वह अत्यधिक हो जाती है और तुम उससे परिपूरित हो जाते हो, वह तीसरी आंख पर चोट करती है। तुम्हें ऐसा लगने लगता है कि कुछ किया जाना चाहिए। हिंदुओं ने तीसरी आंख को ' आज्ञा-चक्र ' कहा है आज्ञा का केंद्र, आज्ञा देने के लिए कार्यालय जहां से शरीर को आज्ञाएं मिलती हैं।

जब भी ऊर्जा तृतीय नेत्र तक भर जाती है तुरंत शरीर कुछ करना चाहता है। अगर तुम कुछ न करो तो तुम्हें घुटन महसूस होगी। तुम्हें लगेगा जैसे तुम किसी सुरंग में हो और तुम उससे बाहर निकलना चाहोगे तुम्हें लगेगा कि तुम फंस गए हो। शीघ्र ही कुछ किया जाना चाहिए।

प्रकृति ने भीतर ऐसा बना बनाया प्रबंध किया है तृतीय नेत्र का केंद्र तत्काल काम-केंद्र पर चोट करता है वे दोनों जुड़े हैं और तुम कामुक अनुभव करने लगते हो। कामवासना का अनुभव ऊर्जा को बाहर निकालने का इंतजाम है। तुम संभोग करते हो ऊर्जा बाहर निकल जाती है तुम विश्रान्त हलका महसूस करते हो। ऊर्जा का उपयोग करने का यह एक रास्ता है- तुम्हें छुटकारा पाने के कारण सुख मिलता है।

ऊर्जा के उपयोग का दूसरा उपाय भी है। वह है जब भी ऊर्जा अत्यधिक हो जाए, तो उससे छुटकारा नहीं पाना लेकिन बस इतना ही कहना है ' अद्वैत। मैं ब्रह्मांड के साथ एक हूं। उसे कहां निकालना है? किसके साथ भोग करना है? उसे कहां फेंकना है? उसे फेंकने के लिए कोई जगह नहीं है मैं ब्रह्मांड के साथ जुड़ा हूं। ' जब भी अनुभव हो कि ऊर्जा बहुत अधिक है, तो यही कहो ' अद्वैत ' और शांत बने रहो।

अगर तुम उसे तीसरे नेत्र से फेंकते नहीं, तो वह तीसरे से भी ऊपर उठना आरंभ हो जाती है। और फिर है अंतिम, सिर में सातवां केंद्र जिसे हिंदुओं ने सहस्रार कहा है सहस्रदल कमल। जब ऊर्जा सहस्रार पर पहुंचती है वहां परमानंद होता है और जब ऊर्जा काम केंद्र पर पहुंचती है, वहां प्रसन्नता होती है।

प्रसन्नता केवल क्षण भर के लिए हो सकती है, क्योंकि छुटकारा केवल क्षणिक ही हो सकता है। छुटकारा हो गया, समाप्त हो गया- तुम लगातार इस तरह छुटकारा नहीं पा सकते। तनाव से मुक्त हो गए, तो ऊर्जा निकल गई। लेकिन आनंद शाश्वत हो सकता है, क्योंकि ऊर्जा बाहर नहीं निकलती बल्कि दोबारा आत्मसात हो जाती है। लेकिन छुटकारे का केंद्र है काम, पहला केंद्र। और ऊर्जा के दुबारा आत्मसात करने का केंद्र है सातवा, अंतिम।

और स्मरण रहे, दोनों ऊर्जा की एक ही घटना के दो छोर हैं एक छोर पर काम है दूसरे छोर पर सहस्रार है। एक छोर से केवल ऊर्जा बाहर निकलती है, तुम्हें सुख मिलता है क्योंकि अब कुछ करने के लिए ऊर्जा वहां नहीं है- तुम सो जाते हो। इसीलिए सेक्स नींद लाने में सहायक होता है, लोग उसका शामक दवा की तरह, नींद की गोली की तरह इस्तेमाल करते हैं।

अगर तुम दूसरी अति की ओर बढ़ो जहां ऊर्जा को फिर से आत्मसात कर लिया जाता है- क्योंकि अब कहीं कोई दूसरा नहीं है कि तुम किसी पर फेंको, तुम ही पूर्ण हो- तब सहस्रदल कमल खिलता है। सहस्र तो केवल कहने के लिए है, उसकी पंखुड़ियां अनंत हैं; अनंत दल कमल खिल जाता है, और वह निरंतर खिलता जाता है, खिलता जाता है और खिलता चला जाता है। उसका कोई अंत नहीं है क्योंकि ऊर्जा निरंतर उसकी ओर बहती रहती है, फिर से आत्मसात होती रहती है। फिर वहां आनंद है और आनंद शाश्वत हो सकता है।

तुम्हें संभोग से समाधि तक पहुंचना है। यह सहस्रदल कमल तुम्हारी परम चेतना का केंद्र है। इसलिए जब भी कामवासना उठे, कहो ' अद्वैत। ' समझपूर्वक होशपूर्वक, सजगता से कहो, ' अद्वैत ' और विश्रान्त हो रहो। बेचैन और उत्तेजित न होओ। विश्रान्त हो रहो और कहो, ' अद्वैत। '

और अचानक तुम अनुभव करोगे कि सिर में कुछ होने लगा है जो ऊर्जा नीचे की ओर जाने लगती थी वह ऊर्ध्वगमन कर रही है। और एक बार वह सातवें केंद्र को छू लेती है तो रूपांतरित हो जाती है, फिर से अवशोषित कर ली जाती है। फिर तुम अधिकाधिक ऊर्जावान बन जाते हो, और ऊर्जा हर्ष है, ऊर्जा परम आनंद की अवस्था है। फिर इससे छुटकारा पाने की जरूरत नहीं है क्योंकि अब तुम महासागरीय स्व, अनंत हो। तुम असीम को अपने में आत्मसात कर सकते हो, तुम पूर्ण को अपने में आत्मसात कर सकते हो, और फिर भी वहां स्थान बचेगा।

शरीर संकीर्ण है। तुम्हारी चेतना संकीर्ण नहीं है, तुम्हारी चेतना उतनी ही विस्तृत है जितना आकाश। तुम इस शरीर में बहुत अधिक समेट नहीं सकते हो, यह शरीर मात्र एक प्याला है, जरा सी अधिक ऊर्जा और प्याला छलक जाता है। तुम्हारी कामवासना संकीर्ण शरीर से प्याले का छलकना है।

लेकिन जब सहस्रार खिलता है तुम्हारे सिर में सहस्रदल कमल, और वह खिलता ही जाता है और खिलता ही जाता है और खिलता ही चला जाता है, उसका कोई अंत नहीं होता। अगर पूर्ण को तुम्हारे भीतर उड़ेल दिया जाए, फिर भी उसमें असीम स्थान बचा रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि एक बुद्धरुष ब्रह्मांड से बड़ा है? यही इसका अर्थ है। उसका शरीर निस्संदेह, स्पष्टतः ब्रह्मांड से बड़ा नहीं है, लेकिन एक बुकरुष ब्रह्मांड से बड़ा है क्योंकि कमल खिल गया है। अब यह ब्रह्मांड तो कुछ भी नहीं, लाखों ब्रह्मांड उसमें गिर सकते हैं और आत्मसात हो सकते हैं। वह निरंतर विकसित हो सकता है।

वह परिपूर्ण है और फिर भी विकसित होता रहता है। यही विरोधाभास है : क्योंकि हम सोचते हैं कि परिपूर्णता का विकास नहीं होता, परिपूर्णता भी विकसित होती है, वह और अधिक परिपूर्ण होने के लिए, और अधिक परिपूर्ण होने के लिए और अधिक परिपूर्ण होने के लिए विकसित होती है। वह सतत विकसित होती रहती है क्योंकि वह अनंत है। यही है वह शून्यता, जिस शून्यता की बुद्ध बात कर रहे हैं। जब तुम शून्य हो जाते हो तो पूर्ण तुम में समा जाता है और फिर भी अनंतता बची रहती है। वहां और अधिक स्थान होता है, और अधिक ब्रह्मांड तुममें आ सकते हैं और तुम में समा सकते हैं।

इस 'अद्वैत' में कुछ भी पृथक नहीं है? कुछ भी बाहर नहीं है।

कब या कहा, कोई अर्थ नहीं रखता; बुद्धत्व का अर्थ है इस सत्य ...और यह सत्य समय या स्थान में घटने- बढने के पार है.....

'यह सत्य समय या स्थान में घटने-बढने के पार है '.. इस सत्य के लिए समय और स्थान का अस्तित्व नहीं है। वह उन के पार चला गया है। वह अब किसी भी चीज से, समय या स्थान से घिरा नहीं है। वह स्थान से बड़ा है, समय से बड़ा है।

इसमें एक अकेला विचार भी दस हजार वर्ष का है।

यह बस कहने का ढंग है कि इसमें एक क्षण शाश्वतता है। बुद्धरुष समय में नहीं रहते, स्थान में नहीं जीते। उनका शरीर गति करता है, हम उनका शरीर देख सकते हैं, लेकिन शरीर बुद्ध नहीं है। चेतना बुद्ध है, उसे हम देख नहीं सकते। उनका शरीर जन्म लेता और मरता है, उनकी चेतना कभी जन्म नहीं लेती, कभी नहीं मरती। लेकिन हम उस चेतना को नहीं देख सकते हैं, और वह चेतना ही बुद्ध है।

यह जाग्रत चेतना ही पूरे अस्तित्व का मूल है- और केवल मूल ही नहीं, बल्कि उसकी खिलावट भी है। समय और स्थान दोनों इस चेतना में विद्यमान हैं, लेकिन यह चेतना समय और स्थान में नहीं है। तुम यह नहीं कह सकते कि यह चेतना कहां है- 'कहां' असंगत है। वह सर्वत्र है। बल्कि इसके विपरीत, यह कहना बेहतर होगा कि सर्वत्र इसमें है।

हम यह नहीं कह सकते कि यह जाग्रत चेतना समय के किस क्षण में होती है। नहीं यह कहना संभव नहीं है। हम केवल यही कह सकते हैं कि संपूर्ण समय इस चेतना में विद्यमान है। यह चेतना उससे बड़ी है और इसे होना ही चाहिए। उसे ऐसा क्यों होना चाहिए? तुम आकाश को देखते हो आकाश का बहुत विस्तार है। लेकिन द्रष्टा, साक्षी, उससे भी अधिक विस्तृत है, वरना तुम आकाश को कैसे देख सकते हो? तुम्हारी चेतना आकाश से भी अधिक विस्तृत होगी। वरना तुम उसको कैसे देख सकते हो? द्रष्टा को दृश्य से बड़ा होना ही चाहिए, यही एक मात्र ढंग है।

तुम समय को देख सकते हो, तुम कह सकते हो, 'यह सुबह है और अब यह दोपहर है और अब यह सांझ है। और एक मिनट बीत गया है और एक वर्ष बीत गया है और एक युग बीत गया है।' यह द्रष्टा, यह चेतना समय से बड़ी होनी चाहिए; वरना वह उसे कैसे देख सकती है? द्रष्टा दृश्य से बड़ा होना ही चाहिए। तुम स्थान को देख सकते हो, तुम समय को देख सकते हो- फिर यह द्रष्टा जो भीतर है, दोनों से बड़ा है।

एक बार जब बुद्धत्व घटता है, तब सभी कुछ तुम्हारे भीतर है। सभी तारे तुम्हारे भीतर चलते हैं, जगत तुमसे उत्पन्न होते हैं और तुममें विलीन होते हैं - क्योंकि तुम ही पूर्ण हो।

आज इतना ही।

## भूत, भविष्य और वर्तमान के पार

सूत्र:

यहां शून्यता? कहा शून्यता

लेकिन असीम ब्रह्मांड सदा तुम्हारी आंखों के सामने रहता है असीम रूप से बड़ा, असीम रूप से छोटा;  
कोई भेद नहीं है

क्योंकि सभी परिभाषाएं तिरोहित हो गई हैं

और कोई सीमाएं दिखाई नहीं देतीं।

होने और न होने के साथ भी ऐसा है।

उन संदेहों और तर्कों में समय को मत गंवाओ

जिनका इसके साथ कोई संबंध नहीं है।

एक वस्तु, सारी वस्तुएं

बिना किसी भेदभाव के एक-दूसरे में गति करती हैं और घुल-मिल जाती हैं।

इस बोध में जीना अपूर्णता के विषय में चिंतारहित होना है। इस आस्था में जीना अद्वैत का मार्ग है  
क्योंकि अद्वैत व्यक्ति वह है जिसके पास श्रद्धावान मन है।

अनेक शब्द।

मार्ग भाषा के पार है

क्योंकि उसमें न बीता हुआ कल है न आने वाला कल है न आज है।

मनुष्य शब्दों प्रतीकों भाषा के कारण भटक गया है। तुम वास्तविकता में नहीं, भाषाजनित स्वप्न में खो गए हो- क्योंकि वास्तविकता सदा तुम्हारे सामने है लेकिन तुम सदा वास्तविकता के सामने नहीं होते हो। तुम कहीं और ही होते हो हमेशा कहीं और क्योंकि तुम मन हो और मन का अर्थ है कोई जो भटक गया है।

मन का अर्थ है अब तुम उसको नहीं देख रहे हो जो है तुम उसके विषय में सोच रहे हो। 'विषय में' समस्या है, 'विषय में' वास्तविकता को चूकने का उपाय है। दर्शनशास्त्र वास्तविकता को चूक जाने का उपाय है। जिस क्षण तुम उसके बारे में सोचते हो, तो तुम्हारा लक्ष्य तक कभी पहुंचना न हो पाएगा।

चिंतन क्या है? – वह विकल्प है। अगर तुम प्रेम को जानते हो, तो उसके बारे में कभी सोचते नहीं हो। उसके विषय में सोचने की आवश्यकता नहीं है। अगर तुम प्रेम को नहीं जानते तो तुम उसके बारे में सोचते हो- वास्तव में, तुम किसी और के बारे में सोचते नहीं हो। तुम चिंतन के माध्यम से प्रेम को कैसे जान सकते हो? - क्योंकि वह अस्तित्वगत अनुभव है। वह कोई सिद्धांत नहीं है वह कोई अनुमान नहीं है। उसे जानने के लिए, तुम्हें वही होना पड़ता है।

मन उन चीजों के बारे में क्यों सोचता है जिनका अनुभव नहीं हुआ है? –क्योंकि यह एक विकल्प है। पूरे प्राण उसकी आवश्यकता को अनुभव करते हैं, तो क्या किया जाए? सिर्फ उसके बारे में सोचने से तुम्हें थोड़ी राहत मिलती है जैसे कि कुछ घट रहा है, जैसे कि तुम उसे अनुभव कर रहे हो। वह स्वप्न में घटता है वह तब घटता है जब तुम जाग रहे होते हो- क्योंकि मन वही रहता है चाहे तुम सो रहे हो या जाग रहे हो।

सभी स्वप्न विकल्प हैं, सभी सोच-विचार भी क्योंकि सोच-विचार जाग्रत अवस्था के स्वप्न हैं! स्वप्न निद्रावस्था में सोच-विचार है। उनमें गुणात्मक भेद नहीं है उनकी प्रक्रिया समान है। अगर तुम स्वप्न की प्रक्रिया को समझ सको, तो तुम विचार- प्रक्रिया को भी समझ सकोगे।

स्वप्न देखना और भी आदिम है इसलिए अधिक सहज है। सोच-विचार अधिक जटिल है, अधिक विकसित है, इसलिए उसके भीतर अंत तक पहुंचना अधिक कठिन है। और जब भी तुम किसी चीज के भीतर गहराई तक जाना चाहते हो तो बेहतर है कि तुम उसके सरलतम रूप से उसमें प्रवेश करो।

अगर तुमने एक दिन पहले भोजन नहीं किया है तो रात में तुम्हें भोजन के सपने आएंगे तुम्हें किसी सम्राट ने आमंत्रित किया है तुम स्वादिष्ट भोजन खा रहे हो अगर तुम्हें कामवासना की भूख है तो तुम्हें कामवासना का स्वप्न आएगा। अगर तुम्हें पद- प्रतिष्ठा की भूख है, तुम्हें उसके विकल्प के अनुकूल स्वप्न आएगा कि तुम सिकंदर या नेपोलियन या हिटलर हो गए हो, तुम सारे संसार पर राज्य करते हो।

स्वप्न हमेशा उस चीज के बारे आता है जिसका तुम्हें जाग्रत अवस्था में अभाव हो जिसे तुम दिन के समय चूक गए हो, वह सपने में आता है। अगर तुम दिन के समय कुछ नहीं चूकते, तो स्वप्न नहीं आएगा। जो व्यक्ति पूरी तरह संतुष्ट है वह स्वप्न नहीं देखेगा। इसीलिए बुद्धरूप कभी स्वप्न नहीं देखते। अगर वे चाहें तो भी नहीं देख सकते क्योंकि सब पूरा हो गया है और समाप्त हो गया है, मन में कुछ अटका हुआ नहीं है।

सपना एक मदहोशी है कुछ अधूरा पूरा होने की कोशिश करता रहता है। और इच्छाएं ऐसी हैं कि तुम उन्हें कभी पूरा नहीं कर सकते, वे पैदा ही होती जाती हैं और-और बड़ी होती जाती हैं। तुम जो कुछ भी करो, कुछ न कुछ कमी अवश्य रह जाती है। उस कमी को कौन भरेगा? स्वप्न उस कमी को भरता है।

तुमने उपवास रखा तुम्हारे भीतर एक गड्डा बन गया है। उस गड्डे को ढोना असुविधापूर्ण है, इसलिए रात को स्वप्नों में तुम खाते हो। मन ने तुम्हें धोखा दिया है, वह खाना वास्तविक नहीं है वह तुम्हारे भीतर रक्त नहीं बन सकता, तुम स्वप्न को पचा नहीं सकते तुम उसके सहारे जी नहीं सकते। तो वह क्या करने वाला है? एक बात : वह अच्छी नींद लाने में सहायक हो सकता है, वह नींद के लिए सहायक है।

अगर स्वप्न न हो और तुम्हारी इच्छाएं अधूरी हों, तुम बिलकुल सो नहीं पाओगे, कई बार नींद टूट जाएगी। तुम्हें भूख लगी हो; तुम कैसे सो पाओगे? लेकिन सपना तुम्हें झूठा समाधान देता है ' कि तुमने खा लिया है, स्वादिष्ट भोजन कर लिया है, अब सो जाओ।

और तुम विश्वास कर लेते हो, क्योंकि यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि वह सच है या झूठ। और तुम इतनी गहरी नींद में इतनी बेहोशी में सोए हो, तुम कैसे जान सकते हो कि वह सच है या झूठ? क्योंकि किसी भी चीज की सच्चाई को होश में ही जाना जा सकता है और तुम होश में नहीं हो। और फिर इसके अतिरिक्त स्वप्न सुंदर है, वह गहन आवश्यकता को पूरा करता है। इसलिए उसकी चिंता क्यों करें? इस बात की खोज करने की क्या आवश्यकता है कि वह सत्य है या असत्य?

जब भी तुम प्रसन्न होते हो तब कभी यह जानने का प्रयत्न नहीं करते कि वह सच है या नहीं। तुम चाहोगे कि वह सत्य हो क्योंकि वह इच्छा की पूर्ति है। और उसके बारे में सोचने की कोशिश भी खतरनाक है – हो सकता है वह झूठ सिद्ध हो, फिर क्या करें? इसलिए बेहतर है कि आंखें ही न खोलें। सपना सुंदर है नींद ठीक है क्यों न आराम करें?

रात को अगर तुम्हें शौचालय जाने की जरूरत महसूस हो, तो तुरंत एक सपना आता है तुम शौचालय में हो। इस तरह सपना तुम्हारी नींद की रक्षा करता है, नहीं तो तुम्हें जाना ही पड़ेगा। मूत्राशय भर जाता है और तुम बेचैन हो जाते हो और तुम्हें शौचालय जाना ही पड़ेगा।

लेकिन सपना सुरक्षा देता है, सपना कहता है हां ' यह शौचालय है, तुमने अपना बोझ उतार दिया है। अब सो जाओ। ' मूत्राशय भरा ही रहता है, बेचैनी बनी ही रहती है, लेकिन सपना एक सुखद परत चढ़ा देता है वह उसे सहन करना आसान बना देता है। वास्तव में स्थिति वही बनी रहती है, लेकिन सपना तुम्हें एक मिथ्या भ्रम देता है कि वास्तविकता बदल गई है।

तो स्वप्न का गहन अर्थ क्या है? गहन अर्थ है कि वास्तविकता अपने में बहुत कठोर है, तुम उसे सहन नहीं कर सकते। वास्तविकता, अपनी नग्नता में बहुत कठोर है, तुम उसे सहन करने के लिए तैयार नहीं हो। स्वप्न अंतराल को भरता है, वह तुम्हें एक ऐसी वास्तविकता देता है जिसे तुम सहन कर सकते हो। मन के द्वारा तुम्हें वास्तविकता इस प्रकार दी जाती है कि तुम उसके साथ समायोजित हो सकते हो।

जितना तुम विकसित होते तो उतना ही सपने देखना कम हो जाएगा, क्योंकि अब समायोजित होने की कोई समस्या न होगी। जितना अधिक तुम्हारा विकास होता है, उतने ही कम स्वप्न। अगर तुम सजगता में पूर्ण रूप से विकसित होते हो, स्वप्न समाप्त हो जाते हैं क्योंकि जब तुम, पूर्ण रूप से होश में हो, तुम वास्तविकता को बदलना नहीं चाहते। तुम बस उसके साथ एक हो जाते हो। तुम उसके साथ संघर्ष नहीं करते, क्योंकि पूर्ण रूप से सजग होकर तुम यह समझ जाते हो कि यथार्थ को बदला नहीं जा सकता है। वह सब जो बदला जा सकता है, वह है तुम्हारी मनोवृत्ति, तुम्हारा मन- वास्तविक वैसा ही रहेगा। तुम वास्तविकता को नहीं बदल सकते, तुम मन की इस झूठी प्रक्रिया को बदल सकते हो। साधारणतया हम वास्तविकता को बदलने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वास्तविकता हमारे साथ समायोजित हो जाए। धार्मिक व्यक्ति वह है जिसने इस मूढ़तापूर्ण प्रयास को छोड़ दिया है। अब वह स्वयं को समायोजित करने के लिए वास्तविकता को बदलने की कोशिश नहीं कर रहा है, क्योंकि वह मूर्खता है। पूर्ण अंश के साथ ठीक तरह से समायोजित नहीं हो सकता है, और पूर्ण किसी भी तरह अंश का अनुसरण नहीं कर सकता; अंश को पूर्ण का अनुसरण करना पड़ता है।

मेरे हाथ को मेरे जैविक शरीर का, मेरे संपूर्ण शरीर का अनुसरण करना पड़ता है; मेरा शरीर हाथ का अनुसरण नहीं कर सकता, यह असंभव है। अंश बहुत छोटा है। इस विराट वास्तविकता के सामने तुम कौन हो? तुम कैसे इस वास्तविकता को अपने अनुसार ढाल सकते हो?

यह अहंकार है जो कहता है ' कोशिश करते जाओ- एक न एक दिन वास्तविकता को तुम्हारे अनुकूल होना ही पड़ेगा। ' फिर तुम चिंता के बोझ में दब जाते हो, क्योंकि ऐसा होनेवाला नहीं है। चीजों की प्रकृति ऐसी है कि ऐसा हो नहीं सकता बूंद सागर को बदलने की चेष्टा कर रही है, बूंद अपने विचारों से सागर को प्रभावित करने का प्रयत्न कर रही है। तुम्हारा मन क्या है? इस महा सागर में एक बूंद भी नहीं है। और तुम क्या प्रयास कर रहे हो? तुम वास्तविकता को अपने पीछे चलाने की कोशिश कर रहे हो। सत्य तुम्हारी परछाई होना चाहिए। उन सभी सांसारिक लोगों की, उन सभी की जो सोचते हैं कि वे भौतिकवादी हैं, यही मूढ़ता है।

फिर धार्मिक व्यक्ति क्या है, धार्मिक चित्त क्या है? धार्मिक व्यक्ति वह है जो समझ जाता है कि यह बिलकुल असंभव है, तुम दुरूह दीवाल से टकरा रहे हो। वहां द्वार का होना संभव नहीं है- तुम्हें सिर्फ चोट लगेगी, तुम्हें सिर्फ पीड़ा होगी तुम्हें सिर्फ निराशा होगी, तुम केवल असफल होओगे। और कुछ भी संभव नहीं है। प्रत्येक अहंकार के साथ अंत में यही होता है आहत, पीड़ित, निराश, चिंतित- अंत में हर अहंकार के साथ ऐसा होता है। अहंकार दुख भोगता है अहंकार को ही सदा सूली पर चढ़ाया जाता है- उसकी ही मूर्खता के कारण उसे सूली पर चढ़ाया जाता है।

जब समझ प्रकट होती है, जब तुम तथ्य को देख पाते हो कि तुम. एक अंश हो असीम फैले हुए ब्रह्मांड के एक अत्यंत छोटे अंश हो, बस तुम मूर्ख बनने की चेष्टा नहीं करते हो। तुम बस भटकना बंद कर देते हो। बल्कि

उसके विपरीत तुम एक नई यात्रा आरंभ करते हो तुम वास्तविकता के साथ स्वयं को समायोजित करने का प्रयत्न करते हो। जब तुम वास्तविकता के अनुकूल होने की कोशिश शुरू करते हो स्वप्न धीरे- धीरे बंद हो जाते हैं- क्योंकि यह संभव है यही एक संभावना है जो घट सकती है और वह घटती है। जब वह घटती है स्वप्न समाप्त हो जाते हैं।

जब तुम वास्तविकता को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो तुम एक विचारक बन जाओगे क्योंकि तुम्हें वास्तविकता को बलपूर्वक अपने अनुकूल बनाने के उपाय खोजने पड़ेंगे कौशल ढूँढने पड़ेंगे। हो सकता तुम एक महान वैज्ञानिक बन जाओ हो सकता है तुम एक महान गणितज्ञ एक महान दार्शनिक बन जाओ लेकिन तुम चिंता और पीड़ा से ग्रस्त हो जाओगे।

तुम मीरा की तरह नृत्य करते हुए या बुद्ध की तरह मौन या सोसान की तरह आनंदित नहीं हो सकते, नहीं क्योंकि उनका जीने का पूरा ढंग विपरीत है। वे संसार के साथ समायोजित हो जाते हैं वे उसके साथ एक हो जाते हैं वे उसके साथ बहते हैं वे उसमें बस छायाएं बन जाते हैं। वे लड़ाई नहीं करते हैं उनका अस्तित्व के साथ कोई संघर्ष या विवाद नहीं है। वे बस उस सबको जो है, ही कहते हैं। वे न कहने वाले लोग नहीं हैं वे हां कहने वाले हैं।

धार्मिक होने का यही अर्थ है ही कहने वाले बनो। सवाल यह नहीं है कि तुम ईश्वर में विश्वास करते हो या नहीं। बुद्ध ने कभी किसी परमात्मा में विश्वास नहीं किया लेकिन वे धार्मिक व्यक्ति हैं क्योंकि वे ही कहने वाले व्यक्ति हैं। तुम किसको हां कहते हो इससे कोई मतलब नहीं है तुम कहते हो हां- सारी बात ही बदल जाती है।

चाहे तुम चार सिर वाले या चार सौ सिर वाले देवता को दो हाथ या एक हजार हाथों वाले देवता को कहो, चाहे तुम हिंदू ईसाई शा मुसलमान ईश्वर को हां कहो, या तुम प्रकृति या भाग्य, नियति को ही कहो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम किसे संबोधित करते हो यह महत्वपूर्ण नहीं है। अगर तुम हां कहते हो अपनी ओर से समग्र रूप से हां कहते हो तुम धार्मिक हो जाते हो।

अगर तुम न कहते हो, तो उसका अर्थ है तुम संघर्ष जारी रखोगे। तुम धारा से लड़ोगे तुम नदी के विपरीत तैरोगे। तुम सोचते हो कि तुम ' ताओ ' से अधिक बुद्धिमान हो, तुम सोचते हो कि तुम अस्तित्व से अधिक महान हो। फिर निस्संदेह, स्वभावतः स्पष्ट रूप से तुम निराश होओगे क्योंकि बात यह नहीं है।

जैसे ही तुम हां कहते हो तुम्हारा जीवन दूसरे ही आयाम में विकसित होने लगता है। हां का आयाम धर्म का आयाम है। न का आयाम राजनीति विज्ञान और अन्य सभी का आयाम है।

रहस्यदर्शी वह है जो नदी के साथ बहता है वह उसे धकेलता नहीं। वह उसमें तैरता भी नहीं है, क्योंकि तैरना भी लड़ाई है- वह बस बहता है। उसका कोई लक्ष्य नहीं है, जहां पर उसे पहुंचना है, क्योंकि तुम कैसे लक्ष्य निर्धारित कर सकते हो? तुम कौन हो? तुम मंजिल कैसे तय कर सकते हो?

जब तुम स्वयं को नदी में छोड़ देते हो तो नदी बहती है, तुम उसके साथ बहते हो। नदी की मंजिल तुम्हारी मंजिल है। तुम यह भी चिंता नहीं करते कि वह कहां है- वह कहीं भी हो। तुम हां कहने के गूढ़ रहस्य को समझ गए हो। वास्तव में तुम जहां भी हो मंजिल पर ही हो क्योंकि हां ही मंजिल है। प्रश्न यह नहीं है कि तुम कहां पहुंचते हो, तुम जहां भी हो तुम हां कहो और वही मंजिल है।

अगर तुम न कहने के आदी हो तो तुम जहां भी हो वह यात्रा ही होगी, वह कभी मंजिल नहीं होगी। तुम जहां भी पहुंचोगे तुम्हारी न तुम्हारे साथ वहां पहुंच जाएगी। यदि तुम स्वर्ग में भी प्रवेश करोगे तो न तुम्हारे साथ पहुंच जाएगी। तुम उसे कहा छोड़ोने

जैसे तुम हो अगर तुम्हारा अभी वैसे ही परम सत्ता से मिलना हो जाए तो तुम न ही कहोगे क्योंकि तुम उसमें ही प्रशिक्षित हो। अचानक तुम हां कैसे कह सकते हो? अगर तुम्हारा परमात्मा से भी साक्षात्कार हो जाए, तो तुम न कहोगे। तुम अनेक त्रुटियां ढूंढ लोगे क्योंकि न कहने वाले मन के लिए कुछ भी पूर्ण रूप से सही नहीं हो सकता कुछ भी परिपूर्ण नहीं हो सकता। और ही कहने वाले मन के लिए कुछ भी त्रुटिपूर्ण नहीं होता। हां कहने वाले मन के लिए अपूर्णता की अपनी पूर्णता होती है।

यह बात परस्पर विरोधी प्रतीत होगी वह कहेगा, 'कितने सुंदर ढंग से अपूर्ण है। कितने परिपूर्ण रूप से अपूर्ण है!' उसके लिए अराजकता में भी सुव्यवस्था है। और पदार्थ में भी हां भीतर गहरे प्रवेश करती है और भगवत्ता को पा लेती है। फिर प्रत्येक चट्टान उस दिव्य से ओतप्रोत है, वह सर्वत्र है।

जो ही कह सकता है, वह उसे सब जगह पा लेगा और जो केवल न कह सकता है वह उसे कहीं भी नहीं पाएगा। यह तुम पर निर्भर है, यह उस पर निर्भर नहीं है।

एक समझ जो रूपांतरण लाती है वह है पूर्ण के साथ संघर्ष मत करो। पूरा प्रयत्न ही व्यर्थ है। और पूर्ण इसकी वजह से कष्ट नहीं पाएगा क्योंकि पूर्ण तुम्हारे साथ लड़ नहीं रहा है। अगर तुम्हें ऐसा प्रतीत होता भी हो कि पूर्ण तुमसे लड़ रहा है और तुम्हें पूरी तरह से परास्त कर विजय प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा है तो तुम गलत हो। अगर तुम उसके विरुद्ध संघर्ष करते हो, तो तुम्हारा अपना संघर्ष ही प्रतिबिंबित होता है। पूर्ण तुमसे लड़ नहीं रहा है, उसने तुमसे लड़ाई के बारे में सोचा भी नहीं है। वह तुम्हारा स्वयं का ही मन प्रतिबिंबित होता है, और पूर्ण उसे ही प्रतिध्वनित करता है। तुम जो भी करते हो वही प्रतिबिंबित होता है वह दर्पण है।

अगर तुम संघर्ष का भाव लेकर जाते हो तो तुम्हें लगेगा कि पूर्ण जो तुम्हारे चारों ओर है तुम्हें कुचल डारनने की चेष्टा कर रहा है। प्रवाह के प्रतिकूल तैरने की कोशिश करो पूरी नदी तुम्हें नीचे की ओर धकेलती प्रतीत होती है जैसे कि पूरी नदी तुम्हें हराने के लिए ही है। लेकिन क्या नदी बस तुम्हें हराने के लिए ही अस्तित्व में है? हो सकता है नदी को तुम्हारे बारे में कुछ पता भी न हो। और जब तुम वहां नहीं थे तब भी वह वहां इसी तरह बह रही थी। और जब तुम वहां नहीं होओगे तब भी वह उसी तरह बहती रहेगी। वह उस तरह तुम्हारे कारण नहीं बह रही है। और अगर तुम्हें लगता है कि वह तुम्हारे विरुद्ध है, वह तुम्हारे ही कारण है- तुम प्रवाह के प्रतिकूल जाने की चेष्टा कर रहे हो।

एक बार ऐसा हुआ मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी बाढ़ आई नदी में गिर गई। पड़ोसी दौड़ते हुए उसके पास आए और कहा तुम्हारी पत्नी नदी में गिर गई है, और नदी में बाढ़ आई है और वह तेजी से बह रही है। जल्दी चलो!

नसरुद्दीन नदी की तरफ दौड़ा नदी में छलांग लगाई- धारा के विपरीत तैरने लगा। जो लोग पास खड़े थे और देख रहे थे उन्होंने कहा? यह क्या कर रहे हो तुम नसरुद्दीन?

नसरुद्दीन ने कहा मैं अपनी पत्नी को भलीभांति जानता हूं-क्योंकि वह हमेशा धारा के प्रतिकूल जाने की कोशिश करती है। वह धारा के साथ नहीं जा सकती है, वह असंभव है। तुम भले ही नदी को जानते हो मैं अपनी पत्नी को जानता हूं। इसलिए कोशिश मत करो...।

कुछ लोग ऐसे हैं जो हमेशा प्रवाह के विपरीत चलते हैं वे सब जगह हैं। और अपनी कोशिश के कारण उन्हें लगता है कि नदी उन्हें रौंद रही है उनसे संघर्ष कर रही है, उन्हें हराकर विजयी होने की कोशिश कर रही है।

पूर्ण तुम्हारे विरुद्ध नहीं है, हो नहीं सकता-पूर्ण तुम्हारी मां है। तुम पूर्ण से आते हो, तुम पूर्ण में विलीन हो जाओगे। पूर्ण तुम्हारे विरुद्ध कैसे हो सकता है? वह बस तुम्हें प्रेम करता है। चाहे तुम धारा के प्रतिकूल चलो या

अनुकूल चलो, उससे पूर्ण को कोई अंतर नहीं पड़ता हैं-लेकिन पर्यु केवल प्रेम के कारण धारा के प्रतिकूल प्रवाहित नहीं हो सकता है।

और स्मरण रहे, अगर वह धारा की उलटी दिशा में प्रवाहित होने लगे, तुम उसके विपरीत बहने लगोगे- क्योंकि सवाल यह नहीं है। सवाल तुम्हारे न कहने वाले मन का है, क्योंकि न के द्वारा अहंकार को बल मिलता है। जितना तुम न कहते हो उतना ही अहंकार शक्तिशाली अनुभव करता है; जितना तुम ही कहते हो, उतना ही अहंकार मिटता है। इसीलिए किसी भी बात के लिए, साधारण सी बात के लिए भी ही कहना अत्यधिक कठिन है।

बच्चा बाहर खेलना चाहता है और वह पिता से पूछता है क्या मैं खेलने के लिए बाहर जा सकता हूँ? नहीं! इसमें ऐसी क्या बात है? न इतनी आसानी से क्यों आती है? ही इतनी मुश्किल क्यों है? – क्योंकि जब तुम संघर्ष करते हो तुम महसूस करते हो कि तुम हो। अन्यथा सब इतने सुंदर ढंग से समायोजित हो जाता है तुम महसूस नहीं कर सकते कि तुम हो।

अगर तुम हां कहते हो तो तुम वहां नहीं हो। जब एक सच्ची ही कही जाती है, तुम अनुपस्थित होते हो। तुम कैसे महसूस कर सकते हो? तुम केवल ' विरुद्ध ' को अनुभव कर सकते हो और तब तुम शक्तिशाली अनुभव करते हो। न तुम्हें शक्ति देती है। और न तुम्हें कैसे शक्ति दे सकती है? क्योंकि न कहते ही तुम सारी शक्ति के स्रोत से टूट जाते हो। वह एक झूठा अहसास है वह एक बीमारी है, एक रोग है। कहो हां, और रूपांतरण घटित होना आरंभ हो जाता है।

आमतौर पर जब तक कि तुम हां कहने के लिए विवश न होओ तुम न ही कहते हो। जब भी तुम हां कहते हो, तुम्हें बहुत अच्छा नहीं लगता है- तुम्हें लगता है जैसे कि तुम हार गए हो, जैसे कि तुम निस्सहाय हो। जब भी तुम न कहते हो, तुम्हें अच्छा लगता है तुम जीत गए, तुमने किसी को फिर उसके ठिकाने लगा दिया है, तुमने न कह दी है तुम अधिक शक्तिशाली हो। न हिंसक है, न आक्रामक है। हां प्रार्थनापूर्ण है हां प्रार्थना है। चर्च और मस्जिद और मंदिर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है- जीवन बहुत बड़ा मंदिर है। तुम बस हां कहना प्रारंभ कर दो और तुम सब जगह प्रार्थनापूर्ण अनुभव करोगे क्योंकि सब जगह अहंकार अनुपस्थित होगा। जब अहंकार नहीं होता तब अचानक पूर्ण तुम्हारी ओर बहने लगता है। तुम बंद नहीं हो तुम खुले हो। तब पूर्ण की ओर से एक नई हवा आती है एक ऊर्जा-तरंग तुम्हारे भीतर प्रवेश करती है। फिर तुम प्रति क्षण नये, ताजे हो जाते हो।

इसलिए पहली बात ' मन सोच-विचार और स्वप्न द्वारा पूर्ति करता है, लेकिन वह कभी वास्तविक नहीं हो सकता। वह नकल ही बना रहता है। वह भले ही वास्तविक जैसा दिखाई दे लेकिन वह है नहीं- वह हो नहीं सकता है। एक प्रतीक एक भाषा का प्रतीक कैसे वास्तविक हो सकता है?

तुम्हें भूख लगी है और मैं रोटी के बारे में बात किए जा रहा हूँ। तुम्हें प्यास लगी है और मैं पानी के बारे में बात किए जा रहा हूँ- केवल बात ही नहीं, मैं तुम्हें उसका सर्वोत्तम वैज्ञानिक सूत्र भी देता हूँ। या मैं तुम्हें स्पष्ट परिभाषा देता है या मैं तुम्हें बताता है ' चिंता न करो, पानी का अर्थ है एच. टू. ओ.। तुम सिर्फ दोहराते जाते हो एच. टू. ओ. एच. टू. ओ. उसे एक मंत्र, भावातीत ध्यान बना लो एच. टू. ओ. एच. टू. ओ. एच. टू. ओं. और सब-कुछ हो जाएगा; प्यास मिट जाएगी क्योंकि यही सूत्र है। '

एच. टू. ओ सूत्र हो सकता है) लेकिन तुम्हारी प्यास उसे सुनेगी नहीं। सारी दुनिया में यही हो रहा है। ओम ओम ओम दोहराते जाओ ओम भी एच. टू. ओ. की भांति एक सूत्र है। क्योंकि हिंदुओं ने तीन ध्वनियों की खोज की अ उ म- वे मूल ध्वनियां हैं, इसलिए ओम में सभी संभावित ध्वनियां सम्मिलित हैं। इसलिए किसी

और मंत्र की क्या आवश्यकता है? तुम केवल ओम-ओम दोहराओ और ध्वनियों के पूरे वर्ग की मूल की आवृत्ति हो जाती है। इसलिए अगर तुम्हारे पास मूल है उसे दोहराते जाओ फूल जल्दी ही उसका अनुसरण करेंगे।

न तो एच. टू. ऑ. न ओम न इस तरह का और कुछ तुम्हारी अधिक मदद करेगा क्योंकि कौन इसको दोहराएगा? – मन ही उसे दोहराएगा। और वास्तविकता तुम्हें चारों ओर से घेरे है; उसके बारे में दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है उसके बारे में सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम बस देखो बस अपनी आंखें खोलो और देखो : वह सब कहीं है! चमत्कार तो यह है कि तुम उसे कैसे चूक गए हो। जब तुम उसे पा लेते हो तब वह चमत्कार नहीं रहता है।

स्मरण रहे मैं यह कभी नहीं कहता कि बुद्ध चमत्कार हैं या सोसान चमत्कार हैं-तुम हो चमत्कार! क्योंकि उन्होंने जो भी पाया है वह इतनी सरल बात है कि सभी को उसे पा लेना चाहिए। इसमें क्या रहस्यात्मक है जिसकी बात की जाए? बुद्धपुरुष ने उस वास्तविकता को देखा है और वास्तविकता ठीक तुम्हारे सामने भी है। बुद्धत्व को इतनी बड़ी इतनी महान घटना क्यों कहें? कुछ भी नहीं! वह सरल है।

वास्तविकता उतनी ही तुम्हारे सामने है जितनी एक बुद्धपुरुष या एक भैंस के सामने है। चमत्कार तो तुम हो-कैसे तुम उसको चूक गए, और कैसे उसे चूकते चले जा रहे हो। वास्तव में तुमने कोई ऐसी युक्ति आविष्कृत कर ली है, और जो इतनी परिपूर्ण है कि तुम जन्मों-जन्मों से उसे चूकते चले जा रहे हो। और वास्तविकता कुछ नहीं कर सकती है, वह ठीक तुम्हारे सामने है और तुम उसे चूकते चले जा रहे हो। क्या तरकीब है? कैसे तुम उसे उपलब्ध कर लेते हो? तुम यह जादू कैसे कर लेते हो?

जादू है 'बारे में'। यह 'बारे में' शब्द जादू है। एक फूल है वहां, तुम उसके बारे में सोचना शुरू कर देते हो- अब वहां फूल नहीं है शब्दों ने मन को दूसरी ओर लगा दिया है। फिर एक झीना सा पर्दा तुम्हारे और फूल के बीच आ जाता है। फिर सब धुंधला और दुविधापूर्ण हो जाता है तब शब्द वास्तविकता से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, फिर प्रतीक उससे अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जिसका वह प्रतीक है।

अल्लाह क्या है? – एक शब्द। ब्रह्म क्या है? – एक शब्द। परमेश्वर क्या है? – एक शब्द। और हिंदू और ईसाई और मुसलमान शब्द को लेकर लड़ रहे हैं, और कोई इस बात की चिंता नहीं करता कि ये तीनों शब्द उसी के प्रतीक हैं। प्रतीक अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

अगर तुम अल्लाह के विरुद्ध कुछ कहते हो, तो मुसलमान तुरंत लड़ने के लिए, मरने-मारने के लिए तैयार हो जाता है। लेकिन हिंदू हंसता रहेगा क्योंकि यह अल्लाह के विरुद्ध कहा जा रहा है अच्छा है। लेकिन वही बात ब्रह्म के विरुद्ध कहो, तो वह अपनी तलवार बाहर निकाल लेता है अब यह सहन नहीं हो सकता है। कैसी मूर्खता है! क्योंकि अल्लाह, या ब्रह्म या परमेश्वर... तीन हजार भाषाएं हैं इसलिए परमात्मा के लिए तीन हजार शब्द हैं।

प्रतीक जिस वस्तु को अभिव्यक्त करता है उसका ज्यादा महत्व नहीं रह गया है। गुलाब का महत्व नहीं है 'गुलाब' शब्द महत्वपूर्ण है।

और मनुष्य शब्द से इतना आसक्त हो गया है शब्द से इतना आविष्ट हो गया है कि शब्द से प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। कोई 'नीबू' का नाम ही लेता है तो तुम्हारे मुंह में पानी आ जाता है। यह शब्द का आदी हो जाना है। हो सकता है नीबू भी इतना प्रभावकारी न हो भले ही नीबू टेबल पर रखा हो और तुम्हारे मुंह में पानी भी न आए। लेकिन कोई कहता है 'नीबू' और तुम्हारे मुंह में पानी आ जाता है। शब्द वास्तविक से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है-यही उपाय है- और जब तक तुम इस शब्द-आसक्ति को नहीं छोड़ते, तुम्हारा वास्तविकता से साक्षात्कार नहीं होगा। दूसरा कोई और अवरोध नहीं है।

बिलकुल भाषारहित हो जाओ और अचानक वास्तविकता वहां है- वह सदा से ही वहां है। अचानक तुम्हारी आंखें स्पष्ट होती हैं; तुम्हें स्पष्टता उपलब्ध होती है और सब आलोकित हो जाता है। सभी ध्यान-विधियों की बस यही चेष्टा है कि भाषा को कैसे छोड़ा जाए। समाज को त्याग देने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि बुनियादी तौर पर समाज भाषा के सिवाय और कुछ नहीं है।

इसीलिए पशुओं के समाज नहीं हैं क्योंकि भाषा नहीं है। जरा सोचो अगर तुम बोल न सकते, अगर तुम्हारे पास कोई भाषा न होती, तो समाज का अस्तित्व कैसे होता? असंभव! कौन तुम्हारी पत्नी होती? कौन तुम्हारा पति होता? कौन तुम्हारी मां होती और कौन तुम्हारा पिता होता?

बिना भाषा के सीमाएं संभव नहीं हैं। इसीलिए पशुओं के समाज नहीं हैं। और अगर कोई समाज है, उदाहरण के लिए चींटियों और मधुमक्खियों का तो तुम सोच सकते हो कि भाषा जरूर होगी। और अब वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मधुमक्खियों की भाषा होती है- बहुत ही छोटी भाषा, केवल चार शब्दों की, लेकिन उनकी एक भाषा है। चींटियों की कोई भाषा जरूर होगी, उनका इतना व्यवस्थित समाज है, वह भाषा के बिना नहीं हो सकता।

समाज का अस्तित्व भाषा के कारण है। जैसे ही तुम भाषा से बाहर हो जाते हो, समाज मिट जाता है। हिमालय जाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अगर तुम अपनी भाषा साथ ले जाते हो तो भले ही तुम बाहर से अकेले होओ लेकिन भीतर समाज होगा। तुम मित्रों से बात कर रहे होओगे अपनी या दूसरों की पत्नी से प्रेम कर रहे होओगे खरीद-फरोख्त चल रही होगी। जो कुछ भी तुम यहां कर रहे थे वहां भी वही जारी रखोगे। एक ही हिमालय है और वह है अंतर-चेतना की एक अवस्था, जहां भाषा नहीं है। और यह संभव है- क्योंकि भाषा एक प्रशिक्षण है, वह तुम्हारा स्वभाव नहीं है। तुम भाषा के बिना पैदा हुए थे। भाषा तुम्हें दी गई है, तुम उसे प्रकृति से लेकर नहीं आए हो। वह प्राकृतिक नहीं है, वह समाज का सह-उत्पाद है।

प्रसन्न होओ, क्योंकि उससे बाहर निकलने की संभावना है। अगर तुम उसे जन्म से ही लाए होते तो उससे बाहर निकलने का कोई उपाय न होता। लेकिन तब उसकी आवश्यकता भी न होती, क्योंकि तब वह ताओ का एक हिस्सा होती। वह ताओ का हिस्सा नहीं है, आदमी ने उसकी रचना की है। वह उपयोगी है उसका एक प्रयोजन है समाज भाषा के बिना नहीं हो सकता।

व्यक्ति को दिन में चौबीसों घंटे समाज का हिस्सा होने की जरूरत नहीं है। कुछ मिनटों के लिए भी अगर तुम समाज का हिस्सा नहीं हो अचानक तुम पूर्ण में लीन हो जाते हो और ताओ का अंश बन जाते हो। और तुम्हें लचीला होना चाहिए। जब तुम्हें समाज में जाना हो तब भाषा का प्रयोग करना चाहिए; जब तुम्हें समाज में न जाना हो तब तुम्हें भाषा को छोड़ देना चाहिए। भाषा का एक कृत्य, एक तकनीक की भांति उपयोग होना चाहिए। तुम्हें उसे मानसिक बाधा नहीं बनाना चाहिए यही सारी बात है।

सोसान भी भाषा का प्रयोग करता है। मैं भी भाषा का प्रयोग कर रहा हूं क्योंकि मैं तुम तक कुछ पहुंचाना चाहता हूं। लेकिन जब तुम नहीं होते, तब मैं भाषा में नहीं होता हूं। जब मुझे बोलना पड़ता है, मैं भाषा का प्रयोग करता हूं; जब तुम वहां नहीं होते, मैं भाषा के बिना होता हूं फिर भीतर शब्द नहीं घूमते। जब मैं संवाद करता हूं मैं समाज का हिस्सा बन जाता हूं। जब मैं संवाद नहीं कर रहा हूं मैं ताओ का एक अंश, ब्रह्मांड का अंश प्रकृति या परमात्मा का अंश बन जाता हूं- जो भी तुम नाम उसको देना चाहो तुम दे सकते हो।

परमात्मा के साथ मौन ही संवाद है, मनुष्य के साथ भाषा संवाद है। अगर तुम परमात्मा के साथ संवाद करना चाहते हो मौन हो जाओ यदि तुम आदमी के साथ संवाद करना चाहते हो, तो बोलो, चुप मत रहो।

अगर तुम किसी मित्र के साथ चुपचाप बैठते हो तो तुम्हें भद्दा लगेगा और मित्र को भी भद्दा लगेगा। उसे लगेगा कि कुछ गलत हो गया है, वह पूछेगा, क्या बात है? तुम बोल क्यों नहीं रहे हो? क्या तुम उदास हो या कुछ और, निराश हो या कुछ और मामला है? क्या कुछ गड़बड़ हो गई है? अगर पति चुप बैठता है, तो पत्नी एकाएक मुश्किल खड़ी करना शुरू कर देती है तुम चुप क्यों हो? तुम मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हो। अगर अचानक पत्नी चुप हो जाती है तो मुसीबत हो जाती है।

किसी से बात करने की यह जरूरत क्यों है? क्योंकि अगर तुम बात नहीं करते तो उसका अर्थ है कि तुम अकेले हो तुम यह स्वीकार नहीं करते कि कोई वहां है। जब तुम बोलते नहीं तो दूसरा तुम्हारे लिए मौजूद ही नहीं है तुम अकेले हो। और दूसरे को पता चल जाता है कि तुम उसकी उपेक्षा कर रहे हो। इसलिए लोग बोलते ही रहते हैं। जब वे बात नहीं करना चाहते, उनके पास संवाद करने के लिए कहने के लिए कुछ नहीं होता तो वे मौसम के बारे में या किसी भी चीज के बारे में बात करेंगे कोई भी बात काम चला देगी लेकिन बात करो क्योंकि हो सकता है बात न करने पर दूसरे को बुरा लगे। और दूसरे के साथ चुप रहना अशिष्टता है। लेकिन परमात्मा के साथ उलटा है। प्रकृति के साथ अगर तुम बात करते हो तो तुम चूक जाओगे।

प्रकृति से बात करने का अर्थ है तुम उस वास्तविकता के प्रति उदासीन हो जो तुम्हारे सामने है। वहां पर केवल मौन ही चाहिए। जब तुम पैदा होते हो तो संसार में तुम मौन लेकर आते हो। भाषा दी जाती है, वह एक उपहार है समाज का प्रशिक्षण है। वह उपयोगी है एक उपाय है एक कौशल है लेकिन मौन को तुम संसार में लेकर आते हो। फिर से उस मौन को उपलब्ध करो बस इतनी सी बात है- फिर बच्चे हो जाओ। सारी बात यही है, तुम यही निष्कर्ष निकाल सकते हो; सभी बुद्धिमान इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि तुम्हें फिर से प्रकृति से नाता जोड़ना होगा।

उसका अर्थ अनिवार्य रूप से समाज के विरुद्ध जाना नहीं है; उसका अर्थ केवल समाज के पार हो जाना है विरुद्ध नहीं। जब तुम पैदा हुए थे... तुम्हारे जन्म का पहला क्षण तुम्हारे जीवन का अंतिम क्षण होना चाहिए। तुम्हारी मृत्यु फिर तुम्हारे जन्म के समान होनी चाहिए तुम्हें फिर से बच्चा हो जाना चाहिए दुबारा जन्म लेकर।

जिसस कहते हैं 'जब तक तुम दुबारा जन्म नहीं लेते तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते हो। छोटे बच्चों की भांति जाओ।' उनका क्या अभिप्राय है? -उनका कहना है कि बस प्राकृतिक हो जाओ। वह सभी कुछ जो समाज तुम्हें देता है वह अच्छा है लेकिन उसी में सीमित होकर न रह जाना, नहीं तो वह बंधन हो जाएगा। फिर से असीम हो जाओ। समाज कभी असीम नहीं हो सकता है उसे तंग सुरंग होना ही पड़ता है अपने स्वभाव के कारण उसे ऐसा होना ही पड़ता है।

इस सूत्र में प्रवेश करने से पहले दूसरी बात जो याद रखनी है अगर तुम मौन हो तो तुम नहीं हो, क्योंकि केवल एक बेचैनी ही महसूस होती है। क्या तुमने कभी मौन को महसूस किया है? कौन महसूस करेगा? - क्योंकि अगर तुम महसूस करते हो तो थोड़ी सी अशांति है।

ऐसा हुआ बोधिधर्म का एक शिष्य उसके पास आया और बोधिधर्म ने उससे कहा था 'बिलकुल शून्य और मौन हो जाओ तभी मेरे पास आना।'

शिष्य ने कई वर्ष साधना की फिर वह शून्य और मौन हो गया। फिर वह बोधिधर्म के पास आया और कहा सदगुरु अब मैं आया हूं और आपने कहा था शून्य और मौन हो जाओ। अब मैं मौन और शून्य हो गया हूं।

बोधिधर्म ने उससे कहा बाहर जाओ और इस शून्यता और मौन को भी फेंक दो। क्योंकि अगर तुम इसे अनुभव कर सकते हो तो वह संपूर्ण नहीं है विभाजन विद्यमान है। जो अनुभव करता वह अभी मौन नहीं है। मौन चारों तरफ वातावरण में हो सकता है लेकिन अनुभवकर्ता अभी मौन नहीं है अन्यथा कौन अनुभव करेगा?

जब तुम वास्तव में मौन हो तुम मौन भी नहीं हो क्योंकि मौन शोर के ठीक विपरीत है। जब कोई शोर नहीं है, मौन कैसे हो सकता है? जब शोरगुल विलीन हो जाता है मौन भी विलीन हो जाता है। फिर तुम यह भी नहीं कह सकते हो ' मैं मौन हूं। ' कहो और तुम चूक गए। इसीलिए उपनिषद् कहते हैं वह जो कहता है, ' मैंने जान लिया है उसने जाना नहीं है। सुकरात कहता है कि जब कोई ज्ञानी हो जाता है वह केवल अज्ञानता को जानता है और कुछ भी नहीं।

जब तुम मौन हो जाते हो तुम नहीं जानते कि क्या क्या है। प्रत्येक चीज दूसरी सभी चीजों में विलीन हो जाती है; क्योंकि तुम वहां नहीं हो। तुम सिर्फ शोर के हिस्से हो; ' मैं ' इस संसार में सबसे अधिक कोलाहलपूर्ण चीज है। कोई जेट हवाई जहाज भी उतना शोर पैदा नहीं कर सकता जितना ' मैं ' कर सकता है! वह इस संसार में सबसे अधिक उपद्रवी है और शेष सब उसके उप-उत्पाद हैं। ' मैं ' सबसे अधिक कोलाहलपूर्ण घटना है।

जब तुम मौन हो जाते हो तुम नहीं होते। कौन अनुभव करेगा? जब तुम शून्य हो तुम अनुभव नहीं कर सकते ' मैं शून्य हूं ' नहीं तो तुम अब भी अनुभव करने के लिए वहां हो और घर भरा हुआ है वह खाली नहीं है। जब तुम वास्तव में खाली हो तुम स्वयं से भी खाली हो। जब शोर समाप्त हो जाता है तुम भी समाप्त हो जाते हो। तब वास्तविकता तुम्हारे सामने है, वह चारों ओर है। वह भीतर है, बाहर है, वह सब कहीं है, क्योंकि केवल वास्तविकता ही हो सकती है।

' मैं ' के साथ सारे सपने समाप्त हो जाते हैं क्योंकि मैं के साथ सब वासनाएं समाप्त हो जाती हैं। अगर कोई इच्छा नहीं है तो एक अधूरी इच्छा-जिसे सपनों के द्वारा पूरा करना है-कैसे हो सकती है? केवल शून्यता ही पूर्ण हो सकती है। सोसान का यही अभिप्राय है।

अब सूत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न करें:

यहां शून्यता वहां शून्यता

लेकिन असीम ब्रह्मांड सदा तुम्हारी आंखों के सामने रहता है। असीम रूप से बड़ा, असीम रूप से छोटा; कोई भेद नहीं है?

क्योंकि सभी परिभाषाएं तिरोहित हो गई हैं?ं

और कोई सीमाएं दिखाई नहीं देतीं।

होने और न होने के साथ भी ऐसा है।

उन संदेहों और तर्कों में समय को मत गंवाओ

जिनका इसके साथ कोई संबंध नहीं है।

' यहां शून्यता ' का अर्थ है. भीतर शून्यता ' वहां शून्यता ' का अर्थ है बाहर शून्यता। क्या दो शून्यताएं हो सकती हैं? यह असंभव है। दो शून्यताएं संभव नहीं हैं, क्योंकि तुम कैसे उन्हें एक-दूसरे से अलग करोगे? दो शून्यताएं उनके अपने स्वभाव से एक हो जाएंगी। भीतर और बाहर मन का विभाजन है; जब मन मिट जाता है, यह विभाजन भी मिट जाता है।

' यहां शून्यता, वहां शून्यता '... वास्तव में, ' यहां ' और ' वहां ' कहना भी ठीक नहीं है बिलकुल सही नहीं है। लेकिन यह एक समस्या है शब्दों में कुछ भी बिलकुल ठीक- ठीक नहीं रखा जा सकता वे विकृत कर देते हैं। सोसान जानता है क्योंकि अब न यहां और न वहां हो सकता है। वे पुरानी सीमा-रेखाएं हैं। भीतर और बाहर पुरानी सीमा-रेखाएं हैं, अब और तब पुरानी सीमा-रेखाएं हैं, बिना भाषा के वे मिट जाती हैं।

ऐसा हुआ : बोकोजू के पास एक व्यक्ति आया और उससे कहा मैं जल्दी में हूँ और मैं आपके पास अधिक समय तक रुक नहीं पाऊंगा। इस राह से गुजरते हुए मैंने सोचा कि आपके पास आकर केवल एक शब्द सुनना भी उचित होगा। मुझे ज्यादा की जरूरत नहीं है। आप सत्य की ओर संकेत करने वाला केवल एक ही शब्द कहें और मैं उसे अपने हृदय में संजो लूंगा।

बोकोजू ने कहा मुझे विवश मत करो, क्योंकि एक शब्द भी सत्य को मिटा देने के लिए पर्याप्त है। और चाहे तुम जल्दी में हो या नहीं मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ। केवल इसे ही ले जाओ कि तुमने बोकोजू से पूछा और उसने कहा ' मैं कुछ नहीं कह सकता। ' केवल इसे स्मरण रखना।

उस आदमी ने कहा यह पर्याप्त नहीं है और इससे मेरी कोई सहायता नहीं होगी। आप थोड़ा तो कहें, एक शब्द ही सही- मैं अधिक की मांग नहीं करता हूँ।

बोकोजू ने कहा : एक शब्द भी पूर्ण को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है। तुम बस मेरी ओर देखो और उसे अपने भीतर लेकर चले जाओ।

लेकिन वह आदमी देख न पाया क्योंकि वह कठिन है-तुम्हें मालूम नहीं कि कैसे देखें- अन्यथा बोकोजू के पास जाने की जरूरत न होती।

तुम सामने नहीं देख सकते। अपनी नाक के अग्रभाग को देखना सबसे कठिन है। एक तरफ से देखना आसान है तुम बाईं ओर जाते हो और तुम दाईं ओर जाते हो लेकिन मध्य में कभी नहीं ठहरते। इसलिए वामपंथी पागल लोग हैं और दक्षिणपंथी पागल हैं लेकिन तुम्हें मध्यपंथी व्यक्ति नहीं मिल सकता, ऐसा व्यक्ति जो पागल नहीं है। किसी भी अति की ओर जाओ और तुम पागल हो जाते हो, मध्य में रहो और तुम संबुद्ध हो जाते हो- लेकिन कोई मध्य में नहीं ठहरता। मध्य में तुम्हारा वास्तविकता से साक्षात् होता है। शब्द आधा ही कहेंगे। शब्द सारी बात कह नहीं सकता है। अगर तुम कहते हो ' ईश्वर है, ' तो तुम यह इनकार करते हो, ' ईश्वर नहीं है ' – और वह दोनों है। अगर तुम कहते हो, ' जीवन है, ' तुम मृत्यु को अस्वीकार करते हो- और जीवन मृत्यु भी है। अगर तुम कुछ भी कहते तो वह आधा ही होगा, और आधा सत्य पूरे झूठ से अधिक खतरनाक है। उस आधेपन के कारण उसमें सत्य की सुगंध होती है और तुम धोखा खा सकते हो।

सभी संप्रदाय आधे सत्यों पर आधारित हैं; इसीलिए वे खतरनाक हैं। सभी पंथ हानिकारक हैं, क्योंकि वे आधे सत्यों पर आधारित हैं। और दूसरी बात संभव नहीं है क्योंकि एक पंथ, एक धर्म, एक संप्रदाय अनिवार्य रूप से शब्दों पर आधारित है। बौद्ध धर्म बुद्ध पर आधारित नहीं है, बुद्ध ने जो कहा उस पर खड़ा है। और जो बुद्ध ने कहा वह आधा है, क्योंकि पूर्ण को कहा नहीं जा सकता है। इस संबंध में कुछ किया नहीं जा सकता है।

या तुम पूर्ण को कहने की चेष्टा करो, फिर कुछ नहीं कहा जाता। अगर तुम कहो, ' जीवन दोनों है- जीवन और मृत्यु, ' तुम क्या कह रहे हो? अगर तुम कहते हो, ' परमेश्वर दोनों है- शैतान और ईश्वर, ' तुम क्या कह रहे हो? तुम विरोधाभासी वक्तव्य दे रहे हो तुम स्पष्ट नहीं हो और लोग सोचेंगे कि तुम पागल हो गए हो। परमात्मा दोनों कैसे हो सकता है अच्छा और बुरा? और जीवन जीवन और मृत्यु दोनों कैसे हो सकता है? मृत्यु को जीवन के विपरीत ही होना चाहिए।

यह? शून्यता वहां शून्यता

लेकिन असीम ब्रह्मांड सदा तुम्हारी आंखों के सामने रहता है। असीम रूप से बड़ा, असीम रूप से छोटा; कोई भेद नहीं है

क्योंकि अगर कुछ असीम रूप से बड़ा है और कुछ असीम रूप से छोटा है, तो असीमता के प्रश्न के कारण ही कोई अंतर नहीं हो सकता। अगर तुम नीचे की ओर चलो विभाजित करते हुए विक्षेपण करते हुए तो असीम रूप से छोटे तक पहुंच जाओगे। विज्ञान असीम रूप से छोटे इलेक्ट्रॉन तक पहुंच गया है। अब सब-कुछ विलीन हो गया है कुछ भी दिखाई नहीं देता। इलेक्ट्रॉन देखा नहीं गया है कोई भी उसे देख नहीं सकता। फिर वे क्यों कहते हैं कि इलेक्ट्रॉन है?

भौतिक विज्ञान अब लगभग अध्यात्म-विद्या बन गया है और भौतिक वक्तव्य भौतिक विज्ञानियों के वक्तव्य लगभग दार्शनिक रहस्यवादी लगते हैं, क्योंकि वे कहते हैं ' हम इलेक्ट्रॉन देख नहीं सकते हम केवल परिणाम देख सकते हैं। हम परिणाम देख सकते हैं लेकिन कारण नहीं। हम अनुमान लगाते हैं कि इलेक्ट्रॉन अवश्य होगा -क्योंकि अगर इलेक्ट्रॉन नहीं है ये परिणाम कैसे हो सकते हैं?'

रहस्यदर्शी सदा से यही कहते आ रहे हैं। उनका कहना है ' हम परमात्मा को देख नहीं सकते हैं लेकिन हम उसकी सृष्टि को तो देख सकते हैं। और परमात्मा कारण है और यह सृष्टि परिणाम है। हम परमात्मा को देख नहीं सकते लेकिन सृष्टि को देखते हैं- वह अवश्य होगा अन्यथा यह सृष्टि कैसे हो सकती है?'

अगर तुम मेरी आवाज सुनते हो और मुझे देख नहीं पाते, तुम्हें अनुमान लगाना पड़ेगा कि मैं अवश्य कहीं होऊंगा नहीं तो तुम मुझे कैसे सुन सकते हो? परिणाम दिखाई दे रहा है लेकिन कारण दिखाई नहीं दे रहा है। विज्ञान असीम रूप से छोटे तक तो पहुंच गया है, और लघु पूर्णतया विलीन हो गया है- क्योंकि वह इतना छोटा, इतना छोटा, इतना छोटा इतना सूक्ष्म हो गया है कि अब तुम उसे पकड़ नहीं सकते हो।

धर्म विराट असीम तक पहुंचता है। वह इतना बड़ा, इतना बड़ा, इतना विराट हो जाता है कि तुम उसकी सीमाओं को देख नहीं पाते। वह इतना विराट हो जाता है कि तुम उसे पकड़ नहीं पाते तुम उससे चिपक नहीं सकते, तुम उसकी सीमा-रेखा नहीं खींच सकते। असीम रूप से छोटे को देखा नहीं जा सकता, वह अदृश्य हो जाता है और असीम रूप से बड़ा भी नहीं देखा जा सकता, वह अदृश्य हो जाता है।

तब सोसान एक सुंदर बात कहता है वे दोनों ही समान हैं क्योंकि वे दोनों ही अनंत है। और अनंत चाहे छोटा हो या बड़ा इससे कोई अंतर नहीं पड़ता वे एक समान हैं।

असीम रूप से बड़ा, असीम रूप से छोटा; कोई भेद नहीं है?

क्योंकि सभी परिभाषाएं तिरोहित हो गई हैं? और कोई सीमाएं दिखाई नहीं देतीं।

होने और न होने के साथ भी ऐसा है।

जब तुम पूर्ण रूप से खाली हो, निर-अहंकार हो, घर के भीतर कोई नहीं है, क्या तुम 'होना' हो, या न-होना' हो? तुम हो, या तुम नहीं हो? कुछ भी कहा नहीं जा सकता है।

लोग बुद्ध से बार-बार पूछते ' जब कोई संबुद्ध हो जाता है तो क्या होता है? वह है, या वह नहीं है? क्या आत्मा होती है या नहीं होती है? जब संबुद्ध शरीर त्यागता है तो क्या होगा? वह कहां होगा? वह कहीं होगा भी या नहीं?'

और बुद्ध कहते हैं, ' तुम ये प्रश्न मत पूछो। तुम बस बुद्ध हो जाओ और देखो क्योंकि जो भी मैं कहूंगा वह गलत होगा। ' और वे ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के प्रलोभन से सदा बचते रहे।

उन संदेहों और तर्कों में समय को मत गंवाओ? जिनका इसके साथ कोई संबंध नहीं है।

वास्तविकता तुम्हारे तर्कों पर निर्भर नहीं है। चाहे तुम इस ढंग से सिद्ध करो या उस ढंग से, वह असंगत है- वास्तविकता वहां है। वह तुम्हारे होने से पहले भी थी और वह तुम्हारे बाद भी होगी। वह तुम्हारे मन पर निर्भर नहीं है; उसके विपरीत तुम्हारा मन उस पर निर्भर है। उसके लिए किसी प्रमाण या अप्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उसका अस्तित्व स्वतः है। तुम उसे प्रमाणित नहीं कर सकते तुम उसे अप्रमाणित नहीं कर सकते।

लेकिन लोग बहस किए चले जाते हैं कि ईश्वर है या नहीं। हजारों पुस्तकें प्रतिवर्ष इस विषय को लेकर प्रकाशित होती हैं कि ईश्वर है या नहीं। सब मूर्खतापूर्ण है। जो कहते हैं हां और सिद्ध करते हैं, और जो कहते हैं नहीं और सिद्ध करते हैं दोनों एक ही नौका में सवार हैं- प्रमाण, विवाद, तर्क की नौका।

और अगर कहीं परमात्मा है, वह जरूर हंसता होगा। क्या उसे तुम्हारे तर्क की आवश्यकता है? तुम क्या कह रहे हो? तुम कह रहे हो कि अगर वह है, फिर उसका होना तुम्हारे सिद्ध या असिद्ध करने पर निर्भर करता है। जो भी तुम करो- सिद्ध या असिद्ध- लेकिन क्या तुम सोचते हो कि उसका होना तुम्हारे तर्कों पर निर्भर है?

अस्तित्व बिना किसी के तर्कों के है। किसी को गवाही के लिए बुलाया नहीं जाता और वहां कोई न्यायालय नहीं है जो निर्णय करेगा। तुम कैसे निर्णय कर सकते हो? और कौन है न्यायाधीश? और तर्क लगातार दिए जा रहे हैं; लाखों वर्षों से लोगों ने इस पक्ष के और उस पक्ष के तर्क दिए हैं। नास्तिक हैं, जो सिद्ध करते रहते हैं और कोई उनको मनवा नहीं सकता है आस्तिक हैं, जो सिद्ध करते रहते हैं और कोई उनके विश्वास को तोड़ नहीं सकता है। आस्तिक और नास्तिक दोनों तर्क देते हैं और कोई भी तर्क अंतिम सिद्ध नहीं होता, समस्या वही बनी रहती है।

सोसान कहता है? सभी तर्क असंगत हैं आस्तिक नास्तिक दोनों पक्ष, विपक्ष दोनों। तुम मूर्खता का काम कर रहे हो क्योंकि वास्तविकता है उसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। वह पहले से ही है वह सदा से है, वह सदा रहेगी।

सत्य का अर्थ है 'वह जो है।' विवाद करने से तुम सिर्फ अपनी ऊर्जा और समय व्यर्थ गंवा रहे हो। इसके स्थान पर उसका मजा लो। बल्कि उसमें लीन हो जाओ। बल्कि उसमें प्रसन्न होओ। बल्कि उसे जीओ। और अगर तुम जीते हो तो तुम सत्य की सुगंध को अपने आस-पास लिए चलने लगते हो। अगर तुम उस में जीते हो और उसमें आनंदित रहते हो तो विराट का कुछ, अनंत का कुछ तुम्हारी सीमित सत्ता द्वारा व्यक्त होना शुरू हो जाता है। धीरे- धीरे तुम्हारी सीमाएं भी विलीन होने लगती हैं, धीरे- धीरे तुम खो जाते हो। बूंद सागर में गिर जाती है और सागर हो जाती है।

तर्क-वितर्क में समय न गंवाओ। दर्शनशास्त्री मूर्ख हैं और वे साधारण मूर्खों से अधिक खतरनाक मूर्ख हैं क्योंकि साधारण मूर्ख सिर्फ मूर्ख हैं और दर्शनशास्त्री सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। और वे ऐसा करते ही रहते हैं! मैं किसी हीगल या किसी कांट को देखता हूं- वे जीवन भर विवाद करते रहते हैं और कभी कहीं नहीं पहुंचते हैं।

ऐसा हुआ ' एक लड़की ने इमैनुअल कांट के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, वह उससे विवाह करना चाहती थी। उसने कहा : ठीक है मैं इस बारे में सोचूंगा।

एक विचारक एक महान विचारक और एक महान तर्कशास्त्री कैसे कोई कदम उठा सकता है? अगर मामला प्रेम का हो तो भी पहले उसके बारे में उसे सोचना तो पड़ेगा। और कहा जाता है उसने सोचा, और-और सोचा। फिर उसने पक्ष और विपक्ष में सभी तर्क इकट्ठे किए- क्योंकि कुछ लोग हैं जो प्रेम के विरोध में हैं कुछ लोग हैं जो प्रेम के पक्ष में हैं; कुछ लोग हैं जो विवाह के विरोध में हैं कुछ लोग विवाह के पक्ष में हैं और उनमें

विवाद हुआ है। तो उसने विवाह प्रेम के पक्ष-विपक्ष में सारे तर्क इकट्ठे किए। कहते हैं कि उसने विवाह के पक्ष-विपक्ष में तीन सौ तर्क इकट्ठे किए। वह बहुत दुविधा में पड़ गया। क्या किया जाए? कैसे निर्णय किया जाए?

फिर उसने बहुत कोशिश की और उसे विवाह के पक्ष में एक तर्क ज्यादा मिल गया। और वह तर्क यह था। कि अगर संभावना है, दो विकल्प जो एक समान दिखाई देते हैं तो हमेशा उस विकल्प को चुनो जो तुम्हें अधिक अनुभव देगा। विवाह या विवाह नहीं- अगर सारे तर्क बराबर हैं- फिर ' विवाह नहीं ' के बारे में तो उसे मालूम ही था, क्योंकि वह अविवाहित था। फिर विवाह करना बेहतर था क्योंकि वह बात कुछ नई तो थी। जब सारे तर्क बराबर हैं फिर कैसे निर्णय करें? इसलिए चलो और अनुभव से विवाह के संबंध में जानो।

इसलिए वह गया और लड़की के द्वार पर दस्तक दी। पिता ने दरवाजा खोला और इमैनुअल कांट ने कहा? मैंने निर्णय कर लिया है। आपकी बेटी कहां है?

पिता ने कहा – बहुत देर हो गई है- वह तीन बच्चों की मां बन चुकी है।

... क्योंकि बीस वर्ष बीत गए थे और स्त्रियां इतनी मूर्ख नहीं हैं कि इतनी देर तक प्रतीक्षा करें। वे सदा से अधिक बुद्धिमान हैं स्वभाव से ही बुद्धिमान हैं। इसीलिए स्त्रियां महान विचारक नहीं हुई हैं। वे इतनी छू नहीं हैं, वे अधिक स्वाभाविक होती हैं, उनके पास अधिक अंतर-बोध है वे प्रकृति के अधिक निकट हैं वे तर्क करने के बजाय जीने में अधिक रुचि रखती हैं।

इसी कारण पुरुषों को लगता है कि स्त्रियां हमेशा छोटी-छोटी बातों के लिए चिंतित होती है, बड़ी-बड़ी समस्याओं के लिए नहीं, बहुत ही छोटी बातें वेशभूषा, आभूषण। लेकिन देखो, वे छोटी-छोटी बातों के लिए चिंतित हैं, क्योंकि जीवन छोटी-छोटी बातों से ही बना है। बड़ी-बड़ी समस्याएं केवल मन में होती हैं जीवन में नहीं। यह निश्चित करने से कोई अंतर नहीं पड़ता कि ईश्वर है या नहीं। तुम्हें दिन में दो बार भोजन करना ही पड़ेगा जब बहुत सर्दी है तुम्हें शरीर को ढंकना ही पड़ेगा जब बहुत गर्मी है तुम्हें छाया में जाना पड़ेगा- ईश्वर है या नहीं, यह प्रमाणित करने से कोई अंतर नहीं पड़ेगा। जीवन में छोटी- छोटी बातें हैं। और अगर जीवन में छोटी-छोटी बातें हैं तो फिर छोटी बातें छोटी नहीं हैं- क्योंकि वे जीवन उनसे मिल कर बना है, वे जीवन का आधार हैं।

उन संदेहों और तर्कों में समय को मत गंवाओ जिनका इसके साथ कोई संबंध नहीं है।

एक वस्तु सारी वस्तुएं

बिना किसी भेदभाव के एक- में गति करती हैं और घुल- मिल जाती हैं।

इस बोध में जीना के विषय में चिंतारहित होना है। इस आस्था में जीना अद्वैत का मार्ग है?

क्योंकि अद्वैत व्यक्ति वह है जिसके पास श्रद्धावान मन है।

बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द हैं, और अगर शब्द के पार देख सकी तो और भी महत्वपूर्ण हैं।

एक वस्तु सारी वस्तुएं '

बिना किसी भेदभाव के एक- में गति करती हैं और घुल- मिल जाती है

जीवन एक आर्गेनिक यूनिटी, सुघटित इकाई है। कुछ भी विभाजित नहीं है सब एक है। अगर तुम सोचते हो वह विभाजित है विभाजन मन द्वारा थोपा गया है। अन्यथा सब चीजें एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं

पिघलती हैं विलीन होती हैं। ऐसा सतत हो रहा है। तुम उसे देखते नहीं क्योंकि शब्दों ने तुम्हें पूरी तरह अंधा कर दिया है।

तुम एक फल खाते हो; फल तुम्हारा रक्त बन जाता है। पेड़ तुममें मिश्रित हो गया है, सीमा खो गई है। और हो सकता है यह फल पहले कई मनुष्यों के रक्त में रह चुका हो कई पशुओं, कई पौधों, कई चट्टानों में रह चुका हो। यह ऊर्जा जो कि फल है अस्तित्व में सदा से है- पिघलती हुई, विलीन होती हुई और प्रकट होती हुई इससे उसमें गति करती हुई सारी सीमाओं को पार करती हुई।

किसी भी घटना को गौर से देखो। पेड़ पर लगा फल वह क्या कर रहा है? वैज्ञानिक कहते हैं कि फल एक चमत्कार कर रहा है। वह मिट्टी को रूपांतरित कर रहा है सूर्य की किरणों को रूपांतरित कर रहा है वह पानी को रूपांतरित कर रहा है। यह एक चमत्कार है क्योंकि तुम मिट्टी नहीं खा सकते हो तुम सीधे सूर्य की किरणों नहीं खा सकते। यह फल एक सेब चमत्कार कर रहा है। यह सब-कुछ रूपांतरित कर रहा है और उसे ऐसा बना रहा है ताकि तुम उसे आत्मसात कर सको और वह तुम्हारा रक्त बन जाए। और यह ऊर्जा गति करती रही है क्योंकि वह सदा से वहां रही है। पूरी ऊर्जा वैसी ही रहती है क्योंकि जाने के लिए और कोई स्थान नहीं है इसलिए ऊर्जा कम या अधिक नहीं हो सकती है। ब्रह्मांड में कुछ भी जोड़ा नहीं जाता और कुछ निकाला नहीं जाता है। तुम उसे कहां ले जाओगे? पूर्ण वैसा ही रहता है।

एक दिन फल जमीन में था तुम उसे खा नहीं सकते थे। फल सूर्य में था विटामिन डी सूर्य में था। अब फल ने उसे आत्मसात कर लिया है अब मिट्टी रूपांतरित हो गई है- एक चमत्कार घट रहा है। किसी जादूगर के पास चमत्कार देखने के लिए क्यों जाएं? वह हो रहा है मिट्टी एक स्वादिष्ट आहार में बदल गई है।

और तुम उसे खाते हो वह तुम्हारा रक्त बन जाता है। तुम्हारे रक्त का निरंतर मंथन हो रहा है वह वीर्य बनाता है। अब एक बीज का जन्म हो गया है वह एक छोटा बच्चा बन जाता है। अब फल सेब बच्चे में आ गया है। कहा है सीमाएं? पेड़ तुम में चला जाता है, सूर्य पेड़ में चला जाता है सागर पेड़ में चला जाता है तुम बच्चे में चले जाते हो और यह चलता रहता है...

प्रत्येक चीज गतिमान है। वह श्वास जो तुम्हारे भीतर है कुछ समय बाद वह मुझमें होगी। और श्वास जीवन है इसलिए तुम्हारा जीवन और मेरा जीवन भिन्न नहीं हो सकता है क्योंकि जो श्वास तुम लेते हो वही मैं लेता हूं। जो श्वास मैं छोड़ता हूं तुम उसे भीतर लेते हो तुम श्वास निकालते हो मैं भीतर लेता हूं।

तुम्हारा हृदय और मेरा हृदय बहुत भिन्न नहीं हो सकते हैं। वे श्वास ले रहे हैं और उसी जीवन-शक्ति के सागर के साथ धड़क रहे हैं जो चारों तरफ है। मैं उसे मेरी श्वास कहता हूं लेकिन जब तक मैं यह कहता हूं वह मेरी नहीं रहती- वह चली गई है उसने घर बदल लिया है अब वह किसी और की श्वास है। जिसे तुम अपना जीवन कहते हो वह तुम्हारा नहीं है। वह किसी का भी नहीं है या वह सबका है।

जब कोई वास्तविकता को देखता है तब वह देखता है कि पूर्ण एक सुघटित इकाई है। सूर्य तुम्हारे लिए कार्य कर रहा है सागर तुम्हारे लिए कार्य कर रहा है, सितारे तुम्हारे लिए कार्य कर रहे हैं। संसार में चारों ओर जो लोग घूम रहे हैं वे तुम्हारे लिए काम कर रहे हैं और तुम उनके लिए काम कर रहे हो। तुम मरोगे और कोई तुम्हारे शरीर को खा जाएंगे, तुम उनका भोजन बन जाओगे।

तुम मरने के लिए किसी और का भोजन बनने के लिए तैयार हो रहे हो, पक रहे हो। और इसे ऐसे ही होना है- क्योंकि तुमने बहुत सी चीजों को अपना भोजन बनाया है, तो अंत में तुम्हें उनका भोजन बनना होगा। हर चीज किसी और के लिए भोजन है। यह एक श्रृंखला है.. और तुम हो कि जीवन से चिपके रहना चाहते हो।

और सेब, वह भी जीवन से चिपका रहना चाहता है और गेहूं गेहूं भी गेहूं ही बना रहना चाहता है। तब तो जीवन ठहर जाएगा।

जीवन मृत्यु के माध्यम से जीता है। तुम यहां मरते हो, वहां कोई जीवित हो जाता है; मैं श्वास निकालता हूं और कोई श्वास को भीतर लेता है। जीवन और मृत्यु ठीक लयबद्ध श्वास-प्रश्वास की भांति है। जीवन श्वास है, मृत्यु उच्छ्वास है।

जब तुम पक जाओगे तुम धरती पर गिर जाओगे। तब कीड़े तुम्हें खा जाएंगे और शिकारी पक्षी आएंगे और तुम्हें खाने का मजा लेंगे। तुमने बहुत से भोज्य पदार्थों का रसास्वादन किया है और अब बदले में तुम्हें खाने का मजा लिया जाएगा। प्रत्येक चीज पिघलती है, मिल जाती है, विलय होती है। इसलिए चिंता क्यों करें? यह तो होने ही वाला है। यह हो ही रहा है। केवल पूर्ण जीवित रहता है, इकाइयां झूठ हैं। केवल परम जीवित रहता है- शेष सब उसमें तरंगें मात्र हैं वे आती हैं और चली जाती हैं।

जब कोई वास्तविकता को ठीक नाक के सामने देखता है, अचानक वहां कोई समस्या, कोई चिंता नहीं होती, क्योंकि तुम चाहे जीओ या न जीओ पूर्ण जीए चला जाता है। फिर तुम्हारी मृत्यु कोई समस्या नहीं है, फिर तुम्हारा जीवन कोई समस्या नहीं है। तुम लाखों-लाखों ढंगों से पूर्ण में जीओगे।

कभी तुम फल होओगे। हिंदुओं की लाखों योनियों की धारणा का यही अर्थ है। कभी तुम पशु थे और कभी तुम कीड़े थे और कभी तुम वृक्ष थे और कभी तुम चट्टान थे- और जीवन चलता रहता है।

इसलिए एक अर्थ में तुम कुछ भी नहीं हो और दूसरे अर्थ में तुम सब-कुछ हो। एक अर्थ में तुम रिक्त हो और दूसरे अर्थ में तुम परिपूर्ण हो। एक अर्थ में तुम नहीं हो, और दूसरे अर्थ में तुम सब हो- क्योंकि तुम अलग नहीं हो।

अलग होना चिंता लाता है। अगर तुम चिंतित हो, व्यथित हो उसका अर्थ यह है कि तुम स्वयं को अलग समझ रहे हो- तुम व्यर्थ ही अपने लिए समस्याएं खड़ी कर रहे हो। उसकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि पूर्ण जीए चला जाता है, पूर्ण कभी नहीं मरता है वह मर नहीं सकता है। केवल अंश मरते हैं लेकिन मृत्यु वास्तव में मृत्यु नहीं है वह पुनर्जन्म है। यहां तुम मरते हो वहां तुम जन्मते हो।

एक वस्तु, सारी वस्तुएं.

बिना किसी भेदभाव के एक- में गति करती हैं और घुल मिल जाती हैं।

इस बोध में जीना अपूर्णता के विषय में चिंतारहित होना है।

तो पूर्णता के विषय में चिंता क्यों करें? वह भी एक अहंकार का ही लक्ष्य है। इसे बहुत गहराई से समझ लेना चाहिए, क्योंकि धार्मिक लोग भी पूर्ण होने की चेष्टा करते हैं। लेकिन तुम पूर्ण होने वाले कौन हो? केवल समग्र ही पूर्ण हो सकता है तुम कभी पूर्ण नहीं हो सकते हो। तुम कैसे पूर्ण हो सकते हो? बुद्धपुरुष को भी बीमार होना पड़ता है, उसे भी मरना पड़ता है। तुम पूर्ण नहीं हो सकते हो! परिपूर्णता का लक्ष्य ही अहंकार की यात्रा है। समग्र पहले ही पूर्ण है तुम्हें उसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है- और समग्र में तुम भी पूर्ण हो।

दो शब्दों को समझना जरूरी है – एक है ' परफेक्यान, पूर्णता;' दूसरा है, ' होलनेस, समग्रता। ' एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति का संबंध समग्रता से होता है पूर्णता से कभी नहीं, और झूठा धार्मिक व्यक्ति समग्रता की नहीं पूर्णता की चिंता करता है।

समग्रता का अर्थ है ' ' मैं नहीं हूं समग्र ही है। ' और यह उचित है क्योंकि इससे अन्यथा कैसे हो सकता है? कोई तुलना नहीं है कोई दूसरा नहीं है। लेकिन अगर तुम पूर्णता नैतिकता, आदर्श चरित्र के संबंध में सोच रहे हो कि तुम्हें पूर्ण होना ही चाहिए, तो तुम पागल हो जाओगे।

सभी पूर्णतावादी पागल हो जाते हैं। वही उनकी अंतिम परिणति है क्योंकि पृथक इकाई के रूप में तुम अपूर्ण ही रहोगे तुम पूर्ण नहीं हो सकते। तुम कैसे पूर्ण हो सकते हो? -क्योंकि तुम्हारी ऊर्जा समग्र से आती है समग्र में चली जाती है तुम नहीं हो। एक लहर को लहर ही बने रहना पड़ता है वह सागर नहीं हो सकती है। यदि वह सागर बनने का बहुत अधिक प्रयत्न करती है तो वह पागल हो जाएगी।

इसीलिए धर्म के जगत में तुम्हें अत्यंत अहंकारी व्यक्ति देखने को मिलते हैं क्योंकि वे हर चीज के बारे में परिपूर्ण होने की चेष्टा कर रहे हैं। उनका जोर पूर्णता पर है। वे कभी विश्राम में नहीं हो सकते वे सदा तनाव में रहेंगे। और हमेशा कुछ न कुछ गलत हो जाएगा और उन्हें उसे ठीक करना होगा- वे हमेशा चिंताग्रस्त बने रहेंगे। पागलखानों में जाओ तुम्हें निन्यानबे प्रतिशत पूर्णतावादी लोग मिल जाएंगे।

समझ वाला व्यक्ति विश्राम में रहता है। उसका यह अर्थ नहीं है कि वह परवाह नहीं करता है। नहीं वह परवाह करता है लेकिन वह सीमाओं को समझता है। वह चिंता करता है लेकिन वह जानता है कि वह मात्र एक अंश है। वह स्वयं को कभी समग्र नहीं समझता, इसलिए वह कभी चिंतित नहीं होता है।

वह जो कुछ भी कर रहा है उसका आनंद लेता है, उसे यह अच्छी तरह से पता है कि वह अपूर्ण ही रहने वाला है वह पूर्ण हो नहीं सकता है। लेकिन वह उसे करते हुए आनंद लेता है और आनंदित होते हुए जो भी पूर्णता संभव है वह बिना चिंता किए हो जाती है। वह प्रेम करता है, भलीभांति यह जानते हुए कि वह कभी पूर्ण नहीं हो सकता है। वह हो नहीं सकता है कुछ अधूरा रह ही जाएगा। वस्तुओं का यही स्वभाव है।

यही कारण है कि पूरब में हमारा सदा से विश्वास यही रहा है – और वह विश्वास बिलकुल सत्य है- कि जब भी कोई पूर्ण हो जाता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता वह इस जगत से विलीन हो जाता है। उसे होना ही पड़ता है क्योंकि इस जगत में केवल अपूर्णता ही संभव है। वह यहां ठीक नहीं बैठता है उसकी कोई जरूरत नहीं है वह समग्र में विलीन हो जाता है।

बुद्धपुरुष भी अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपूर्ण रहता है- लेकिन उसे इस बात की चिंता नहीं होती है। इसीलिए बौद्धों के पास निर्वाण के लिए दो शब्द हैं। परम संबोधि को वे ' महापरिनिर्वाण ' कहते हैं और संबोधि को वे निर्वाण कहते हैं। ' निर्वाण ' का अर्थ है बुद्धरूप शरीर में है। वह आलोकित हो गया है वह ज्ञाता हो गया है, लेकिन अभी वह देह में, अपूर्णता की देह में है। वह अभी अपूर्ण अंशों के संसार में है। यह निर्वाण है बुद्धत्व है।

तो जब वह देह त्याग देता है जब वह परम शून्य में विलीन हो जाता है वह महापरिनिर्वाण है, वह परम संबोधि है। अब अपूर्णता विलीन हो जाती है अब कोई वैयक्तिकता नहीं है, वह समग्र है। केवल समग्र ही परिपूर्ण हो सकता है। अब बुद्धपुरुष परिपूर्ण हो सकता है, क्योंकि अब वह समग्र में विलीन हो गया है, वह महासागरीय है। इसलिए इसे भलीभांति स्मरण रखो क्योंकि सारा पूर्णतावाद एक अहंकारपूर्ण चेष्टा है, तुम सब चीजों के पीछे पागल हो जाते हो। तुम जितना अच्छी तरह कर सकते हो, उतना करने की कोशिश करो लेकिन उसके लिए पागल न हो जाओ उसे जितना अच्छी तरह कर सकते हो करो और उसकी सीमा को स्वीकार करो। सीमाबंधन तो होगा ही, यहां तक कि तुम्हारे चरित्र नैतिकता और सभी कुछ की भी सीमा है।

साधु को भी पापी के लिए थोड़ी जगह देनी ही पड़ेगी, क्योंकि पापी कहां जाएगा? इसलिए यह संभव है, कोई निन्यानबे प्रतिशत साधु हो, लेकिन एक प्रतिशत पापी तो वहां होगा ही। और उलटा भी हो जाता है तुम

निन्यानबे प्रतिशत पापी हो सकते हो लेकिन एक प्रतिशत साधु भी वहां होगा। ऐसा होना ही चाहिए क्योंकि दूसरे को तुम कहां छोड़ोगे? तुम उसे बलपूर्वक अंतिम छोर तक ले जा सकते हो, लेकिन दूसरा एक प्रतिशत तो वहां रहेगा ही। अगर तुम इस संबंध में पागलपन करते हो तो कुछ होने वाला नहीं है।

समझ वाला व्यक्ति सीमाओं को स्वीकार करता है। वह संभावनाओं को स्वीकार करता है, जो संभव है वह उसे स्वीकार करता है। वह असंभव को जानता है वह असंभव के लिए कभी प्रयत्न नहीं करता। वह विश्राम में है और जो संभव है उसका आनंद लेता है। और वह जितना आनंदित होता है उतनी ही पूर्णता उसके जीवन में आती है। लेकिन अब वह कोई चिंता की बात नहीं है, वह प्रसादपूर्ण है- और यही अंतर है।

अगर तुम किसी सच्चे धार्मिक व्यक्ति के पास आते हो तो तुम्हें उसके चारों ओर प्रभु कृपा का अनुभव होगा, प्रयास रहित। उसने स्वयं के साथ कुछ नहीं किया है, वह बस परम में विश्राम करता है, और तुम उसके चारों ओर प्रयास रहितता को अनुभव करते हो।

अगर तुम ऐसे व्यक्ति के पास आते हो जो पूर्णतावादी है झूठा धार्मिक है, तो तुम जो भी देखोगे वह आदमी का बनाया हुआ होगा, उसमें कोई प्रसाद न होगा। हर चीज साफ-साफ हर चाल सोच समझ कर होशियारी से की गई होगी। वह जो कुछ भी कर रहा है वह संयम है, सहजता नहीं है। वह नियम में जीता है, उसका अपना नियम ही उसके लिए कारावास बन जाता है। वह हंस नहीं पाता वह बच्चा नहीं हो पाता वह फूल नहीं बन पाता। वह जो कुछ भी है, उसने इतना परिश्रम किया है कि हर चीज तनाव बन गई है और गलत हो गई है। वह सहज प्रवाह नहीं है।

और यही कसौटी होनी चाहिए- अगर तुम किसी सदगुरु के पास जाते हो तो यही कसौटी होनी चाहिए- कि वह एक सहजस्फूर्त प्रवाह है। केवल तभी वह तुम्हें स्वयं सहज प्रवाह बनने में सहायता कर सकता है। अगर पूर्णतावादी होना उसकी मजबूरी है तो वह तुम्हें अपंग बना देगा वह तुम्हें पूरी तरह से मार डालेगा वह तुम्हें कई ढंगों से काट डालेगा और जब तक वह सोचता है कि तुम परिपूर्ण हो गए हो तुम मृत हो चुके होते हो।

केवल एक मृत वस्तु ही परिपूर्ण होती है। एक जीवित वस्तु को अपूर्ण होना ही पड़ेगा, इसे स्मरण रखना।

इस बोध में जीना अपूर्णता के विषय में चिंतारहित होना है।

व्यक्ति सिर्फ जीता है। वह पूर्णरूप से जीता है, वह समग्रता से जीता है, और वह परिणाम, जो भी होता है उसके संबंध में चिंता नहीं करता है।

इस आस्था में जीना,

और सोसान के लिए यह आस्था है और मेरे लिए भी यही आस्था है। यह श्रद्धा है। एक पूर्णतावादी कभी श्रद्धावान नहीं होता है, क्योंकि वह सदा त्रुटियों को खोजता रहता है। वह कभी किसी बात पर श्रद्धा नहीं करता है। अगर तुम उसे एक गुलाब भेंट करो वह तुरंत उसमें कमियों को खोज लेगा। वह गुलाब को नहीं देखेगा वह त्रुटियों को देखेगा। उसकी दृष्टि तर्क की है प्रेम की नहीं। वह हमेशा शंका से भरा है वह किसी पर विश्वास नहीं कर सकता, क्योंकि वह स्वयं पर विश्वास नहीं कर सकता है।

तुम अपने तथाकथित साधु-महात्माओं के पास जाते हो, वे स्वयं पर विश्वास नहीं कर पाते हैं। वे भयभीत हैं क्योंकि उन्होंने जबरदस्ती जो भी किया है, वह थोपा हुआ है वह स्वाभाविक नहीं है और वे जानते हैं कि

अगर वे जरा भी ढीले हुए तो बात बिगड़ जाएगी। यदि एक सुंदर स्त्री महात्मा के पास आती है, तुम देख सकते हो कि वह परेशान बेचैन हो गया है। भले ही वह ऊपर से प्रकट न हो लेकिन अगर तुम गहरे झांको तो उसे महसूस कर सकते हो क्योंकि उसने ब्रह्मचर्य को थोप लिया है, और वह स्त्री एक खतरा है। वह उस स्त्री को बहुत देर तक वहां रुकने नहीं दे सकता, क्योंकि फिर उसका आत्म-अविश्वास प्रकट हो जाएगा।

जिस व्यक्ति ने अपनी जीवन-ऊर्जा पर श्रद्धा नहीं की है, वह किसी का विश्वास नहीं कर सकता है। वह मनुष्य का शत्रु है, विष देने वाला है। और विष देने वाले बहुत अच्छे वक्ता होते हैं- वे होंगे ही, क्योंकि उन्हें तर्कसंगत होना पड़ता है और अपने को बचाना पड़ता है और उन्हें अपने मन पर निर्भर रहना पड़ता है।

और इन विष देने वालों ने बहुत गहरी क्षति पहुंचाई है, मानव-जाति को इतना गहरा घाव दिया है कि यह सोचना भी असंभव है कि मानवता कैसे इससे बाहर आ सकती है। उन्होंने सब-कुछ विषैला कर दिया है : यह बुरा है वह बुरा है, यह पाप है, वह अपराध है। और उन्होंने तुम्हारे चारों ओर इतनी गंदगी फैला दी है कि तुम जो कुछ भी करो तुममें अपराध- भावना पैदा होगी। अगर तुम नहीं करते तो तुम प्रकृति के कारण स्वयं को अपराधी अनुभव करोगे।

अगर तुम प्रेम करो तो तुम गिर गए; अगर तुम प्रेम न करो तो प्रेम करने की तीव्र इच्छा होती है। वह प्रकृति से आती है उसमें कुछ गलत नहीं है। वह वैसी ही प्राकृतिक है जैसे भूख और प्यास और उतनी ही सुंदर जितनी भूख और प्यास। लेकिन तुम्हारे संत- महात्मा तुम्हें प्लास्टिक के आदमी बनाना चाहते हैं- न भूख न प्यास, न प्रेम- फिर तुम परिपूर्ण हो।

अगर तुम्हारी यंत्र-रचना प्लास्टिक की हो तो यह आसान होगा। और वैज्ञानिक इस दिशा में, प्लास्टिक की यंत्र-रचना की दिशा में विचार कर रहे हैं। फिर तुम्हें किसी भोजन की आवश्यकता नहीं है तुम्हें किसी प्रेम की जरूरत नहीं है, तुम्हें किसी चीज की जरूरत नहीं है। तुम एक मशीन, एक रोबोट बन जाते हो। कभी जब कुछ बिगड़ जाए तो तुम्हें किसी वर्कशॉप में भेजा जा सकता है। हर रोज तुम आपूर्ति स्टेशन पर जा सकते हो और वे तुम्हारे भीतर कुछ पेट्रोल डाल सकते हैं और सब-कुछ ठीक हो जाता है। तब तुम पूर्णतावादी होओगे, फिर तुम परिपूर्ण होओगे!

लेकिन जैसा जीवन है जीवन नाजुक है वह प्लास्टिक नहीं है वह बहुत सूक्ष्म है। तुम्हारे भीतर तारें नहीं हैं स्नायु हैं। और संतुलन सदा गतिमान है। कुछ भी निश्चित नहीं है हर चीज दूसरी चीज में मिलती रहती है लीन होती रहती है। इसी कारण तुम जीवित हो।

समझ वाला व्यक्ति चिंतन नहीं करता, वह अपूर्णता के बारे में चिंतित नहीं है। वह परिपूर्णता की दिशा में सोचता ही नहीं है, वह उस क्षण को जितना संभव हो उतनी समग्रता से जीता है जितना संभव हो उतनी पूर्णता से जीता है। और जितनी परिपूर्णता से जीता है उतना ही जीने में समर्थ हो जाता है।

एक दिन आता है वह आदर्शों को थोपे बिना बस जीता है अपने जीवन के विषय में कोई धारणा कोई नियम-नियमन बनाए बिना जीता है। वह बस जीता है, और प्रसन्न होता है, और आनंदित होता है।

इस आस्था में जीना अद्वैत का मार्ग है

और यही आस्था है

क्योंकि अद्वैत व्यक्ति वह है जिसके पास श्रद्धावान मन है।

और भीतर गहरे में, अगर तुम्हारे पास आस्थावान चित्त है तो अद्वैत तुम्हारे सामने होगा। अगर भीतर गहरे में संशय हैं तो सिद्धांत, विचारणा, शब्द, तत्वज्ञान, मत वहां होंगे और सामने से तुम बिलकुल अंधे होओगे। तुम निकट को नहीं देख सकोगे, तुम केवल दूर की सोचने में समर्थ होओगे। भीतर श्रद्धा, बाहर वास्तविकता, भीतर श्रद्धा, बाहर सत्या। श्रद्धा और सत्य का मिलन होता है- और दूसरा कोई मिलन नहीं है।

क्योंकि अद्वैत व्यक्ति वह है जिसके पास श्रद्धावान मन है।

अनेक शब्द।

मार्ग भाषा के पार है

क्योंकि उसमें न बीता हुआ कल है न आने वाला कल है न आज है।

आखिरी बात सोसान कह रहा है, अगर समय है तो भाषा संभव है; भाषा और समय दोनों का एक ही रंग-ढंग है। इसीलिए भाषा में तीन काल हैं भूत, वर्तमान, भविष्य- ठीक समय की भांति भूत, वर्तमान, भविष्य। भाषा समय है, समय के समान तीन वर्गों में विभाजित है। और जीवन उसके पार है। जीवन भूतकाल नहीं है। कहां है भूतकाल? तुम उसे कहीं नहीं खोज सकते हो।

मैंने सुना है, एक बार ऐसा हुआ एक आदमी एक बहुत बड़े संग्रहालय को देखने के लिए आया। आदमी बहुत धनी था, इसलिए उसे सबसे अच्छा गाइड दिया गया। उस आदमी ने एक सिर को देखा और पूछा यह कौन है?

गाइड वास्तव में जानता नहीं था, इसलिए उसने कहा यह नेपोलियन का सिर है। फिर एक छोटा सिर देखा और उस व्यक्ति ने गाइड से पूछा। गाइड उस धनी व्यक्ति से कुछ घबड़ाया हुआ था, इसलिए डरा हुआ था। सब गड़बड़ हो गया, और उसने कहा यह भी नेपोलियन का सिर है।

तो उस धनी व्यक्ति ने कहा क्या मतलब है तुम्हारा? दो सिर?

तो गाइड मुश्किल में पड़ गया और कुछ उत्तर तो देना ही था। इसलिए उसने कहा, हां, यह उसके बचपन का सिर है और वह उसके बुढ़ापे का सिर है।

अगर अतीत है तो बचपन का सिर होगा, फिर कई सिर होंगे; जब तुम मरोगे तो तुम पीछे लाखों सिर छोड़ जाओगे। लेकिन तुम एक ही सिर छोड़ते हो, लाखों नहीं। अतीत तिरोहित हो जाता है, अतीत कहीं नहीं है, वह स्मृति में है। भविष्य कहां है? भविष्य कहीं नहीं है, केवल कल्पना में है। अतीत वह है जो अभी नहीं है और भविष्य वह है जो अभी नहीं है। इसीलिए रहस्यदर्शियों ने सदा कहा है केवल

वर्तमान है। लेकिन सोसान एक कदम आगे जाता है और कहता है

न बीता हुआ कल है न आने वाला कल है न आज है।

वर्तमान भी नहीं है। क्या अभिप्राय है उसका? – क्योंकि वह ठीक है, बिलकुल ठीक है। अगर अतीत नहीं है, और भविष्य नहीं है, तो फिर वर्तमान कैसे हो सकता है? क्योंकि वर्तमान केवल भूत और भविष्य के बीच में है।

वर्तमान क्या है? – एक मार्ग। अतीत से तुम भविष्य की ओर गति करते हो, उस गति में, केवल एक क्षण के लिए, वर्तमान है। वर्तमान क्या है? वह अतीत से भविष्य की ओर जाने का मार्ग है; वह इस कमरे से उस कमरे तक जाने के लिए एक द्वार है। लेकिन अगर न यह कमरा है, और न वह, तो दरवाजा कैसे हो सकता है? वह सेतु है, अतीत और भविष्य के बीच। और अगर दोनों किनारे नहीं हैं, तो सेतु कैसे हो सकता है?

सोसान ठीक है। सोसान कहता है न अतीत, न भविष्य, न वर्तमान। वह कह रहा है कि समय है ही नहीं। और सारी भाषा समय पर, भूत, भविष्य और वर्तमान पर आधारित है। भाषा मन की रचना है, समय भी मन की रचना है।

जब तुम भाषा को छोड़ देते हो, समय समाप्त हो जाता है। जब तुम सोच-विचार छोड़ देते हो, न अतीत है, न वर्तमान है, न भविष्य है। तुम समय के पार हो जाते हो, समय नहीं है। जब समय नहीं है, तो शाश्वतता है। जब समय नहीं है, तुम शाश्वत के जगत में प्रवेश कर जाते हो।

सत्य शाश्वत है। और जो भी तुम्हारे पास हैं वे सत्य की अस्थायी परछाइयां हैं।

वह ऐसे है जैसे चंद्रमा आकाश में निकल आया हो, पूर्णिमा की रात हो, और तुम झील में गहरे देखते हो और वहां चांद है। तुम्हारे पास केवल यही चांद है- झील में चांद। मन प्रतिबिंबित करता है, सारे सत्य जो तुम्हारे पास हैं मन के द्वारा प्रतिबिंबित होते हैं- वे परछाइयां हैं।

सोसान क्या कह रहा है? सोसान कह रहा है इस झील को भूल जाओ! क्योंकि यह एक दर्पण है। उस पार देखो, केवल तभी तुम वास्तविक चांद को देख सकोगे- और वह वहां है।

लेकिन तुमने झील के साथ, प्रतिबिंबित होने वाले मन के साथ अत्यधिक तादात्म्य स्थापित कर लिया है। मन को गिरा दो और अचानक सब-कुछ जो तुम चूक रहे थे ठीक बैठ जाता है, सब-कुछ जो तुम खोज रहे थे, घटित होता है, सब-कुछ जिसके तुमने सपने देखे थे और कामना की थी वह वहां है। वह सभी परिपूरित हो जाता है।

सारा संदेश यह है कि कैसे मन, भाषा और समय के पार हो जाएं।

आज इतना ही।